हिमालय
के
देवता और भूत
खामोशी कुछ
कहती है...
सौरभ सहगल

Table of Contents

कॉपीराइट
समर्पण
अंतर्वस्तु
हरी स्वेटर वाली लड़की
आह्वान
मार्गदर्शक आत्मा
एक ऐसी घोड़ी जिसे देखना मना है
देवता की चोरी
परियों की भूमि
DEVATA'S ANGER
आधी रात की पार्टी
दीवार में लड़का
पहाड़ों के कुछ लोकप्रिय रहस्य
शब्दकोष
लेखक के बारे में

हिमालय के देवी-देवता और भूत

खामोशी कुछ कहती है...

SAURABH SEHGAL

प्रस्तावना

हरी घास के मैदान पर ढलान वाली छत वाला एक छोटा सा घर। कुछ एक जैसे पृष्ठभूमि में त्रिकोणीय पर्वत। एक नदी जो आधार से बह रही है।
एक झोपड़ी के पास से गुजरते पहाड़। और कभी-कभी एक चमकता और मुस्कुराता सूरज।

त्रिकोणीय पर्वतों के बीच से ऊपर उठते हुए।

यह उस आम चित्र का वर्णन है जो ज़्यादातर भारतीय बच्चे अपने बचपन में कम से कम एक बार ज़रूर बनाते होंगे। पहाड़ों को देखने से पहले मेरी उनकी यही छवि थी।

जब मैं पर्यटक बनकर पहाड़ों पर गया, तो मेरे मन में उनकी छवि घुमावदार, टेढ़ी-मेढ़ी सड़कों और मैदानों की भीषण गर्मी से राहत पाने की जगह के रूप में उभरी। मैंने कार की खिड़कियों, होटल की बालकनियों या कभी-कभी किसी मॉल की सड़क पर चलते हुए उनकी सुंदरता का आनंद लिया। मेरे कुछ साहसी दोस्तों के लिए, पहाड़ ड्राइव, रिवर राफ्टिंग या कठिन ट्रेकिंग के लिए सबसे बेहतरीन जगह हैं। कुछ और भी साहसी लोग पहाड़ों में गरमागरम नूडल्स खाने के लिए चार-पांच घंटे गाड़ी चलाकर जाते हैं और फिर रात या अगली सुबह तक मैदानों में लौट आते हैं।

लेकिन जब मुझे कुछ दिनों के लिए एक पहाड़ी गाँव में, होटल में नहीं बल्कि एक घर में रहने का मौका मिला, तो मुझे एहसास हुआ कि पहाड़ों में पर्यटकों के मुख्य आकर्षणों से परे भी बहुत कुछ छिपा है। ये पहाड़ कई रहस्यमयी कहानियों, अध्यात्मवाद और अलौकिक घटनाओं के छिपे हुए खजाने हैं। जो लोग अलग-अलग रास्तों से जाते हैं, समय बिताते हैं और पहाड़ों पर भरोसा करते हैं, उन्हें इन कहानियों के साथ-साथ पहाड़ों के मनमोहक दृश्यों का भी आनंद मिलता है।

हिमालय का एक बड़ा हिस्सा ऐसा है जहाँ आज तक कोई नहीं गया और न ही उसे देखा गया है। लोकप्रिय पर्यटन स्थल मोटर योग्य सड़कों से आसानी से पहुँच योग्य हैं। लेकिन कई गाँव ऐसे हैं जहाँ पैदल चलकर ही पहुँचा जा सकता है, कुछ गाँवों तक तो कई घंटों की ट्रेकिंग के बाद ही पहुँचा जा सकता है। इनके अलावा, कुछ ऐसे क्षेत्र भी हैं जहाँ स्थानीय लोग भी नहीं पहुँच सकते। मान लीजिए कि आप पैदल चलकर या ट्रेकिंग करके हिमालय के किसी ऐसे स्थान पर पहुँच जाते हैं, तो आप इस ब्रह्मांड में उस धरती पर कदम रखने वाले पहले व्यक्ति बन सकते हैं। आपको नील आर्मस्ट्रांग जैसा रोमांच महसूस हो सकता है, जैसे किसी नई धरती पर मानव जाति का पहला कदम।

इन पहाड़ों में कई रोचक कहानियों और घटनाओं के छिपे हुए खजाने हैं, और मैं उनमें से कुछ को यहां प्रस्तुत कर रहा हूं।

कॉपीराइट © 2023 सौरभ सहगल
सर्वाधिकार सुरक्षित

इस पुस्तक में चित्रित पात्र और घटनाएँ काल्पनिक हैं। किसी भी प्रकार की समानता वास्तविक व्यक्तियों, जीवित या मृत व्यक्तियों से नहीं है।
'मृत्यु' का उल्लेख एक संयोग है और लेखक का ऐसा कोई इरादा नहीं था।
इस पुस्तक का कोई भी भाग पुनरुत्पादित, किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या किसी भी रूप में प्रसारित नहीं किया जा सकता है।
बिना लिखित अनुमति के, किसी भी माध्यम से, चाहे वह इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य कोई माध्यम हो,
प्रकाशक की अनुमति से।
ISBN-13: 9798862375503

हिमालय के उन शक्तिशाली देवताओं को समर्पित, जो हमारे साथ नृत्य करते हैं।

अंतर्वस्तु

हरी स्वेटर वाली लड़की
आह्वान
मार्गदर्शक आत्मा
एक ऐसी घोड़ी जिसे देखना मना है
देवता की चोरी
परियों की भूमि
DEVATA'S ANGER
आधी रात की पार्टी
दीवार में लड़का
पहाड़ों के कुछ लोकप्रिय रहस्य
शब्दकोष
लेखक के बारे में

हरी स्वेटर वाली लड़की

शाम सामान्य से अधिक गहरी थी। मुंबई के आकाश में विशाल भूरे बादल छाए हुए थे। हवा इतनी तेज़ चल रही थी कि मेरे शांत कमरे में रखी हर चीज़ फड़फड़ा रही थी, मानो किसी घटना के होने की उत्सुकता से फड़फड़ा रही हो। हवा तेज़ होने पर मुझे खिड़कियाँ बंद करनी पड़ीं। मैं खिड़की के पास अपने आरामदायक सोफे पर बैठ गई और बाहर हवा की आवाज़ सुनने लगी। तभी मेरी नज़र उस पर पड़ी। वह मेरे सामने मेज पर पड़ा था। उसने भेजा था, ठीक वैसे ही जैसे वह पिछले दस सालों से हर नवंबर में भेजती आई थी। मुझे पता था कि वह मुझ तक पहुँच जाएगा। मैं उसका इंतज़ार कर रही थी। फिर भी, उसे देखते ही मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा, ठीक वैसे ही जैसे पिछले दस सालों में हर बार होता था। मैंने उसे थोड़े कांपते हाथों से उठाया। वही रूल वाली कागज़ थी, ताज़ी चीड़ की खुशबू से महकती हुई, एक नोटबुक से फाड़ी हुई जिस पर केवल एक ही लाइन खींची हुई थी।
'मेरे द्वारा आपकी प्रतीक्षा की जा रही है,
तुम्हारा सदा का दोस्त,
मोना
मैं दसवीं कक्षा की परीक्षा की तैयारी कर रहा था, तभी यह पहली बार मेरे सामने आया। मैंने इसे किसी की शरारत समझकर नज़रअंदाज़ कर दिया। मुझे लगा कि मेरी माँ ने टुट्टू वाली घटना के बारे में पड़ोसियों से बात की होगी, और पड़ोस के किसी बच्चे को मुझे चिढ़ाने का ख्याल आया होगा और उसने यह नोट मेलबॉक्स में डाल दिया होगा। इस पर न तो कोई टिकट था और न ही कोई लिफाफा। यह बस कागज का एक फटा हुआ टुकड़ा था। भले ही मैंने इसे शरारत ही समझा हो, लेकिन इस कागज ने मुझे टुट्टू की याद दिला दी और मेरी पढ़ाई में बाधा डाल दी। मुझे अपनी माँ और उस अनजान बच्चे पर गुस्सा आया। जब मैंने अपनी माँ से पूछा, तो उन्होंने साफ इनकार कर दिया कि उन्होंने पड़ोस में किसी से भी इस घटना के बारे में बात की थी। मैं कुछ नहीं कर सका। मैंने कागज को कूड़ेदान में फेंक दिया।
अगले नवंबर में, वही घटना फिर घटी। कागज़ बिल्कुल वैसा ही था, किसी बच्चे की नोटबुक का फटा हुआ पन्ना। उस पर वही शब्द लिखे हुए थे। मैंने उसे फाड़कर खिड़की से बाहर फेंक दिया, यह देखे बिना कि वह नीचे सड़क पर कहाँ गिरा।

उसके बाद, मैंने जानबूझकर अपने ईमेल चेक करना बंद कर दिया। कॉलेज के पहले साल हॉस्टल में रहना मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं इसके बारे में लगभग भूल ही चुकी थी, जब तीसरी बार मेरी नज़र इस पर पड़ी। यह मुझे मेरे कमरे में मेरे वर्किंग डेस्क पर मिला। जब मैंने उस लिखे हुए संदेश को देखा, तो मेरा पेट गुड़गुड़ाने लगा। मैं लगभग डेस्क पर ही गिर पड़ी। इसे मुझ तक पहुँचने के लिए डाक की ज़रूरत नहीं थी। यादों से बचने का कोई रास्ता नहीं था। इस बार मैंने चिट्ठी संभाल कर रख ली। पहाड़ों में चाँदनी रात में चीड़ के पेड़ों जैसी महक आ रही थी। मैंने इसे एक किताब में रखा, लेकिन कुछ दिनों बाद यह गायब हो गई।

मेरे पते से कोई फर्क नहीं पड़ता था, चिट्ठी मुझ तक पहुँच जाती थी, वो हमेशा जानती थी। ऐसा लगता था जैसे उसका एक हिस्सा मुझसे जुड़ गया हो। कई बार, रात के अंधेरे में मुझे आवाज़ें सुनाई देती थीं, सिसकियाँ या कभी-कभी खिलखिलाहट। मैं जानती थी कि ये उसकी आवाज़ है। कभी-कभी वो मेरे कानों में फुसफुसाकर मुझे अपनी दुनिया में बुलाती थी। मैंने पाया कि जितना ज़्यादा मैं उसके बारे में सोचती थी, उतना ही ज़्यादा मुझे उसकी मौजूदगी अपने आस-पास महसूस होती थी। मैंने उसके बारे में न सोचने की कोशिश की। लेकिन किसी चीज़ के बारे में न सोचने की कोशिश कभी कामयाब नहीं होती। मैंने अपने विचारों को बदलने के लिए खुद को व्यस्त रखने का फैसला किया। मैं काम में डूब जाती, और घर पहुँचते ही कोई किताब उठा लेती। लेकिन हर रात, मेरे दिमाग में आखिरी ख्याल उसी का होता था। जैसे ही मैं सोने के लिए आँखें बंद करती, उसका मुस्कुराता हुआ चेहरा मेरे सामने आ जाता।

शुरुआत में, मैंने अपने दोस्तों से इस बारे में बात की। वे इन अजीब घटनाओं के बारे में जानने के लिए बहुत उत्सुक थे, लेकिन कुछ समय बाद, किसी ने भी इस पर ध्यान देना बंद कर दिया। यह उनके लिए हंसी-मजाक का विषय बन गया, और मैंने किसी से भी अपने अनुभव साझा करना बंद कर दिया। अगर कोई सच में समझने की कोशिश भी करता, तो मेरे लिए समझाना मुश्किल होता, और उनके लिए विश्वास करना तो और भी कठिन। अगर कोई सच में परवाह करता, तो मुझे नहीं पता था कि मैं उनसे क्या उम्मीद करती। कई बार मेरा मन करता कि मैं फिर से टूटू के पास जाऊं, उनसे मिलूं और उनके सामने आत्मसमर्पण कर दूं, लेकिन मुझमें इतनी हिम्मत नहीं हुई। लेकिन अब,

मैंने उनसे मिलने का फैसला कर लिया है, चाहे वह मेरे जीवन का आखिरी दिन ही क्यों न हो।

जब मैंने मुंबई में नौकरी शुरू की, तो शहर की जीवंत ऊर्जा और व्यस्त सड़कों ने मेरा स्वागत किया। हालांकि अब मैं टूटू से हज़ार किलोमीटर से भी ज़्यादा दूर थी, फिर भी मुझे पता था कि नवंबर में यह चिट्ठी किसी न किसी तरह मुझ तक पहुँच ही जाएगी। मैंने उसकी आत्मा को छू लिया था और अब यह मुझे कभी नहीं छोड़ेगी। हमेशा की तरह, चाहे मैं इसे कहीं भी रखूँ, यह कुछ दिनों में गायब हो जाएगी और अगले नवंबर में फिर से मिल जाएगी। हर बार ऐसा ही होगा। वही फटा हुआ कागज़ और वही लिखावट। इस बार यह मुझे मेरी कॉफ़ी टेबल पर मिली। डर के बजाय, इसे देखकर मुझे शांति का अनुभव हुआ। मैंने चिट्ठी को अपने सामने रखा और मोना के बारे में सोचा, वह लड़की जो मुझे अपना दोस्त बनाना चाहती थी। मैंने अपने विचारों को दस साल पहले की टूटू की यादों में खो जाने दिया।

जब मैं चौदह साल का था, तब मेरी माँ मुझे अपने साथ मेरे मामा के घर ले गई, जो हिमाचल प्रदेश की शान शिमला शहर के ठीक बाहर, टूटू नामक एक छोटे से गाँव में स्थित है।

मेरे चाचा का घर एक छोटा सा दो कमरों का मकान था, जो एक बड़ी इमारत का हिस्सा था जिसमें सड़क से अलग-अलग प्रवेश द्वार वाले कई छोटे कमरे थे। पहला कमरा ड्राइंग रूम, गेस्ट रूम और छोटी रसोई के रूप में इस्तेमाल होता था, और दूसरे को छोटा बेडरूम या स्टडी रूम कहा जा सकता है। इस बहुउद्देशीय कमरे से सटा हुआ, पहाड़ी से दूर एक बालकनी थी, जो उसी इमारत में रहने वाले अन्य लोगों के साथ साझा की जाने वाली एक लंबी बालकनी थी। शाम छह बजे, गाँव में अंधेरा छाने लगा था। बालकनी से दिखने वाला नज़ारा ऐसा था जैसा मैंने पहले कभी नहीं देखा था। तारे पहले घर के सामने दूर पहाड़ियों पर दिखाई दिए और बाद में पूरे आकाश में। अगर मेरे घर की खिड़की से ऐसा नज़ारा दिखता, तो मैं अपने दोस्तों से इसे दिखाने के लिए टिकट का शुल्क लेता। लेकिन तब शायद मेरे पड़ोसियों की बालकनियों से भी ऐसा ही नज़ारा दिखता।

आकाश में तारे इतने साफ़ थे जितने मैंने पहले कभी नहीं देखे थे। यह एक प्राकृतिक नज़ारा है जो हर जगह मौजूद होता है, लेकिन किसी हलचल भरे शहर के आकाश में

कभी नहीं देखा जा सकता। शिमला से बाहर स्थित टूटू गाँव और आसपास की पहाड़ियों पर बसे छोटे-छोटे गाँव भी कम आबादी वाले थे। सामने की पहाड़ियों पर बने घरों की रोशनी भी रात के तारों जैसी लग रही थी। नज़ारा देखकर मेरे चेहरे पर आई चौड़ी मुस्कान देखकर मेरी माँ समझ गई कि मुझे यहाँ अच्छा लग रहा है। बालकनी में कोई और नहीं था, इमारत के ज़्यादातर निवासी अपने कमरों में आराम से सो रहे थे। यह मनमोहक नज़ारा उनके लिए रोज़ का था। लेकिन मेरे लिए, यह कभी-कभार ही होता था। हवा ठंडी थी और मैं इसके लिए तैयार थी, अपनी सबसे मोटी जैकेट और कई परतों वाले कपड़ों से खुद को अच्छी तरह बचाए हुए थी। मैंने अपने कानों को ढकने के लिए अपनी ऊनी टोपी नीचे खींच ली थी। मेरी माँ ने मुझे कई बार अंदर आने के लिए बुलाया। लेकिन मैंने उनसे कहा कि मुझे यहाँ अच्छा लग रहा है। आखिरकार, उन्होंने मुझे वहाँ बैठने की इजाज़त दे दी। कुछ ही मिनटों में उन्होंने मुझे गरमागरम चॉकलेट दूध से भरा एक लंबा प्याला थमा दिया। मैंने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। उस ठंड में यह स्वर्ग जैसा लगा। माताओं में एक जादुई क्षमता होती है कि वे जान जाती हैं कि हम क्या चाहते हैं, भले ही हम खुद इससे अनजान हों।

मेरी माँ कई वर्षों बाद अपने भाई से मिलने आई थीं। शादी के बाद से उनकी मुलाकात बहुत कम समय के लिए हुई थी, शायद कुछ शादियों या अंत्येष्टि समारोहों में ही। उनकी आखिरी मुलाकात टूटू से तब हुई थी जब मैं बहुत छोटा बच्चा था। मुझे उस मुलाकात की कोई याद नहीं है। इसलिए, यह उनके लिए एक लंबे समय से प्रतीक्षित मिलन था। मेरे चाचा, चाची और मेरी माँ बेडरूम में उत्साह से बातें कर रहे थे। वे पुराने दिनों को याद कर रहे थे, और हर किसी के पास सुनाने के लिए कई कहानियां थीं, और सभी सुनने के लिए तैयार और समय निकाल रहे थे। मेरे चाचा के पास एक घड़ी थी जो हर घंटे मधुर संगीत बजाती थी, और फिर घंटे के अनुसार घंटियाँ बजती थीं, लेकिन किसी ने भी उसके संगीत और घंटियों पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि वे अधिक रोचक कहानियों में मग्न थे।

मुझे उस अंधेरी रात में किसी तरह की जल्दबाजी का न होना बहुत अच्छा लगा। मेरे चाचा सेवानिवृत्त हो चुके थे। चाची और माँ को भी सुबह कहीं जाना नहीं था। तारे बेहद साफ दिखाई दे रहे थे, और मैं लंबी बालकनी पर अकेले बैठकर उन्हें देख रहा था। जैसे-जैसे रात बढ़ती गई और ज़्यादा लोग बत्तियाँ बुझाते गए, सामने की पहाड़ियों पर

तारों जैसी दिखने वाली रोशनी एक-एक करके गायब होने लगी, और आकाश में असली तारे और भी ज़्यादा चमकने लगे।
ऊनी टोपी से ढके होने के बावजूद मेरे कान ठंड से दुख रहे थे। मैंने गर्म चॉकलेट का प्याला कान से लगाया और उसकी हल्की गर्मी को ऊन से होकर गुजरने दिया। मुझे लगा जैसे मेरे कान में खून पिघल रहा हो। उसी क्षण, जब मैं आँखें बंद करके चॉकलेट की गर्माहट का आनंद ले रहा था, मुझे एक शरारती हंसी सुनाई दी।
मैं कुर्सी से उठा और आँखें खोलीं। मेरे बगल में एक लड़की कुर्सी पर बैठी थी। मुझे नहीं पता था कि वह बालकनी में कब आई, और क्या मेरे बगल में कोई और कुर्सी भी थी। वह इमारत के दूसरे कमरों से आई होगी, क्योंकि यह एक लंबी बालकनी थी जिसे कई कमरे साझा करते थे। उसने क्रीम रंग का सूट और हरे रंग का गोल गले का स्वेटर पहना हुआ था। उसने दुपट्टा, टोपी, दस्ताने या जूते तक नहीं पहने थे। ऐसे मौसम में इस तरह कपड़े पहनना अजीब था। लेकिन वह बहुत सहज लग रही थी। शायद वह यहीं की रहने वाली थी और यहाँ के मौसम में ढल चुकी थी।
‘हैलो,’ मैंने कहा। अब सोच रही हूँ कि मुझे कप को कान पर इस तरह रखते हुए देखना कितना मज़ेदार रहा होगा जैसे मैं कप की आवाज़ सुनने की कोशिश कर रही हूँ।
‘ठंड लग रही है ना?’ उसने बेहद मधुर और कोमल आवाज़ में कहा। उसके चेहरे से मुस्कान कभी नहीं हटी।
'हां, ठंड है,' मैंने सिर हिलाया, मेरी सांस से कड़ाके की ठंड वाली रात में हल्की धुंध सी बन गई।
तो फिर आप यहां क्यों बैठे हैं?
‘मुझे यहाँ अच्छा लग रहा है। नज़ारा, शांति—सब कुछ अद्भुत, बेहद सुकून भरा है। शहर में मुझे ऐसा अनुभव अक्सर नहीं मिलता,’ मैंने होठों पर एक शर्मीली मुस्कान के साथ कहा... मानो यह कोई गुप्त सुख हो।
वह मुस्कुराई लेकिन मेरी तरफ देखती रही। मुझे लगा कि मुझे कुछ और बोलना चाहिए।
'चांदनी रात में सब कुछ अलग सा लगता है, है ना?' मैंने अपनी आवाज़ में एक नई सहजता भरते हुए कहा। 'शांति हमें घेर लेती है, और हम रोज़मर्रा की ज़िंदगी के शोर

और अराजकता से बच निकलते हैं। ऐसा लगता है मानो दुनिया अपनी सांस रोककर इस शांति का आनंद ले रही हो।' मुझे पता था कि मैं ज़रूरत से ज़्यादा बोल रही थी।
'मुझे भी यह पसंद है, यह वाकई... शांतिपूर्ण है।' उसने 'शांतिपूर्ण' शब्द को धीरे-धीरे कहा, मानो वह जाँच रही हो कि यह वास्तव में शांतिपूर्ण है या नहीं।
वह भी हमारे सामने पहाड़ी पर जलती छोटी-छोटी रोशनी को देख रही थी। अब जब उसकी नज़र पहाड़ी पर टिक गई थी और मैं शुरुआती सदमे से बाहर आ चुका था, तो मैं उसे साफ़-साफ़ देख पा रहा था। उस उम्र में, मैंने अभी-अभी लड़के-लड़कियों के बीच का अंतर समझना शुरू किया था। लड़कों के स्कूल में पढ़ने के कारण मुझमें स्वाभाविक शर्म थी... मैं लड़कियों से सीधे नज़रें मिलाने से कतराता था। लेकिन चांदनी रात ने मुझे सुकून का एहसास दिलाया। वह मेरी ही उम्र की लग रही थी, या शायद मुझसे थोड़ी बड़ी। चांदनी में उसका चेहरा साफ़ और दमकता हुआ दिख रहा था। उसकी बड़ी-बड़ी, भेदक आँखें थीं। उसके लंबे बाल कमर तक एक चोटी में गुंथे हुए थे। वह बहुत सलीके से दिख रही थी। असल में... रात के इस समय के हिसाब से वह कुछ ज़्यादा ही परफेक्ट लग रही थी। दूसरी तरफ, मैं ऊन के गोले जैसा लग रहा था, जो एक रोएँदार जैकेट, कई परतों वाले कपड़ों और एक मोटी टोपी में लिपटा हुआ था। उसका स्वेटर हरे रंग का था, जो बहुत ही असामान्य था, गोल गले वाला, जैसा मैंने किसी शहरी लड़की को पहने हुए कभी नहीं देखा था। वह कद में छोटी थी।
शायद मैंने उसे देखने में कुछ ज़्यादा ही समय लगा दिया। उसने मेरी तरफ देखा और मुझे उसे देखते हुए पकड़ लिया। मैंने तुरंत नज़रें पहाड़ी की तरफ़ हटा लीं, लेकिन तब तक नुकसान हो चुका था। मैंने खुद को उसकी डांट या तिरस्कारपूर्ण प्रतिक्रिया के लिए तैयार कर लिया।
'क्या आपको पहाड़ियाँ पसंद हैं?' उसने चुप्पी तोड़ी।
मैंने राहत की सांस ली। वह बाकियों जैसी नहीं थी। वह सुंदर और मिलनसार थी। मुझे वह पसंद आने लगी। या शायद मैं उसकी सुंदरता से मोहित हो गया था... मुझे पक्का नहीं पता। मैं शायद अय्याश लग रहा हूँ, लेकिन मैं किशोरावस्था का लड़का था और मेरे हार्मोन्स सक्रिय थे, इसलिए ऐसा होना मुमकिन था।
'यद्यपि यह मेरी यहाँ पहली यात्रा है, फिर भी मुझे यह जगह बहुत पसंद आई। मैंने फैसला कर लिया है कि मैं हर साल इस खूबसूरत जगह पर आती रहूँगी,' मैंने कहा और

उस समय मेरा यही इरादा था, मुझे नहीं पता था कि हिमालय में दोबारा कदम रखने में कई साल लग जाएँगे।
‘सच में? तो फिर हम दोस्त बन सकते हैं। अगर तुम हर साल यहाँ आने का वादा करो, तो मैं तुम्हें एक जादुई जगह दिखाऊँगी जो तुम्हें बहुत पसंद आएगी,’ उसकी आवाज़ में उत्साह साफ झलक रहा था। उसका सारा ध्यान मुझ पर था। मैं कभी किसी लड़की से दोस्त नहीं बनी थी। मैं खुश थी। उन दिनों शहर की लड़कियाँ, चाहे कितनी भी इच्छा रखती हों, इस तरह दोस्ती का प्रस्ताव कम ही रखती थीं।
मैंने बिना किसी झिझक के कहा, 'मैं वादा करता हूँ, मैं हर साल आऊँगा।' मैंने पत्रों का ज़िक्र इसलिए किया क्योंकि संपर्क बनाए रखने का यही एकमात्र ज़रिया था, वरना वह एक साल में मुझे आसानी से भूल सकती थी।
‘नहीं... चिट्ठियाँ कौन लिखेगा? मुझे लिखना ज़्यादा पसंद नहीं है। लेकिन जब भी तुम यहाँ आओगे, हम मिलेंगे।’
लेकिन मुझे चिट्ठियाँ मिलना बहुत अच्छा लगता है। मुझे अपने नाम से शायद ही कभी कोई डाक मिलती थी, लेकिन जब भी मेरे लिए कोई डाक आती थी, तो मुझे बहुत खुशी होती थी।
उसने मेरी तरफ देखा, एक पल के लिए मुस्कुराई और बोली, 'ठीक है, अगर आपको चिट्ठियाँ इतनी पसंद हैं, तो मैं आपको पत्र लिखूँगी। लेकिन मैं लंबा पत्र नहीं लिखूँगी। मैं बस आपको यहाँ बुला लूँगी।'
‘ठीक है,’ मैंने मुस्कुराते हुए कहा, मुझे उसकी बात पर यकीन नहीं हो रहा था। चिट्ठी लिखने में बहुत समय लगता है, वो मुझ जैसे लड़के को चिट्ठी लिखने में समय क्यों बर्बाद करेगी, जिससे वो महज़ इत्तेफ़ाक से मिली थी... वो भी बस थोड़े समय के लिए, मैंने सोचा।
‘चिंता मत करो, मैं तुम्हें नहीं भूलूंगी,’ उसने कहा। मैं हैरान रह गया, क्योंकि मैं भी ठीक यही सोच रहा था। या तो वह बहुत बुद्धिमान थी या फिर मन की बात जानने वाली। उसकी मुस्कान अब और चौड़ी हो गई थी। वह उत्साहित और खुश दिख रही थी। वह उठी और मेरे कंधे पर धीरे से थपथपाते हुए मुझे भी उठने का इशारा किया। कुछ क्षण पहले मैं अकेला था और अब मैं शरारती टोली का हिस्सा बन गया था।
‘चलो चलते हैं,’ उसने कहा।

'कहाँ?'
‘वह खूबसूरत जगह, जिसके बारे में मैंने आपको बताया था’
‘अब?’ आधी रात हो चुकी थी। कुछ क्षण पहले ही मैंने संगीत घड़ी की बारह घंटियाँ सुनी और गिनी थीं।
'क्या आप उन्नींदें हैं,'
बिलकुल भी नहीं
‘तो फिर दरवाजे पर बाहर मुझसे मिलो,’ वह उठते हुए फुसफुसाई।
‘लेकिन कैसे? वे मुझे इस समय बाहर नहीं जाने देंगे।’ यह अजीब लगा, एक लड़की मुझे आधी रात के बाद बाहर आने के लिए कह रही थी। ऐसा मैंने पहले कभी नहीं किया था। वह वाकई बहादुर लड़की थी।
‘बस चुपचाप दरवाजा खोलकर बाहर निकल जाओ। किसी को पता भी नहीं चलेगा, और हम आधे घंटे में वापस आ जाएंगे,’ उसने मुझे आश्वस्त किया और बालकनी के दूसरी तरफ चली गई, जो पूरी तरह से अंधेरी थी।
‘जल्दी आओ’, उसने मुझे चुप रहने का इशारा किया। अंधेरे में मैं उसे देख नहीं पा रहा था, लेकिन उसकी आवाज़ में उत्साह महसूस कर सकता था। मैं घबराया हुआ था, पर दिखाना नहीं चाहता था। मैंने उस अंधेरे की ओर सिर हिलाया जिसमें वह गायब हो गई थी।
मैं उठा, शरीर में खून का प्रवाह तेज़ होने से गर्मी महसूस हो रही थी। शहर में मैंने कभी सूर्यास्त के बाद घर से बाहर कदम नहीं रखा था। और अब, मैं अपनी माँ को बिना बताए, आधी रात के बाद, घर से दूर, एक अनजान लड़की के साथ चुपके से निकलने वाला था, जिसका नाम मुझे अभी तक पता नहीं था। उसके साथ जाने के कई कारण थे, फिर भी मैं मान गया।
मेरी माँ, मामाजी और मामीजी अंदर के कमरे में बातें करने में व्यस्त थीं। मैंने सावधानी से सामने का दरवाज़ा खोला, बाहर आया और बिना ताला लगाए धीरे से बंद कर दिया। ज़रा भी आवाज़ नहीं हुई। सौभाग्य से, उसमें से चरमराहट की आवाज़ नहीं आई। मैं बाहर आया और कुछ कदम नीचे सड़क पर वह लड़की मेरा इंतज़ार कर रही थी। उसने अब अपने हरे स्वेटर के ऊपर क्रीम रंग का स्कार्फ़ पहना हुआ था।

हम गांव की सुनसान सड़क पर चल रहे थे। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था, बस एक अजीब सी 'शश...' की आवाज़ आ रही थी। यह एक लंबी 'श्शश...' जैसी आवाज़ थी जो कुछ सेकंड बाद रुक जाती और फिर शुरू हो जाती। हर बार जब मैं इसे सुनता, तो मैं इसके स्रोत का पता लगाने के लिए चारों ओर देखता। इतनी रात हो चुकी थी कि सड़क पर चुपचाप चल रहे लोगों को चुप कराने के लिए किसी का आना संभव नहीं था। सड़क पर कोई नहीं था। आस-पास के घर भी पूरी तरह अंधेरे में डूबे हुए थे। उसने देखा कि मैं उस आवाज़ से घबरा गया था।
'ये उल्लू हैं,' उसने अपनी आवाज में हंसी के साथ कहा।
'क्या?'
‘यह आवाज़ उल्लुओं की है। देखो... उधर चीड़ के पेड़ों का एक झुंड है। उसमें उल्लुओं के कई घोंसले हैं,’ उसने नीचे घाटी में पेड़ों की ओर इशारा करते हुए कहा।
‘अच्छा ठीक है। शहर में तो ये आम बात नहीं है। मुझे लगा था कि उल्लू तो... हू-हू जैसी आवाज़ निकालते हैं,’ मैंने आवाज़ के स्रोत का पता चलने पर अपनी राहत छुपाते हुए कहा।
वह खिलखिलाकर हंस पड़ी। 'हां, कई उल्लू हू हू जैसी आवाज निकालते हैं, लेकिन ये खलिहान के उल्लू हैं और ये चुप रहने जैसी आवाज निकालते हैं।'
हम कुछ देर तक चुपचाप चलते रहे।
मैंने चुप्पी तोड़ते हुए पूछा, 'आपका नाम क्या है?'
‘मैं मोना हूँ,’ उसने मुस्कुराते हुए कहा। यह कितना अजीब था कि हमने आधी रात को साथ में टहलने की योजना बना ली थी, फिर भी हम एक-दूसरे का नाम तक नहीं जानते थे।
‘मैं सचिन हूं’ उसने पूछा नहीं, लेकिन मैंने फिर भी उसे बता दिया।
हम एक संकरी सड़क पर चल रहे थे, जिसके एक तरफ घरों की कतार थी और दूसरी तरफ पहाड़ी। उल्लुओं की डरावनी फुसफुसाहट अब बंद हो गई थी। शायद हम उन चीड़ के पेड़ों के झुंड से आगे निकल चुके थे, जिन पर उल्लुओं के घोंसले थे। लगभग एक मिनट तक एकदम सन्नाटा छाया रहा, तभी अचानक एक बहुत तेज़ और तीखी फुसफुसाहट ने मुझे चौंका दिया। ऐसा लग रहा था जैसे वह चारों ओर से आ रही हो। मेरे रोंगटे खड़े हो गए। फिर मुझे हंसी सुनाई दी।

‘यह मैं ही थी,’ मोना ने कहा।
मैंने कुछ नहीं कहा, लेकिन मेरा डर मेरे चेहरे पर साफ झलक रहा था।
'माफ़ कीजिए, मैंने आपको डरा दिया। दोबारा ऐसा नहीं करूंगा।'
मैंने एक पल के लिए उसकी ओर देखा और फिर मुस्कुरा दिया। बाद में, मैंने उसे चौंकाने के लिए अचानक कई आवाज़ें निकालकर अपना बदला लेने की कोशिश की। लेकिन हर बार वह बस हंस देती थी।
सड़क पर कुछ खंभे लगे थे, जो सड़क के लिए पर्याप्त नहीं थे, लेकिन जो थे उनसे मैं संतुष्ट था। कुछ मिनट बाद मोना रुक गई। हमारे बाईं ओर पहाड़ी पर एक छोटा सा खुला मैदान था। मोना उसमें चली गई और मुझे अपने पीछे आने का इशारा किया। उसका शरीर छोटा था, लेकिन वह आसानी से उस संकरे खुले मैदान पर चढ़ गई, जबकि मुझे पैर जमाने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ी।
वह मेरी परेशानी समझ गई। उसने मेरी ओर हाथ बढ़ाया। मैंने उसका हाथ थाम लिया और उसने मुझे ऊपर खींच लिया। पेड़ों के बीच का संकरा रास्ता अंधेरा था, लेकिन कम से कम बाहर की सड़क से ज़्यादा गर्म था, क्योंकि पेड़ बाहर की तेज़ हवा से बचाव कर रहे थे।
ज़मीन पत्तों और सूखे चीड़ के शंकुओं से ढकी हुई थी। चाँदनी का अधिकांश भाग पेड़ों से ढका हुआ था, लेकिन कुछ प्रकाश कहीं-कहीं पेड़ों से छनकर ज़मीन तक पहुँच रहा था। मेरी आँखें चाँदनी के अलग-अलग धब्बों और घोर अंधेरे में तालमेल बिठाने के लिए संघर्ष कर रही थीं। मोना ने मेरी उलझन को भांप लिया और मेरा हाथ मजबूती से पकड़े रही।
वह तेज़ी से और नज़ाकत से चल रही थी, उसके पैर पत्तों पर हल्के पड़ रहे थे। कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। शायद उसके पैर छोटे थे। सिर्फ़ मेरे पैरों की सूखी पत्तियों पर चरमराहट की आवाज़ आ रही थी, शायद जूतों की वजह से। मुझे कई बार साँस लेने में मुश्किल हो रही थी, लेकिन मोना, पहाड़ी लड़की होने के नाते, बहुत आराम से चल रही थी।
अब मेरी आँखें पहले से बेहतर अभ्यस्त हो गई थीं, और मैं देख पा रही थी कि हम घने पेड़ों के बीच से होकर टेढ़े-मेढ़े चढ़ाई वाले रास्ते पर आगे बढ़ रहे थे। मोना अब भी मेरा हाथ पकड़े हुए मुझे आगे खींच रही थी। बीच-बीच में वह मेरी तरफ देखती और

मुस्कुराती। उसकी मुस्कान खुशी से भरी थी, ठीक वैसे ही जैसे कोई बच्चा किसी मॉल के खेल के मैदान में पहुँचकर मुस्कुराता है।
पंद्रह मिनट ही बीते होंगे, लेकिन जब रास्ता नीचे उतरने लगा तो घंटों जैसा लगा। नीचे उतरते ही कोहरा छा गया। मेरे लिए फिर से साफ देखना नामुमकिन हो गया। मैं समझ नहीं पा रहा था कि यह मैदान है या जंगल। हकीकत मेरे सामने आ रही थी। मैं खोया हुआ महसूस कर रहा था।
अपनी कमजोरी को भांपते हुए, मैंने मोना का हाथ और कसकर पकड़ लिया, मानो कुछ दिलासा पाने की कोशिश कर रहा हो।
‘चिंता मत करो,’ उसने कहा।
मैं ठीक हूँ... बस ठीक से देख नहीं पा रहा हूँ।
'मैं इस इलाके को अच्छी तरह जानता हूं, आपको डरने की जरूरत नहीं है क्योंकि मैं आपके साथ हूं,' हमारी आवाजें ऐसे गूंज रही थीं मानो हम किसी बड़े खाली कमरे में हों।
मैंने अपने दूसरे हाथ को देखने की कोशिश की, जिसे उसने नहीं पकड़ा था। जब तक मैंने उसे अपने चेहरे के सामने नहीं लाया, तब तक मुझे अपने हाथ का स्पष्ट आकार दिखाई नहीं दिया। मेरा मन पहाड़ियों के बारे में सुनी हुई डरावनी कहानियों की ओर भटक गया। और इस समय, उनमें से अधिकांश कहानियाँ पहाड़ियों के भूत-प्रेतों की पसंदीदा जगह होने के बारे में थीं, क्योंकि उन्हें इन शांत पहाड़ियों में सुकून मिलता है। और यह भी कि उन्हें अपनी शांति भंग होना पसंद नहीं है।
मैंने मोना के पैरों को देखने की कोशिश की, लेकिन कुछ भी दिखाई नहीं दिया। मैं यह देखने की कोशिश कर रहा था कि क्या वे सही दिशा में हैं। मुझे याद आया कि मैंने पहले भी उसके पैर देखे थे, और वे सही दिशा में थे, इसलिए वह चुड़ैल नहीं हो सकती।
‘बस एक मिनट, हम लगभग पहुँच चुके हैं।’
'ठीक है, यह कौन सी जगह है?'
'आप देखेंगे,'
यह अजीब था, मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।
कुछ ही क्षणों में वह रुक गई। मैं थोड़ा और पास गया और उसके पैर देखने के लिए नीचे झुका। यह देखकर मैं दंग रह गया कि उसके पैर मेरी ओर थे। चूंकि वह आगे चल

रही थी, इसलिए उसके पैर आगे की ओर होने चाहिए थे। मैंने अपना हाथ उसके हाथ से छुड़ाया और पीछे हट गया।
‘क्या हुआ?’ उसने कहा
‘उह... नहीं... कुछ नहीं’
हवा का एक झोंका कोहरे को उड़ा ले गया। अब मैं देख सकता था कि उसके पैर मेरी ओर थे, और शुक्र है कि उसका चेहरा भी मेरी ओर था। जब हम उस जगह पर पहुँचे थे, तब वह मेरी ओर मुड़ गई थी।
कोहरा छंटने पर मुझे चारों ओर दिखाई देने लगा। हम एक समतल सतह पर थे, जो पहाड़ियों और ऊंचे-ऊंचे पेड़ों से घिरी हुई थी। जिस संकरे रास्ते से हम आए थे, उसके अलावा यह चारों ओर से बंद थी। इस खुले मैदान के बीचोंबीच एक तालाब था। तालाब की सतह पर चांदनी अनगिनत चमकते चांदी के कणों की तरह प्रतिबिंबित हो रही थी।
‘यह मेरी गुप्त जगह है।’ उसने घोषणा की।
‘इसके बारे में कोई नहीं जानता?’ यह एक खूबसूरत जगह थी, लेकिन चूंकि यह अंदरूनी इलाके में थी और चारों ओर पहाड़ों से घिरी हुई थी, लोकप्रिय पर्यटन स्थलों से दूर थी, इसलिए शायद यह अनजानी ही रह गई थी। मुझे एहसास हुआ कि अगर मोना मुझे यहाँ छोड़ गई, तो मेरे लिए अपनी चाची के घर वापस जाने का कोई रास्ता नहीं बचेगा। मुझे एहसास हुआ कि उस पल, शायद मेरी ज़िंदगी इस रहस्यमयी लड़की पर निर्भर थी।
‘नहीं... केवल मैं... और कुछ बुरे लोग जो कभी वापस नहीं आ सकते,’
'बुरे लोग?'
'हां, और वे यहां कभी नहीं आ सकते,' उसने सख्त चेहरे से कहा।
'अगर कोई यहाँ पहुँच भी जाए तो क्या होगा?'
'मैं इस जगह की रक्षा करूंगी, और यहां आने वाले हर किसी को मार डालूंगी, सिवाय तुम्हारे, क्योंकि तुम मेरे दोस्त हो,' उसने हंसते हुए कहा।
मैंने उसकी बचकानी हरकत पर हंसते हुए कहा, 'मुझे न मारने के लिए धन्यवाद।'
वह मुस्कुराई।
'चलो वहाँ बैठते हैं,' मोना ने एक बहुत ही सुंदर आकार के पत्थर की ओर इशारा करते हुए कहा, जो बैठने और उस अलौकिक तालाब को निहारने के लिए एकदम सही था।

सैर के बाद बैठना सुकून देने वाला था। मोना ने बताया कि उसे यह जगह कितनी पसंद है। रात में यह और भी खूबसूरत लगती है। उसकी मधुर आवाज़ और मेरी साँसों के अलावा कोई आवाज़ नहीं थी।
तो, आपको मेरी यह गुप्त जगह कैसी लगी?
'यह बहुत ही खूबसूरत है। मैंने इससे पहले कभी इतनी सुंदर जगह नहीं देखी। इसमें एक जादुई एहसास है।'
'मुझे पूरा यकीन है क्योंकि ऐसी जगह और कहीं नहीं है। और मैं इसे अपने एक दोस्त के साथ साझा करना चाहती थी। मेरे साथ आने के लिए धन्यवाद,' वह मुस्कुरा रही थी, उस जगह पर गर्व महसूस कर रही थी। यह वाकई गर्व करने लायक बात थी। मेरे शहर के किसी भी दोस्त को ऐसी जगह देखने का मौका नहीं मिला था। अक्सर जब हम पर्यटक बनकर पहाड़ों पर जाते हैं, तो हम मशहूर भीड़-भाड़ वाली जगहों और बाजारों में जाते हैं, जंगलों के बीच की प्राकृतिक जगहों पर नहीं। ऐसी जगहें सिर्फ स्थानीय लोगों को ही पता होती हैं। और मुझे लगता है कि सभी स्थानीय लोगों को भी नहीं। सिर्फ मोना जैसी ही लोग यहां आने की हिम्मत कर सकती हैं।
मोना के साथ वहाँ बैठे-बैठे मुझे अपने अंदर कुछ बदलाव महसूस हुआ। वातावरण में एक अजीब सा सुकून और मदहोशी थी। मुझे अंदर से इतनी गर्माहट महसूस हुई कि मैं रो पड़ूँगी। मैंने अपने सारे विचार और भावनाएँ उससे बाँट लीं। मैंने उसे अपने बारे में सब कुछ बता दिया। यहाँ तक कि वो बातें भी जो मैंने अपने दिल में छुपा रखी थीं और उस दिन से पहले कभी किसी से नहीं कही थीं।
मेरे पिता के प्रति मेरी घृणा। मेरा शर्मीलापन। मेरे सपने। मैं अपने स्कूल के दोस्तों को उसके बारे में गर्व से बताना चाहती थी। अजीब बात है, मुझे उसके सामने अपने दिल की बात कहने में ज़रा भी शर्म नहीं आई। मैं घंटों तक बोलती रही। और वह सुनती रही। उसकी नज़रें मुझ पर टिकी रहीं। कभी-कभी जब मैं अपनी कहानियों से भावुक हो जाती, तो वह मेरा हाथ थाम लेती, और यह स्वाभाविक लगता था। मोना ही एकमात्र ऐसी लड़की थी जिससे मैं मिली थी जो सचमुच मेरी बातें सुनती थी... उसके साथ मुझे सब कुछ साझा करने का मन करता था। दूसरी ओर, मोना ने मुझे बस इतना बताया कि वह मेरे चाचा के घर के बगल वाले घर में रहती है। वह पीछे वाली बालकनी साझा करती है, और उसे खुशी है कि अब हम दोस्त हैं। उसके साथ एक खास रिश्ता बन गया

था, जैसे मैं उसे हमेशा से जानती थी। आधी रात को इस अजीब, सुनसान जगह पर उसके साथ होना स्वाभाविक लग रहा था। वह बार-बार कहती रही कि उसे मुझसे मिलकर और दोस्त बनकर खुशी हुई।
मैंने कहा, 'काश मैं यहाँ जितना हो सके उतने लंबे समय तक रह पाता।'
‘तो यहीं रहो, तुम्हें जाने के लिए कौन कह रहा है?’
मैंने घर से निकलते समय अपनी मां को नहीं बताया। अगर उन्हें पता चला कि मैं घर पर नहीं हूं तो वह घबरा जाएंगी।
‘चिंता मत करो, अभी ज्यादा देर नहीं हुई है, और वह अपने भाई से बात करने में बहुत व्यस्त है।’ उसकी आवाज़ में इतना आत्मविश्वास था मानो वह मेरी माँ को देख सकती हो।
मोना के आश्वासन से मेरा धड़कता दिल शांत हो गया। मैंने चारों ओर देखा और घटनाओं के इस अजीब मोड़ पर आश्चर्य किया, लेकिन मैं डरी नहीं थी। मोना से मिलकर मुझे खुशी हुई। मेरे दोस्त थे, ज्यादातर स्कूल के दोस्त, लेकिन जिस तरह से मैंने मोना के साथ अपने जीवन के बारे में इतनी बातें साझा की थीं, वैसी बातें मैं किसी और के साथ साझा नहीं कर पाई थी।
हम कुछ देर तक चुप रहे और सामने चांदनी से जगमगाते खूबसूरत तालाब को निहारते रहे। थोड़ी देर बाद मोना ने चुप्पी तोड़ी।
‘क्या तुम मुझसे दोबारा मिलने आओगे?’ उसने पूछा। उसकी आवाज़ में हल्की सी घबराहट थी। यह पहली बार था जब उसकी आवाज़ में थोड़ी घबराहट झलक रही थी। मैंने उसकी तरफ देखा, उसकी मुस्कान गायब थी। वह किसी बात से परेशान थी।
'जी हां, बिल्कुल, मैं आऊंगा। क्या आपको कोई बात परेशान कर रही है?'
‘कुछ नहीं, बस मुझसे वादा करो कि तुम मुझसे मिलने फिर आओगे।’ उसने मेरी तरफ देखा और बोली। मैंने उसके गालों पर हल्की सी चमक देखी। उसकी आँखों से एक आँसू बह रहा था। मैंने उसका हाथ पकड़ा, जो अब ठंडा लग रहा था।
'मैं वादा करता हूँ कि मैं तुमसे मिलने यहाँ आऊँगा। अब हम दोस्त हैं।' कुछ देर बाद मैंने कहा, 'सच कहूँ तो, तुम्हारे जैसा दोस्त मुझे पहले कभी नहीं मिला।' मैंने वही कहा जो मेरे मन में था।

उसके चेहरे पर फिर से मुस्कान लौट आई। उसके आंसू अभी सूखे नहीं थे। मैंने दस्ताने पहने हाथ से उसके गालों से आंसू पोंछे। फिर, मैं आगे झुका और उसे चूम लिया। यह इतना सहज हुआ कि मुझे याद नहीं कि मेरे मन में कोई विचार आया हो। यह एक हल्का सा चुंबन होना था, लेकिन मैं यह नहीं कह सकता कि हमने कितनी देर तक चुंबन किया, क्योंकि हमारे लिए समय रुक गया था। बस हो गया। और यह स्वर्ग जैसा अनुभव था।
'मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूंगी,' उसने अनिच्छा से चुंबन तोड़ते हुए कहा। मेरे अंदर उमड़ती भावनाओं से मैं इतना विचलित था कि मैंने मूर्खतापूर्ण ढंग से सिर हिलाकर जवाब दिया।
'चलो अब वापस चलते हैं,' उसने नम आँखों से मुस्कुराते हुए कहा। 'बारिश होने वाली है, फिर तुम्हारे लिए वापस चलना मुश्किल हो जाएगा।'
मुझे आश्चर्य हुआ कि वह बारिश की भविष्यवाणी कैसे कर सकती है, आकाश में बादल का कोई नामोनिशान नहीं था और चंद्रमा अभी भी तेज चमक रहा था।
'ठीक है, लेकिन आपको मुझे रास्ता दिखाना होगा।'
हम घने पेड़ों के बीच से वापस चल पड़े। अब उल्लू चुप नहीं हो रहे थे। शायद वे भी रात की निगरानी से थोड़ा आराम लेकर सो गए थे। हम फिर से पत्तों से भरे धुंधले रास्ते पर साथ चल रहे थे, लेकिन इस बार मुझे ज़रा भी डर नहीं लग रहा था। मुझे घर पहुँचने की भी चिंता नहीं थी। मैं मोना के साथ और समय बिताना चाहता था, लेकिन बहुत जल्द हम अपनी इमारत के सामने खड़े थे।
'ठीक है, मैं... मैं शायद कल शाम को जाऊँगा,' मैंने अपनी भावनाओं को काबू में रखते हुए हकलाते हुए कहा। मैं जाना नहीं चाहता था। मैंने उसे गले लगाने की तीव्र इच्छा को दबाया।
वह मेरे करीब आई और फुसफुसाते हुए बोली, 'मैं हमारे गुप्त स्थान पर तुम्हारा इंतजार करूंगी।'
'ज़रूर, मैं इसे कैसे छोड़ सकता हूँ? मैं ज़रूर वापस आऊँगा। मुझे अपना वादा याद है।'
उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई।
उसने कहा, 'शुभ रात्रि।'

'शुभ रात्रि'
मैं सीढ़ियाँ चढ़कर घर के दरवाजे तक पहुँचा। उसी क्षण मुझे एक ज़ोरदार बिजली की गड़गड़ाहट सुनाई दी जिससे खिड़कियों के शीशे हिल गए। पल भर में तेज़ बारिश होने लगी। घर में प्रवेश करने के बजाय, मैं पीछे हट गया और मूसलाधार बारिश में दौड़कर सीढ़ियों के नीचे आ गया। मैं देखना चाहता था कि मोना अपने घर के प्रवेश द्वार तक पहुँच पाई है या नहीं। मैं सड़क पर अकेला था। वह शायद काफी तेज़ दौड़ रही होगी। मैं कुछ कदम आगे बढ़ा ताकि अगले घर की ओर जाने वाली सीढ़ियाँ देख सकूँ, इस उम्मीद में कि खिड़की से उसकी एक झलक मिल जाए। वह वहाँ नहीं थी, और खिड़कियाँ अंधेरी थीं।
मैं वापस आई और धीरे से घर में दाखिल हुई। तेज़ बारिश की आवाज़ ने दरवाज़े की आवाज़ को दबा दिया था। मेरी माँ अभी भी जाग रही थीं और दूसरे कमरे में अपने भाई से बातें कर रही थीं। मुझे हैरानी हुई कि उन्हें मेरी कमी ज़रा भी महसूस नहीं हुई। कारण चाहे जो भी हो, मुझे खुशी थी कि उन्हें मेरी कमी महसूस नहीं हुई। मुझे ज़रा भी नींद नहीं आ रही थी। मैंने फिर से बालकनी में बैठने के बारे में सोचा, लेकिन अब वहाँ बहुत ठंड और नमी थी। कमरे के ज़्यादातर हिस्से में फैले बड़े सोफे पर मेरे लिए रजाई रखी हुई थी। मैंने अपने जूते और जैकेट उतारे और रजाई ओढ़ ली।
अगले दिन, हम दोपहर तक निकलने के लिए तैयार थे। हमारी मूल योजना सुबह निकलने की थी, लेकिन चूंकि सभी लोग पिछली रात देर तक जागे थे, इसलिए हमने दोपहर की बस से निकलने की योजना बनाई।
मैंने अपनी चाची से कहा, 'चाची, अगली बार जब हम मिलने आएं तो कृपया मोना को इसके बारे में बता देना।'
'मोना? कौन?'
'मोना... जो बगल वाले घर में रहती है। कल रात बालकनी में उससे मिली थी,' मुझे अपनी आधी रात की सैर का ज़िक्र करने की ज़रूरत नहीं थी। मेरी माँ ने मुझे सवालिया निगाहों से देखा। मैं अजनबियों से बात करने वाली टाइप की नहीं थी।
मेरी चाची कुछ देर तक चुप रहीं। ऐसा लगा जैसे उन्हें मेरी बात समझ नहीं आई हो। फिर अचानक उन्होंने असहमति जताते हुए सिर हिलाया।
'क्या तुमने मोना कहा?' उसने मुझसे पूछा।

'हां, मोना'
इस बार उसकी आंखें चौड़ी हो गईं।
‘हे भगवान, ऐसा कैसे हो सकता है?’ उसने जोर से कहा।
मेरी मां ने उसकी प्रतिक्रिया पर आश्चर्य से उसकी ओर देखा।
‘मोना पड़ोस के ठाकुरों की बेटी थी। एक नखरीली बच्ची, जो हमेशा कोई न कोई शरारत करती रहती थी। वह हमेशा हम बूढ़ों की मदद करती और हमारा ख्याल रखती थी। लेकिन आप उससे कैसे मिल सकते थे?’ मेरी चाची ने कहा।
‘जैसा कि मैंने आपको बताया, मैं कल उससे बालकनी पर मिला था।’ मैंने बालकनी की ओर बार-बार इशारा करते हुए कहा।
मेरी चाची आश्चर्य से हांफ उठीं।
‘सचिन, मोना की मौत छह महीने पहले हुई थी। उसकी हत्या कर दी गई थी।’
मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे पैरों तले ज़मीन हिल रही हो। क्या ये वही मोना है जिसके बारे में आंटी बात कर रही हैं? ये कैसे मुमकिन हो सकता है? मैंने अपना वो हाथ देखा जिसे वो कल रात पकड़े हुए थी। क्या मैंने किसी भूत को चूमा है? क्या मुझे किसी आत्मा से प्यार हो गया है? आंटी ज़रूर किसी दूसरी मोना की बात कर रही होंगी।

जब मैंने अपनी माँ को यह कहते सुना, 'ओह, उसकी अविवाहित मृत्यु हो गई, वह जरूर एक कुतिया बन गई होगी,' तो मेरी दुनिया मेरे चारों ओर घूमने लगी, और फिर मेरी माँ ने मेरी सुरक्षा के लिए कुछ प्रार्थनाएँ करना शुरू कर दिया।
'बेचारा परिवार। जब एक महीने बाद पास के जंगल में एक छोटे से तालाब में उसका शव मिला तो वे सदमे में थे। चूंकि उसका शव बुरी तरह सड़ चुका था, इसलिए उसकी पहचान उस हरे स्वेटर से हुई जो उसने लापता होने वाले दिन पहना था।'
मेरी माँ ने मुझमें से उस बुराई को दूर भगाने के लिए कई बार पवित्र मंत्रों का जाप किया, जिसे वे बुराई कहते थे। लेकिन तब तक, हरे स्वेटर वाली लड़की मेरे दिल में गहराई से बस चुकी थी।

***

बादलों की गड़गड़ाहट की आवाज़ ने मेरी यादों की कड़ियाँ तोड़ दीं। पल भर में मैं अपने अपार्टमेंट में पहुँच गया। बाहर का तूफ़ान मेरे दिल की भावनाओं को प्रतिबिंबित कर रहा था। मेरे सीने में बेचैनी थी। मुझे उसके साथ उन पहाड़ियों में वापस जाने की तीव्र इच्छा हो रही थी। मैंने चिट्ठी को मेज पर रख दिया और आँखें बंद कर लीं। मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। आँखें बंद करके मैंने खाली कमरे से कहा, 'मैं आऊँगा और तुमसे मिलूँगा... बस थोड़ा इंतज़ार करो। मैं अपना वादा निभाऊँगा।'
'मैं तुम्हारा इंतजार कर रही हूँ,' उसने फुसफुसाते हुए जवाब दिया।

आह्वान

'छी! ये चिपचिपी चीज़ क्या खा रही हो?' मैंने उसकी प्लेट में रखी उस हल्के भूरे रंग की चीज़ को देखकर नाक सिकोड़ते हुए पूछा।
'यह मेरा नाश्ता है। मूंगफली और केले का मिश्रण, एकदम सेहतमंद। मूंगफली आधिकारिक तौर पर सुपरफूड है।' नेहारिका ने उस गाढ़े पेस्ट का स्वाद लेते हुए कहा। देखने में तो यह स्वादिष्ट लग रहा था, लेकिन मुझे देखने में बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा।
'वाह! आप आम लोगों की तरह नाश्ते में साधारण पोहा, इडली या परांठा क्यों नहीं खा सकते?'
'अगर मैं आम लोगों की तरह खाऊंगी तो मैं भी मोटी हो जाऊंगी और आम लोगों की तरह ही मर जाऊंगी। मैं खुद को कम से कम सौ साल जीने के लिए फिट रखती हूं,' नेहारिका ने कहा।
'कम से कम सौ। वाह, मैं तो अपने बीसवें दशक के उत्तरार्ध में भी इन्हें संभाल नहीं पा रही हूँ। ये बहुत तनावपूर्ण होते हैं।'
आपको ध्यान करना चाहिए। मुझे लगता है कि आपको इसकी जरूरत है।
मुझे उस चीज की जरूरत नहीं हो सकती जिसके बारे में मुझे पता ही नहीं है।
बस बैठ जाइए और अपने मन से सारे विचार निकाल दीजिए, और एक दिन आपको स्वयं का स्वरूप दिखाई देगा। यह जादुई है। आपको पता चलेगा कि आप वास्तव में कौन हैं।

मैं मुस्कुराया और बोला, 'दरअसल, पिछली बार जब मैंने ध्यान करने की कोशिश की थी, तो मेरा मन नई फिल्म की तरफ भटक गया और मुझे एक खूबसूरत अभिनेत्री की छवि दिखाई दी। बिलकुल भी बेकार अनुभव नहीं था।' यह सच था। ध्यान मुझे समझ नहीं आता था। नेहारिका ने मुझे कई बार ध्यान के बारे में बताया था। उसका दावा था कि उसे चेतना के अगले स्तर का अनुभव होता है, या जो भी वह होता है। लेकिन मुझे कुछ भी अनुभव नहीं होता था, मेरा मन फिल्मों से लेकर मेरे काम तक, हर बात पर भटकता रहता था और अंततः मेरा तनाव ही बढ़ता था।
अगर इससे भी बात नहीं बनती, तो आपको यात्रा के लिए समय निकालना होगा। आपको यह अच्छा लगेगा।
वह इस बारे में बिल्कुल सही थी। यात्रा ने वास्तव में मेरी मदद की। यात्रा मेरे लिए एक आवश्यक विराम थी, इसने मुझे ऊर्जा से भर दिया और कभी-कभी चीजों को देखने का मेरा नजरिया भी बदल दिया।
मैंने उससे पूछा, 'क्या तुम दुनिया घूमने जाना चाहती हो?'
नहीं। मैं एक देश से दूसरे देश घूमना, होटलों में ठहरना और बस या ट्रेन की खिड़की से ज़्यादातर चीज़ें देखना नहीं चाहता। मैं शहर या गाँव को महसूस करना चाहता हूँ। और इसे महसूस करने के लिए आपको इसे अलग नज़रिए से देखना होगा। और इसके लिए... बहुत समय चाहिए, इसीलिए सौ साल का समय भी काफ़ी नहीं है।
'ओह, तो आप जीवन भर यात्रा करते रहना चाहते हैं। यहां तक कि जब आप चलने के लिए छड़ी लेकर चल रहे हों तब भी।'
'मुझे कभी छड़ी की जरूरत नहीं पड़ेगी। उससे पहले मैं उड़ना सीख जाऊंगी,' उसने मुस्कुराते हुए कहा।
उसकी बात सुनकर मुझे हल्की सी हंसी आ गई, मन ही मन कल्पना कर रही थी कि वो किसी सुपरवुमन की तरह बादलों में उड़ रही हो। मैंने कहा, 'तुम्हें जानते हुए तो मुझे हैरानी नहीं होगी अगर तुम गुरुत्वाकर्षण को भी मात दे दो। वैसे, ध्यान में तुमने क्या देखा? तुम असल में हो कौन?' मैंने नेहारिका से पूछा।
कुछ पल रुककर, मानो उनके मन में कुछ कौंधा हो, उन्होंने शांत और गंभीर स्वर में कहा, "मैं अभी भी इस प्रक्रिया में हूँ, लेकिन मुझे पता है कि एक दिन मैं इसे पा लूँगी। यकीनन यह हिमालय में कहीं है। कभी-कभी मेरे मन में छवियाँ इतनी स्पष्ट होती हैं,

मानो मैं पहले से ही वहाँ पहुँच चुकी हूँ। और वहाँ कुछ जादुई सा है। मुझे एक तीव्र खिंचाव महसूस होता है, और एक दिन मैं वहाँ पहुँच जाऊँगी।"
इससे पहले कि मैं उस पर हंस पाता, वह अचानक गंभीर होना छोड़कर मुस्कुराने लगी और मेरी हल्की सी उभरी हुई तोंद की ओर उंगली करते हुए बोली, 'वैसे मानव, तुम्हें इसे देखना चाहिए। तुम्हें कभी-कभी जिम जाना चाहिए।'
नेहारिका, जिसका नाम ओस की बूंदों से जुड़ा है। शीतल और कोमल। इस नाम से शायद किसी को लगे कि वह एक प्यारी, नन्ही, संवेदनशील लड़की है, जिसे फूल बहुत पसंद हैं और जो अपनी कार का पंचर ठीक करवाने जैसी छोटी-मोटी चीजों के लिए भी किसी को बुलाती है। लेकिन असल में वह बिल्कुल इसके विपरीत थी। पंद्रह साल की उम्र तक उसने अपने गैराज में एक रेसिंग बाइक को खोलकर फिर से जोड़ दिया था। बीस साल की उम्र तक उसने मुंबई से लद्दाख तक की बाइक यात्रा पूरी कर ली थी। फिटनेस ही उनके जीवन का मूलमंत्र था। हफ्ते में चार दिन जिम जाने के अलावा, वह ताइक्वांडो और किकबॉक्सिंग का प्रशिक्षण भी लेती थीं।
'मैं वज़न नहीं उठा सकती, मैं इसे और ज़्यादा चोट नहीं पहुँचाना चाहती।' मैंने अपनी थोड़ी मुड़ी हुई बांह की ओर इशारा करते हुए कहा। स्कूल में मेरा एक एक्सीडेंट हुआ था जिसमें मेरी कोहनी का जोड़ कुचल गया था। डॉक्टरों ने उसे ठीक कर दिया और मेरी बांह ज़्यादातर कामों के लिए ठीक हो गई, लेकिन जिम जाना और भारी वज़न उठाना अभी भी मुमकिन नहीं था।
अगर उनके मन में फिटनेस की चिंता नहीं होती, तो घूमने-फिरने का जुनून हमेशा बना रहता था। वे अपनी अगली यात्राओं की योजना बनाती रहती थीं। उन्हें भारत के भूगोल, विशेषकर हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड का अच्छा ज्ञान था। ध्यान करते समय उन्हें पहाड़ों के बीच किसी जादुई जगह के दर्शन होते रहते थे और वे उसकी तलाश में लगी रहती थीं। एक बार जब उन्हें वह जगह मिल गई, तो मैं भी उनके साथ उस यात्रा पर गया। वह यात्रा मनाली की थी। मुझे पता था कि उन्हें मनाली जैसे मशहूर पर्यटक शहर में दिलचस्पी नहीं थी, बल्कि मनाली के आसपास की किसी कम प्रसिद्ध जगह पर जाना था। वे कभी भी पर्यटकों के जाने-माने रास्तों पर नहीं चलती थीं। वे अपने मन की सुनती थीं।

यह मेरी उसके साथ पहली यात्रा नहीं थी, इससे पहले मैं उसके साथ कसौली जा चुका था। कसौली चंडीगढ़ के पास एक छोटा सा हिल स्टेशन है। यह एक सुंदर जगह है, जहाँ के नज़ारे बेहद खूबसूरत हैं, खासकर सूर्यास्त देखने का नज़ारा। लेकिन उसे इससे संतुष्टि नहीं मिली। वह उस छोटे से हिल स्टेशन पर घूमती रही और कुछ ही घंटों में उसे कुछ और देखने को नहीं मिला। उसने कहा कि यह जगह उसके लिए बहुत भीड़भाड़ वाली और छोटी थी। हम अगली सुबह तक शहर लौट आए। असल में वह कुछ ऐसी जगहों को देखना चाहती थी जहाँ बहुत कम लोग गए हों या शायद कोई भी न गया हो। अगर आप लोग सोच रहे हैं कि हमारा रिश्ता क्या है, तो मैं खुद भी इस बारे में पक्का नहीं हूँ। हम दोस्त हैं, ऐसे दोस्त जिन्हें सालों तक मिलने या बात करने की ज़रूरत नहीं पड़ती, लेकिन जब हम साथ होते हैं तो ऐसा लगता है जैसे कुछ बदला ही नहीं है। उसके साथ ऐसा लगता था जैसे मेरा और मेरी ज़िंदगी का एक अलग ही रूप सामने आ गया हो, जो हमारे साथ होने पर ही जागृत होता है। शायद यह प्यार था, लेकिन न तो उसने और न ही मैंने इसे स्पष्ट करने या अंतिम रूप देने की कोशिश की। सालों बाद भी अगर हम मिलते हैं, तो हम उसी अलग तरह की ज़िंदगी में लौट जाते हैं जिसे सिर्फ़ हम ही अनुभव और समझ सकते हैं। जब मैं उसके साथ था तो मैं एक अलग ही इंसान था।
मनाली ट्रिप की बात करें तो, हमने चंडीगढ़ के अपने होटल से सुबह पाँच बजे चेक आउट किया। मैं आराम से बुफे नाश्ता करने के बाद कुछ घंटों बाद निकलना चाहता था, लेकिन पहाड़ों में नाश्ता करने का विचार उसका था। खैर, हमारे होटल ने ठंडे सैंडविच और जूस का नाश्ता पैक करने की सुविधा दी थी, जिसे मैंने अपनी कार में रख लिया। हम साथ थे, लेकिन अलग-अलग चले। वह अपनी देसी साइकिल पर थी और मैं अपनी कार में। कार ही मेरा एकमात्र विकल्प था क्योंकि अगर मैं कुछ मिनट से ज्यादा देर तक साइकिल चलाता तो मेरी थोड़ी मुड़ी हुई बांह में दर्द होने लगता।
हमने शाम तक शिमला पहुँचने का प्लान बनाया था। चंडीगढ़ से कालका पहुँचने में हमें एक घंटा लगा और शिमला पहुँचने में तीन घंटे। शिमला वाला रास्ता चुनने का विचार मेरा था। शिमला में ठहरने के लिए कई अच्छे विकल्प हैं और मैं किसी आरामदायक जगह पर रुकना चाहता था। अगर मैंने रास्ता तय करने का काम नेहारिका पर छोड़ दिया होता, तो वह देर रात तक बाइक चलाती रहती और फिर किसी भी जगह रुक जाती, जो कि ट्रक ड्राइवरों के लिए बने ढाबे से लेकर पाँच सितारा होटल तक कुछ भी

हो सकता था। इस तरह की बेफिक्री और अनिश्चितता मुझे डराती थी। मुझे यात्रा करना बहुत पसंद था, लेकिन मैं सब कुछ पहले से प्लान किया हुआ चाहता था। दरअसल, शायद यही एक कारण है कि हम कभी कपल नहीं बन पाए, जबकि हमारे कई कॉमन दोस्त हमें कपल समझते थे। उसे अनिश्चितता पसंद थी और मुझे इससे नफरत थी। मुझे सब कुछ प्लान करना और जोखिम से बचना पसंद था। उसे जोखिम लेना, आम जानकारी से परे जाना और सावधानियों का पालन न करना पसंद था।
उनका जन्म मुंबई में हुआ था, लेकिन मैं उन्हें एक ठेठ मुंबईकर या महाराष्ट्रीयन नहीं कह सकता। राजस्थान के एक बोर्डिंग स्कूल से अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद, वे कुछ समय के लिए मुंबई, बैंगलोर, हैदराबाद, दिल्ली और सिक्किम जैसे विभिन्न शहरों में रहीं। उन्होंने दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से स्नातक की पढ़ाई की। हाल ही में, मुझे याद नहीं रहता था कि वे कहाँ रहती थीं, क्योंकि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। हमेशा वही मुझसे संपर्क करती थीं, और मैं उन्हें किसी भी हालत में लंबे समय तक एक जगह पर नहीं पाता था। मुझे आश्चर्य होता है कि उन्होंने स्नातक की पढ़ाई कैसे पूरी की। उन्हें पहाड़ों से बहुत प्यार था और वे हमेशा पहाड़ों पर आती रहती थीं। जब भी वे हिमालय के इस हिस्से में, चंडीगढ़/कालका की तरफ से आतीं, मैं उनके साथ चला जाता था। उन्होंने कभी मुझसे आने या न आने के लिए नहीं कहा। वे बस फोन करके बता देती थीं कि वे आ रही हैं और मैं उनके साथ चल पड़ता था। किसी चीज के लिए अनुरोध करना या अनुमति मांगना उनके स्वभाव में नहीं था। जब वे कुछ करना चाहती थीं और कर सकती थीं, तो वे संकोच नहीं करती थीं। जब भी वह इधर आती, फोन करके कहती, ‘मैं कल दिल्ली से फलां जगह घूमने जा रही हूँ।’ वह ‘हाय, कैसी हो?’ जैसी औपचारिक अभिवादन की परवाह नहीं करती थी। मेरा हालचाल पूछ लेती, पर बाद में। लेकिन जब भी फोन करती, तो हमेशा जरूरी होता था। वह आधी रात को या सुबह तड़के फोन करती। लेकिन ‘क्या तुम सो रही थी?’ या ‘माफ़ करना, परेशान कर रही हो’ जैसे सवाल नहीं होते थे। वह सीधे मुद्दे पर आती थी।
खैर, जब भी वह मुझे फोन करके किसी नए इलाके को घूमने के बारे में पूछती, तो मैं कहता, 'ठीक है, मैं चंडीगढ़ में आपके साथ चलूँगा।' वह बस इतना ही कहती, 'ठीक है।' और मैं तुरंत ऑफिस से छुट्टी लेकर उसके साथ जाने का प्लान बना लेता। उसका किसी जगह को 'घूमना' किसी पर्यटक के घूमने के तरीके से अलग था। यह एक तरह

की बेफिक्री भरी सैर थी। किसी तरह, मुझे यह बेफिक्री भरी सैर आम पर्यटन यात्राओं से ज़्यादा अच्छी लगती थी। आम पर्यटन यात्राओं में, हम एक खास तरह के अनुभव की उम्मीद करते हैं और फिर हमें वह मिलता है, या हम उसे ठीक उसी तरह पाना पसंद करते हैं जैसा हमने सोचा था। लेकिन इन बेफिक्र सैरों में कुछ भी पहले से तय नहीं होता था, सब कुछ एक आश्चर्य की तरह होता था। हालाँकि मुझे योजना बनाना पसंद है, फिर भी यह अनिश्चितता मुझे आकर्षित करती थी।

कुछ मौकों पर जब मैं कुछ अपरिहार्य परिस्थितियों के कारण उसके साथ नहीं जा सका, तो वह मुझसे दोबारा नहीं पूछती और अकेले ही अपनी यात्रा जारी रखती। एक बार मैंने उससे पूछा कि अगर वह मुझे लगभग बारह घंटे पहले सूचना देने के बजाय पहले से बता देती, तो मैं योजना बना सकता था और उपलब्ध हो सकता था। उसने जवाब दिया कि योजना बनाने से सारा मज़ा किरकिरा हो जाता है, अगर हम बहुत ज़्यादा योजना बना लें तो जगहें अपना असली रूप छिपा लेती हैं।

शिमला में अपने अलग-अलग कमरों में आराम से रहने के बाद, हम मनाली के लिए निकल पड़े। आमतौर पर इसमें लगभग छह घंटे लगते हैं, लेकिन हम रास्ते में कई जगहों पर रुके, जहाँ नेहारिका स्थानीय लोगों से बातचीत करती, खासकर छोटी-छोटी चाय-नाश्ते की दुकानों पर। कभी-कभी वह कुछ खाती भी नहीं, बस उनसे बात करने और उनकी कहानियाँ सुनने के लिए पैसे दे देती। जब नेहारिका अपना हेलमेट उतारती और उसमें से एक खूबसूरत लड़की का चेहरा निकलता, तो स्थानीय लोग थोड़ा अचंभित और हैरान हो जाते, क्योंकि वे दाढ़ी वाले, लंबे बालों वाले आदमी की उम्मीद कर रहे थे। लेकिन कुछ ही देर में नेहारिका उन्हें सहज कर देती और वे खुलकर बातें करने लगते और उसे दिलचस्प कहानियाँ सुनाते। कई बार स्थानीय लोग हमें अपने गाँव में रुकने का न्योता देते या हमें स्वादिष्ट स्थानीय भोजन परोसते, जो हमें शहर या किसी होटल में कभी नहीं मिलता। लेकिन उनकी कहानियाँ कहीं ज़्यादा रोचक थीं। ये कहानियाँ तेंगुओं के बारे में होतीं, उन छोटे बच्चों की आत्माओं के बारे में जो पैरों से चिपक जाती हैं, या एक ऐसे आदमी के बारे में जो दावा करता था कि उसकी शादी एक चुड़ैल से हुई है... एक पिछल पेरी, जिसके पैर उल्टे मुड़े होते हैं। कई कहानियां देवताओं के जादू और सटीक भविष्यवाणियों के बारे में थीं। एक अंग्रेज महिला की वरदान देने वाली समाधि। आदमखोर तेंदुए। हज़ार साल पुराने ऋषि। ऐसी अनगिनत

कहानियां थीं। नेहारिका और मुझे उनसे बहस करना और कभी-कभी उन्हें दूसरे क्षेत्रों से सुनी कहानियां सुनाना बहुत अच्छा लगता था।
जब हम मनाली पहुँचे और होटल में चेक-इन किया, तब शाम के पाँच बज रहे थे, और मैं भारी भोजन के बाद लंबी नींद की उम्मीद कर रहा था। इससे पहले कि मैं खाना ऑर्डर कर पाता, नेहारिका ने अपने कमरे से फोन किया। वह बाहर जाना चाहती थी।
लेकिन मुझे बहुत भूख लगी है।
'हमारे पास बाहर कुछ होगा,'
थकान के बावजूद मुझे सैर का आनंद आया। सड़क पर्यटकों से भरी हुई थी, लेकिन शुक्र है कि ज़्यादा कारें नहीं थीं। मुझे लगता है कि शाम 4 बजे के बाद उस इलाके में कारों का प्रवेश वर्जित था। रंग-बिरंगी टी-शर्ट बेचने वाली छोटी-छोटी दुकानें थीं। मैंने एक मज़ेदार एलियन ग्राफ़िक वाली टी-शर्ट खरीदी। आमतौर पर नेहारिका को ऐसी टी-शर्ट बहुत पसंद आती थीं, लेकिन आज उसने कोई नहीं खरीदी।
‘नेहारिका, बॉब मार्ले के ग्राफिक्स वाला वो देखो... क्या तुम्हें पसंद है?’
उसने अपना सिर हिलाया।
‘उस पीले वाले के बारे में क्या ख्याल है जिस पर हर जगह ‘ओम’ छपा हुआ है?’
उसने फिर से अपना सिर हिलाया।
दुकानदार से मोलभाव करके सौदा पक्का करने के बाद जब मैं मुड़ा तो देखा कि नेहारिका आगे बढ़ चुकी थी। यह उसका अजीब व्यवहार था। मैं आगे बढ़ा और उसे सड़क पर एक नाई की दुकान को देखते हुए खड़ा पाया।
मैंने उसे चौंकाने की कोशिश करते हुए पूछा, 'क्या तुम बाल कटवाना चाहती हो?'
लेकिन वह शांत रही।
नहीं, लेकिन आपको एक की जरूरत है।
'क्या सच में?'
'हां,' उसने इस बार अपनी शरारती मुस्कान के साथ कहा।
मैं अंबाला से एक मंगवा लूंगा।
‘मुझे लगता है आपको यहीं से एक ले लेना चाहिए,’ उसने कहा, इस बार उसकी आवाज़ में गंभीरता थी, और वह अभी भी दुकान की ओर देख रही थी। यह अजीब था। मैंने दुकान के अंदर देखा। दुकान में कुछ भी खास नहीं था। यह एक नाई की दुकान थी

जिसमें बहुत कम सामान था। एक दर्पण, एक शेल्फ और केवल दो लकड़ी की आर्मचेयर थीं जिन्होंने लगभग पूरी जगह घेर रखी थी। एक कुर्सी पर एक आदमी आँखें बंद करके बैठा था, शायद झपकी ले रहा था।
‘क्यों? इस दुकान में ऐसा क्या खास है?’ मैंने नेहारिका से पूछा।
‘मुझे... मुझे नहीं पता। लेकिन कृपया यहीं से बाल कटवा लीजिए,’ उसने कहा।
उसने निवेदन किया।
इस बार मुझे निराशा हुई। यह व्यवहार अजीब था। ऐसा क्यों था?
वह इस बात को लेकर बहुत गंभीर है कि मैं मनाली की एक जर्जर दुकान से बाल कटवाऊं।
‘लेकिन मैं यहाँ से बाल नहीं कटवाना चाहता,’ मैंने कहा और शुरू कर दिया।
आगे बढ़ते हुए। नाई उन गिने-चुने लोगों में से हैं जो आपकी निजता में प्रवेश कर सकते हैं और आपको छू सकते हैं। आप किसी भी नाई के पास नहीं जा सकते। मैं पिछले पंद्रह वर्षों से अधिक समय से एक ही नाई से अपने बाल कटवा रहा था।
‘वरुण’
अब क्या?
'कृपया?'
‘क्या? तुम्हें क्या हो गया है? यह मूर्खतापूर्ण व्यवहार क्यों?’
वह चुप रही, और फिर उसने दोबारा दुकान की ओर देखा।
'कृपया, मुझे नहीं पता क्यों, लेकिन इस दुकान में कुछ तो गड़बड़ है।'
‘फिर तुम जाओ और बाल कटवा लो।’
लेकिन वह स्पष्ट रूप से पुरुषों का हेयरड्रेसर है।
मैंने कुछ नहीं कहा। मैंने नेहारिका को पहले कभी इस हालत में नहीं देखा था।
ठीक है। तुम एक पागल लड़की हो; तुम्हें यह पता होना चाहिए। और तुम पर कर्ज है।
मैंने कहा, 'मुझे भी एक चाहिए,' और मैं दुकान में चला गया।
नेहारिका मुस्कुराई।
मैं तुम्हारा बाहर इंतजार करूंगा। तीसरे व्यक्ति के लिए ज्यादा जगह नहीं है।
दुकान में मौजूद व्यक्ति,'
मैंने उसे घूरकर देखा और पहली बार जबरदस्ती बाल कटवाने के लिए अंदर चली गई।

बचपन से ही, जब मेरे पिताजी मुझे नाई के पास भेजा करते थे।
दुकान में तंबाकू और इत्र की मिली-जुली खुशबू आ रही थी। वह आदमी अभी भी सो रहा था। एक पल के लिए मुझे लगा कि कहीं वह मर तो नहीं गया। मैंने खाली लकड़ी की कुर्सी को हिलाया और वह आदमी फिर से जाग उठा।
मैंने अपने सिर की ओर इशारा करते हुए कहा, 'बाल कटवाओ,' मानो वह मुझे समझ ही न पाए। उसने सिर हिलाया और एक प्यारी सी बिना दांतों वाली मुस्कान दी।
‘आओ... आओ,’ उसने उठते हुए कहा और अपनी कुर्सी के पीछे लटके एक छोटे तौलिए से उसे साफ किया। मैं उसी कुर्सी पर बैठ गया जिस पर वह बैठा था।
मेरे गले में सफेद कपड़ा बांधने के बाद उसने पूछा, 'तुम कहाँ से हो?'
‘अंबाला’
‘पर्यटक?’
'हाँ,' यह तो स्पष्ट था। उसने एक स्प्रे बोतल ली और बिना किसी चेतावनी के मेरे बालों और चेहरे पर ढेर सारा ठंडा पानी छिड़क दिया। मैं लगभग चौंककर हांफने ही वाली थी और उसकी तरफ देखने लगी। उसने फिर से एक बेजान मुस्कान दी। मुझे लगा जैसे उसने जानबूझकर मेरे नींद से भरे चेहरे को जगाने के लिए ऐसा किया हो। कुछ ही सेकंड में मेरा आश्चर्य दूर हो गया और मुझे ताज़गी का एहसास हुआ।
फिर उस आदमी ने मेरे बाल काटना शुरू कर दिया। उसका चेहरा थोड़ा थका हुआ और झुर्रियों से भरा हुआ लग रहा था, लेकिन उसकी उंगलियां बहुत फुर्तीली थीं। कैंची ऐसे चल रही थी मानो बिजली से भरी हो। उसने अपनी वही आम नाई वाली बातें शुरू कर दीं। मेरे बालों के प्रकार से लेकर, मुझ पर क्या अच्छा लगेगा, मेरा चेहरा कैसा है, सब कुछ बताने लगा। नाई ही तो होते हैं जो आपकी शक्ल-सूरत की आलोचना कर सकते हैं, फिर भी आपको बुरा नहीं लगता। अगले कुछ ही मिनटों में बिना उससे कुछ पूछे ही मुझे उसके बारे में बहुत कुछ पता चल गया। मुझे पता चला कि उसका नाम शंभू था। वह भगवान शिव का भक्त था। वह पास के ही एक गांव से था, जहां उसके माता-पिता का जन्म और अंत हुआ था। उसका बेटा अब शहर में रहता है और गांव वापस आना पसंद नहीं करता। उसका बेटा उसे शहर आने के लिए बुलाता है, लेकिन वह जानता है कि वह उसे वहां नहीं चाहता। लेकिन वह खुद यहां खुश था। उसे एक साल के लिए देवता के माध्यम के रूप में चुना गया था।

जब उसने मुझे दरवाजे की तरफ मुड़ने को कहा, तो मैंने देखा कि नेहारिका अभी भी बाहर खड़ी थी। मैंने सोचा था कि बाल कटवाते समय वह शायद आगे चली गई होगी। लेकिन वह वहीं खड़ी थी, मेरे बाल कटवाने की उबाऊ प्रक्रिया को देख रही थी। मुझे समझ नहीं आया कि उसे इसमें क्या दिलचस्पी हो सकती है। मैंने उसे देखकर मुस्कुराया, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे वह मेरी तरफ देख रही हो, पर कुछ समझ नहीं रही हो। शायद वह किसी गहरी सोच में डूबी हुई थी।
अचानक शंभू की बातें और कैंची की आवाज़ बंद हो गई। मैंने मुड़कर उसे देखा। वह एक हाथ में कैंची और दूसरे हाथ में कंघी लिए खड़ा था। मैंने सोचा कि शायद बातों में खो जाने के कारण उसका ध्यान भटक गया होगा और उसने कुछ गलत कटिंग कर दी होगी, और अब सोच रहा होगा कि उन्हें कैसे ठीक करे। लेकिन तभी मुझे एहसास हुआ कि वह मूर्ति की तरह एकदम स्थिर खड़ा था। उसकी आँखें पलकें नहीं झपका रही थीं। अचानक, वह मुस्कुराया। उसका चेहरा पहले से ज़्यादा चमकीला लग रहा था, उसकी आँखें पहले से ज़्यादा गहरी। मैंने ईश्वर का धन्यवाद किया कि उसने उसे कम से कम तब तक जीवित रखा जब तक मैं यहाँ से निकल नहीं गया।
'मा...ला...ना...' आदमी ने फुसफुसाते हुए कहा।
'क्या?' मैंने पूछा
'मलाना... तुम्हें अवश्य... तुम्हें अवश्य... तुम्हें अवश्य,'
'क्या?' मैंने इस बार और ज़ोर से पूछा। शायद इस आदमी को कोई मानसिक बीमारी का दौरा पड़ रहा था। मुझे उसकी जान का डर लग रहा था... और अगर यहीं उसकी मौत हो गई तो मेरी हालत भी खराब हो जाएगी। मैं उसका आखिरी ग्राहक होऊँगा... मैं यह बात किसी को कैसे समझाऊँगा?
इससे पहले कि मैं अपने विचारों में और गहराई से उतर पाती, बूढ़ा आदमी एकदम होश में आ गया। उसने मेरी तरफ देखा... उसे आश्चर्य हुआ कि मैंने उसकी तरफ सिर घुमा लिया था। फिर उसने धीरे से मेरा सिर वापस शीशे की तरफ कर दिया, जैसे हेयरड्रेसर करते हैं, और बाल काटना शुरू कर दिया। मुझे लगा जैसे वह मेरे साथ कोई शरारत कर रहा हो।
'भाई, ये क्या हुआ? तुम्हें क्या हुआ?'
'क्या?'

‘अभी... जब तुम रुके...’
‘मैंने तब रुकना बंद कर दिया... जब’
मैंने उसकी तरफ देखा, मेरे सवालों से वह सचमुच चिढ़ गया था। फिर मुझे एहसास हुआ कि वह मज़ाक नहीं कर रहा था, शायद उम्र के साथ दिमाग में कुछ खराबी आ गई थी। शायद अल्ज़ाइमर या कुछ ऐसा ही। उसने मेरे बाल अच्छे से काटे। शायद वह उदास था, क्योंकि उसके बेटे ने उसे छोड़ दिया था। नहीं तो इतनी उम्र और इतनी स्वास्थ्य समस्याओं के बावजूद वह काम क्यों करता?
मैंने उसे बाल कटवाने के लिए उसके सामान्य शुल्क से अधिक भुगतान किया और उसे धन्यवाद दिया, और उसने बदले में मुझे बहुत-बहुत धन्यवाद दिया।
‘लो... मैंने अपने बाल कटवा लिए। हालांकि मैं सच में बाल कटवाना नहीं चाहती थी... मुझे जबरदस्ती बाल कटवाने के लिए धन्यवाद...’ मैंने कहा।
नेहारिका ने बोलने से पहले कुछ पल इंतजार किया।
‘क्या उसने कुछ कहा...’
'कुछ नहीं, वो बूढ़ा हो रहा है, थोड़ा सनकी भी हो गया है, लेकिन वो कैंची चलाने में माहिर था।'
वह थोड़ी उलझन में और सोच में डूबी हुई लग रही थी।
‘क्या उसने तुम्हें कोई कहानी सुनाई? कुछ दिलचस्प?’
‘मैंने उससे उसकी गर्लफ्रेंड्स के बारे में पूछने की कोशिश की, लेकिन उसने मुझे कुछ नहीं बताया,’ मैंने मज़ाक में कहा। नेहारिका का मतलब देवताओं और भूतों की उन कहानियों से था जो हम आमतौर पर लोगों से सुनते हैं। लेकिन उस बूढ़े आदमी ने मुझे ऐसी कोई बात नहीं बताई थी।
नेहारिका ने अपनी आँखें घुमाईं।
‘वैसे भी, नए हेयरकट में तुम अच्छे लग रहे हो,’ आखिरकार उसने कहा। हम मॉल रोड पर टहलते रहे, तभी ताज़े तले हुए समोसों की खुशबू ने मुझे एक दुकान की ओर खींच लिया। नेहारिका मेरी इस मिठाई के प्रति कमजोरी जानती थी। ठंडे मौसम में तो यह और भी ज़्यादा ललचाती थी।
मैंने समोसे तल रहे व्यक्ति को सीधे आदेश दिया, 'मेरे लिए दो समोसे, साथ में थोड़ी चटनी।' उसने सिर हिलाया और मुझे एक मेज पर बैठने के लिए कहा।

मुझे समोसा नहीं चाहिए, सिर्फ मसाला चाय चाहिए।
‘मुझे पता है, ये दोनों समोसे मेरे लिए हैं।’ मैंने कहा और आसपास खाना परोस रहे एक लड़के की तरफ मुड़ी। जब मेरी नज़रें मिलीं, तो मैंने उसे बुलाया और बिना चीनी वाली मसाला चाय मंगाई। कुछ ही मिनटों में मेरे समोसे और निहारिका की चाय मेज पर आ गई। समोसे का आनंद लेते हुए, मेरे विचार बेचारे नाई शंभू की तरफ चले गए।
‘तुम्हें पता है, एक तरह से तुमने अच्छा काम किया है।’
‘मैं बहुत सारे अच्छे काम करती हूँ, आप किस काम की बात कर रही हैं?’ नेहारिका ने बनावटी मुस्कान के साथ कहा।
‘आपने ही मुझे उस नाई से बाल कटवाने के लिए कहा था,’
'सच में, मुझे इसका पछतावा हो रहा था। मुझे लगा मैंने आपसे एक बेवकूफी भरी बात पूछ ली।'
'बेशक, मुझसे इसके लिए पूछना तुम्हारी मूर्खता थी, लेकिन जैसा कि कहते हैं, हर चीज किसी न किसी कारण से होती है।'
'ओह, तो फिर ऐसा किस कारण से हुआ है, आपके लुक को बेहतर बनाने के अलावा?'
‘धन्यवाद। वास्तव में, शंभू के व्यवसाय में थोड़ा योगदान देकर मुझे अच्छा लग रहा है।’
'शंभू?'
‘नाई का नाम शंभू है... ओह, अब मैं उसके बारे में बहुत कुछ जान गया हूँ। मुझे पता है कि वह पास के ही एक गाँव का रहने वाला है। उसका एक बेटा है, जो शहर में बस गया है और भी बहुत कुछ... जैसे कि वह भगवान शिव का भक्त है, और वह अपने गाँव के देवता का माध्यम रहा है। वह अपने बारे में सब कुछ बताता चला गया।’
वाह, आप उसके बारे में मुझसे कहीं ज्यादा जानते हैं।
‘बेशक, आप एक रहस्यमय व्यक्तित्व हैं और अपनी तरह के अनोखे इंसान हैं।’
'मैं इसे तारीफ के तौर पर लूंगी,' उसने कहा और चाय की ट्रे लेकर आ रहे लड़के को इशारा किया।
‘आपको पता है शंभू की उम्र साठ साल से अधिक होगी, और फिर भी उसे जीवनयापन के लिए काम करना पड़ता है। और उसका स्वास्थ्य पहले से ही खराब हो रहा है।’
‘ओह, क्या वह ठीक नहीं थे?’
मुझे लगता है कि उसे दिमाग से जुड़ी कोई समस्या है। शायद अल्जाइमर या कुछ और।

'यह गंभीर है। उम्र के साथ यह और खराब होता जाता है, लेकिन आप कैसे कह सकते हैं कि उसे यह बीमारी है?'
मैं डॉक्टर नहीं हूँ, इसलिए हो सकता है मैं गलत हूँ। लेकिन मेरे बाल काटते समय वह लगभग बेसुध सा हो गया था। एक पल पहले वह कैंची चलाते हुए चहचहा रहा था और शोर मचा रहा था, और अगले ही पल वह मूर्ति की तरह शांत और स्थिर हो गया। एक पल के लिए मुझे उसके लिए डर लग गया था।
नेहारिका अचानक बातचीत में अधिक रुचि लेने लगी। उसने चाय का कप एक तरफ रख दिया और मेज पर आगे की ओर झुक गई।
'आखिर उसे हुआ क्या? इस तरह खो जाना अल्जाइमर का लक्षण नहीं है।'
“खैर, कुछ और भी हो सकता है। देखो, वो एकदम रुक गया, जैसे किसी रोबोट का प्लग अचानक किसी ने निकाल दिया हो। ठीक उसी जगह पर, हाथ में कैंची और कंघी लिए। एक पल के लिए मैं डर गया, कहीं उसे कोई मानसिक दौरा तो नहीं पड़ गया। मुझे तो लगा कि वो वहीं मर जाएगा। फिर कुछ सेकंड बाद वो मुस्कुराया। वो एक डरावनी मुस्कान थी। फिर उसने कुछ बड़बड़ाया जिसका कोई मतलब नहीं था। और कुछ ही सेकंड में, वो फिर से होश में आ गया। जब मैंने उससे पूछा कि क्या हुआ, तो उसे कुछ पता ही नहीं था। ये तो भूलने की बीमारी ही है, है ना?”
'बहुत दिलचस्प, उस हालत में उसने क्या कहा?'
मुझे नहीं पता, मुझे लगता है कि यह माला... देवी जैसा कुछ था।
'क्या आप बीमार हैं?'
‘वो रुक-रुक कर बोलता था, जैसे ‘मां ला दे वी’।’ मैंने शंभू के शब्दों को उसी तरह दोहराकर दिखाया और हंस दिया।
'आपका मतलब है कि वह मूर्ति की तरह स्थिर हो गया और फिर उसने वे शब्द कहे, और अंत में वह सामान्य स्थिति में लौट आया और उसे याद नहीं था कि क्या हुआ था?'
'हां, लगभग यही हुआ था।'
‘मा ला देवी’ कहते हुए नेहारिका ने अपनी आंखें बंद कर लीं और गहरी सोच में डूब गई।
तभी लड़कों का एक समूह दुकान में दाखिल हुआ और हमारे बगल वाली मेज पर बैठ गया। उन्होंने चाय और समोसे का ऑर्डर दिया।

खाना परोसने के बाद जब वेटर जाने ही वाला था, तो लड़कों में से एक ने उसे आवाज़ दी, 'अरे भाई!' उसकी आवाज़ दबी हुई थी, लेकिन हमारी टेबलें पास-पास होने के कारण हम उसे सुन पाए। लड़का वापस उसके पास आया।
‘तुम्हें पता है हमें क्रीम कहाँ मिल सकती है,’
वेटर ने कोई जवाब नहीं दिया।
‘अरे, घबराओ मत... ये लो,’ मेज पर बैठे लड़कों में से एक ने उसे एक नोट थमा दिया।
वेटर पास आया।
‘कुछ दुकानों के बाद एक पान की दुकान है। उन्हें बता देना कि तुम हमारी दुकान से आ रहे हो। वो तुम्हें पान दे देगा।’
‘क्या यह अच्छा होगा? अच्छी गुणवत्ता का होगा?’
वह केवल सबसे बेहतरीन वाला, मलाना क्रीम ही रखता है।
तभी मुझे याद आया। यह वही शब्द था जो शंभू ने कहा था।
‘नेहारिका, यह माला नहीं थी, यह 'मलना' थी। उसने पहले मलाना कहा, और फिर देवी।’
नेहारिका ने प्रश्नवाचक दृष्टि से मेरी ओर देखा।
'That barbar, Shambhu, he said Malana, not Mala'
नेहारिका ने अपने फोन में वे शब्द टाइप किए।
‘यह एक गाँव है,’ उसने सर्च इंजन में तस्वीरों को देखते हुए कहा, ‘मुझे लगता है कि हमें वहाँ जाना चाहिए, क्या हम जा सकते हैं?’ उसने फिर से कहा।
‘क्यों? इस गांव में ऐसा क्या खास है?’
मुझे नहीं पता, बस देखना चाहता हूं।
नेहारिका फिर से उसी तरह के मूड में थी, जहाँ वह बिना किसी तर्क के कोई फैसला ले लेती थी। पहले तो उसने मुझे वो बाल कटवाने के लिए मजबूर किया था, और अब इस गाँव में जाने का फैसला किया था। हालाँकि मुझे ये फैसला बाल कटवाने वाले फैसले से कम अजीब लगा, लेकिन ये हमारी योजना के मुताबिक था, यानी बिना किसी मकसद के इधर-उधर घूमना। मैं कुछ दिलचस्प तस्वीरें खींचने के लिए उत्सुक थी। तो, उसी शाम हमने होटल के रिसेप्शन से जगह पूछी, और उन्होंने एक टैक्सी ड्राइवर को बुलाया। टैक्सी ड्राइवर के आने तक शाम हो चुकी थी।

‘कहाँ जाना है?’ टैक्सी ड्राइवर ने पूछा।
‘यहाँ आसपास एक गाँव है, मलाना,’
‘ओह, मलाना, तुम वहाँ क्यों जाना चाहती हो? मैं होटल में ही इसका इंतज़ाम कर सकती हूँ। चिंता मत करो। यह बेहतरीन होगा।’
नेहारिका ने मेरी तरफ देखा। मुझे उसके जवाब पर कोई हैरानी नहीं हुई। तब तक मैंने मलाना के बारे में इंटरनेट पर सब कुछ खोज लिया था। यह गांजा के लिए मशहूर था। मेरे भावहीन चेहरे को देखकर नेहारिका को अपनी गलती का एहसास हो गया।
'नहीं, हम बस वहीं जाना चाहते हैं, हमें और किसी चीज में दिलचस्पी नहीं है।'
टैक्सी चालक असमंजस में दिख रहा था।
‘क्या आप हमें अभी वहाँ ले जा सकते हैं या नहीं?’ नेहारिका ने ड्राइवर से पूछा। उसका लहजा आधा धमकी भरा और आधा अनुरोधपूर्ण था।
‘वो गाँव बहुत दूर है, आप क्यों परेशान हो रही हैं मैडम, हमारे पास यहाँ क्रीम है। बेहतरीन क्वालिटी, ओरिजिनल।’ ड्राइवर ने फिर से गाड़ी चलाना शुरू किया।
नेहारिका ने ड्राइवर को ऐसे देखा जैसे उसे अपनी आँखों से जला देना चाहती हो। ड्राइवर ने भी पलटकर देखा। कुछ सेकंड की चुप्पी के बाद नेहारिका बोली, ‘दूसरा ड्राइवर मंगवाइए।’ होटल को इस ड्राइवर का इंतज़ाम करने में करीब एक घंटा लग गया था। मैंने ड्राइवर की तरफ देखा, शायद वो मेरे विचार समझ गया था।
उन्होंने कहा, 'मैडम जी, मलाना पार्वती घाटी में दूसरी तरफ है, और इसके अलावा हम केवल जरी नामक गांव तक ही गाड़ी से जा सकते हैं, जिसमें यहां से कम से कम दो घंटे लगेंगे, और उसके बाद एक चढ़ाई वाली पैदल यात्रा है, जिसमें लगभग एक से दो घंटे लगेंगे।'
नेहारिका ने मेरी तरफ देखा। हम दोनों समय का हिसाब लगा रहे थे। शाम के लगभग छह बज रहे थे। अगर हम रात में भी पैदल यात्रा शुरू कर दें, तो मलाना पहुँचने में आधी रात हो जाएगी।
‘मुझे लगता है कि अगर हम जल्दी करें तो हम दस बजे तक वहाँ पहुँच सकते हैं;’ नेहारिका ने कहा।
‘नेहारिका, तुम क्या कह रही हो? रात में ट्रेकिंग करना खतरनाक हो सकता है।’

मैंने ड्राइवर की तरफ देखा, उसके चेहरे पर घिनौनी मुस्कान थी। फिर मैंने नेहारिका की तरफ देखा, जो तुरंत वहां से निकलने के लिए दृढ़ संकल्पित लग रही थी, और फिर मैंने ड्राइवर की तरफ दोबारा देखा, उसे कुछ करने का इशारा करते हुए।
'महोदया, यह इतना आसान नहीं है, आपको ट्रेक के लिए एक स्थानीय गाइड की आवश्यकता होगी। और कोई भी गाइड अंधेरे में ट्रेक करने के लिए तैयार नहीं होगा, और इसके अलावा, मलाना में रात में किसी भी पर्यटक को रुकने की अनुमति नहीं है। मेरा सुझाव है कि आप कल सुबह वहां जाएं और शाम से पहले वापस आ जाएं।'
नेहारिका एक पल के लिए भौंहें सिकोड़ीं, लेकिन वह जानती थी कि ड्राइवर सही कह रहा था। पहाड़ियों में ट्रेकिंग करना एक चुनौतीपूर्ण काम हो सकता है। यहां तक कि स्थानीय लोग भी रात में इससे बचते हैं। और, मलाना अपने नियमों के लिए प्रसिद्ध था। वे खुद को भारतीय नहीं मानते थे और गांव के देवता द्वारा अपनी परिषद के माध्यम से स्थापित अपने ही कानून का पालन करते थे। उसने गहरी सांस ली और फिर से बोली, इस बार शांत भाव से।
'तो, अब छह बज गए हैं, क्या आस-पास कोई ऐसी जगह है जहाँ हम जा सकें और रात तक होटल वापस आ सकें?'
‘पास में ही एक पुराना मंदिर है, अगर हम जल्दी करें तो शायद हमें दर्शन का अवसर मिल सके।’
‘कौन सा मंदिर?’ नेहारिका ने पूछा। उसकी आँखें उत्साह से चमक उठीं। वह धार्मिक नहीं थी, लेकिन मंदिरों में जाना उसे हमेशा से अच्छा लगता था। आजकल के मंदिर तो हर जगह दिखते हैं, लेकिन पुराने मंदिर। उसे उनकी वास्तुकला, भव्यता और सबसे बढ़कर उनमें छिपी कहानियाँ बहुत पसंद थीं। अगर ऐसे मंदिरों में बहुत भीड़ होती, जैसा कि अक्सर होता है, तो वह मुख्य कक्ष में नहीं जाती, जहाँ ज़्यादातर लोग कतार में लगते हैं। इसके बजाय, वह मंदिर परिसर में घूमती, किसी कोने में बैठ जाती और लोगों को देखती, और कभी-कभी ध्यान करती। उसने कहा कि ये मंदिर आराम करने के लिए सबसे अच्छी जगह हैं। उसके अनुसार, आपको कतार में खड़े होने की ज़रूरत नहीं है, बल्कि बैठने और देखने के लिए कोई जगह ढूंढनी चाहिए।
ड्राइवर ने आगे कहा, 'धुंगारी मंदिर को हडिम्बा मंदिर के नाम से भी जाना जाता है।'

महाभारत की एक प्रसिद्ध पात्र हडिम्बा थीं। वे एक राक्षसी थीं, जिन्होंने पांच पांडवों में दूसरे भीम से विवाह किया था। यह मंदिर वह स्थान था जहाँ हडिम्बा ने ध्यान और तपस्या की और देवी बन गईं। सनातन धर्म विचित्र है, इसमें राक्षसों के भी देवता बनने का विकल्प है।

रास्ते में नाश्ता करने के बाद, जो मेरे लिए बहुत कम था, हम ठीक समय पर मंदिर पहुँच गए; मंदिर पंद्रह मिनट में बंद होने वाला था। मंदिर जंगल में बनी एक बड़ी झोपड़ी जैसा लग रहा था, जिसकी छतें जापानी पैगोडा शैली की थीं। चार छतें थीं, जिनमें सबसे ऊपर वाली घंटी जैसी थी और बाकी तीन लकड़ी की टाइलों से ढकी थीं। अंधेरा हो रहा था और मंदिर के चारों ओर लगे ऊँचे देवदार के पेड़ों ने इसे और भी अंधेरा और एकांत बना दिया था। पेड़ मंदिर के ऊँचे, मजबूत रक्षकों की तरह लग रहे थे। मैं सोच रहा था कि उन्होंने हडिम्बा की मूर्ति कैसे बनाई होगी। क्या यह उनका राक्षसी रूप होगा या कोई मानव रूप? लेकिन मुझे आश्चर्य हुआ कि वहाँ हडिम्बा की कोई मूर्ति नहीं थी। किसी मूर्ति के बजाय, आगंतुक एक चट्टान के सामने प्रणाम कर रहे थे, जिसके बारे में कहा जाता था कि हडिम्बा उस पर ध्यान करने के लिए बैठती थीं।

जब हम मंदिर से बाहर निकले, तब तक सूरज डूब चुका था। मंदिर के चारों ओर की बत्तियाँ जल चुकी थीं, जिससे मंदिर किसी दूर-दराज के परीलोक जैसा लग रहा था। अब वहाँ बहुत कम लोग थे। केवल कुछ लड़के ही मंदिर की तस्वीरें और सेल्फी खींच रहे थे, जिन्हें वे सोशल मीडिया पर पोस्ट करना चाहते थे। मंदिर के बाहर की दुकानों के दुकानदार भी अब अपना काम समेट रहे थे।

हम मंदिर के चबूतरे के किनारे सीढ़ियों के पास बैठ गए। ठीक हमारे सामने एक देवदार के पेड़ का तना था। मैं पेड़ के विशाल आकार को देखकर दंग रह गया। उसके तने के चारों ओर एक घेरा बनाने के लिए पाँच-छह लोगों को हाथ जोड़कर खड़ा होना पड़ता। जब मैंने ऊपर देखा, तो पेड़ का ऊपरी भाग दिखाई नहीं दिया क्योंकि तना ऊपर के अंधेरे में गायब हो रहा था। मैंने नेहारिका को देखा, जो दूर एक पेड़ को ध्यान से देख रही थी और लंबी, सुकून भरी साँसें ले रही थी, मानो मंदिर के गलियारे की शांति और निर्मलता को महसूस कर रही हो। बाकी पर्यटक भी सीढ़ियों से नीचे उतर रहे थे। मंदिर के मुख्य कक्ष के दरवाजे अब बंद थे। कदमों की आवाज दूर तक सुनाई दे रही थी, उसके बाद गाड़ियों के इंजन स्टार्ट होने की आवाज आई। सन्नाटा थोड़ा डरावना

होता जा रहा था। मुझे उम्मीद थी कि मंदिर के रक्षक या पुजारी आकर हमें जाने के लिए कहेंगे। लेकिन वे नहीं आए।
‘क्या हम चलें?’ मैंने नेहारिका से पूछा।
‘क्यों? मुझे यहाँ अच्छा लग रहा है, चलो थोड़ी देर यहीं बैठते हैं।’ उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान साफ बता रही थी कि वह यहाँ आकर खुश थी। मलाना आने की घबराहट उसके चेहरे से गायब हो गई थी।
‘ज़रूर,’ मैंने कहा।
हम कुछ देर चुप रहे। बीच-बीच में पेड़ों में सरसराहट की हल्की आवाज़ आती रही, जो अक्सर बंदरों के पेड़ की डालियों पर झूलने की आवाज़ होती थी। हवा अब ठंडी हो गई थी। ठंड से मेरी बांह में चुभन और झुनझुनी होने लगी। मैं दर्द से कराह उठा और कोहनी को रगड़कर गर्म करने लगा।
‘क्या दर्द हो रहा है?’ उसने पूछा।
मैंने कंधे उचका दिए। उसे पता था कि मैं झूठ बोल रहा हूँ, लेकिन उसने आगे कुछ नहीं पूछा।
'क्या आपको यहां हल्कापन, मतलब आराम महसूस नहीं हो रहा है?' नेहारिका ने कहा।
मैंने चारों ओर पहाड़ों की विशालता और विशाल देवदार के पेड़ों को देखा।
‘खैर, मुझे यहां बहुत छोटा महसूस हो रहा है। छोटा और बेहद महत्वहीन।’
‘क्या यह अद्भुत नहीं है?’ उसने कहा।
'कैसे?'
'अगर आप खुद को महत्वहीन महसूस करते हैं, तो आपकी सारी समस्याएं भी महत्वहीन हो जाएंगी, और इससे आपको हल्कापन महसूस होगा।'
वह सही थी, जैसे ही हमें व्यापक परिदृश्य में अपनी तुच्छता का एहसास होता है, यह हमें कम या बिना किसी अपेक्षा के एक तरह से मुक्त कर देता है।
‘बात समझ में आती है।’ मैंने कहा। कुछ पलों के लिए, हाथ में दर्द होने के बावजूद, मुझे राहत मिली।
'मेरी इच्छा थी कि हम आज मलाना जा सकें, लेकिन मुझे खुशी है कि हम आज यहां आ गए।'

मैंने कहा, 'मैं समझता हूं कि आपको यात्रा करना पसंद है, लेकिन इस मामले में आप इतने अधीर क्यों हैं?'
वह मुस्कुराई और बोली, 'मुझे नहीं पता, बस एक अंतर्मन की अनुभूति है, एक पुकार है। मुझे ऐसा लगता है कि मेरे लिए कुछ है, जो मुझे अपनी ओर खींच रहा है। मैं उसके करीब हूँ। इसे समझाना मुश्किल है। शायद यह वही जगह है जिसे मैंने ध्यान में देखा था। मुझे ऐसा लगता है कि मेरे पास वहाँ पहुँचने के लिए बहुत कम समय है। जैसे अगर मैंने जल्दी नहीं की तो मैं कुछ खो दूँगी। जैसे कोई मुझे वहाँ बुला रहा है और जल्दी करने को कह रहा है।'
'इसका कोई मतलब नहीं बनता, लेकिन हम कल सुबह जल्दी जरूर निकलेंगे,' मैंने हंसते हुए कहा। वह बस मुस्कुराई।

***

अगली सुबह, मैं नेहारिका को सरप्राइज देना चाहता था। मैं सूर्योदय से पहले ही तैयार हो गया, लेकिन जब मैं रिसेप्शन पर पहुँचा तो नेहारिका पहले से ही वहाँ मेरा इंतज़ार कर रही थी, इधर-उधर घूम रही थी। उसका बैग तैयार था। ऐसा लग रहा था जैसे वह उत्साह में बिल्कुल भी नहीं सोई हो। सुबह के पाँच बजने में पंद्रह मिनट बाकी थे। नेहारिका ने मानो मुझसे पूछा हो कि मुझे इतनी देर क्यों लग गई, लेकिन कुछ नहीं कहा क्योंकि वह एक पल भी बर्बाद नहीं करना चाहती थी। टैक्सी तैयार थी और हमारा इंतज़ार कर रही थी। नेहारिका ने समय पर आने के लिए ड्राइवर को अच्छी टिप दी। जरी जाने वाली सड़क संकरी थी और उसमें कई मोड़ थे। एक घंटे का सफर किसी आनंददायक यात्रा जैसा लगा। शुक्र है कि मैंने भारी नाश्ता नहीं किया था। जब हम टैक्सी से उतरे, तब भी कोहरा छाया हुआ था और सूरज भी नहीं निकला था। हमारे सामने पहाड़ों पर चढ़ाई का पूरा दिन था। मेरा मन अपने गर्म होटल के कमरे की ओर चला गया, और सोचने लगा कि इस ट्रेक के बजाय, मैं अपने गर्म कमरे की खिड़की से खूबसूरत धुंध भरे नज़ारे को देखते हुए गरमा गरम कॉफी की चुस्की ले रहा होता। मैंने ऐसे विचारों को मन से निकालने के लिए अपना सिर हिलाया। वे अब मेरे लिए अच्छे नहीं थे।

‘आज आप पूरी तरह से फ्री हैं, शाम छह बजे तक वापस आ जाइए। और अगर हमें देर हो जाए, तो कृपया हमारा इंतज़ार कीजिएगा। इंतज़ार का पैसा हम दे देंगे,’ नेहारिका ने ड्राइवर से कहा। मुझे खुशी हुई कि नेहारिका ने कम से कम इतनी तैयारी तो कर ली थी।
मैं वहां रहूंगा, लेकिन कृपया जरी से किसी को अपने साथ ले जाएं। एक स्थानीय गाइड। आप उन दुकानों से पता कर सकते हैं, वे किसी का इंतजाम कर देंगे।
नेहारिका ने मेरी तरफ देखा, वह किसी को भी अपने साथ नहीं ले जाना चाहती थी।
‘नहीं, हम बिना गाइड के ही काम चला लेंगे। अभी दिन का समय है। हमें कोई दिक्कत नहीं होगी। धन्यवाद।’
‘मैडम, आप समझ नहीं पा रही हैं। मलाना बहुत अलग है। वे बाहरी लोगों को किसी भी चीज को छूने तक की इजाजत नहीं देते। अगर आप गांव में जाना चाहती हैं, तो वहां एक गाइड बहुत मददगार साबित होगा। आपको सही जानकारी देना मेरा कर्तव्य है, बाकी आप पर निर्भर है,’ ड्राइवर ने गाड़ी चलाते हुए कहा।
मैंने कहा, 'उसकी बात में कुछ सच्चाई लगती है, अगर गांव इतना सख्त है कि किसी को भी किसी चीज को छूने की इजाजत नहीं है, तो यह एक समस्या हो सकती है। स्थानीय व्यक्ति मददगार साबित हो सकता है।'
अनिच्छा से नेहारिका मान गई। वह चाहती थी कि हम तुरंत चले जाएं। नेहारिका को नई-नई चीजें आजमाना पसंद था, लेकिन मैंने उसमें कभी भी नशीले पदार्थों के प्रति कोई कमजोरी नहीं देखी थी।
हम एक दुकान के पास पहुँचे और कुछ ही पलों में गाइड वहाँ आ गया। गाइड एक जवान लड़का था, शायद उसकी उम्र किशोरावस्था के आखिरी दौर में होगी। शुरू में उसने कुछ नहीं कहा, ऐसा लग रहा था जैसे उसका काम करने का मन नहीं था, लेकिन उसके पिता ने उसे जबरदस्ती काम पर लगाया था। वह चुपचाप चलता रहा। लगभग पंद्रह मिनट तक रास्ता बिल्कुल समतल और चलने में आसान था। लेकिन उसके बाद वह चढ़ाई वाला हो गया। कुछ जगहों पर सीमेंट की सीढ़ियाँ थीं, लेकिन उनमें से ज़्यादातर टूटी हुई थीं। हम अपने साथ चलने वाली छड़ियाँ लेकर चल रहे थे, लेकिन वह लड़का अपनी छड़ी का इस्तेमाल नहीं कर रहा था। वह उसे कभी भाले की तरह तो

कभी तलवार की तरह हाथ में पकड़े रहता था, ताकि रास्ते में उगी झाड़ियों को हटा सके। यह रास्ता शायद ही कभी इस्तेमाल होता था।
मेरे मन में तरह-तरह के सवाल उठ रहे थे। क्या पता ड्राइवर और गाइड मिले हुए हों और जानबूझकर हमें किसी सुनसान जगह पर ले जाकर लूटने की योजना बना रहे हों? ड्राइवर गाइड को लाने पर अड़ा हुआ था। क्या पता यह गाइड, जो खुद लगभग बच्चा ही है, रास्ता भूल गया हो? क्या पता हम यहाँ खो जाएँ? मैंने अपना फोन चेक किया। उसमें बस एक छोटा सा नेटवर्क बार दिख रहा था। शायद नेटवर्क बहुत जल्दी खत्म हो जाएगा। मैं रास्ते में जगह की खूबसूरती के साथ-साथ रास्ता याद रखने के लिए तस्वीरें खींचता रहा। कहीं न कहीं मैं मन ही मन प्रार्थना कर रहा था कि मैं मलाना सुरक्षित पहुँच जाऊँ।
कुछ देर बाद लड़के ने कहा, 'साहब, आप मलाना से क्या चाहते हैं?'
अब तक मैं समझ चुका था कि यह लड़का क्या कहना चाह रहा है। मलाना अपनी बेहतरीन क्वालिटी की हशीश के लिए मशहूर था। और मेरे चेहरे पर हैरानी और नेहारिका के चेहरे पर उत्साह देखकर हम दोनों शायद इस उत्पाद के लिए एकदम सही ग्राहक लग रहे थे। इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता, लड़के ने फिर बोलना शुरू कर दिया।
‘आप इसे जरी से प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन सावधान रहें। राज्य से बाहर जाते समय आप इसे अपने साथ नहीं रख सकते। केवल उतना ही ले जाएं जितना आप यहां उपयोग कर सकते हैं।’
‘नहीं, हमें ऐसा कुछ नहीं चाहिए, हमें बस किसी से मिलना है,’ खुद स्पष्ट न होने के कारण मैंने लड़के को जवाब दिया और बातचीत समाप्त कर दी।
कुछ मिनट तक चुपचाप चलने के बाद, लड़के ने फिर से बोलना शुरू किया।
‘साहब, क्या आप मलाना में किसी को जानते हैं?’
'हां, वह करती है, क्यों?'
‘आमतौर पर, मलाना से लोग अपने आगंतुकों के साथ आते हैं।’
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। मुझे यह भी नहीं पता था कि नेहारिका वहाँ किसी को जानती भी है या नहीं। नेहारिका की अंदरूनी भावना को मैं उसे समझा भी

नहीं सकती थी। इस लड़के को कम सवाल पूछने चाहिए और अपने काम पर ध्यान देना चाहिए।
लड़के ने फिर कहा, “साहब, चिंता मत कीजिए, मैं आपको समय पर वहाँ पहुँचा दूँगा।” उसकी आवाज़ में दृढ़ विश्वास था। ऐसा लगा जैसे उसने मेरे मन की बात पढ़ ली हो। उसके आश्वासन से मुझे थोड़ी राहत मिली।
जब मैं और बॉय थोड़ी बहुत बातचीत कर रहे थे, तब नेहारिका चुपचाप हमसे आगे चलती रही। उसने गाइड से कोई रास्ता नहीं पूछा। हम बीच में रुककर आराम करने लगे। हमारे चारों ओर के पेड़ बेहद आकर्षक थे। वे भी उतने ही विशाल थे जितने कि हमने धुंगारी मंदिर में देवदार के पेड़ देखे थे। मैंने उन विशाल पेड़ों की कई तस्वीरें खींचीं। इनमें से कुछ पेड़ इतने ऊंचे थे कि उनकी चोटियाँ दिखाई ही नहीं दे रही थीं, क्योंकि वे सफेद धुंध... या बादलों में गायब हो रही थीं।
हम मलाना के द्वार पर पहुँच गए। हैरानी की बात यह थी कि वहाँ धूप खिली हुई थी। अब हम बादलों और धुंध से ऊपर थे। मलाना के द्वार के ठीक बाहर कुछ कैफे थे। गाँव में प्रवेश करने से पहले, हमने द्वार के बाहर एक कैफे में कॉफी पीने और वॉशरूम जाने के लिए रुक गए।
जैसे ही हम वहां पहुंचे, कुछ बच्चे हमारी ओर दौड़ते हुए आए।
‘Didi… Aap Ganja Foonktey ho? [Sister, do you smoke hash?]
मुझे पता था कि यह गांव किस लिए मशहूर है, लेकिन मैंने यह उम्मीद नहीं की थी कि यहां के बच्चे भी इसके कारोबार में शामिल होंगे।
नेहारिका ने बस मुस्कुराकर आगे चलना जारी रखा। मलाना मेरी उम्मीद से कहीं बड़ा था। घर कम थे, लेकिन वे दो या तीन मंजिला थे। सभी घर ज्यादातर लकड़ी के बने थे।
‘यहाँ एक देवता का मंदिर है,’ नेहारिका ने हमारे गाइड की ओर देखते हुए कहा। गाइड उसकी ओर देखकर हैरान रह गया। शायद बहुत कम लोगों ने मलाना क्रीम के अलावा कुछ और माँगा होगा।
'जी हां, यहां जमलू नाम के एक देवता का मंदिर है। इसी गांव के देवता का।'
‘क्या हम वहां जा सकते हैं?’ नेहारिका ने पूछा।
उन्होंने कहा, 'आप इसे बाहर से देख सकते हैं, लेकिन वहां आपको बहुत सावधान रहने की जरूरत है।'

मैंने उससे पूछा, 'किस बारे में?'
'वहां किसी भी चीज को मत छुओ।'
मैंने कहा, 'मुझे पता है, हमें स्थानीय लोगों या उनकी चीजों को छूना नहीं चाहिए। हम इस बात का ध्यान रखेंगे।'
'यह सिर्फ लोगों और उनकी चीजों के बारे में नहीं है। मंदिर में, कृपया किसी भी दीवार, दरवाजे या यहां तक कि लंबी घास को भी न छुएं। मंदिर के आसपास किसी भी चीज को छूने से बचें।'
'अगर मैंने गलती से दीवार को छू लिया तो क्या होगा?'
'आपको जुर्माना भरना होगा। इसे छूने पर हर बार पच्चीस सौ रुपये का जुर्माना देना होगा, और मंदिर को शुद्ध करने के लिए एक पशु की बलि दी जाएगी।'
मैंने आह भरी। ऐसा लग रहा था जैसे हम अछूत हों। गाँव के नियमों पर बहस करना व्यर्थ था क्योंकि हमें उनका पालन तो करना ही था, इसलिए हमने बस सिर हिला दिया।
'स्थानीय लोग भी मंदिर की दीवारों को नहीं छूते। यहां तक कि जानवरों को भी इसे छूने की अनुमति नहीं है,' गाइड ने हमें और भी भ्रमित कर दिया।
मैंने हंसते हुए पूछा, 'वे किसी जानवर से जुर्माना कैसे वसूलेंगे?'
'वे इसे इसके मालिक से छीन लेंगे,' उसने जवाब दिया। मेरे लिए, ऐसे सभी नियम पर्यटकों से पैसे निकालने का एक तरीका थे।
'क्या आप इसे देखना चाहते हैं? वे हमें अंदर नहीं जाने देंगे। लोग केवल विशेष आयोजनों और त्योहारों के दौरान ही मंदिर में दर्शन करने आते हैं।'
'कोई बात नहीं, हमें अंदर जाने की जरूरत नहीं है, मंदिर के चारों ओर ऊर्जा व्याप्त है।' नेहारिका ने फिर अपने रहस्यमय शब्दों में जवाब दिया।
हम मंदिर पहुँचे, यह लकड़ी से बनी तीन मंजिला इमारत थी, जो एक बड़े समतल मैदान के बीच में स्थित थी। भूतल का मुख्य द्वार बंद था। यह जटिल नक्काशी और अजीबोगरीब जानवरों के सींगों से सजा हुआ था। मैंने कुछ तस्वीरें खींचीं। गाइड ने मुझे तस्वीरें लेते समय सावधानी बरतने का इशारा किया। मंदिर के पास एक दो मंजिला मकान था। गाइड ने हमें बताया कि यह मंदिर के पुजारी का मकान है, जो गाँव में एकमात्र पुरुष हैं जो सफेद पगड़ी पहनते हैं। नियमों के अनुसार पुजारी को अकेले रहना पड़ता था। पुजारी का मकान भी सुंदर था, जिसके लकड़ी के दरवाजे पर

नक्काशी की गई थी। हम किसी भी चीज को छूने से बहुत सावधान थे। मंदिर के आसपास थोड़ा जोखिम भरा लग रहा था। गलती से भी छूने पर गाँव वालों की डांट और जुर्माना हो सकता था।
आखिरकार, हमें बैठने लायक एक पत्थर मिल गया। मैंने गाइड की तरफ देखा। उसने कहा कि यहाँ बैठना ठीक है क्योंकि यह मंदिर परिसर के बाहर है। मैंने मन ही मन जमलू देवता को बैठने की अनुमति देने के लिए धन्यवाद दिया।
दोपहर का समय था और नेहारिका अब काफी शांत थी। वह चट्टान पर पालथी मारकर बैठ गई और अपनी आँखें बंद कर लीं। नेहारिका ने कई बार ध्यान के बारे में बात की थी, लेकिन मैंने उसे कभी ध्यान करते नहीं देखा था। अगर मुझे ध्यान में रुचि होती और मुझे कुछ एकांत मिलता, तो यह ध्यान करने के लिए एक अच्छी जगह होती, लेकिन नेहारिका अलग थी।
मौसम सुहावना था। ठंडी हवा धीरे-धीरे बह रही थी, बीच-बीच में तेज़ झोंके भी आ रहे थे। मैंने नेहारिका की कुछ तस्वीरें खींचीं जब वह ध्यान कर रही थी, ताकि बाद में उसे सरप्राइज दे सकूँ। वह बेहद खूबसूरत लग रही थी। उसका चेहरा शांत था। वह स्थिर बैठी थी, हल्की हवा कभी-कभी उसके बालों को छू रही थी। मैंने बीच-बीच में उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान देखी, शायद वह ध्यान में किसी सुखद दृश्य को देख रही थी।
आंखें खोलते हुए उसने कहा, 'इस जगह में बहुत ऊर्जा है।'
क्या आपने अपना ध्यान पूरा कर लिया है?
‘मैं हमेशा ध्यान करती रहती हूँ,’ उसने कहा। एक बार फिर, यह बात मुझे समझ नहीं आई। मैं सोचने लगा कि कोई व्यक्ति हर समय ध्यान कैसे कर सकता है, खासकर यात्रा करते समय।
मैंने उसे चिढ़ाते हुए पूछा, 'क्या तुम्हें कोई अंतर्दृष्टि या ज्ञान प्राप्त हुआ?'
नेहारिका मुस्कुराई। यह एक सर्वज्ञानी मुस्कान थी।
‘चलो वरुण, मुझे पता है मुझे कहाँ जाना है,’
यह उन कुछ दुर्लभ मौकों में से एक था जब उसने मुझे मेरे नाम से पुकारा। वह उत्साहित लग रही थी, वह चट्टान से नीचे उतरी, मेरा हाथ पकड़ा और मुझे मलाना की संकरी गलियों में आगे खींच ले गई। घरों के बीच से गुज़रने के बाद, हम एक छोटे से

खुले मैदान में पहुँचे। वहाँ एक छोटी सी झोपड़ी थी। यह बाकी बड़े घरों से काफ़ी छोटी और दूर थी। हमारे पीछे चल रहा गाइड भी हैरान था। ऐसा लग रहा था जैसे वह गाँव के इस हिस्से में पहले कभी नहीं आया था। ऐसा लग रहा था जैसे हम गाँव के पिछवाड़े में आ गए हों।
‘हम कहाँ जा रहे हैं? यह मलाना का हिस्सा नहीं है,’ गाइड ने कहा।
नेहारिका ने उसे देखा और अचानक उसे एहसास हुआ कि वह भी वहीं मौजूद है।
‘भैया, अब आप वापस जा सकते हैं। हमें यहां से रास्ता पता है।’
गाइड असमंजस में दिख रहा था। मैंने उसे पैसे दिए और जाने का इशारा किया। उसने कंधे उचकाए और पैसे ले लिए।
‘सूरज डूबने से पहले जरी पहुँच जाना। रात में पैदल मत जाना, वहाँ जंगली जानवर हैं,’ उसने जाने से पहले यह सलाह दी। नेहारिका ने उसकी एक भी बात नहीं सुनी। वह उस छोटी सी झोपड़ीनुमा मकान की ओर चल पड़ी।
'हम कहाँ जा रहे हैं?'
‘मुझे इस झोपड़ी में जाना ही होगा,’ नेहारिका ने कहा। उसके चेहरे पर अब एक चौड़ी मुस्कान थी, मानो उसे कोई खजाना मिल गया हो।
‘क्यों? क्या आप यहाँ किसी को जानते हैं?’ मैंने पूछा।
‘नहीं... मुझे अंदर देखना ही होगा, यहाँ कुछ ऐसा है जो मुझे अपनी ओर खींच रहा है, मैंने ध्यान करते समय इस जगह को कई बार देखा है।’ वह झोपड़ी के चारों ओर घूमी और उसे एक छोटा सा बंद दरवाजा मिला। नेहारिका ने उस पर दस्तक दी। अब तक हमने गाँव में किसी भी चीज़ को नहीं छुआ था। दरवाजा ही वह पहली चीज़ थी जिसे हमने छुआ। गाँव के नियमों के अनुसार, हमने अब एक अपराध कर दिया था, लेकिन सौभाग्य से हमें देखने वाला कोई नहीं था, सिवाय उस व्यक्ति के जो झोपड़ी के अंदर था।
किसी ने दरवाजा नहीं खोला। नेहारिका ने फिर से दस्तक दी। इस बार और जोर से। हमें लकड़ी की चारपाई से किसी के उठने की चरमराहट सुनाई दी। कुछ ही सेकंड बाद दरवाजा खुला। पारंपरिक पोशाक पहने और कुल्लू शैली की टोपी लगाए एक बूढ़ी औरत दरवाजे पर दिखाई दी। उसका चेहरा गहरी झुर्रियों से भरा था और उसकी आंखें उन्हीं झुर्रियों में धंसी हुई थीं। शायद उसे कुछ दिखाई नहीं देता था। उसने कुछ

कहा, वह कनाशी भाषा में था, जो वहां की स्थानीय बोली थी, जिसे हम दोनों में से कोई नहीं जानता था और गाइड द्वारा बताए गए नियमों के अनुसार हमें बोलने की अनुमति भी नहीं थी।
नेहारिका कुछ नहीं बोली, बस उस महिला को देखती रही। कुछ ही पल में, बिना कुछ कहे, उस महिला ने सिर हिलाकर हमें अंदर आने का इशारा किया।
अंदर तरह-तरह के मसालों या अचार की महक आ रही थी। एक तरफ किताबें रखी थीं। किताबों के किनारे समय के साथ भूरे पड़ गए थे। कमरे की हर चीज़ मानो सौ साल पहले के समय में ठहर सी गई थी, यहाँ तक कि वो बुढ़िया भी जो अब चारपाई पर बैठी थी और उसकी अदृश्य निगाहें नेहारिका पर टिकी थीं।
नेहारिका उसके सामने ज़मीन पर बैठ गई। मुझे खड़े रहने में असहजता महसूस हो रही थी, इसलिए
मैं भी नेहारिका के साथ बैठ गई। मैंने नेहारिका को देखा, अजीब बात यह थी कि उसकी आँखों से आंसू बह रहे थे। लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे उसे अपने रोने का एहसास ही नहीं था।
‘पार्वती मां, मैं आपसे मिलने के लिए जीवन भर इंतजार करती रही,’ नेहारिका बोली।
मुझे उसकी कोई बात समझ नहीं आ रही थी। मैंने नेहारिका की तरफ देखा, लेकिन उस पल वह मुझसे कोसों दूर थी। अगर वह इस महिला को जानती थी, तो उसने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?
बुजुर्ग महिला की झुर्रियों ने एक वक्र बनाया था। वह शायद मुस्कुरा रही थी। उसने बस सिर हिलाया और कुछ नहीं कहा।
‘माँ, क्या आप मुझे प्रसाद देंगी? मैं इसे ढूँढ़ते हुए बहुत दूर से आई हूँ, और आपको याद करके मुझे यहाँ बुलाया है। कृपया मुझे प्रसाद दें,’ नेहारिका बोली। मेरे लिए सब कुछ रहस्य था। प्रसाद क्या था? इस स्त्री ने नेहारिका को क्यों बुलाया?
महिला ने धीरे से सिर हिलाया और इस बार पहाड़ी लहजे में हिंदी बोली, 'नेहारिका, मुझे पता था कि तुम आओगी। मैं तुम्हें यह देने के लिए तैयार हूँ। लेकिन, कृपया एक बार सोच लो। तुम जवान हो, और यह तुम्हें हमेशा के लिए बदल देगा। क्या तुम इसके लिए तैयार हो? चाहे यह हो या न हो, जीवन हर हाल में एक आशीर्वाद है।'

नेहारिका अभी भी अपने हाथों को जोड़कर सीने से लगाए बैठी थी। उसकी आँखों में आँसू भरे थे, लेकिन वह मुस्कुरा रही थी। उसने बुढ़िया की बात के जवाब में सिर हिलाया।
'हां, मैं तैयार हूं। मैं वर्षों से इसका इंतजार कर रहा था।'
'मुझे पता था कि आप अपना मन नहीं बदलेंगे, लेकिन मुझे पूछना ही पड़ा,' महिला ने कमजोर आवाज में कहा। उसकी झुर्रियां मुस्कुराहट में सिमटी रहीं।
बुजुर्ग महिला उठीं। मुझे उम्मीद थी कि वह छड़ी का इस्तेमाल करेंगी, लेकिन हैरानी की बात यह थी कि वह सीधी खड़ी हो गईं। उनकी चाल धीमी थी, लेकिन सलीकेदार थी। उन्होंने नेहारिका के सिर पर हाथ फेरा और फिर छोटे दरवाजे से बाहर निकल गईं। नेहारिका और मैं भी उठे और उनके पीछे-पीछे चले। अपनी उम्र के हिसाब से वह महिला बहुत फुर्तीली थीं। वह पहाड़ की चोटी तक गईं, जहाँ से धीरे-धीरे नीचे उतरने लगीं। दूर से देखने पर ऐसा लग रहा था मानो वह हवा में चल रही हों। जब हम चोटी के पास पहुँचे, तो नज़ारा डरावना था। हम कम से कम दो हज़ार फीट की गहराई देख रहे थे। ढलान पर ज़्यादा वनस्पति नहीं थी। वह महिला पहाड़ के किनारे बने एक संकरे रास्ते से नीचे उतरीं और हमें उनके पीछे-पीछे चलना था।
मैं वहीं रुक गया, अपने विकल्पों पर विचार करने लगा। पकड़ने के लिए कुछ भी नहीं था। एक छोटी सी चूक भी मौत का कारण बन सकती थी और मेरा शरीर हमेशा के लिए गुम हो सकता था। नेहारिका चलती रही, उसने एक पल भी बर्बाद नहीं किया और संकरे रास्ते से नीचे उतरने लगी। मेरे पास उसके पीछे चलने के अलावा कोई चारा नहीं था। मैं जितना हो सके सावधानी से चला। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे कोई बकरी खड़ी चट्टानी पहाड़ से नीचे उतर रही हो। दस-पंद्रह मिनट का वह डरावना सफर मुझे एक घंटे जैसा लगा। मैं शुक्रगुजार था कि अब तक मैं गिरा नहीं था। हम पहाड़ में तराशी गई एक छोटी सी कमरे जैसी जगह पर पहुँचे, जहाँ सीधे खड़े होने की भी जगह नहीं थी। लेकिन कम से कम बैठने के लिए अच्छी जगह थी। उस जगह की दीवारें सीधी थीं। यह साफ तौर पर इंसानों द्वारा बनाई गई जगह थी। इसे पहाड़ को काटकर बनाया गया था। मैं सोच रहा था कि इसे किसने बनाया होगा और क्यों?
बुजुर्ग महिला उस खुले स्थान में आगे बढ़कर एक कोने की ओर चली गईं। वहाँ उन्होंने ज़मीन पर एक छोटे से हिस्से की ओर इशारा किया। नेहारिका और मैं वहाँ गए।

महिला झुकीं और ज़मीन पर एक बिंदु को छुआ। नेहारिका बैठ गईं और अपने हाथों से उस जगह को खोदने लगीं। मुझे आश्चर्य हुआ कि नेहारिका को सब कुछ कैसे समझ आ रहा था। ज़मीन नरम और थोड़ी गीली थी। लगभग एक मिनट तक खोदने के बाद, नेहारिका ने एक छोटी सी जड़ी बूटी निकाली। यह शलजम के आकार की थी, बस बहुत सफेद और उससे काफी छोटी थी। नेहारिका ने इसे बुजुर्ग महिला को दे दिया। बुजुर्ग महिला ने इसे अपने हाथों में लिया और दोनों हाथों को आपस में मिला लिया। उन्होंने कुछ सेकंड के लिए अपनी धँसी हुई आँखें बंद कर लीं। ऐसा लग रहा था जैसे वह कोई प्रार्थना या मंत्र पढ़ रही हों, लेकिन मुझे कुछ सुनाई नहीं दिया।

जब उसने अपने हाथ खोले, तो उसने शलजम जैसी उस चीज़ को अपनी उंगलियों से रगड़ा। वह देखने में ठोस लग रही थी, लेकिन रगड़ने पर वह पतले अंडे के छिलके की तरह टूट गई। इसके बाद जो हुआ, उसे देखकर मेरी आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं। छिलके के अंदर से प्रकाश निकल रहा था। वह इतना चमकदार था कि मैं उसका सही आकार नहीं देख पाई। लेकिन जिस तरह से उस महिला ने उसे बाहर निकाला, उससे लगता है कि वह गोलाकार थी, एक बड़े मोती के आकार की। उसने उसे नेहारिका को दे दिया, जो अभी भी बैठी हुई थी।

नेहरिका ने उस वस्तु को देखा, और फिर उस बूढ़ी औरत को। बूढ़ी औरत ने सिर हिलाया।

‘इसे खा लो, नेहारिका, यही वह प्रसाद है जो तुम चाहती थी। इसके स्वाद का आनंद लो, क्योंकि यही वह आखिरी चीज है जिसे तुम कभी खाओगी।’

नेहारिका मुस्कुरा रही थी, उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे। उसने धीरे से उस चीज़ को अपने होठों के पास लाया और मुँह में रख लिया। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। कुछ क्षणों के लिए वह काँपी, मानो ठंड से थरथरा रही हो, फिर बेहोश होकर एक तरफ गिर पड़ी। मैंने उसे थाम लिया।

बुजुर्ग महिला ने नेहारिका की ओर देखने का भी इंतजार नहीं किया। वह संकरे रास्ते की ओर वापस चलने लगी।

‘रुको, तुमने उसके साथ क्या किया है?’ मैंने बुढ़िया से पूछा। मेरा लहजा अब बहुत विनम्र नहीं था। महिला मेरी ओर मुड़ी। मेरे लहजे से वह बिल्कुल भी विचलित नहीं हुई।

“अब उसे कुछ नहीं हो सकता,” उसने कहा और रास्ते पर आगे बढ़ गई। मैं उसके पीछे दौड़कर पूछना चाहता था कि उसका क्या मतलब है, लेकिन मैं नेहारिका को वहाँ पड़ा नहीं छोड़ सकता था।

नेहारिका अभी भी बेहोश थी। मेरे मन में सबसे बुरे ख्याल आ रहे थे। मैंने जाँच की कि वह साँस ले रही है या नहीं। वह साँस ले रही थी, लेकिन बहुत धीरे-धीरे। मुझे बहुत ध्यान से देखना पड़ा। ज़रूर कुछ गड़बड़ थी। उस औरत का 'अब उसे कुछ नहीं हो सकता' कहने का क्या मतलब था? क्या उसने नेहारिका को मार डाला? मृत्यु के बाद ही कुछ नहीं हो सकता। क्या वह चमकदार चीज़ ज़हर थी? कोई तेज़ नशा? अब तक तो यह मेरे लिए एक रोमांच था। लेकिन अब, अचानक यह एक बुरे सपने में बदल गया। हम एक अजीब जगह पर थे। पहाड़ में एक गुप्त गुफा, जिसके बारे में शायद उस औरत के अलावा किसी को पता नहीं था। अगर मैं मदद के लिए चिल्लाता भी, तो कोई मुझे नहीं सुनता। नेहारिका को वहाँ से बाहर ले जाना नामुमकिन था। अगर मैं नेहारिका को ऊपर ले भी जाता, तो मैं उसे लेकर जरी तक कैसे जाता और एम्बुलेंस कैसे बुलाता? गाँव वाले तो बाहरी लोगों को छूते भी नहीं, वे कैसे मदद करेंगे? सारा उत्साह खत्म हो गया था। मैं इस बिना मकसद की भटकन और अपनी अंतरात्मा की आवाज़ पर खुद को कोस रहा था। हमें आम पर्यटक वाली चीज़ें ही करनी चाहिए थीं।

मैंने समय देखा। नेहारिका को बेहोश हुए पंद्रह मिनट से ज़्यादा हो गए थे। उस चमकदार चीज़ ने नेहारिका के साथ क्या किया था? उसने उसे क्यों खाया? मेरे दिमाग में कई विचार उमड़ रहे थे। मैं नेहारिका को कम से कम गाँव तक लाने के कई विकल्पों के बारे में सोच रहा था। अगर मैं नेहारिका को अपने कंधे पर उठाकर ले जाऊँ, तो मुझे उसे कम से कम एक हाथ से पकड़ना पड़ेगा। उस संकरे रास्ते पर इस तरह चलना नामुमकिन था। उस तरह चलने के लिए मुझे दोनों हाथों की ज़रूरत होगी। मैंने नेहारिका को अपनी पीठ पर बाँधने के बारे में सोचा ताकि मेरे दोनों हाथ खाली रहें। फिर शायद मैं अपने पैरों और हाथों दोनों का इस्तेमाल करके ऊपर चढ़ सकूँ। मैंने उसे बाँधने के लिए अपनी जैकेट उतार दी।

जब मैंने नेहारिका को जैकेट पहनाने के लिए उसे उठाने की कोशिश की तो मेरी मुड़ी हुई बांह में बहुत दर्द हुआ, लेकिन उस समय मेरे दिमाग में दर्द की कोई चिंता नहीं थी।

जैसे ही मैंने उसे उठाया, मेरे होंठों से एक आह निकल गई, उसने अपनी आँखें खोलीं। उसे होश में आते देख मैं राहत से लगभग गिर ही पड़ा। मुझे पता ही नहीं चला, लेकिन मेरी आँखों से आँसू बह रहे थे।
'क्या हुआ वरुण?' नेहारिका ने पूछा।
'शुक्र है, कुछ नहीं हुआ। यहाँ से निकलते ही तुम्हें और बताऊँगी,' मैंने जवाब दिया।
नेहारिका मुस्कुराई। मैं उसे बताना चाहती थी कि उसकी ये सब कुछ जानने वाली मुस्कानें, ये इधर-उधर की बातें, सब मुझे तंग आ चुकी हैं और अब मैं ये सब नहीं चाहती। लेकिन साथ ही, मुझे खुशी भी थी कि वह ठीक थी। वह खड़ी हो गई। मैंने उसे पानी दिया, लेकिन उसने मना कर दिया। ऊपर की ओर चलना अभी भी खतरनाक था, लेकिन नीचे उतरने से आसान लग रहा था। नेहारिका पहले की तरह आत्मविश्वास से भरी थी, जबकि मैं थोड़ा धीरे चल रही थी।
हम झोपड़ी के पास पहुँचे। नेहारिका अंदर गई। वह खाली थी।
मैंने पूछा, 'वह कहाँ गई?'
'अब वो वापस नहीं आएगी,' नेहारिका ने कहा। मैं फिर से असमंजस में पड़ गया, उस अजनबी महिला और नेहारिका को सब कुछ कैसे पता था, जबकि मैं एक अनपढ़ दर्शक था।
'क्या आप मुझे एक बार बता सकते हैं कि यह सब किस बारे में है? मुझे लगता है कि मैं इतना तो जानने का हकदार हूं।'
'ज़रूर वरुण, आओ। मैं तुम्हें बताती हूँ।' हम छोटी सी झोपड़ी के अंदर गए, वह अब खाली थी, लेकिन मसालों की खुशबू अभी भी आ रही थी। नेहारिका ने कहानी सुनाना शुरू किया।
सौ साल से भी अधिक समय पहले, यह महिला एक किशोरी थी। वह भगवान शिव की परम भक्त थी। एक दिन उसने गलती से एक जंगली जड़ी बूटी खा ली। उस दिन से उसे कभी भूख नहीं लगी। घंटे दिनों में, दिन हफ्तों में, हफ्ते महीनों में बदलते गए। उसे कुछ भी खाने की इच्छा नहीं होती थी। वह बस थोड़ा सा पानी पीती थी। उसके परिवार ने उसे खिलाने की कोशिश की, कभी-कभी जबरदस्ती भी। लेकिन वह जो कुछ भी खाती, उल्टी कर देती थी। वह काम करती रही और पूरी तरह स्वस्थ रही। परिवार ने उसे

खाना खिलाना छोड़ दिया था। सब कुछ ठीक चल रहा था, जब तक कि परिवार ने एक गलती नहीं कर दी। उन्होंने उसके इस व्यवहार के बारे में पड़ोसियों को बता दिया। यह खबर पूरे गांव में फैल गई। पहले तो ग्रामीणों को उस पर विश्वास नहीं हुआ और उन्हें लगा कि वह बातें छुपाती है और अकेले में ही खाती है। ये सारे संदेह तब दूर हुए जब उन्होंने उस बेचारी लड़की को एक कमरे में एक हफ्ते से ज़्यादा समय तक बिना भोजन और थोड़े पानी के बंद रखा। हफ्ते के अंत में जब उन्होंने कमरा खोला तो वह बिल्कुल स्वस्थ थी। लेकिन उस एक हफ्ते में वह बदल गई थी। उसे बिल्कुल भूख नहीं थी, लेकिन ग्रामीणों के प्रति उसके मन में गुस्सा भरा हुआ था। उस कमरे में बंद रहते हुए उसने ध्यान किया और ध्यान के माध्यम से उसे पता चला कि यह सब कैसे हुआ। उसे उस जड़ी बूटी का पता चल गया जिससे वह भूख से मुक्त हुई थी। उसने यह बात ग्रामीणों को बताने की योजना बनाई। लेकिन उसके कैद के आखिरी दिन, उससे मिलने स्वयं शिव की पत्नी देवी पार्वती आईं। देवी पार्वती ने उसे यह रहस्य किसी को न बताने के लिए कहा। आम लोगों के लिए, भूख का अंत जीवन का अंत होगा। भूख के बिना कोई काम नहीं करेगा। दुनिया रुक जाएगी। अगर गलत व्यक्ति इसे खा ले तो यह जहर का काम करेगा। लेकिन चूंकि वह लड़की शिव की परम भक्त थी और उसका हृदय शुद्ध था, इसलिए उसे अपने जीवन में कभी भूख नहीं लगेगी और वह हमेशा स्वस्थ रहेगी।

'लेकिन माँ, मैं इस जीवन का क्या करूँगी? मैं हमेशा के लिए कैसे जी सकती हूँ?' छोटी बच्ची ने आँखों में आँसू लिए कहा।

'अब तुम्हारे भीतर दिव्य शक्ति विद्यमान है। जब चाहो, किसी भी लोक में जा सकते हो, और वहां तुम्हारा स्वागत होगा।'

लेकिन माँ, मैं हमेशा जीवित नहीं रहना चाहता। मैं अभी इसी वक्त इस दुनिया को छोड़ना चाहता हूँ।

नहीं, तुम्हारे पास दिव्य उपचार शक्ति है, तुम्हें इससे जरूरतमंदों की सहायता करनी चाहिए। मैं तुम्हें अपना नाम देती हूँ, अब से तुम पार्वती कहलाओगी। और एक दिन, एक लड़की तुम्हारे पास प्रसाद माँगने आएगी। उसे वह जड़ी बूटी दो, उसे भूख से मुक्त और दिव्य बना दो। और फिर तुम इस संसार को छोड़कर मोक्ष प्राप्त करोगी।

छोटी बच्ची ने आदेश का पालन किया। उसने अपने आस-पास के जरूरतमंद लोगों का इलाज किया। लेकिन जब भी उसकी लोकप्रियता बहुत बढ़ जाती, वह किसी दूसरी जगह चली जाती। आखिरकार, वह मलाना के बाहर यहाँ आकर बस गई।
“तो, वह महिला पार्वती थी, उसने तुम्हें वह जादुई जड़ी बूटी दी? मतलब अब तुम भूख से मुक्त हो गई हो?” मैंने उससे पूछा।
उसने सिर हिलाया। यह सब अविश्वसनीय था, मुझे विश्वास नहीं हो रहा था।
‘क्या आप इस पर विश्वास करते हैं? यह असंभव है।’
नेहारिका ने कुछ नहीं कहा। वह बस मुस्कुराई।
मैंने पूछा, ‘बुजुर्ग महिला कहाँ है?’
‘वह इस दुनिया से चली गई है, जैसा कि पार्वती मां ने उसे बताया था।’
हम जरी की ओर नीचे उतरे। जरी पहुँचते-पहुँचते मैं थक चुकी थी और बहुत भूखी थी। हम दोनों ने सुबह से कुछ नहीं खाया था। नेहारिका अभी भी ऊर्जा से भरपूर थी, जबकि मुझे कुछ खाने की सख्त ज़रूरत थी। जरी के सड़क किनारे वाले कैफे में मैंने हम दोनों के लिए गरमा गरम नूडल्स की दो थालियाँ और चाय मंगवाई। मैंने भूख न लगने वाली बात का ज़िक्र नहीं किया। मुझे अंदाज़ा था कि इस ठंडे मौसम में लंबे समय बाद गरमा गरम खाना देखकर वो ज़रूर सब कुछ भूल जाएगी और खाना खाने लगेगी।
गरमागरम नूडल्स परोसे गए। स्वादिष्ट मसाले और इलायची की चाय की खुशबू ने मेरी भूख बढ़ा दी और मैंने तुरंत खाना शुरू कर दिया। लेकिन नेहारिका ने न तो कुछ खाया और न ही उसे छुआ।
‘तुम कुछ नहीं खाओगे?’
मुझे इसकी जरूरत नहीं है।
‘कम से कम थोड़ा सा चख तो लो,’
मुझे अब भूख नहीं लग रही। मैं ऊर्जा से भरपूर हूँ। मुझे जरा भी थकान महसूस नहीं हो रही। वरुण, वह जड़ी बूटी दिव्य है। कहा जाता है कि वह स्वयं भगवान शिव ने देवी पार्वती को दी थी। यह सर्वविदित है कि शिव ने भूख पर विजय प्राप्त कर ली है, जिसका अर्थ है कि उन्हें बिल्कुल भी भूख नहीं लगती। यह ज्ञान कैलाश पर्वत में ही रहा, जब तक कि कुछ ऋषियों ने इसे हिमालय के इन पर्वतों पर नहीं लाया।
‘क्या आप मुझे एक बात बता सकते हैं?’

'क्या?'
‘तुम्हें ये सब कैसे पता चला? किसने बताया?’
नेहारिका ने एक पल के लिए मेरी तरफ देखा।
‘सच कहूँ तो, मुझे नहीं पता। मतलब, मुझे पता है, मुझे हमेशा से कहीं न कहीं इसका एहसास रहा है। जैसा कि मैंने आपको धुंगारी मंदिर में बताया था, यह एक पुकार है,’ वह हँसी।
‘आपको उस महिला के बारे में कब पता चला?’
‘मैं उस गांव और देवता मंदिर की ओर आकर्षित हुआ, और मंदिर परिसर के दर्शन के बाद सब कुछ स्पष्ट हो गया। उसके बाद हर कदम पर मुझे यह पक्का पता होता गया कि मुझे आगे कहां जाना है। यह कुछ ऐसा था जैसे अंधेरे में हेडलाइट जलाकर गाड़ी चलाना। हम कुछ ही मीटर आगे देख सकते थे, लेकिन फिर भी आगे बढ़ते रह सकते थे और कहीं भी पहुंच सकते थे। जब तक मैंने झोपड़ी का दरवाजा खटखटाया, तब तक मुझे सब कुछ पता चल चुका था।’
मैं इस पर कुछ नहीं कह सकता था। एक बात तो पक्की है कि नेहारिका ने कभी झूठ नहीं बोला।
अगले तीन दिनों तक मैं नेहारिका के साथ रही, जब तक हम चंडीगढ़ वापस नहीं आ गए। फिर से, वह अपनी बाइक पर थी और मैं अपनी कार में, और नेहारिका के पास खाने-पीने का कुछ भी नहीं था। कुछ बार के बाद, मैंने उससे पूछना बंद कर दिया। कोई भी बिना भोजन या पानी के जीवित नहीं रह सकता था, लेकिन वह मेरे सामने थी, कुछ भी नहीं खा रही थी और फिर भी पूरी ऊर्जा से भरी हुई थी। यह सचमुच ईश्वरीय चमत्कार था।

***

हम चंडीगढ़ में थे। नेहारिका को दिल्ली जाना था और मैं अगले दिन अपने घर के लिए रवाना होने वाला था। हमेशा की तरह, हम अपने पसंदीदा कैफे में थे, जहाँ मैं अपनी कॉफी का आनंद ले रहा था और नेहारिका कुछ किताबें पढ़ रही थी। जैसे ही मेरी कॉफी खत्म हुई, नेहारिका आकर सोफे पर मेरे बगल में बैठ गई।

‘मुझे अपना हाथ दिखाओ,’ उसने मेरे क्षतिग्रस्त हाथ की ओर इशारा करते हुए कहा। उसने इसे पहले भी कई बार देखा था, लेकिन शायद उसे फिर से जिज्ञासा हुई। मैंने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाया। यह हमेशा की तरह थोड़ा मुड़ा हुआ था। उसने मेरे दोनों हाथों से मेरा हाथ पकड़ लिया। उसने कुछ देर तक अपने हाथों को हिलाया, जिससे मुझे थोड़ी गुदगुदी महसूस हुई, लेकिन मैं स्थिर रहा। उसके हाथ मेरी कोहनी पर आकर रुके। उसने उसे दोनों हाथों से कसकर पकड़ा और अपनी आँखें बंद कर लीं। मुझे फिर से दर्द भरी झुनझुनी महसूस हुई। मैं दर्द से कराह उठा।
‘नेहारिका, रुको,’ मैंने कहा, और फिर मुझे अपनी कोहनी गर्म होती महसूस हुई। गर्मी मेरी कोहनी के अंदर से आ रही थी। कुछ सेकंड के लिए असहनीय गर्मी जैसी हो गई, लेकिन झुनझुनी गायब हो गई।
नेहारिका मुस्कुराई और उसने मेरे हाथ से अपने हाथ हटा लिए।
‘मेरी कैब आ गई है,’ उसने अपना फोन देखते हुए कहा। हम कैफे से निकलकर कैब की तरफ चले। वह कैब में बैठ गई और मुझे हाथ हिलाकर बाय कहा। मैंने भी उसे हाथ हिलाकर बाय कहा। कैब चल पड़ी। जब कैब नज़र से ओझल हो गई, तो मैंने अपना हाथ अपने शरीर के पास रखा। अब वह मुड़ा हुआ नहीं था। वह पूरी तरह खुल गया था और दर्द गायब हो गया था।

मार्गदर्शक आत्मा

दिसंबर की ठंडी शाम थी। आधिकारिक पार्टी चल रही थी। यह एक आलीशान होटल में लंबे सम्मेलन के बाद की पार्टी थी। सम्मेलन समाप्त होते ही मेहमान जल्दी से अपने कमरों में गए, कपड़े बदले और पार्टी में शामिल होने के लिए वापस आ गए। मेज़बानी करने वाले कार्यालय के लोग, मेरी तरह, पार्टी स्थल पर उनका इंतज़ार कर रहे थे। ऐसी आधिकारिक पार्टियों में, मैं आमतौर पर पार्टी की शुरुआत में कुछ देर रुकता हूँ, अपने कार्यालय के लोगों से मिलने की खुशी और उत्साह का दिखावा करता हूँ, और इस तरह कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दर्ज कराता हूँ। उसके बाद, मैं चुपके से निकल जाता हूँ और अपने घर वापस चला जाता हूँ। शायद मुझमें कुछ गड़बड़ है, लेकिन समय पर घर पहुँचना, सादा भोजन करना और फिर बिस्तर पर बैठकर किताब पढ़ना, अंतहीन शराब पीने और अनावश्यक बहसों से कहीं ज़्यादा बेहतर है।

यह होटल एक नया बना पांच सितारा होटल था जिसमें एक सुंदर बगीचा था। जैसे ही मैं गर्म कॉन्फ्रेंस हॉल से बाहर निकला, ठंडी हवा ने मेरा स्वागत किया और मुझे याद दिलाया कि यह दिसंबर की रात थी। हवा ठंडी थी, लेकिन कॉन्फ्रेंस रूम की तरह घुटन भरी नहीं थी। मैंने जाने से पहले होटल को थोड़ा देखने के लिए टहलने का फैसला किया। मैं बगीचे में चला गया जो पार्टी हॉल से कुछ दूरी पर था, लेकिन वहाँ से भी मुझे पार्टी हॉल से धीमी आवाज़ में संगीत सुनाई दे रहा था। मैंने फॉर्मल सूट पहना हुआ था, जो दिसंबर की ठंडी रात में बाहर निकलने के लिए काफी नहीं था। मैंने अपने हाथों को रगड़ा और उनमें गर्माहट महसूस करने के लिए गहरी सांस ली।
मुझे उम्मीद नहीं थी कि यहाँ कोई होगा। लेकिन मैंने देखा कि हॉल से थोड़ी दूर एक कोने वाली बेंच पर कोई बैठा है। वह मेरा सहकर्मी लकी था। लकी ने अपनी साफ-सुथरी सफेद कॉन्फ्रेंस शर्ट के ऊपर अपना कोट तक नहीं पहना था, फिर भी वह वहाँ बिल्कुल सहज लग रहा था।
‘लकी, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?’ लकी भी मुझे वहाँ देखकर हैरान रह गया।
'सर, मैं यहाँ फोन पर बात करने आया था, लेकिन यहाँ की ताज़ी हवा अच्छी लगी, इसलिए थोड़ी देर यहीं बैठ गया। अंदर तो बहुत उबाऊ है। आप कैसे हैं?'
‘मैं घर जाने ही वाला था, लेकिन सोचा कि इस बगीचे से होकर लंबा रास्ता ले लूँ। यह बहुत खूबसूरत जगह है, पर थोड़ी ठंडी है। है ना?’ भले ही यह कितना भी घिसा-पिटा लगे, मौसम कई बेहतरीन बातचीत का शुरुआती बिंदु रहा है।
'यह मौसम मेरे लिए आरामदायक है। हिमाचल प्रदेश में मेरे गांव में तापमान काफी कम रहता है।'
मैं उसके बगल में बेंच पर बैठ गया। हम सामने होटल की इमारत को निहार रहे थे। रात में वह बेहद खूबसूरत लग रही थी। स्पॉटलाइट की पीली-नारंगी रोशनी उसकी खूबसूरती को और भी निखार रही थी। बगीचे में भी कई बत्तियाँ थीं, लेकिन जिस बेंच पर हम बैठे थे, उसके आसपास अंधेरा था। बगीचे के रास्तों पर दोनों ओर छोटी-छोटी बत्तियाँ लगी हुई थीं। पार्टी हॉल से संगीत तेज़ होता जा रहा था, ऐसा संगीत जिसे मैं अंदर बर्दाश्त नहीं कर सकता था, लेकिन यहाँ से सुनने में अच्छा लग रहा था। ऐसा लग रहा था मानो हम किसी दूसरी दुनिया के किनारे पर खड़े हों और एक ऐसी दुनिया को देख रहे हों जिसका हमसे कोई लेना-देना नहीं है।

'लकी, उस दिन मुझे पहाड़ियों के आकर्षक देवताओं के बारे में हमारी चर्चा में बहुत आनंद आया।'
‘उनके बारे में और भी बहुत सी कहानियां हैं। वास्तव में, प्रत्येक क्षेत्र में उनके बारे में सैकड़ों कहानियां होंगी।’
मुझे उनके बारे में और अधिक जानने की बहुत इच्छा है। मैंने पहाड़ियों में रहने वाली आत्माओं या भूतों के बारे में भी सुना है। कहीं न कहीं रहस्य और पहाड़ एक दूसरे के पर्याय हैं। क्या आपने ऐसी कोई कहानी सुनी है?
‘ऐसी कई कहानियां हैं। हिमाचल प्रदेश के हर गांव में ऐसी कुछ कहानियां जरूर होंगी। मैं ये नहीं कह सकता कि सारी कहानियां सच हैं। ज्यादातर कहानियां भ्रम या बढ़ा-चढ़ाकर बताई गई बातें होती हैं। लेकिन मैं आपको एक सच्ची कहानी सुना सकता हूं। मुझे पूरा यकीन है कि ये सच है क्योंकि ये कुछ साल पहले मेरे भाई के साथ घटी थी।’
‘तुम्हारा मतलब... तुम्हारे सगे भाई से है?’ मैंने पूछा।
'जी हां, मेरे सगे भाई धर्मिंदर। आप उनसे कुछ महीने पहले हमारे कार्यालय में एक बार मिल चुके हैं।'
मेंने सिर हिलाया।
उस समय वह चंडीगढ़ में रहता था और कॉलेज में पढ़ता था। जब भी कॉलेज की छुट्टियां होती थीं या लंबा वीकेंड होता था, वह हिमाचल प्रदेश में हमारे गांव वापस आ जाता था।
मैं लगातार सिर हिलाता रहा और लकी बोलता रहा।
उस समय धर्मिंदर कॉलेज के दूसरे वर्ष में पढ़ रहा था। दिसंबर का महीना था। हमारी बहन आशी का जन्मदिन भी दिसंबर में ही पड़ता है। उस साल, उसका जन्मदिन एक लंबे वीकेंड के साथ पड़ा था। इसलिए, धर्मिंदर के लिए घर वापस आने का यह एक आदर्श समय था। आशी को उसके जन्मदिन पर सरप्राइज देने के लिए, उसने एक दिन पहले घर पहुँचने का फैसला किया।
आम तौर पर, वह शहर से सुबह की बस पकड़ता था जो दोपहर में हमारे गाँव के पास पहुँचती थी। वहाँ से वह सूर्यास्त से पहले घर पहुँच जाता था। आपको याद होगा, हमारा गाँव सड़क पर नहीं है। बस स्टॉप से वहाँ तक पहुँचने में लगभग एक घंटे का पैदल सफर लगता है।

‘हाँ, मुझे याद है। आपके लिए एक घंटा लगेगा, और मेरे जैसे लोगों के लिए लगभग दो घंटे,’ मुझे याद आया कि लकी ने मुझे अपने गाँव में एक शादी में आमंत्रित किया था। उस यात्रा में मुझे दो घंटे से अधिक समय लगा था।
'हां, मेरे भाई के लिए यह अधिकतम एक घंटा था। वह मुझसे कहीं ज्यादा मजबूत है।' मैंने सिर हिलाकर उसे आगे बोलने का इशारा किया। ठंड थी, लेकिन मैं पूरी कहानी सुनना चाहती थी। मैंने ठंड से बचने के लिए अपनी बाहों को मोड़कर हाथों को उनके नीचे दबा लिया।
इसलिए उसने सुबह की बस को प्राथमिकता दी, लेकिन कॉलेज में कुछ अप्रत्याशित काम के कारण उस दिन उसे देरी हो गई। अगले दिन आशी का जन्मदिन था, और वह एक दिन पहले पहुंचना चाहता था। इसलिए, अगले दिन यात्रा करने के बजाय, उसने दोपहर बाद वाली बस लेने का फैसला किया, जो रात लगभग ग्यारह बजे हमारे गांव के स्टॉप पर पहुंचने वाली थी। ऐसे में उसे अंधेरे में पैदल चलना पड़ता। लेकिन वह उस रास्ते को इतनी अच्छी तरह जानता था कि वह अंधेरे में भी उसे पार कर सकता था।
“आप जानते हैं महोदय, कुछ दिन ऐसे होते हैं जब कुछ भी ठीक नहीं होता। धर्मिंदर के लिए भी ठीक वैसा ही दिन था। उसे सुबह की बस पकड़ने में देर हो गई थी, और ऊपर से रास्ते में बस का गियर खराब हो गया, इसलिए वह हमारे गाँव के स्टॉप से लगभग तीस किलोमीटर पहले तक बहुत धीमी गति से रेंगती रही। रात के लगभग ग्यारह बज चुके थे। ड्राइवर ने फैसला किया कि अब बस आगे नहीं जा सकती। गियर खराब होने के कारण बस में ज़्यादा ईंधन खर्च हो रहा था और अगला पेट्रोल पंप लगभग दस किलोमीटर आगे था। रात में सड़क पर बीच रास्ते में बस के रुकने का खतरा था। इसके अलावा, वह पेट्रोल पंप रात में बंद था, इसलिए उसे सुबह तक इंतजार करना पड़ा। इस तरह धर्मिंदर हमारे गाँव से लगभग तीस किलोमीटर दूर एक दूसरे गाँव में फँस गया।”
अब तक बस में मेरे भाई समेत करीब पंद्रह यात्री सवार हो चुके थे। आपस में कुछ विचार-विमर्श के बाद सभी यात्रियों ने फैसला किया कि सुनसान जगह पर फंसे रहने से बेहतर है कि इसी गांव में रात बिता ली जाए। वे बस से उतर गए। यही समझदारी भरा कदम था। वे बस कंडक्टर के साथ गांव में गए। कंडक्टर ने यात्रियों के ठहरने का इंतजाम एक मंदिर के हॉल में किया।

मेरे भाई घटनाक्रम से निराश थे।
अगर उसने यात्रा का प्लान छोड़ दिया होता और अगले दिन सुबह की बस ले ली होती तो कहीं बेहतर होता। लेकिन जो हो गया सो हो गया। वह सिगरेट पीने के लिए बस के पास थोड़ी देर रुका। उसने स्थिति के बारे में सोचा। वह गाँव से लगभग तीस किलोमीटर दूर था। सड़क मार्ग से दूरी इतनी ही थी। अगर वह जंगलों से होकर गुजरने वाले संकरे रास्तों को भी गिन ले, तो यह लगभग पाँच या छह किलोमीटर की पैदल यात्रा हो सकती है। दिन के समय ऐसी यात्रा में उसे आमतौर पर केवल दो घंटे लगते हैं। वह यात्रा के अंतिम भाग से परिचित था, जो हमारे गाँव तक पहुँचने का सामान्य मार्ग था। वह रात में भी अंतिम भाग की यात्रा कर सकता था, लेकिन इस गाँव से उस भाग तक की यात्रा को लेकर वह आश्वस्त नहीं था।
आधी रात होने ही वाली थी। दो-तीन घंटे में घर पहुँचकर बिस्तर पर लेटने का ख्याल बहुत लुभावना लग रहा था। घर की दूरी सिर्फ पाँच-छह किलोमीटर ही थी। लेकिन उसे अंधेरे में रास्ता ढूँढ़ पाने का डर था। बस स्टॉप पर थोड़ी रोशनी थी, लेकिन कुछ ही मीटर आगे सड़क पर घना अंधेरा था। धर्मिंदर मुड़कर वापस बस स्टॉप पर आ गया। यात्री और कंडक्टर जा चुके थे। अचानक सब कुछ शांत हो गया और धर्मिंदर उस सुनसान बस स्टॉप पर अकेला रह गया। रोशनी का एकमात्र स्रोत बस स्टॉप के कोने पर लगा एक छोटा सा बल्ब था, जिससे हल्की रोशनी निकल रही थी। धर्मिंदर ने बस को देखा, वह किसी बूढ़े और थके हुए आदमी की तरह लग रही थी, लंबी यात्रा से थकी हुई। वह सुबह होने से पहले घर पहुँचने की उम्मीद छोड़ने ही वाला था कि तभी उसे एक आवाज़ सुनाई दी। किसी हल्की धातु की वस्तु को ज़मीन पर रखने की खनक सुनाई दी। मेरे भाई ने चारों ओर देखा, उसे कोई दिखाई नहीं दिया। फिर उसे एक और हल्की सी खनक सुनाई दी।
बस के दूसरी तरफ से, सड़क की ओर से आवाज़ आ रही थी। जब वह बस के चारों ओर घूमा, तो उसने एक आदमी को पत्थर पर मिट्टी के तेल का लालटेन लिए बैठे देखा। बस स्टॉप पर लौटते समय मेरे भाई को कुछ भी दिखाई नहीं दिया था, जबकि बस सामने से उसे दिख रही थी। लेकिन कम रोशनी और रात होने के कारण, उसे लगा कि शायद उसने कुछ देखा ही न हो। बाकी सब जा चुके थे। अब बस स्टॉप पर सिर्फ वह आदमी और मेरा भाई ही थे। वह आदमी ज़मीन पर झुका हुआ था और ज़मीन पर रखे

लालटेन की बाती को बड़ी सावधानी से ठीक कर रहा था। खनखनाहट की आवाज़ लालटेन के ज़मीन पर रखे होने की वजह से आ रही थी।
‘हेलो भाई साहब,’ मेरा भाई उनके पास गया और बोला।
उस आदमी ने ऊपर देखा और मुस्कुराते हुए कहा, 'हैलो धर्मू।'
तभी मेरे भाई ने उस आदमी का चेहरा देखा। परिचित चेहरा देखकर उसे खुशी हुई। वह हमारे गाँव का काकाराम था। वह बूढ़ा था, शायद मेरे पिताजी से भी अधिक उम्र का। भले ही हम बहुत करीबी न हों, घर से दूर किसी परिचित को देखना एक सुकून का एहसास देता है।
‘काकाराम अंकल, क्या आप भी बस में थे?’ मेरे भाई ने उन्हें पहचानते हुए कहा।
‘नहीं, मैं बस संयोगवश इस गाँव में आ गया। मैंने पहले से बस लेने की योजना बनाई थी। लेकिन बस बहुत देर से आई, और जैसा कि आप जानते हैं, अब वह आगे नहीं जा रही है,’ उन्होंने कहा।
‘जी काका, मैं भी फंस गया हूँ। मैंने जल्द से जल्द घर पहुँचने की योजना बनाई थी।’ मेरे भाई ने कहा, उसकी आवाज़ में निराशा साफ झलक रही थी।
काकाराम ने कुछ नहीं कहा, वह गहरी सोच में डूबे हुए धर्मिंदर को देखते रहे।
‘काश मैं कर पाता। अगर दिन होता तो कोई दिक्कत नहीं होती। मुझे अपने गाँव से आगे का रास्ता तो पता है, लेकिन उससे पहले, मुझे नहीं पता कि रात में मैं सही रास्ता ढूंढ पाऊँगा या नहीं,’ मेरे भाई ने फिर कहा।
‘शायद...आपको आज रात इसी गांव में बितानी चाहिए,’ काकाराम ने सुझाव दिया।
‘मुझे लगता है मुझे जाना ही पड़ेगा। लेकिन मैं सुबह आशी को सरप्राइज देना चाहता था। कल उसका जन्मदिन है।’ धर्मिंदर ने आह भरते हुए कहा। काकाराम कुछ देर चुप खड़ा रहा। यह उसकी आदत थी। वह लंबे विराम लेता था, लेकिन बोलने से पहले हमेशा सोचता था। उसकी बुद्धिमत्ता के कारण गाँव के कई लोग उससे फसलों, पशुओं और यहाँ तक कि आध्यात्मिक मामलों सहित विभिन्न विषयों पर सलाह या परामर्श लेने जाते थे।
‘मैं इस इलाके के हर रास्ते से वाकिफ हूँ। मैं तीन दिन से इन्हीं रास्तों पर चल रहा हूँ। मुझे हर कोने-कोने की जानकारी है। अगर आप चाहें तो मैं आपको वहाँ पहुँचा दूँगा, लेकिन आपको मेरा ठीक से अनुसरण करना होगा,’ काकाराम ने भरोसा दिलाया।

शायद उन्होंने मेरे भाई की सुबह होने से पहले घर पहुँचने की तीव्र इच्छा को भाँप लिया था। यह सही था कि उन्हें इन रास्तों और पगडंडियों की अच्छी जानकारी थी। वे लंबे समय से इन इलाकों में यात्रा कर रहे थे, कई बार इन पगडंडियों पर पैदल भी चल चुके थे। हालाँकि, मैं और मेरा भाई इसी इलाके के रहने वाले हैं और हम सभी मुख्य रास्तों से वाकिफ हैं, लेकिन अब हमें शहर में काम करते हुए कई साल हो गए हैं, इसलिए हमारा ज्ञान शायद कुछ बाहरी लोगों से अधिक हो, लेकिन रात में उन मुश्किल रास्तों पर चलने के लिए यह काफी नहीं था। इसके लिए हमें स्थानीय मार्गदर्शन की भी आवश्यकता थी... काकाराम जैसे किसी व्यक्ति से।

भोर से पहले घर पहुँचने की संभावना से मेरा भाई उत्साहित था। लेकिन साथ ही, उसे यह भी लग रहा था कि काका के लिए यह कितना अन्याय होगा, क्योंकि वह बूढ़े थे और उन्हें रात में आराम से सोने का हक था, न कि उनके साथ पैदल यात्रा करने का।

'नहीं काका, बेहतर होगा कि आप थोड़ा आराम कर लें,' मेरे भाई ने कहा।

इसके जवाब में काकाराम ज़ोर से हँस पड़े। 'ऐसी बातें हमें शोभा नहीं देतीं। क्या तुम भी उन शहरी कमज़ोरों जैसे हो गए हो?' यह बात कुछ हद तक सच थी। हमारे गाँव के लोगों के लिए ट्रेकिंग और मेहनत करना स्वाभाविक है, और पहाड़ियों की ताज़ी हवा और ऑर्गेनिक भोजन के साथ मिलकर यह उनके स्वास्थ्य को और भी बेहतर बना देता है। हवा में हल्की गर्माहट थी और आसमान साफ़ था। कभी-कभार हवा के झोंकों को छोड़कर, मौसम शांत था। मेरा भाई, जो घर पहुँचने के लिए बेताब था, काका की बात मान गया।

जैसे ही वे चलने वाले थे, मेरे भाई को बस का दरवाजा बंद होने की तेज़ आवाज़ सुनाई दी। कंडक्टर बस की जाँच और ताला लगाने आया था। मेरे भाई ने पीछे मुड़कर देखा। कंडक्टर उनकी ओर आ रहा था।

'भाई, आप कहाँ जा रहे हैं? क्या आपको मंदिर में जगह नहीं मिली? आइए, आप मेरे साथ रह सकते हैं।' कंडक्टर ने कहा।

काकाराम और मेरे भाई ने एक-दूसरे की ओर देखा कि क्या उनमें से किसी ने अपना मन बदल लिया है और रुकना चाहता है। काकाराम ने सिर हिलाया और एक कदम दूर चला गया। वह रुकना नहीं चाहता था।

‘नहीं भाई, हमारा गांव पास ही है और हम एक घंटे में वहां पहुंच जाएंगे। प्रस्ताव के लिए धन्यवाद,’ मेरे भाई ने कहा।
लेकिन... क्या आप इसे रात में कर पाएंगे?
“जी हां, कोई दिक्कत नहीं, काका को सारे रास्ते अच्छे से पता हैं। हम अब निकलेंगे और और देर नहीं करना चाहते। शुक्रिया भाई,” मेरे भाई ने कहा और वे जाने के लिए मुड़ गए।
‘आप अपनी जिम्मेदारी पर जा रहे हैं। बस कंपनी की कोई जिम्मेदारी नहीं है,’ कंडक्टर ने जोर से कहा।
मेरे भाई और काका हंस पड़े।
“कंडक्टर जी, निश्चिंत रहिए, यह हमारा अपना जोखिम है,” मेरे भाई ने ज़ोर से जवाब दिया, अब वह उससे थोड़ा दूर जा चुका था। कंडक्टर उलझन में दिख रहा था। उसकी उलझन जायज़ थी क्योंकि लोग रात में पैदल यात्रा कम ही करते हैं। जब मेरे भाई ने अगले मोड़ से पीछे मुड़कर देखा, तो कंडक्टर अभी भी वहीं खड़ा उसे देख रहा था। फिर भी, मेरा भाई और काकाराम बिना डरे आगे बढ़ते रहे।
गांव से दूर जाते ही चारों ओर सन्नाटा छा गया, जिसे केवल उनके कदमों की लयबद्ध आवाज ही तोड़ रही थी। पहले कुछ सौ मीटर तक वे पक्की सड़क के किनारे-किनारे चले। काका के हाथ में लालटेन थी और मेरे भाई ने अपने फोन की छोटी सी टॉर्च जला ली। इससे कुछ खास दिखाई तो नहीं दे रहा था, लेकिन सुरक्षा के लिए यह जरूरी था ताकि सड़क पर आने-जाने वाले वाहनों को वे दिखाई दें। हालांकि, कोई भी वाहन उनके पास से नहीं गुजरा।
लगभग पंद्रह मिनट तक सड़क के किनारे चलने के बाद वे पगडंडी के आरंभिक बिंदु पर पहुँच गए। पक्की सड़क छोड़कर वे जंगल से होकर पगडंडी पर चलने लगे। पगडंडियाँ टेढ़ी-मेढ़ी थीं, लेकिन मेरे भाई और काकाराम को इससे कोई डर नहीं था, क्योंकि दोनों को ऐसी पगडंडियों पर चलने का अनुभव था। कई बार मेरे भाई को रास्ता ठीक से पता नहीं चलता था, लेकिन उसे खुशी थी कि काकाराम उसके साथ था। काकाराम धीरे-धीरे लेकिन आत्मविश्वास से आगे बढ़ रहा था। मंद रोशनी वाली लालटेन के साथ भी वह आत्मविश्वास से लंबे-लंबे कदम बढ़ा रहा था, मानो दिन का उजाला हो, और मेरा भाई उसके पीछे-पीछे चल रहा था। इतना अंधेरा था कि जब

काकाराम कुछ कदम आगे बढ़ता, तो मेरे भाई को केवल मंद रोशनी वाली लालटेन ही दिखाई देती, जो आगे झूल रही थी और ज़मीन के एक छोटे से हिस्से को रोशन कर रही थी। ऐसा लग रहा था मानो लालटेन हवा में तैर रही हो, झूल रही हो और अपने आप चल रही हो। मुख्य रूप से लालटेन ही मेरे भाई को रास्ता दिखा रही थी। काकाराम लंबे समय तक बात नहीं करता था। लेकिन इससे मेरे भाई को कोई परेशानी नहीं हुई, क्योंकि काकाराम हमेशा से ऐसा ही था। और मेरा भाई भी ज्यादा बातूनी नहीं है।
लगभग सवा आधी रात को वे एक खुले मैदान में पहुँचे। यह बीच में स्थित किसी गाँव के पास था। मैदान में चलते हुए काकाराम अचानक रुक गया। मेरे भाई को लगा कि काकाराम उसे ढूँढ़ने के लिए रुका है, लेकिन उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा। इसके बजाय, वह ज़मीन पर किसी चीज़ को देख रहा था और अपनी लालटेन को ज़मीन पर झुका रहा था, मानो कुछ ढूँढ़ने की कोशिश कर रहा हो। मेरे भाई के लिए अपनी लालटेन की रोशनी से आगे कुछ भी देखना असंभव था, फिर भी काकाराम वहीं खड़ा रहा और अँधेरे में ध्यान से देखता रहा।
‘काकाराम, क्या हुआ? कुछ गड़बड़ तो नहीं है?’ मेरे भाई ने पूछा। पहले तो उसे लगा कि काकाराम शायद कोई शरारत करके उसे डराने की कोशिश कर रहा है। लेकिन यह काकाराम के स्वभाव से मेल नहीं खाता था। काकाराम एक गंभीर व्यक्ति थे।
मेरे भाई ने दोबारा पूछा, लेकिन काकाराम ने कोई जवाब नहीं दिया। वह सामने के अँधेरे में किसी चीज़ को देखता रहा।
‘क्या तुम्हें रास्ते का ठीक से पता नहीं है?’ अब मेरा भाई चिंतित होने लगा था। ऐसा लग रहा था कि काकाराम रास्ता भटक गया है, और मेरे भाई को उनके ठिकाने और अपने गाँव तक जाने के आगे के रास्ते का, या यहाँ तक कि पहले गाँव तक वापस जाने के रास्ते का भी कोई अंदाजा नहीं था।
काकाराम ने मेरे भाई की ओर देखा और उसे चुप रहने का इशारा किया। मेरा भाई अब असमंजस में था। ऐसा लग रहा था जैसे काकाराम कुछ सुनने की कोशिश कर रहा हो। शायद कोई जानवर हो। मेरे भाई ने भी आवाज़ों पर ध्यान देने की कोशिश की। जब आप सन्नाटे में किसी बहुत धीमी आवाज़ को सुनने की कोशिश करते हैं, तो आपका दिमाग तरह-तरह की आवाज़ें निकालने लगता है और आपको यकीन नहीं होता कि आप जो सुन रहे हैं वह सच है या नहीं। मेरे भाई को नाक से सांस लेने की

हल्की आवाज़ सुनाई दी। उसने ध्यान से सुनने के लिए एक पल के लिए अपनी सांस रोक ली। आवाज़ अभी भी आ रही थी, जैसे कोई हल्की खर्राटे ले रहा हो। आस-पास कोई घर नहीं था। आवाज़ ज़मीन से आती हुई लग रही थी। मेरे भाई के मन में सबसे पहले यही ख्याल आया कि शायद कुछ जानवर ज़मीन पर सो रहे हों और काकाराम उन पर पैर रखने से बचने की कोशिश कर रहा हो।
कुछ देर बाद, काकाराम मुस्कुराया, मानो उसे वह मिल गया हो जिसकी उसे तलाश थी।
'धर्मु, हमें उसी रास्ते पर चलना है, लेकिन चुप रहने की कोशिश करो। और मेरे कदमों का ठीक-ठीक अनुसरण करो, बिल्कुल भी मत भटकना। अगर तुम्हें लगे कि कोई तुम्हारे पैरों को छू रहा है या पकड़ रहा है, तो नीचे मत देखो... और चलते रहने की कोशिश करो।'
'काका, वहाँ किस तरह के जानवर सो रहे हैं?' मेरे भाई ने धीरे से पूछा। काकाराम ने कुछ नहीं कहा।
फिर काकाराम आगे चलने लगे, इस बार वे अपनी सामान्य गति से धीमे चल रहे थे। ज़मीन जगह-जगह गीली और फिसलन भरी थी। और मेरा भाई उनके बताए अनुसार उनके पीछे-पीछे चल रहा था। वे लगभग दस कदम ही चले होंगे कि काकाराम एक तरफ हट गए, मानो ज़मीन पर किसी चीज़ से बचने के लिए अपना रास्ता थोड़ा बदल रहे हों। मेरा भाई, जो अब काकाराम के ठीक पीछे चल रहा था, रास्ते में आए इस बदलाव को देख नहीं पाया और सीधा आगे बढ़ता रहा। अगले ही कदम पर उसका पैर ज़मीन पर किसी चीज़ में फंस गया। उसने नीचे देखा और मुंह के बल गिर पड़ा। उसका चेहरा ठंडे पानी से भरे एक बाल्टी में जा गिरा। अचानक हल्की खर्राटे की आवाज़ बंद हो गई। एक पल के लिए कोई आवाज़ नहीं थी... यहाँ तक कि झींगुरों की आवाज़ भी बंद हो गई थी। मेरा भाई यह देखने की कोशिश कर रहा था कि उसका पैर कहाँ फंसा है, लेकिन बहुत अंधेरा था। उसे लगा जैसे उसने किसी भारी जानवर पर पैर रख दिया हो, चाहे वह जीवित हो या मृत। अगर जीवित होता, तो उस जानवर ने उसका पैर पकड़ लिया होता। लेकिन वह जानवर की तरह हिल नहीं रहा था। मेरा भाई सोच रहा था कि शायद वहाँ किसी जानवर का आधा सड़ा हुआ शव पड़ा हो। उसने अपना पैर छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन वह मजबूती से फंसा हुआ था। जैसे ही उसने उठने

की कोशिश की, कोई चीज़ उसकी पीठ पर चढ़ गई। वह इतनी भारी थी कि उसने मेरे भाई को ज़मीन पर दबा दिया।
मेरा भाई कमज़ोर नहीं है, लेकिन यह बिल्कुल अप्रत्याशित और अभूतपूर्व घटना थी। चारों ओर घना अंधेरा था, उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, और वह रात के समय जंगल के बीचोंबीच गीली ज़मीन पर पड़ा था। मेरा भाई सोच रहा था कि कहीं उस पर किसी जानवर ने हमला तो नहीं किया, लेकिन स्पर्श किसी जानवर जैसा नहीं था। और उस जानवर के उसके ऊपर बैठने का कोई कारण भी नहीं था। ऐसा लग रहा था जैसे मांस का कोई भारी टुकड़ा उसे कुचल रहा हो। मेरा भाई डर से कांप रहा था। उसने अपनी पूरी ताकत लगाकर पलटकर अपनी पीठ पर बैठे उस जीव को देखा। उसे बस अपनी पीठ के ऊपर दो हल्की चमकती हुई आंखें दिखाई दे रही थीं, जो उसे घूर रही थीं। मेरे भाई ने आगे देखा। उसे काकाराम कहीं भी नज़र नहीं आया।
कुछ ही सेकंड में, मेरे भाई को अपने ऊपर और अधिक भार महसूस हुआ। अब उसके शरीर पर और भी जीव आ गए थे। अब उसके लिए साँस लेना भी मुश्किल हो गया था। वह अपने पैरों, पीठ और यहाँ तक कि कंधों पर भी भार महसूस कर सकता था। उसे खिलखिलाहट सुनाई दी। जो भी उसके ऊपर बैठा था, वह खिलखिला रहा था और उछल-कूद कर रहा था। खिलखिलाहट बढ़ती गई। दस-पंद्रह से भी अधिक अलग-अलग जीव खिलखिला रहे थे, कुछ बच्चे की तरह, कुछ नवजात शिशु की चीख की तरह, कुछ नन्हे बच्चों की तरह और कुछ छह-सात साल के बच्चे की हँसी की तरह साफ।
उस पर मौजूद जीव उछल-कूद कर रहे थे। जब उसने दोबारा मुड़ने की कोशिश की, तो दर्द से चीख उठा। ज़मीन से दो छोटे-छोटे हाथ निकले और उसका सिर खींचकर उसके कान ज़मीन की ओर दबा दिए। वह अपना सिर नहीं उठा पा रहा था। उसने सांस लेने के लिए अपना सिर झुकाया। उसकी नाक अब पानी में थी, और वह आधे मुंह से ही सांस ले पा रहा था। उसने गंदा पानी थूकने की कोशिश की, लेकिन सांस लेने के लिए मुंह खुला रखना पड़ रहा था, इसलिए गंदा पानी फिर से उसके मुंह में चला गया। उसकी सांस फूलने लगी थी। वह अपनी आंखें नहीं खोल पा रहा था, क्योंकि उसके कान खींचे हुए हाथों ने उसकी आंखें दबा रखी थीं।

उसके नीचे की ज़मीन नरम थी और जीवों के उछलने से धंस रही थी। वह ज़मीन में ऐसे धंस रहा था जैसे कोई कील नरम लकड़ी में ठोकी जा रही हो। हर गुज़रते पल के साथ उसकी हरकतें और भी सीमित होती जा रही थीं। ठंडा पानी उसके कपड़ों में रिस रहा था। उसे अपनी त्वचा में चुभते हुए नाखूनों का एहसास हो रहा था। वह दर्द से चीख उठा। वह कमर तक ज़मीन में धंस गया था। कीचड़ भरे पानी से आधा मुंह भरा होने के बावजूद उसने पूरी ताकत से 'का..का..राम' चिल्लाया।

'मैंने तुमसे कहा था, धर्मु, सावधान रहना।' मेरे भाई ने काकरम की आवाज़ सुनी। लेकिन अब वह कुछ बोल नहीं पा रहा था। उसका मुँह कीचड़ से सटा हुआ था। उसे अपने मुँह में गीली मिट्टी और घास का मिला-जुला स्वाद महसूस हो रहा था। वह डूबने वाला था।

'धर्मु, शांत रहो, अपनी आँखें बंद रखो,' काकाराम ने कहा। मेरे भाई को काकाराम के खींचने का एहसास नहीं हुआ। इसके बजाय, उसे हँसी-मज़ाक के बीच एक अजीब, समझ से परे आवाज़ सुनाई दी। काकाराम कुछ जप रहे थे। उनकी आवाज़ बहुत अलग थी। वह भारी और गूंजती हुई थी। मेरा भाई उस आवाज़ की कंपन महसूस कर सकता था। बेशक वह डरा हुआ था, लेकिन काकाराम की उपस्थिति ने उसकी उम्मीदें ज़िंदा रखीं। ऐसा लग रहा था जैसे वह आवाज़ उसे अंदर से गर्माहट दे रही हो।

उसे इस बात का एहसास नहीं हुआ कि काकाराम उसकी पीठ पर रखी चीज़ों को खींच रहा है। अब वे जीव उछलना बंद कर चुके थे। एक-एक करके भार हटते गए, और मेरा भाई अपना सिर उठाकर खड़ा हो सका। जो भी था, काकाराम ने उसे उसके घातक चंगुल से मुक्त कर दिया था।

मेरे भाई को लगा जैसे वजन से उसकी हड्डियाँ टूट गई हों, लेकिन वह उठ खड़ा हुआ। उठते ही वह उस जगह से भागने लगा। काकाराम पहले ही आगे निकल चुका था। थोड़ी दूरी पर पहुँचकर मेरे भाई ने पीछे मुड़कर देखा। चारों तरफ घना अंधेरा था। उसने अपने फोन की फ्लैशलाइट जलाई। उसका फोन भी गीला था, लेकिन सौभाग्य से चल रहा था। वहाँ भारी-भारी पत्थर कतार में रखे थे। कुछ जगहों पर छोटे-छोटे धातु के पिंजरे बने थे। वह जगह कब्रिस्तान जैसी लग रही थी, लेकिन वहाँ कोई क्रॉस नहीं था। उसने उस जगह को देखने की कोशिश की जहाँ उसका पैर फंसा था। वह ज़मीन

का एक छोटा सा उठा हुआ टुकड़ा था। वहाँ कुछ भी ऐसा नहीं था जो उसके पैर को पकड़ सके या फंसा सके।
मेरे भाई ने छोटे बच्चों की आत्माओं की कहानियाँ सुनी थीं, जिन्हें स्थानीय भाषा में तेंगु कहते हैं। लेकिन उसने कभी उन पर विश्वास नहीं किया। उसी क्षण वे कहानियाँ उसे याद आ गईं। एक बार हमारे गाँव के एक आदमी के पैर पर काटने का निशान था, जिसके बारे में उसने दावा किया कि वह तेंगु का काटा हुआ निशान है। वह निशान किसी जानवर के काटने जैसा नहीं था। उसमें दो टेढ़ी-मेढ़ी मेहराब जैसी आकृतियाँ थीं, जैसे किसी बच्चे के काटने पर होती हैं। उसने बताया कि रात में जंगल में चलते समय एक 'तेंगु' या छोटा भूत उसके पैर से चिपक गया था। उस आदमी ने यह भी बताया कि अंधेरे में तेंगु की हल्की लालिमा दिखाई देती थी। वह किसी घने, लाल, टेढ़े-मेढ़े मांस के टुकड़े जैसा था, जो उसके पैर को दबा रहा था। अपनी पूरी ताकत लगाने के बावजूद भी वह अपना पैर तब तक नहीं छुड़ा सका जब तक तेंगु को उसका खून नहीं मिल गया। उस समय मेरे भाई ने इसे कोई मज़ाक या किसी नशे में धुत व्यक्ति की कहानी समझा था। कहा जाता था कि क्योंकि ये छोटे बच्चों की आत्माएँ होती हैं, इसलिए वे बच्चों की तरह ही शरारती और जिद्दी होती हैं। ये कहानियां तब तक झूठ या महज दिलचस्प गपशप जैसी लगती थीं जब तक वे किसी और के साथ घटित होती थीं, लेकिन अब मेरे भाई को ये सब सच लगने लगा था।
मेरे भाई के फोन की फ्लैशलाइट कुछ ही मीटर दूर तक देखने के लिए पर्याप्त नहीं थी, फिर भी उसने अपनी आँखों के कोने में कुछ हिलता हुआ देखा। जैसे ही उसने मुड़कर देखा, उसे एक बहुत ही धुंधली लाल रोशनी दिखाई दी जो उससे कुछ मीटर दूर ज़मीन से निकलती हुई प्रतीत हुई। वह रोशनी एक अजीब आकार के लेकिन बड़े कद्दू जैसी थी। वह तेंगु था।
देखते ही देखते, कब्रिस्तान में कई और रोशनी दिखाई देने लगीं। रोशनी धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ने लगीं। मेरे भाई को अपने शरीर में बिजली का झटका सा महसूस हुआ और उसके शरीर में एड्रेनालिन का स्तर बढ़ गया। उसने हिलने की कोशिश की, लेकिन डर के मारे वह हिल भी नहीं पा रहा था।
‘जल्दी चलो धर्मु। भागो!’ काकाराम की आवाज ने उसकी मुद्रा को तोड़ दिया।
'जल्दी से मेरे पीछे आओ,' आवाज ने फिर कहा।

एक बार फिर, मेरा भाई लालटेन का पीछा करने लगा, इस बार बहुत तेजी से। कीचड़ से लथपथ मेरा भाई जितनी तेज़ी से चल सकता था, चला, लेकिन लालटेन उससे आगे निकल गई। काकाराम उससे भी तेज़ चल रहा था।

मेरा भाई लालटेन को पकड़ने के लिए तेज़ी से आगे भागा, लेकिन उसे पकड़ नहीं पाया। लालटेन भी उतनी ही तेज़ी से आगे बढ़ती रही जितनी तेज़ी से वह भाग रहा था। अपनी कम उम्र के बावजूद, काकाराम मेरे भाई से आगे रहा। वे लगभग एक मिनट तक लगातार दौड़ते रहे होंगे। पहाड़ी रास्ते पर दौड़ना बहुत अलग होता है। रास्ता टेढ़ा-मेढ़ा है, जिसमें कई मोड़ और उतार-चढ़ाव हैं। ऐसा लगता है जैसे एक ही समय में ऊपर चढ़ना, मुड़ना, नीचे उतरना... सब कुछ हो रहा हो। दौड़ते-दौड़ते मेरे भाई का एक जूता फिसल गया। उसने उसे उठाने के लिए रुकने की ज़हमत नहीं उठाई और दौड़ता रहा।

मेरे भाई रास्ते के घुमावों पर नियंत्रण नहीं रख पाए और किसी चीज़ से ठोकर खाकर गिर पड़े। दुर्भाग्यवश, वे गिरने से खुद को बचा नहीं पाए और ढलान की ओर लुढ़क गए। फिसलते हुए उन्होंने हाथों से किसी भी चीज़ को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन उन्हें केवल कुछ सूखे पत्ते और कोहनियों पर चोट के निशान ही मिले। लगभग दस फीट नीचे एक पेड़ ने उन्हें गिरने से बचाया। उनका कंधा और सिर किसी कठोर चीज़ से टकराया। उन्हें असहनीय दर्द हुआ। बाद में उन्हें पता चला कि उनका कंधा टूट गया था। उन्होंने धुंधली लाल वस्तुओं को अपने पैरों को पकड़ते हुए और उन्हें नीचे खींचते हुए देखा। उन्हें लगा कि उनका अंत आ गया है। उन्होंने काकाराम के चेहरे की एक झलक देखी, जो उन्हें देखते ही गायब हो गई। उस समय मेरे भाई ने यह नहीं सोचा कि काकाराम उन्हें देखने के लिए दस फीट नीचे ढलान पर कैसे आए। बेहोश होने से पहले उन्होंने बस हमारे देवता का नाम जपा।

अगली सुबह जब मेरे भाई को होश आया, तो वह हमारे ग्राम देवता के मंदिर परिसर में था। वह एक सख्त लकड़ी के पलंग पर लेटा हुआ था और उस पर एक मोटा कंबल था। उसके सिर पर पट्टी बंधी थी और उसकी बांह को एक कपड़े से लपेटकर उसकी गर्दन के चारों ओर बांधा गया था ताकि उसे सहारा मिले और उसकी हरकत सीमित रहे। हमारे पिता, मंदिर के पुजारी और माध्यम, उसके पलंग के पास बैठे थे। जब मेरे

भाई ने उठने की कोशिश की, तो उसे अपने कंधे में तेज दर्द महसूस हुआ। मेरे पिता ने उसे लेटे रहने को कहा।
मंदिर के पुजारी ने मेरे भाई को बताया कि एक तांत्रिक ने उसे आधी रात को जगाया और बताया कि देवता ने उससे बात की थी। देवता ने उसे बताया था कि तुम मंदिर के बाहर सीढ़ियों पर लेटे हुए थे।
'उन्होंने मुझसे कहा कि मैं तुम्हारे सिर पर पट्टी बांध दूं और तुम्हें कंबल ओढ़ा दूं। जब हम पहुंचे, तो तुम इन सीढ़ियों पर बेहोश पड़े थे। देवता ने माध्यम से यह भी बताया था कि किसी ने देवता से तुम्हें बचाने की गुहार लगाई है।' पुजारी ने कहा।
मेरे भाई का अनुमान था कि जब वह ढलान में गिरा था, तब वे देवता के मंदिर से कम से कम तीन किलोमीटर दूर थे। फिर वह मंदिर तक कैसे पहुँचा? काकाराम अकेले उसे उस गड्ढे से निकालकर मंदिर तक नहीं ला सकता था।
'कितना समय हुआ था?' तुम कब उठे और मुझे ढूंढने यहाँ आए?'
'आधी रात के बाद आधा घंटा बीत चुका था।'
'आप विश्वस्त हैं?'
'मैंने उठते ही समय देखा था,' पुजारी ने अपनी कलाई घड़ी देखते हुए कहा।
मेरे भाई को याद है कि वे आधी रात के सवा दो बजे के आसपास श्मशान घाट पर थे और उसके पैर फंस गए थे। फिर वे छोटे भूतों से भाग निकले। इस सब में लगभग पंद्रह मिनट लगे होंगे, जिसका मतलब है कि जब वह गिरा तब आधी रात के करीब का समय रहा होगा। फिर वह उसी समय मंदिर कैसे पहुँच पाया?
कुछ देर बाद गांव का वैद्य आया और उसने मेरे भाई के घावों को देखा। मेरे भाई को एहसास हुआ कि देवता की शक्ति ही उसे रात में मंदिर तक ले आई थी। लेकिन उसे बचाने के लिए देवता को किसने बुलाया था? क्या किसी ने उसके लिए प्रार्थना की थी?
'धर्मु, यह सब कैसे हुआ?'
'मुझे लगता है कि मुझे तेंगुस ने पकड़ लिया था। उनमें से कई लोगों ने,' मेरे भाई को यह कहते हुए खुद पर विश्वास नहीं हो रहा था।
सबने एक-दूसरे की तरफ देखा।
'कहाँ?'

'हम अपने गांव की ओर पैदल यात्रा कर रहे थे... रास्ते में एक खुला मैदान था, वहां अजीबोगरीब पत्थर और जमीन पर कुछ पिंजरे पड़े थे।'
‘ओह, यह तो बच्चों का कब्रिस्तान होगा। जंगली जानवरों से बचाने के लिए यहाँ पत्थर और पिंजरे रखे जाते हैं,’ पुजारी ने कहा।
मेरे भाई ने हैरानी से उसकी ओर देखा।
‘यह कब्रिस्तान तो है, लेकिन इस क्षेत्र में ज्यादा ईसाई नहीं हैं।’
‘नहीं, ईसाइयों के लिए नहीं। हिंदू कम उम्र में मृत्यु होने पर दाह संस्कार नहीं करते, वे उन्हें दफनाते हैं,’ मेरे पिता ने उनसे कहा।
‘फिर क्या हुआ?’ पुजारी ने पूछा।
'मेरा पैर जमीन पर कहीं फंस गया और मैं गिर गया। फिर वे सब मेरे ऊपर टूट पड़े। मेरे पैर, पीठ और चेहरा। वे मुझे जमीन पर घसीट रहे थे।'
'कौन?'
'अजीबोगरीब जीव थे, मुझे लगता है वे तेंगु थे, वे मुझ पर कूद रहे थे। हाथ थे, जो मेरा सिर ज़मीन में खींच रहे थे। मैंने पूरी कोशिश की लेकिन मैं उन्हें हटा नहीं सका।'
‘क्या तुमने उन्हें देखा? तेंगुस को?’ उस माध्यम ने मुझसे पूछा।
‘मुझे नहीं पता कि वह क्या था, लेकिन मुझे ऐसा लगा जैसे वह टेंगस थे, जैसा कि कुछ लोगों ने पहले बताया था। ये टेंगस क्या हैं? उन्होंने मुझ पर हमला क्यों किया?’ मेरे भाई ने मीडियम से पूछा।
‘बचपन में मर चुके बच्चों की आत्माएं। कई बार तो उन्हें पता भी नहीं होता कि वे मर चुके हैं और वे भ्रमित रहते हैं। वे अपनी बुनियादी भूख मिटाने के लिए लोगों से चिपक जाते हैं, और कभी-कभी वे अपने माता-पिता की तलाश में अपने घर लौटने की कोशिश करते हैं। बच्चे होने के नाते वे जिद्दी होते हैं। अगर कोई बच्चा किसी बात के लिए आपके पीछे पड़ जाए, तो वह बड़ों से भी ज्यादा अड़ियल होता है।’
मेरे भाई ने सिर हिलाया। इससे उनके चिपचिपे व्यवहार का कारण समझ में आ गया।
‘तुम उनसे कैसे बच निकले और रात में यहाँ कैसे पहुँचे?’
‘काकाराम आए और मेरी मदद की। मुझे नहीं पता उन्होंने यह कैसे किया। वे आए और कुछ मंत्र पढ़े और फिर वे, तेंगू लोग, मुझे छोड़कर चले गए। फिर मैं उठा और भागने लगा। मैं काकाराम के पीछे-पीछे गया, लेकिन ढलान पर फिर गिर गया। बेहोश

होने से पहले मैंने काकाराम को देखा। फिर, मैं यहाँ पहुँच गया। मुझे आश्चर्य है कि काकाराम मुझ तक कैसे पहुँच पाए। काकाराम कहाँ हैं? क्या वे घर चले गए?' मेरे भाई ने पूछा।
माध्यम और पुजारी दोनों ने पहले मेरे भाई को और फिर मेरे पिता को देखा।
'Kakaram?'
'काकाराम, गांव का बूढ़ा व्यापारी। किराने की दुकान चलाने वाले का पिता।'
'वह काकाराम?' माध्यम ने पूछा।
'हां, हम कल रात साथ थे।'
मेरे भाई के आसपास मौजूद सभी लोग एक-दूसरे को देखने लगे, कुछ समझ नहीं पा रहे थे। मेरा भाई उनके अजीब व्यवहार से हैरान था। जब उसने दोबारा काकाराम के बारे में पूछा, तो मेरे पिता ने बात की।
'धर्मु, काकाराम का निधन तीन दिन पहले हो गया। वह दूसरे गांव से घर लौट रहे थे तभी दिल का दौरा पड़ने से उनकी मृत्यु हो गई। उनका अंतिम संस्कार परसों किया गया।'
तब मेरे भाई को सब कुछ समझ में आ गया। यह काकाराम की आत्मा ही थी जिसने उसका मार्गदर्शन किया, उसे बचाया और फिर उसकी मदद के लिए देवता को पुकारा।

एक ऐसी घोड़ी जिसे देखना मना है

(सच्ची घटना पर आधारित)

पांच साल बाद मैंने इतनी लंबी बस यात्रा की थी। और पहाड़ों की यह मेरी पहली बस यात्रा थी। दिल्ली से कुल्लू पहुँचने में बस को आठ घंटे लगे। जब तक बस समतल सड़कों पर नहीं पहुँची, तब तक मुझे नींद आती-जाती रही। फिर बस पहाड़ों में पहुँची और घुमावदार, संकरी पहाड़ी सड़कों पर चलने लगी। बस के एक तेज़ मोड़ ने मुझे झकझोर कर जगा दिया। यात्रा का अधिकांश भाग ब्यास नदी के किनारे-किनारे चला। नज़ारा बेहद खूबसूरत था। यात्रा के अंतिम चरण में हमें कई मोड़ों और घुमावों का सामना करना पड़ा, जिनमें कुछ अंधे मोड़ भी शामिल थे। कुछ जगहों पर जहाँ सड़क संकरी थी, वहाँ बस को रुकना पड़ा और दूसरी तरफ से आने वाले वाहन को पहले

निकलने देना पड़ा। ड्राइविंग में माहिर होने के बावजूद, इन सड़कों पर गाड़ी चलाने के लिए अच्छे अनुभव की आवश्यकता थी, और हमारा ड्राइवर काफी अनुभवी लग रहा था।

बाहर का नज़ारा बेहद खूबसूरत था। मैंने चलती बस से अपने फोन कैमरे से कुछ तस्वीरें खींचीं। लेकिन स्क्रीन पर दिख रही तस्वीरें उस जगह की असल खूबसूरती के बिल्कुल भी करीब नहीं थीं। इसलिए मैंने वे तस्वीरें डिलीट कर दीं।

बस जब एक स्टॉप पर कुछ देर रुकी, तो मैंने कुछ और तस्वीरें खींचीं। वे तस्वीरें बेहतर थीं, लेकिन फिर भी मेरी आँखों के सामने मौजूद सुंदरता को पूरी तरह से नहीं दर्शा सकीं। सुंदरता केवल तस्वीरों में कैद होने वाली सुंदरता से कहीं अधिक थी; यह ध्वनियों और मौन में भी थी। यह मेरे फेफड़ों में प्रवेश करने वाली ताजी हवा में भी थी। इन सब का अनुभव करने के लिए कोई फोटो या वीडियो कैमरा पर्याप्त नहीं है; यहाँ आकर इसे स्वयं अनुभव करना आवश्यक है।

मैं जिस बस में सफर कर रहा था, वह एक 'डीलक्स' बस थी, और सीटें थोड़ी पीछे झुकती थीं, फिर भी मुझे लंबे समय तक बैठे रहने से थकान महसूस होने लगी थी। आठ घंटे किसी भी सीट के लिए आरामदायक बने रहना बहुत लंबा समय होता है। मुझे यहां आने के अपने जल्दबाजी वाले फैसले पर पछतावा होने लगा था।

ऑफिस के ब्रेक के दौरान, मैंने अपने सहकर्मी लकी को बताया कि मुझे पहाड़ बहुत पसंद हैं और मैं शिमला, कसौली, नैनीताल और मसूरी घूम चुका हूँ। उस समय मुझे नहीं पता था कि लकी हिमाचल प्रदेश के कुल्लू के पास पहाड़ियों में बसे एक छोटे से गाँव से है। उसने कहा कि मैंने जो देखा वह सुंदर तो था, लेकिन वह असली पहाड़ नहीं थे। और अगर मुझे पहाड़ों का असली अनुभव लेना है, तो मुझे उसके गाँव जाना होगा। पता नहीं क्या हुआ, और मैं उसके गाँव जाने के लिए तैयार हो गया। सच कहूँ तो, मैं बहुत उत्साहित था। उसने अपने घर जाने के लिए छुट्टी ली थी और मैंने दो दिन बाद उससे मिलने की योजना बनाई।

कहीं मैं गलती से अपना स्टॉप न चूक जाऊं, इसलिए मैंने बस ड्राइवर और कंडक्टर दोनों को कई बार कहा कि मुझे उस जगह पर उतार दें जहाँ से मैं टिंडर गाँव तक पैदल जा सकूँ। वे बस मुस्कुराए और मुझे चिंता न करने को कहा। गाँव का नाम, टिंडर, उसी नाम के डेटिंग ऐप से संबंधित नहीं है। यह गाँव ऐप से बहुत पहले से हिमाचल प्रदेश के

कुल्लू जिले में मौजूद है। दिल्ली से लंबी बस यात्रा के बाद, इस गाँव तक पहुँचने के लिए तीन घंटे की पैदल यात्रा करनी पड़ती है, जिसमें एक छोटी नदी को पार करना भी शामिल है।
कंडक्टर ने मेरी बात ध्यान से सुनी और मुझे मेरे स्टॉप से एक मिनट पहले बताया। उस जगह पर बस से उतरने वाला मैं अकेला था। जब हम पहाड़ियों में पहुँचते हैं, खासकर ऐसी जगहों पर जो लोकप्रिय पर्यटन स्थलों से दूर होती हैं, तो सबसे पहले हमें सन्नाटा ही दिखाई देता है। ऐसा लगता था मानो समय थम गया हो, जैसे किसी ने जीवन की सारी भागदौड़ पर पॉज़ बटन दबा दिया हो। बस के चले जाने के बाद, मुझे केवल पक्षियों की चहचहाहट सुनाई दे रही थी।
लंबी पैदल यात्रा शुरू करने से पहले जब मैं अंगड़ाई ले रहा था, तभी मुझे अपने पास आते कदमों की आहट सुनाई दी। वह लकी था। मैंने उससे न आने का अनुरोध किया था क्योंकि एक तरफ से तीन घंटे की पैदल यात्रा थी।
फिर भी, उसे देखकर मुझे राहत मिली। मुझे अपने रास्ते को लेकर संदेह होने लगा था, और चूंकि रास्ते में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जिससे मैं दिशा-निर्देश पूछ सकूं, इसलिए मैंने उससे फोन पर बात करने की योजना बनाई थी।
‘हैलो लकी’
'नमस्ते महोदय'
मैंने उसे गर्मजोशी से गले लगाते हुए कहा, 'मैंने तुमसे कहा था कि मैं अकेले आ जाऊंगी, इससे तुम्हारे दिन के तीन घंटे बच जाते।'
‘तुम्हारे लिए तीन घंटे, लेकिन मेरे लिए सिर्फ एक घंटा,’ उसने गर्व भरे स्वर में कहा। मैंने सिर हिलाया। वह सही कह रहा था।
लकी को पहले से ही अंदाज़ा था कि मुझे इस समय भूख लगी होगी। वह गर्म चाय का थर्मस, कुछ कागज़ के कप और कुछ पकौड़े लेकर आया। हम पास ही गिरे हुए पेड़ के तने पर बैठ गए और कागज़ के कपों में गरमा गरम मसाला चाय पीते हुए नज़ारे का आनंद लिया। यह अब तक की सबसे ताज़गी भरी चाय थी जो मैंने पी थी।
मैंने लकी से पूछा, 'क्या टिंडर ऊपर है?' मैंने सामने वाली पहाड़ी की ओर इशारा करते हुए यह पूछा।
'हां, यह ऊपर ही है,' लकी ने आगे की पहाड़ी की ओर इशारा करते हुए कहा।

‘हम अपनी यात्रा कहाँ से शुरू करें?’
उसने मेरी बांह को ऊपर की ओर इशारा करते हुए पकड़ा और फिर उसे नीचे खींच लिया। पहाड़ी की तलहटी में स्थित नदी की ओर इशारा करते हुए उसने आगे कहा, 'वहां से नीचे से,' 'पहले हम नीचे उतरेंगे, नदी पार करेंगे और फिर ऊपर चढ़ेंगे।'
उन्होंने मेरा बैग उठाने की पेशकश की, लेकिन मैंने मना कर दिया। वह एक छोटा सा बैग था, जिसमें कुछ कपड़े और मेरा लैपटॉप था। मैंने दो रात रुकने की योजना बनाई थी। हमने नदी की ओर उतरते हुए अपनी यात्रा शुरू की।
सड़क से देखने पर नदी चट्टानों के बीच से बहती हुई एक छोटी सी धारा जैसी लग रही थी, लेकिन जैसे-जैसे हम नीचे उतरते गए, यह तेज़ और चौड़ी होती गई। हमने अपने जूते उतारकर हाथों में उठा लिए और नदी में उतरने से पहले अपनी पैंट घुटनों तक ऊपर खींच ली। पानी ठंडा और ताज़गी भरा था। नदी के तल के चिकने पत्थरों ने मेरे थके हुए पैरों की मालिश की। हमने पानी में डूबे पैरों के साथ एक-दूसरे की कुछ तस्वीरें खींचीं। नदी पार करने में लगभग दो या तीन मिनट लगे होंगे। यह ट्रेक शुरू करने का एक शानदार तरीका था। पानी में चलना मुझे कुछ पवित्र स्थानों के प्रवेश द्वार पर बने छोटे-छोटे तालाबों की याद दिला रहा था, जहाँ प्रवेश करने से पहले पैरों की गंदगी साफ की जाती थी, मानो वह पहाड़ी कोई पवित्र तीर्थस्थल हो। शहर में ऐसी जगहें हर दिन हजारों लोगों को आकर्षित करती हैं, जिससे अंततः उनकी सुंदरता नष्ट हो जाती है, लेकिन यहाँ हम केवल दो लोग थे।
सड़क पर वाहनों की बहुत धीमी और दूर से आती हुई गुनगुनाहट सुनाई दे रही थी, जो आगे बढ़ने के साथ-साथ धीरे-धीरे कम होती गई और सन्नाटा गहराता गया। मेरी थोड़ी भारी साँसों के अलावा, हमें अपने पैरों के नीचे सूखी पत्तियों की चरमराहट और कभी-कभार किसी पक्षी की चहचहाहट सुनाई दे रही थी। ठंड थी और आसमान में बादल छाए हुए थे, लेकिन बारिश या बर्फ नहीं गिर रही थी।
जब हम गाँव पहुँचे तो दोपहर का समय था। मैं बहुत थका हुआ था। वहीं लकी ऊर्जा से भरपूर था। कुछ घरों के बीच खुले मैदान में कुछ कुर्सियाँ रखी थीं। लकी ने मुझे अपने परिवार के सदस्यों से मिलवाया, जिनमें उसके पिता, माता और बड़ा भाई शामिल थे। वहाँ और भी लोग थे, और सभी ने मेरा हार्दिक स्वागत किया। मैंने अनुमान लगाया कि गाँव में लगभग तीस घर थे, जिनमें से अधिकांश किसी भी औसत शहरी अपार्टमेंट से

कहीं बड़े थे। मेरा मानना है कि कुछ ही घंटों में पूरे गाँव को पता चल गया कि मैं एक आगंतुक हूँ। यह मेरे लिए कोई विशेष व्यवस्था नहीं थी, बल्कि बाहर से आने वाले हर आगंतुक के लिए थी, क्योंकि गाँव एक घनिष्ठ परिवार की तरह था।
कुछ ही घंटों में दिन ढल गया। लकी मुझे एक ऐसी जगह ले गया जहाँ से हम सूर्यास्त देख सकते थे। क्षितिज का किनारा बादलों के नीचे छिपे सूरज से हल्की रोशनी से जगमगा रहा था, जिससे उसमें पीले और लाल रंग की छटा बिखरी हुई थी। नज़ारा बेहद खूबसूरत था। मैंने वहाँ कई तस्वीरें खींचीं। हर तस्वीर फ़ोन या लैपटॉप के वॉलपेपर के लिए बढ़िया थी। धीरे-धीरे घाटी, सड़क और नीचे बहती नदी धुंध में गायब हो गईं, और आसमान गुलाबी, हल्के बैंगनी और नीले रंगों का मिश्रण बन गया, पश्चिम में बस एक सुनहरी रेखा दिखाई दे रही थी। कुछ मिनट वहाँ बैठकर खास चाय की चुस्कियाँ लेने से मेरी सारी थकान दूर हो गई। चाय मेरे लिए किसी एनर्जी ड्रिंक जैसी थी। अभी बर्फ़बारी नहीं हुई थी, लेकिन कड़ाके की ठंड थी। मैंने अपनी सबसे गर्म जैकेट पहनी हुई थी, अपने हाथों को जेबों में डाले रखा था, या उन्हें आपस में रगड़ रहा था ताकि वे सुन्न न पड़ें। मेरी परेशानी देखकर लकी ने मुझे दस्ताने दिए, जबकि उसने खुद कोई दस्ताने नहीं पहने थे।
मैंने अपने पीछे वाले गाँव से धुआँ उठता देखा। इससे मुझे याद आया कि आज तेरह जनवरी है, लोहड़ी का त्योहार।
क्या यह लोहड़ी की आग है?
लकी ने धुएं की ओर देखा, जो शाम की पीली धूप में सोने की तरह चमक रहा था।
‘हां, उन्होंने शुरू कर दिया है।’ लकी ने सिर हिलाते हुए कहा।
'क्या अभी बहुत जल्दी नहीं है? मेरा मतलब है, शहर में हम लोहड़ी का जश्न तब शुरू करते हैं जब पूरी तरह से अंधेरा हो जाता है, लगभग रात के नौ बजे, और फिर यह आधी रात तक या उससे भी बाद तक चलता रहता है।'
'नहीं महोदय, हम यहाँ रात में बाहर नहीं रुकते, खासकर आज रात।'
मुझे जिज्ञासा हुई। लेकिन इससे पहले कि मैं लकी से कारण पूछ पाता, एक बच्चे ने हमें उत्सव में शामिल होने के लिए बुला लिया।
उत्सव संक्षिप्त था। हमने गुड़ और तिल से बनी कुछ मिठाइयाँ खाईं, जो लोहड़ी के त्योहार की पारंपरिक मिठाइयाँ हैं। हमने अलाव के चारों ओर चक्कर लगाया और

उसमें कुछ तिल डाले। मैं उत्सव का आनंद ले रहा था, लेकिन थोड़ी ही देर में एक बुजुर्ग ने दूसरों को उठने का इशारा किया। सब कुछ जल्दी से समेटा गया और लोग हड़बड़ी में अपने घरों को लौट गए।
अगले आधे घंटे में, बची हुई थोड़ी सी धूप भी पूरी तरह गायब हो गई। अंधेरा छा गया, लेकिन शहरों जैसा अंधेरा नहीं। शहरों में कभी पूरी तरह अंधेरा नहीं होता। बिजली गुल होने पर भी घरों में बैकअप पावर से रोशनी रहती है, और गुजरती गाड़ियाँ सड़कों को रोशन करती रहती हैं। लकी का घर पहाड़ की चोटी पर था, जहाँ से नीचे दूर पहाड़ों और घाटियों का नज़ारा दिखता था। लेकिन रात में नीचे सिर्फ़ घना अंधेरा ही होता था, ऐसा लगता था जैसे हम धरती और आकाश के बीच कहीं लटके हुए हों। अब तक घने कोहरे ने पूरे गाँव को घेर लिया था, तारे भी दिखाई नहीं दे रहे थे। मैंने सोचा, अगर किसी को इतने अंधेरे में बाहर निकलना पड़े तो क्या होगा? मैं बाहरी दुनिया से कटा हुआ महसूस कर रहा था। मुझे यकीन था कि कम से कम आज रात तो मुझे यहाँ कोई परेशान नहीं कर सकता।
स्वादिष्ट भोजन के बाद मुझे मेरे कमरे में ले जाया गया। यह लकी के घर की ऊपरी मंजिल पर लकड़ी के फर्नीचर से सजा कमरा था। घर मेरे शहर के अपार्टमेंट से काफी बड़ा था। कमरे में एक खिड़की थी जो दूर पहाड़ों की ओर खुलती थी।
‘क्या तुम्हें यह पसंद आया?’ लकी ने पूछा।
‘पसंद आया?... मुझे तो बहुत पसंद आया, सब कुछ इतना खूबसूरत है... बिलकुल सपने जैसा।’
‘क्या तुम थके नहीं हो? क्या तुम सोना नहीं चाहते?’
'दरअसल, मैं थका हुआ था, लेकिन उस लज़ीज़ भोजन और ताज़ी पहाड़ी हवा ने मेरी ऊर्जा को फिर से भर दिया है।' मैं यहाँ अपने समय का भरपूर लाभ उठाना चाहता था, इसलिए नींद मेरे दिमाग में सबसे आखिरी चीज़ थी।
मेरे चचेरे भाई-बहन और दोस्त अलाव जलाने की योजना बना रहे हैं। कल रविवार है, इसलिए हम खूब मस्ती करने की सोच रहे हैं... पेय पदार्थ भी होंगे, क्या आप भी आना चाहेंगे?
मौसम, जगह और हालात, सब कुछ अलाव जलाने के लिए बिल्कुल सही था। आधी रात को अलाव के आसपास बैठकर बातें करना वाकई यादगार रहेगा। 'हाँ, क्यों नहीं?

लेकिन आप कह रहे थे कि सब लोग घर के अंदर ही रहते हैं, खासकर लोहड़ी पर,' मैंने कहा।
'सर, हम घर के परिसर के अंदर अलाव जलाने की योजना बना रहे हैं। इसकी अनुमति है। यह पास ही है, यहाँ से बस तीसरा घर है। हम वहाँ आधी रात के बाद तक रह सकते हैं। उसके बाद आप यहाँ वापस आ सकते हैं।'
मैंने टिप्पणी की, 'दिलचस्प नियम।'
'सर...' लकी कुछ कहने ही वाला था, लेकिन रुक गया।
'क्या?'
'यह महत्वपूर्ण नहीं है, हम इस बारे में वहां... अलाव के पास बैठकर बात कर सकते हैं।' उसने कहा।
एक बड़े घर के आंगन के बीचोंबीच अलाव जलाया गया था। यह पुराने ज़माने का घर था, जिसमें चारों ओर कमरे थे और बीच में घास का मैदान था। यह लकी के चाचा का घर था। उनके चाचा दूसरे गाँव चले गए थे, इसलिए यह पार्टी के लिए एकदम सही जगह थी। अलाव के चारों ओर कुर्सियाँ लगाई गई थीं। लकी ने कुछ जलपान और नाश्ते का इंतज़ाम किया था। लकी और मेरे अलावा वहाँ तीन और लोग थे। लकी ने मुझे उनसे मिलवाया। मैंने उन सभी को उनके आतिथ्य के लिए धन्यवाद दिया और बताया कि मुझे गाँव की सुंदरता और उसका शांत वातावरण कितना पसंद आया।
दोनों लड़के लकी से छोटे लग रहे थे। वे उसके चचेरे भाई अनिल और भूपि थे, जो हमेशा पार्टी करने या शरारत करने के मूड में रहते थे। उनके बाद सोमनाथ नाम का एक बड़ा आदमी था, जो पुलिस विभाग में काम करता था और थोड़ा गंभीर दिखता था। माहौल एकदम सही था, मौसम सर्द और अंधेरा था, और हमारे सामने एक बढ़िया सी अलाव जल रही थी। ऐसे वातावरण में कई रोचक बातचीत होना लाज़मी था।
मैंने बात शुरू की, 'मैंने पहाड़ियों से जुड़े कई रहस्यों के बारे में सुना है... ऐसी अनसुलझी घटनाएं, जो दिल्ली जैसे शहरों में बहुत कम देखने को मिलती हैं। क्या आपको भी ऐसी किसी घटना के बारे में पता है?' हम एक पुराने मकान के बीच में बैठे थे, जिसके चारों ओर कई खाली कमरे थे। हमारे चारों ओर एक अजीब सा डर का माहौल था, और मैं उसे और बढ़ाना चाहता था।

‘सर, हिमालय हमेशा रहस्यों से भरा रहेगा। देखिए, हिमालय का एक बड़ा हिस्सा अछूता है। ऐसी जगहें हैं जहाँ आज तक कोई नहीं पहुँचा... या देखा है। मेरा मतलब है, दिल्ली में आपको ऐसी कोई जगह नहीं मिलेगी। कुछ जगहें तो गूगल मैप्स पर भी नहीं हैं... जैसे छिपी हुई गुफाएँ।’ लकी ने कहा।
‘भाई, हमारे इस गाँव को देखो। यह पहाड़ियों के एक छोटे से हिस्से में बसा है। यहाँ लगभग तीस घर हैं। बाकी सब जंगल है... न कोई सड़क, न कोई रोशनी, बस घना जंगल। सबसे नज़दीकी पुलिस स्टेशन यहाँ से दो घंटे पैदल चलने पर है... मान लो गाँव में कुछ हो जाए... कोई हत्या या कुछ और... पुलिस के पहुँचने से पहले बहुत कुछ हो सकता है,’ सोमनाथ हँसते हुए बोला। मुझे यह जानकारी थोड़ी परेशान करने वाली लगी।
सोमनाथ ने आगे कहा, “इस क्षेत्र में शिकार करना गैरकानूनी है। यह बात सबको पता है। फिर भी, यह लगातार होता रहता है। सभी ग्रामीणों ने अपने तहखानों में जंगली हिरणों को नमक लगाकर उल्टा लटका रखा है, जिनका उन्होंने खुद शिकार किया है। पुलिस इसे रोक नहीं सकती। इस घर में भी एक ताजा शिकार किया हुआ हिरण लटका हुआ है।”
मैंने कल्पना की कि घर के अंधेरे तहखाने में कहीं किसी जंगली जानवर का मृत शरीर लटका हुआ है।
'अरे, आपको पता है, मंडी की तरफ एक आदमी दस साल से लापता था, और जब वह वापस आया, तो उसने कहा कि उसे एक चोरेल ने अगवा कर लिया था,' अनिल ने कहा।
‘सचमुच?’ मैंने कहा।
'हां, उसने कहा कि उसने उससे जबरदस्ती शादी की थी और उससे बच्चे भी हुए थे।'
‘वाह... मुझे आश्चर्य है कि एक आदमी और एक चुड़ैल के किस तरह के बच्चे होंगे... इंसान जैसे या चुड़ैल-भूत जैसे... हा हा... यह दिलचस्प है,’ मैंने कहा।
‘ओह, वो अपनी पत्नी से डरता होगा... और उसे चुड़ैल समझता होगा,’ सोमनाथ ने कहा। सब हंस पड़े। ऐसा हो सकता है।
भूपि ने बताया, ‘कई भूतिया जगहें हैं। खासकर वे जगहें जहां आजादी से पहले अंग्रेजों ने बस्तियां बसाई थीं। जैसे शिमला में सुरंगें, हवेलियां और स्कूल हैं जिन्हें भूतिया माना

जाता है। उनमें से एक का नाम चुरेल बौड़ी है। यह शिमला हाईवे पर है। अगर आप रात में वहां से गुजरें तो सफेद साड़ी पहनी एक चुरेल आपसे लिफ्ट मांगेगी।'
'हाँ, सफेद साड़ी पहने एक महिला का लिफ्ट मांगना तो बिल्कुल क्लासिक लगता है। गुड़गांव में एक सड़क है, जहाँ लोगों ने ऐसी ही एक महिला को लिफ्ट मांगते हुए देखा है,' मैंने आगे कहा।
सोमनाथ ने कहा, 'ऐसा शायद उन पुरानी फिल्मों की वजह से हो सकता है, जिनमें भूत हमेशा सफेद साड़ी पहनी हुई महिला होती है...'
मैंने पूछा, 'क्या आस-पास कोई भूतिया जगह है?'
'जंगल वाले इलाके में आत्माओं के रहने की कई कहानियां प्रचलित हैं, कुछ लोगों ने उस तरफ मरे हुए लोगों को देखा है,' लकी ने मेरे पीछे की दीवार की ओर इशारा करते हुए कहा। मैंने मुड़कर दीवार की तरफ देखा, उम्मीद कर रहा था कि वहां कोई मरा हुआ व्यक्ति बैठा या चल न रहा हो।
'गांव का श्मशान घाट वहीं है, उन कमरों के ठीक पीछे,' सोमनाथ ने मेरे पीछे वाले कमरों की ओर इशारा करते हुए कहा।
मेरे पीछे एक श्मशान घाट था। मैंने अपनी कुर्सी उठाई और अलाव के दूसरी तरफ जाकर बैठ गया।
'मैं किसी भूत का सामना करना ज़्यादा पसंद करूँगी बजाय इसके कि वह मुझे पीछे से अचानक पकड़ ले,' मैंने अंधेरे कमरों की कतार को देखते हुए और उसके पीछे एक श्मशान घाट की कल्पना करते हुए कहा। मैं भूतों पर विश्वास नहीं करती थी, फिर भी मैं श्मशान घाट से दूर रहना ही बेहतर समझती थी... खासकर रात में। शायद यह अंधेरी रात और खाली घर का असर था। सब लोग हँस पड़े। मेरे इस व्यवहार ने उन्हें मेरे प्रति कम औपचारिक बना दिया था।
"ओह, चूंकि आपको इस तरह की घटना में दिलचस्पी है, तो आज आपको एक अनोखा अनुभव मिलने वाला है..." भूपि ने कुछ रोचक बात याद करते हुए उत्साह से कहा।
अनिल ने हैरानी से उसकी ओर देखा।
'Today is Lohri' Bhupi said.
'ओह हाँ, आज ही वो दिन है!' अनिल ने कहा, अब वह भूपि की तरह ही उत्साहित था।
मैंने पूछा, 'लोहड़ी का क्या होगा?'

‘अरे हाँ... लोहड़ी... कम से कम रात के दो बजे तक इस घर से कोई बाहर नहीं निकलेगा।’ सोमनाथ ने कहा। मुझे लगा कि यह मज़ाक है, लेकिन उसके लहजे से लगा कि वह सच कह रहा है।
मैंने पूछा, 'कोई कृपया समझाए कि आखिर हो क्या रहा है?'
‘आज लोहड़ी का त्योहार है, और हर साल इस रात को एक घोड़ी गांव में आती है और किसी को उसे नहीं देखना चाहिए,’ लकी ने समझाया। मैंने उसे घूरकर देखा। मैं और जानना चाहता था।
‘इसे देखना मना है। इसीलिए लोग लोहड़ी जल्दी मनाते हैं और घर के अंदर ही रहते हैं।’ लकी ने मेरी तरफ देखा। उसने आखिरकार मेरे सवाल का जवाब दे दिया था। लेकिन अब मेरे मन में और भी सवाल थे।
‘निषिद्ध...क्यों? आखिर घोड़ी को देखने में इतनी बड़ी बात क्या है?’ मैंने ऐसी किसी बात की उम्मीद नहीं की थी। मैं कुछ कहानियों की उम्मीद कर रहा था, न कि खुद उनमें से एक का हिस्सा बनने की।
'जो भी इसे देखता है, मर जाता है,' लकी ने घोषणा की।
कुछ देर के लिए सब लोग चुप हो गए, केवल आग की चटकने की आवाज सुनाई दे रही थी।
मुझे समझ नहीं आ रहा। अगर किसी को इसे देखने की अनुमति नहीं है, तो कोई बाहर नहीं जाएगा, हमें कैसे पता चलेगा कि बाहर घोड़ी है? मैं इसे देखने के लिए उत्साहित था।
‘यह गांव के घरों के आसपास घुंघरू (धातु की घंटियों वाली पायल, जिसे आमतौर पर नर्तक पहनते हैं) पहनकर घूमता है और जो भी जागता है और सुनने को तैयार होता है, उसे घुंघरू की आवाज सुनाई देती है। ऐसा कहा जाता है कि यह अपने शिकार की तलाश में हर घर में जाता है।’ लकी के एक दोस्त ने यह बात बताई।
‘यह घुंघरू क्यों पहनता है? यह किसका शिकार करता है? मुझे लगता है घोड़े इंसानों पर हमला नहीं करते... क्या वे करते हैं?’ मेरी जिज्ञासा बढ़ गई और मैंने पूछा।
सोमनाथ ने कहा, ‘घुंघरू घोड़ों या घोड़ियों के लिए आम आभूषण हैं... और यह सीधे हमला नहीं करता, बल्कि यह मनुष्य की आत्मा, उसकी जीवन ऊर्जा पर हमला करता

है। जैसे ही कोई व्यक्ति इसे देखता है, यह उस व्यक्ति की जीवन ऊर्जा को चुराना शुरू कर देता है।'
मैंने अपनी हंसी दबा ली। लेकिन बाकी सब लोगों के चेहरे एकदम सीधे थे। यह बेतुका था। मुझे लगा कि वे मेरे साथ मज़ाक कर रहे हैं। लेकिन अगर वे सच में ऐसा कर रहे थे, तो मुझे उन पर तरस आया कि वे एक बेवकूफी भरी कहानी पर विश्वास कर रहे थे।
जब मैंने अपनी घड़ी देखी, तो लगभग ग्यारह बज चुके थे।
मैंने पूछा, 'क्या आज रात हमें घुंघरू की आवाज सुनाई देगी?'
लकी ने पुष्टि करते हुए कहा, 'हां, लगभग आधी रात के आसपास... यह आएगा।'
'वाह, यह तो बहुत बढ़िया है। बहुत मज़ा आएगा,' मैंने उत्साह से अपने हाथों को आपस में रगड़ते हुए कहा।
'सर, अगर आपको अच्छा लगे तो मैं आपके ठहरने का इंतजाम यहीं कर दूंगा। मैं भी आज रात यहीं रुकने की योजना बना रहा हूं।' लकी ने कहा।
मुझे कोई आपत्ति नहीं है। वास्तव में, आप लोगों के साथ बहुत मज़ा आएगा।
घर बड़ा और खाली था, जिसमें हमारे सोने के लिए काफी कमरे थे, इसलिए वहां रहना कोई समस्या नहीं थी। दूसरी ओर, मैं उस घोड़ी या उस शरारती व्यक्ति को देखने के लिए बेताब था जिसने पूरे गांव को डरा दिया था।
हमने जादुई झीलों, मंदिरों और भूत-प्रेतों जैसे कई विषयों पर बातचीत की। मैं डरा हुआ था, लेकिन साथ ही साथ इसका भरपूर आनंद भी ले रहा था। बातचीत इतनी रोचक थी कि हमें पता ही नहीं चला कि कब आधी रात हो गई।
अचानक भूपी उछल पड़ी और सबको चुप रहने और ध्यान से सुनने का इशारा किया। हमें जो सुनाई दिया, वह साफ तौर पर घुंघरूओं की खनक और घोड़े के खुरों की आवाज थी। आधी रात के कुछ ही देर बाद का समय था। एक घोड़े के धीरे-धीरे चलने की आवाज। आवाज घर के मुख्य द्वार के ठीक बाहर आकर रुक गई। हम दरवाजे के पास गए, और ऐसा लगा जैसे घोड़ा बिल्कुल बाहर ही हो। हमने एक पल इंतजार किया। चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था।
'वो गायब हो गया है, चलो दरवाजा खोलकर देखते हैं,' मैंने दरवाजे को बंद रखने वाली चेन को हुक से उतारते हुए पूछा। मैंने शायद एक इंच ही खोला होगा कि सोमनाथ आया और कुछ भी देखने से पहले ही उसने दरवाजा वापस बंद कर दिया। मेरी उंगली

दरवाजे के बीच दबने ही वाली थी, लेकिन उसे अफसोस होने के बजाय मुझसे गुस्सा आ रहा था।
'क्या?' 'यह गायब हो गया,' मैंने कहा।
'तुमने ऐसा क्यों किया? क्या तुम्हें समझ नहीं आता, अगर तुमने इसे देखा तो तुम्हारी मौत हो जाएगी,' उसने कहा।
'यह तो...' मैं कहने ही वाला था कि वह चला गया, तभी दरवाजे के ठीक बाहर हमें फिर से घुंघरू की आवाज सुनाई दी। जो भी था, वह दरवाजे के ठीक बाहर खड़ा था, शायद हमारी बातें सुन रहा था। मैंने तुरंत ताले की चेन को हुक पर वापस लगा दिया। मुझे भूत से डर नहीं लग रहा था। लेकिन मुझे उस असली घोड़े से डर लग रहा था, जिसका बड़ा सा सिर मेरी नाक के बिल्कुल पास था।
कमरा एकदम शांत हो गया। लकी ने मुझे धीरे से दरवाजे से दूर खींच लिया, क्योंकि वे सभी डरे हुए थे कि कहीं मैं उसे दोबारा न खोल दूं।
कुछ देर बाद हम अलाव के पास लौट आए। घुंघरू की आवाज़ फिर सुनाई दी और घोड़ा भागता हुआ लग रहा था। दरवाज़ा खोलने की मेरी मूर्खता पर चर्चा हुई। उन्होंने ऐसे बर्ताव किया जैसे उन्होंने मुझे चलती बस के नीचे कुचलने से बचा लिया हो। लगभग एक घंटे बाद, हम सोने की तैयारी करते हुए इस बात पर हंस रहे थे।
अगली सुबह जब दरवाजे खोले गए तो लकी और उसका परिवार दंग रह गया। उन्होंने देखा कि उसके चाचा बरामदे में लेटे हुए हैं। चाचा की तबीयत खराब थी। लकी और उसके पिता ने चाचा को उठाकर घर के अंदर लाने में उनकी सहायता की।
कुछ समय बाद पता चला कि चाचा जी पिछली रात घर लौटे थे और बहुत ज़्यादा नशे में होने के कारण बरामदे में सो गए थे। यह कोई बड़ी बात नहीं थी। दूसरी ओर, परिवार किसी और बात को लेकर चिंतित था। चाचा जी ने पिछली रात उस रहस्यमयी घोड़ी को देखा था। जब वे लड़खड़ाते हुए अपने घर की ओर जा रहे थे, तभी उन्हें घुंघरूओं की खनक सुनाई दी। वे समझ गए कि क्या हो सकता है। वे दौड़कर अपने घर के बरामदे में गए और अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं। खनकें और करीब आती गईं। वे सिकुड़कर एक गेंद की तरह हो गए और अपनी आँखें बंद रखे, अपना चेहरा घुटनों के बीच छिपा लिया। घोड़ी निश्चित रूप से उनके बहुत करीब थी। वे अपने ऊपर घोड़ी की गर्म, दुर्गंधयुक्त साँस महसूस कर सकते थे। उन्हें नहीं पता कि वे कितनी देर तक डर से

काँपते हुए उसी हालत में रहे। शायद वे कुछ देर के लिए सो गए थे, फिर उठे और दीवार से पीठ टिकाकर आँखें कसकर बंद कर लीं।
घुंघरूओं की कोई आवाज़ नहीं थी, उसे सिर्फ़ अपनी साँसें सुनाई दे रही थीं। यह सोचकर कि घोड़ी चली गई है, उसने धीरे से अपनी आँखें खोलीं। उसके ठीक सामने कुछ ही इंच की दूरी पर घोड़ी का बड़ा सा सिर था। वह काला और चमकदार था। घोड़ी सड़क पर खड़ी थी, उसका सिर बरामदे से नीचे लटक रहा था, ठीक उसके चेहरे के सामने। लकी के चाचा को लगा कि उनका दिमाग उनके साथ धोखा कर रहा है। उन्होंने अपनी आँखें मलकर फिर से देखा। वह अभी भी वहीं थी। सिर धीरे से एक तरफ़ घूम गया। चाचा ने देखा कि उसकी आँखें नहीं थीं, बस एक चमकदार काला सिर और दो बड़े नुकीले कान थे। वह यकीनन आम घोड़ों से बहुत बड़ी थी। फिर घोड़ी ने अपना बड़ा सा सिर हिलाया और घुंघरूओं की आवाज़ आई। चाचा ने फिर से अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं, लेकिन इस बार उन्हें अपने सिर में तेज़ दर्द महसूस हुआ, जैसे उनका सिर फट जाएगा। वे बेहोश हो गए और सुबह उनके परिवार वालों ने उन्हें पाया।

***

‘लकी, देखो तुम्हारे चाचा अभी भी जीवित हैं। उनकी समस्या हैंगओवर है। उन्हें थोड़ा नींबू पानी पिला दो।’ मैंने उस शाम लकी से कहा।
'महोदय, ऐसा पहले भी हो चुका है, जो लोग उस घोड़ी को देखते हैं वे ज्यादा देर तक जीवित नहीं रह पाते।'
‘क्या आप मुझे बता सकते हैं कि पिछली बार ऐसा कब हुआ था?’
'कई साल पहले, जब मेरे पिता मेरी उम्र के थे। हमारे गांव में एक आदमी ने उस घोड़ी को देखा और दो दिन बाद उसकी मौत हो गई। इससे पहले भी ऐसा हुआ था, लेकिन वह आखिरी ज्ञात मामला था।'
‘हो सकता है यह एक संयोग हो।’ यह एक दिलचस्प कहानी थी, लेकिन मैंने इस पर और विचार करने से इनकार कर दिया। यह बेतुकी थी।
लकी जानता था कि मुझे घोड़ी की कहानी पर विश्वास नहीं है। उसने आगे कुछ नहीं कहा। मैंने अगला दिन गाँव में अकेले घूमते हुए बिताया, क्योंकि लकी अपने परिवार के

साथ व्यस्त था। मुझे लगता है कि उसे और उसके परिवार को पिछली रात के सदमे से उबरने के लिए कुछ समय चाहिए था। उनके चेहरों पर चिंता साफ झलक रही थी। मुझे लगा कि चाचा को कुछ न होने पर वे ठीक हो जाएँगे।
लकी अपने परिवार के साथ व्यस्त रहा, इसलिए मैंने बाकी का दिन अपने फोन कैमरे से गांव की प्राकृतिक सुंदरता को कैमरे में कैद करने में बिताया। सभी लोग मेरे प्रति दोस्ताना थे। एक परिवार ने मुझे दोपहर के भोजन के लिए आमंत्रित किया, हालांकि वे मुझे अच्छी तरह से नहीं जानते थे। गांव सचमुच मनमोहक था।
दूसरी सुबह तक मैं गांव छोड़ने के लिए तैयार था। लकी मेरे साथ नीचे बस स्टॉप तक पैदल चलने के लिए आया। वह अब भी चिंतित लग रहा था।
‘लकी, तुम्हारे चाचा कैसे हैं?’
'वह डरा हुआ है।'
उसे बताओ कि सब ठीक हो जाएगा। हो सकता है कि वह उन कहानियों से डरा हुआ हो जो हर कोई उसे सुना रहा है।
‘जी नहीं, हमारे ग्राम देवता ने भी कल शाम यही कहा था कि श्राप की शक्ति उससे कहीं अधिक है, हम कुछ नहीं कर सकते,’ लकी ने कहा। मैंने आह भरी और वहीं चर्चा छोड़कर चला गया।
नीचे उतरते समय हम ज़्यादातर चुप रहे। मैं इस अजीब घटना के बारे में सोच रहा था। यह अविश्वसनीय था, लेकिन एक बात निश्चित थी: घुंघरू और घोड़ों की आवाज़ें आ रही थीं। मैंने खुद सुना था। उस रात गाँव की गलियों में कोई न कोई ज़रूर घूम रहा था। ज़रूर कोई शरारती होगा। अगर वे मुझे दरवाज़ा खोलकर देखने देते, तो मैं सबको दिखा देता और इस धोखे को यहीं खत्म कर देता।
बस के आने से काफी पहले हम सड़क पर पहुंच गए। थोड़ी देर रुकने के बाद लकी बोला।
‘सर, मैं अगले एक सप्ताह तक कार्यालय में उपस्थित नहीं हो पाऊंगा। मैं छुट्टी बढ़ाने के लिए आवेदन करूंगा,’ उन्होंने कहा।
‘ठीक है, कोई बात नहीं, आप आराम से समय लें, मैं संभाल लूंगी,’ मैंने कहा। मुझे पता था कि लकी मेहनती है, और छह महीने से अधिक समय बाद यह उसकी अपने गाँव की पहली यात्रा थी, इसलिए कुछ और दिन मांगना स्वाभाविक था।

हम एक गंभीर माहौल में अलग हुए। जब मैं उस शाम दिल्ली पहुंचा, तो लकी ने मुझे संदेश भेजा, 'मेरे चाचा का निधन हो गया है।'
मुझे आश्चर्य हुआ। और जब मैंने उसे फोन किया, तो वह बिल्कुल भी आश्चर्यचकित नहीं हुआ। उसके चाचा को बुखार और उल्टी होने लगी। और अस्पताल ले जाते समय उनकी मृत्यु हो गई। लकी को पता था कि ऐसा होने वाला है, इसीलिए उसने अपनी छुट्टी बढ़ा ली थी। उस दिन मुझे पता चला कि ऐसी चीजें और शक्तियां मौजूद हैं जिन्हें हम कभी पूरी तरह से जान नहीं सकते, फिर भी हमें उन्हें किसी न किसी तरह स्वीकार करना ही होगा।

देवता की चोरी

(सच्ची घटना पर आधारित)

‘बेशक, वह शक्तिशाली है। इसमें कोई शक नहीं,’ अनिल ने कहा। वह अपने सहकर्मी मणिराज के साथ अपने कार्यालय की कैंटीन में बैठे थे। मणिराज ने हाल ही में अनिल की कंपनी में ऑफिस बॉय के रूप में काम शुरू किया था।
मणिराज उनसे ग्राम-देवताओं के बारे में पूछ रहा था। कई ऐसे लोगों की तरह जो देवताओं के बारे में नहीं जानते, वह भी उनकी कहानियों से काफी प्रभावित लग रहा था।
‘सर, मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या सभी लोग ग्राम-देवता, उनकी भविष्यवाणियों और नृत्य में विश्वास करते हैं। मैंने एक वीडियो देखा था जिसमें देवता की पालकी दो आदमियों के कंधों पर रखी होने के बावजूद अपने आप हिलती हुई प्रतीत हो रही थी। वे आदमी पालकी को हाथों से पकड़े भी नहीं थे, फिर भी वह उछल रही थी,’ मणिराज ने कहा।
‘यह आस्था का मामला नहीं है। हम सिर्फ देवता में विश्वास नहीं करते। हमने अपने रिश्तेदारों, पूर्वजों और पुरखों के माध्यम से इसे स्वयं देखा है। यह वैसा ही है जैसे हमसे पूछा जाए कि क्या हम अपने माता-पिता में विश्वास करते हैं। देवता युगों से हमारी रक्षा करते आ रहे हैं।’ अनिल ने कहा।

‘देखा? कैसे?’
‘देवता हमारे बारे में सब कुछ जानते हैं। कई कहानियां हैं।’ अनिल एक पल रुका और फिर बोला, ‘जैसे एक बार हम मेरी बहन के लिए एक उपयुक्त वर की तलाश कर रहे थे। देवता ने हमें एक साल पहले ही बता दिया था कि उसकी शादी किस गांव में होगी। एक साल के भीतर ही हम देवता की बात भूल गए और अलग-अलग गांवों के कई वरों पर विचार करने लगे। लेकिन, मेरी बहन की शादी सचमुच उसी गांव में हुई जिसका जिक्र देवता ने किया था।’
‘यह तो अद्भुत है,’ मणिराज ने अपनी मुस्कान रोकते हुए कहा। वह जानता था कि अनिल को देवताओं से कितना लगाव था। जब भी अनिल उनके बारे में बात करता, वह बड़े आदर और उत्साह से बोलता था। मणिराज के अनुसार, यह कुछ धूर्त पुजारियों द्वारा भोले-भाले ग्रामीणों को ठगने के लिए रची गई एक सोची-समझी साजिश थी।
अनिल ने आगे कहा, 'देवता आपको यह भी बता देंगे कि ऐसी कोई परिस्थिति है जिसमें उनका कोई हाथ नहीं है। एक बार कोई व्यक्ति एक बीमार व्यक्ति को वहां लेकर आया, और देवता ने उनसे कहा कि इसका देवता या अन्य आध्यात्मिक शक्तियों से कोई लेना-देना नहीं है और उन्हें चिकित्सा सहायता लेने की सलाह दी। इसलिए, यह पैसे या किसी को धोखा देने के बारे में नहीं है।'
Maniraj nodded.
अनिल ने आगे कहा, ‘और ये सिर्फ ऐसी भविष्यवाणियां ही नहीं हैं, देवताओं में भी भावनाएं होती हैं, यहां तक कि क्रोध भी। एक बार एक बूढ़ी औरत ने देवताओं के जुलूस को अपने सेब के बाग से होकर जाने के बजाय दूसरा रास्ता अपनाने के लिए बड़े ही अभद्र तरीके से कहा, यह कहते हुए कि जुलूस में शामिल लोग उसके पेड़ों को नुकसान पहुंचा सकते हैं। उसके चार दिन बाद, वह अपने घर की सीढ़ियों से गिरकर मर गई।’
मणिराज ने अपनी हंसी दबा ली। उसे अनिल की बातों पर यकीन नहीं था, लेकिन उसने जिज्ञासा का दिखावा बनाए रखा। मन ही मन उसने अनिल की सारी बातों को महज़ अंधविश्वास और अनपढ़ ग्रामीणों की भोली-भाली सोच समझा। बातचीत का रुख ग्राम-देवता और देवी की ओर मुड़ गया। अनिल ने बताया कि देवता प्रसन्न होने पर नृत्य कर सकते हैं। उसने मणिराज को बताया कि देवताओं की पालकी की चाल पूरी तरह स्वतंत्र

होती है। बाँस की छड़ें पकड़े हुए लोग उसे गिरने से बचाने के लिए होते हैं। वे तो बस देवता की शक्ति को व्यक्त करने का माध्यम हैं।
‘ध्यान से देखो, इन आदमियों के कंधे... लाल रंग देखो, यह खून है, पालकी का भार उठाने से इनके कंधे ज़ख्मी हो गए हैं।’ अनिल ने मणिराज को एक वीडियो दिखाते हुए कहा। मणिराज ने हैरानी से उसे देखा।
‘आपने पहले कहा था कि ग्राम-देवता लोगों को बातें बताते हैं। वे ऐसा कैसे करते हैं, वे कैसे बोल सकते हैं? मेरा मतलब है, यहाँ मंदिरों में हम मूर्तियों की पूजा करते हैं, लेकिन वे चुप रहती हैं।’ मणिराज ने पूछा।
अनिल ने एक समझदारी भरी मुस्कान के साथ जवाब दिया। उसने लोगों में यह जिज्ञासा देखी थी जो पहली बार देवताओं के बारे में सुनते थे। उसने कहा, 'देवता एक गुरु, यानी एक माध्यम के माध्यम से संवाद करते हैं। माध्यम वह व्यक्ति होता है जिसे इस भूमिका के लिए चुना जाता है और वह मंदिर में देवता के साथ एक वर्ष बिताता है और हर जगह देवता के साथ जाता है। वह देवता की ओर से बोलता है।'
‘माध्यम कौन बनता है?’ मणिराज ने पूछा।
‘देवता हर साल गांव से एक व्यक्ति को माध्यम के रूप में चुनते हैं। वह व्यक्ति अगले साल नए माध्यम के चुने जाने तक देवता के साथ रहता है।’
‘दिलचस्प, देवता कैसे दिखते हैं... मेरा मतलब है उनकी मूर्ति,’ मणिराज ने पूछा।
‘मैं आपको दिखाता हूँ’
अनिल ने फिर से अपना फोन निकाला और मणिराज को एक-एक करके कुछ वीडियो और तस्वीरें दिखाईं। एक तस्वीर में देवता की पालकी और चमकते हुए चेहरे दिखाई दे रहे थे।
‘इन चेहरों को देखो, इन्हें मोहरा कहते हैं, ये चेहरे मुख्य देवता का प्रतिनिधित्व करते हैं, मतलब हर कोई इनकी पूजा करता है?’ मणिराज ने तस्वीर की ओर इशारा करते हुए कहा।
'जी हां, और ये चेहरे देवताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, ये शुद्ध चांदी और सोने से बने हैं।'
‘सर, जब आप सोना कहते हैं, तो क्या आपका मतलब शुद्ध सोना है?’ मणिराज की आंखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं, इस बार सबसे ज्यादा।

अनिल ने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया। वह जानता था कि शहरों में रहने वाले अधिकांश लोग देवताओं के बारे में ज्यादा नहीं जानते। “जी हाँ... हमारे गाँव के इस देवता की मूर्ति में सबसे ऊपर वाला चेहरा शुद्ध सोने का बना है, और बाकी चार चेहरे चाँदी के हैं; हर चेहरे का वजन कम से कम चार से पाँच किलो होगा। कुछ देवताओं की मूर्तियों में चेहरे पीतल और कांसे के भी बने होते हैं। ये चेहरे पवित्रता का प्रतीक हैं, और इनमें देवता निवास करते हैं।” अनिल ने समझाया।
मणिराज की आंखें चौड़ी हो गईं। इस बार वह सचमुच अचंभित था। उसने पूछा, 'मंदिर में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था होगी?'
अनिल ने हल्की सी हंसी के साथ जवाब दिया, 'सुरक्षा की कोई जरूरत नहीं है। मंदिर के गर्भगृह में केवल माध्यम या पुजारी को ही रहने की अनुमति है। देवता स्वयं पूरे गांव के रक्षक हैं। वे सब कुछ देखते और महसूस करते हैं। कोई भी बुरे इरादों से मंदिर में प्रवेश करने की हिम्मत नहीं करेगा,' अनिल ने आगे कहा।
मणिराज फिर से पूछने ही वाला था कि देवता कैसे देख या महसूस कर सकते हैं, लेकिन उसे पता था कि अनिल कुछ ऐसा कहेगा जिससे उसे हंसी आ जाएगी। उसने अपना ध्यान वापस सोने और चांदी के वजन पर केंद्रित किया।
‘सर, काश मैं इसे स्वयं देख पाता,’ मणिराज ने कहा।
मैं आपको अभी फोन पर दिखा सकता हूँ।
मैं स्वयं देवता के दर्शन करना चाहता हूँ, मेरा मतलब है, मैं उनके दर्शन करना चाहता हूँ और उनका आशीर्वाद प्राप्त करना चाहता हूँ। क्या वे बाहरी लोगों को वहाँ जाने की अनुमति देते हैं?
अनिल ने कहा, ‘सभी को आने की अनुमति है। यह भगवान का मंदिर है। मैं अगले सप्ताह सर्दियों की छुट्टियों में अपने गाँव जा रहा हूँ। अगर आप आना चाहें तो मेरे साथ आ सकते हैं। आप मेरे मेहमान होंगे और गाँव में मेरे घर पर ठहर सकते हैं। हमारे गाँव को देखना न भूलें, वहाँ थोड़ी ठंड तो है लेकिन बहुत सुंदर है, खासकर साल के इस समय में।’
‘यह मेरे लिए बहुत मायने रखता है। मुझे आमंत्रित किए जाने पर गर्व महसूस हो रहा है। बहुत-बहुत धन्यवाद, महोदय, मैं आने के लिए उत्सुक हूं।’

***

मणिराज अपने मित्र हसन के साथ अनिल के गाँव आया। अनिल और उसके परिवार ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। अनिल ने गर्व से गाँव की समृद्ध संस्कृति और इतिहास, विशेषकर ग्राम-देवता और उसके भव्य मंदिर के बारे में कहानियाँ सुनाईं, जिसे मणिराज और हसन ने बड़े उत्साह से सुना। उन्होंने देवता के बारे में कई प्रश्न पूछे। 'मंदिर की संरचना भव्य है, अपनी तरह की अनूठी। इसे पूरा होने में तीन साल से अधिक का समय लगा। इन वर्षों में एक करोड़ रुपये से अधिक खर्च हो चुके हैं। अब इसकी कीमत बीस करोड़ रुपये होगी। इसमें बेहतरीन लकड़ी का इस्तेमाल किया गया है और इसे पूरा करने के लिए सर्वश्रेष्ठ कारीगरों को नियुक्त किया गया है।' अनिल की आवाज में गर्व साफ झलक रहा था जब वह मणिराज से मंदिर के बारे में बात कर रहा था।

'अद्भुत! हम मंदिर कब देख सकते हैं?' मणिराज ने पूछा।

अनिल मुस्कुराया, 'मैं आपकी उत्सुकता समझ सकता हूँ, लेकिन आप दिन भर की लंबी यात्रा से थके हुए होंगे।' उसने आगे कहा, 'थोड़ा आराम कर लीजिए, हम कल सुबह मंदिर चलेंगे।'

'जी नहीं, हम थके नहीं हैं। हम आज मंदिर जाने के लिए उत्साहित हैं, हम देवता का आशीर्वाद चाहते हैं,' मणिराज ने हसन की ओर इशारा करते हुए कहा, जिसने सहमति में सिर हिलाया।

"ठीक है, अगर ऐसा है तो आप लोग तैयार हो जाइए, हम आधे घंटे में मंदिर के लिए निकलेंगे। फिर आपके पास आज पूरा दिन गांव घूमने के लिए होगा," अनिल ने कहा। मणिराज और हसन ने उत्सुकता से सिर हिलाया। अनिल को खुशी हुई कि वे उसके गांव की संस्कृति का सम्मान करते हैं।

मंदिर तक पैदल पहुँचने में उन्हें लगभग आधा घंटा लगा। मंदिर गाँव के सबसे ऊँचे स्थान पर स्थित था, इसलिए अधिकांश रास्ता चढ़ाई वाला था। मंदिर परिसर में एक छोटा सा घर था जिसमें पुजारी और माध्यम रहते थे, और दूसरा बड़ा मंदिर देवता के लिए था, जिसकी एक तरफ शिवालय जैसी वास्तुकला थी और उसके ऊपर तीन लकड़ी की छतें थीं जो धीरे-धीरे छोटी होती जाती थीं। यह एक बड़े बंद स्थान से भी जुड़ा हुआ था। नक्काशीदार लकड़ी के खंभों वाली एक गलियारे की दीवार मंदिर की

संरचना को घेरे हुए थी। मंदिर में एक मुख्य द्वार और हॉल के दोनों ओर दो अतिरिक्त द्वार थे।
दोनों तरफ के दरवाजे बंद थे। मंदिर के अंदर अधिकतम दो सौ लोगों के बैठने की जगह थी, और गलियारे और मंदिर परिसर में भी दो सौ लोग आराम से समा सकते थे। अनिल बड़े उत्साह से बता रहा था कि कैसे उसके परिवार समेत गाँव के सभी लोगों ने इस मंदिर के निर्माण में योगदान दिया था। उसने उन्हें दशहरा के आसपास मंदिर में मनाए जाने वाले सात दिवसीय भव्य वार्षिक उत्सव के बारे में भी बताया। मणिराज सिर हिलाकर और दिलचस्पी दिखाने का नाटक करते हुए, मंदिर के दरवाज़े, ताले, प्रवेश और निकास द्वारों को ध्यान से देख रहा था। मंदिर की चारदीवारी लगभग आठ फीट ऊँची थी और घुसपैठियों को रोकने के लिए ऊपर कोई टूटा हुआ कांच या कांटेदार तार नहीं लगा था। कोई सुरक्षा कक्ष भी नहीं था। मंदिर का मुख्य द्वार, जो अब खुला था, उस पर पीतल का ताला लगा हुआ था और वह एल्ड्रॉप प्रकार का था। दोनों तरफ के दरवाज़े बंद थे और उनकी हालत से पता चलता था कि उन्हें लंबे समय से खोला नहीं गया था।
दरवाजा एक विशाल हॉल में खुलता था जिसके दोनों ओर भंडारगृह थे और उनके सामने विपरीत छोर पर देवता का आसन था।
जब मणिराज, हसन और अनिल मंदिर के हॉल में दाखिल हुए, तो पुजारी ने अनिल को देखा और उसके पास आ गए। दूसरा व्यक्ति देवता के आसन के पास बैठा रहा, आँखें बंद किए और होंठ चुपचाप हिलाते हुए धीमी आवाज़ में पवित्र मंत्रों का जाप कर रहा था। मणिराज ने चारों ओर ध्यान से देखा और पाया कि दोनों तरफ के दरवाज़े बड़े-बड़े भारी-भरकम स्टोरेज कंसोल से बंद थे।
पुजारी अनिल को व्यक्तिगत रूप से जानते थे। गाँव में सभी एक-दूसरे को जानते थे। अनिल ने मणिराज और हसन का परिचय पुजारी से अपने दोस्तों के रूप में कराया। पुजारी उन्हें देवता के आसन की ओर ले गए।
जब वे देवता की मूर्ति से लगभग पांच मीटर दूर थे, तभी दूसरा व्यक्ति, जो एक माध्यम था, अचानक अपनी आँखें खोलकर खड़ा हो गया और उनकी ओर दौड़ पड़ा।
'रुको!' उस व्यक्ति ने सख्ती से हाथ दिखाते हुए कहा। उसकी आवाज़ में अत्यावश्यकता थी। समूह तुरंत रुक गया। इससे मणिराज बेचैन हो गया। उसे आश्चर्य

हुआ कि क्या देवता के पास सचमुच शक्तियां थीं और क्या वह उसके इरादे को जानता था।
‘क्या हुआ?’ अनिल ने पूछा।
देवता के पास बैठा दूसरा व्यक्ति पुजारी के करीब आया और स्थानीय बोली में कुछ कहा।
पुजारी ने समझाया, 'देवता ने कहा है कि ये लोग उनके पास नहीं आ सकते।'
‘क्यों?’ अनिल ने पूछा। डर से मणिराज का गला सूख गया। माध्यम ने अनिल को एक तरफ आने का इशारा किया और फुसफुसाते हुए उससे बात की। अनिल समझ में सिर हिला रहा था। माध्यम अपनी सीट पर लौट गया, और अनिल मणिराज की ओर बढ़ा।
अनिल ने मणिराज को मंदिर के बाहर अपने साथ चलने का इशारा किया। मंदिर से बाहर निकलते ही अनिल बोला।
‘क्या आप लोगों ने हाल ही में मांसाहारी भोजन या शराब का सेवन किया है? पिछले दो-तीन दिनों में?’
मणिराज को झटका लगा, वह नियमित रूप से शराब पीने वाला नहीं था, लेकिन उसने पिछली रात कुछ घूंट पी ली थी।
मणिराज ने एक पल सोचा और फिर बोला, 'जी सर, कल रात पार्टी थी, हम सबने वहां खूब मस्ती की।'
‘सर, ये सब क्या है? हमने थोड़ी देर पहले कुछ ड्रिंक्स ली थीं या शायद थोड़ा नॉन-वेज भी खाया था, लेकिन फिर भी उन्होंने हमें जाने के लिए क्यों कहा?’ मणिराज ने पूछा।
अनिल ने निराशा में सिर हिलाया। उसे मणिराज और हसन को मंदिर लाने का पछतावा हो रहा था। लेकिन अगर उन्हें नियमों की जानकारी नहीं थी तो इसमें उनकी कोई गलती नहीं थी।
अनिल ने समझाया, ‘ये नियम सभी पर लागू होते हैं, यहां तक कि ग्रामीणों पर भी। कृपया इनका उल्लंघन न करें। ग्राम-देवता की शक्ति मांसाहारी भोजन के पास होने पर या हाल ही में मांसाहारी भोजन करने वाले व्यक्ति के संपर्क में आने पर प्रभावित होती है।’
‘ओह, उस स्थिति में, हमें बहुत खेद है, हमें इसकी जानकारी नहीं थी,’ मणिराज ने कहा, उसका दिमाग अपनी योजना पर काम कर रहा था।

वे वापस गांव की ओर चल दिए। मणिराज और हसन के साथ कुछ और समय बिताने के बाद, अनिल उन्हें उनके कमरे में छोड़कर चला गया।
‘तो हसन, सब तैयार हो? यह तो बहुत ही आसान काम है। एक आठ फुट की दीवार और एक साधारण ताला, जो तुम्हारे लिए तो बहुत ही आसान होगा, एकदम केक-वॉक,’ मणिराज ने अपने भारी-भरकम दोस्त से कहा।
हसन ने जवाब दिया, 'बिल्कुल, कोई सुरक्षा नहीं है। यह हमारे लिए ज़मीन पर पड़े सामान को उठाने जैसा ही है। लगता है इसमें कोई चाल है, यह इतना आसान कभी नहीं होता।'
‘अरे, इसमें कोई चाल नहीं है, ये तो बस इन ग्रामीणों की मूर्खता है। तो, योजना ये है। नौ बजे हम मंदिर परिसर के बाहर पहुँचेंगे। थोड़ी देर दूर से सब देखेंगे, फिर पुजारी के सो जाने के बाद अंदर जाएंगे, अपना काम करेंगे और ग्यारह बजे से पहले निकल जाएंगे। हमें आधी रात तक गाँव से निकल जाना चाहिए, जिससे सुबह उन्हें पता चलने से पहले हमें कम से कम पाँच से छह घंटे का समय मिल जाएगा।’ मणिराज ने कहा।
‘देवता की शक्तियों के बारे में क्या?’ हसन ने पूछा।
'सब बकवास है, सरासर झूठ का पुलिंदा है,' मणिराज ने कहा।
हसन ने उसे याद दिलाया, 'शराब और मांसाहारी भोजन के बारे में वह सही था।'
मणिराज रुक गया, जी हाँ, यह सच था। शायद मीडियम की वजह से ऐसा हुआ हो, क्योंकि वे दोनों नियमित रूप से शराब पीने वाले लग रहे थे। लेकिन फिर भी, वह कोई जोखिम नहीं लेना चाहता था।
बोलने से पहले वह एक पल के लिए रुका।
‘यह महज़ एक संयोग है। यहाँ ज़्यादातर पर्यटक पेय पदार्थ और मांसाहारी भोजन का आनंद लेते हैं, इसलिए ऐसा कहना सही था। मान लीजिए कि देवता की मूर्ति में सचमुच कुछ शक्ति है, और उसे पता था कि हमने हाल ही में मांसाहारी भोजन किया है।’
शैतानी मुस्कान के साथ उसने कहा, ‘लेकिन इसका मतलब यह भी है कि हम देवता की कमजोरी जानते हैं।’
मणिराज हसन को अपने साथ गाँव के बाहरी इलाके में स्थित मांस की दुकान पर ले गया। उन्होंने भारी मात्रा में मांस खरीदा और उसे एक थैले में रख लिया। जब वे गाँव वापस लौटे, तब तक अंधेरा हो चुका था, केवल कुछ खिड़कियों से हल्की पीली रोशनी

दिखाई दे रही थी। अंधेरे के साथ कड़ाके की ठंड भी आई, जिससे गाँव वाले अपने घरों के अंदर ही रहने को मजबूर हो गए।
जब उन्हें किसी गांव के घर के पास से गुजरना पड़ा, तो मणिराज ने यथासंभव धीमी गति से चलना शुरू कर दिया। वहां यातायात का कोई सामान्य शोर नहीं था जो उनके कदमों की आवाज को दबा सके।
ग्रामीण उन आवाजों को लेकर सतर्क थे, उन्हें डर था कि कहीं कोई पहाड़ी बाघ या अन्य जानवर उनके मवेशियों या पालतू जानवरों की तलाश में न निकल पड़े हों, और उनमें से अधिकांश के पास शिकार करने वाली राइफलें थीं। ऐसे में, एक गलतफहमी आसानी से मणिराज और हसन की मौत का कारण बन सकती थी।
ठंड थी, लेकिन मणिराज और हसन ने मोटी जैकेट और गर्म कपड़े पहन रखे थे जिससे वे अच्छी तरह से सुरक्षित थे। मौसम बदल गया और हवा तेज़ हो गई, जिससे उन्हें कड़ाके की ठंड लगने लगी। मणिराज और हसन के लिए यह मुश्किल था, लेकिन इससे उन्हें छिपने में मदद मिली। तेज़ हवा के कारण गाँव के सभी लोगों ने अपने दरवाजे और खिड़कियाँ बंद कर रखी थीं। हवा की आवाज़ ने मणिराज और हसन की किसी भी आवाज़ को दबा दिया। यह उनके लिए सौभाग्य की बात थी।
गांव के मुख्य मकानों के समूह से थोड़ी दूरी पर पहुँचते ही उन्होंने अपनी गति बढ़ा दी। मणिराज ने घड़ी देखने के लिए अपनी आस्तीन ऊपर की। मंदिर परिसर के बाहर पहुँचते-पहुँचते लगभग नौ बजने वाले थे।
मंदिर परिसर का बेहतर नज़ारा देखने के लिए वे थोड़ी दूर स्थित एक छोटी पहाड़ी पर चढ़ गए। मुख्य देवता मंदिर के चारों ओर प्रकाश व्यवस्था के लिए सात प्रकाश स्तंभ लगे हुए थे। पुजारी और माध्यम के आवास वाले छोटे भवन की खिड़कियों से भी प्रकाश आ रहा था।
कुछ देर के लिए हवा थम गई। शाम की आरती हो चुकी थी। मंदिर में केवल पुजारी और माध्यम ही थे। वे रात के लिए मंदिर बंद करने की तैयारी कर रहे थे। पुजारी ने देवताओं के चेहरों पर पर्दा डाला, फिर फर्श पर पड़े कुशन उठाकर मंदिर के एक कोने में रखने लगे। मुख्य मंदिर के हॉल की बत्तियाँ एक-एक करके बुझा दी गईं।
मणिराज और हसन धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते रहे, ठंड से बचने के लिए अपने हाथों को मलते रहे। मंदिर के लोगों को सामान समेटने, सभी बत्तियाँ बुझाने और बगल के

दरवाज़े बंद करने में लगभग आधा घंटा लगा। मंदिर के दोनों व्यक्ति मुख्य द्वार से बाहर निकले और पुजारी ने मुख्य द्वार पर ताला लगा दिया। फिर दोनों व्यक्ति रात के लिए अपने छोटे से भवन में चले गए।
कुछ मिनटों बाद छोटी इमारत की बत्तियाँ भी बुझा दी गईं। लेकिन मंदिर परिसर को रोशन करने वाली ऊँची-ऊँची बत्तियाँ अभी भी जल रही थीं।
Hasan asked Maniraj, 'Shall we enter?'
नहीं, हम पंद्रह मिनट और इंतजार करेंगे, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि ये दोनों मूर्ख ठीक से सो गए हैं।
यह तो बस समय की बात थी। पंद्रह मिनट बाद, वे मंदिर की दीवार के पास आ गए। उन्होंने दस मिनट और इंतज़ार किया ताकि उन्हें यकीन हो जाए। आस-पास कोई नहीं था, लेकिन मस्तूल की बत्तियाँ अभी भी जल रही थीं। उन्हें दूर से आसानी से देखा जा सकता था। मणिराज कुछ पल के लिए झिझका। फिर उसने चारों ओर देखा। कोई नज़र नहीं आ रहा था। ठंड इतनी तेज़ थी कि मोटे दस्तानों के अंदर भी उनकी उंगलियाँ दुख रही थीं। इस मौसम में कोई बाहर निकलने की हिम्मत नहीं करेगा, उसने सोचा। फिर मणिराज ने योजना पर आगे बढ़ने का फैसला किया। उसने मांस का पैकेट खोला और कुछ टुकड़े मंदिर परिसर में फेंक दिए। मानो कोई जादू हो गया हो, ठंडी हवा और तेज़ हो गई। उन्हें मंदिर परिसर के अंदर कहीं बिजली की चिंगारी की आवाज़ सुनाई दी और अचानक मस्तूल की बत्तियाँ भी बुझ गईं। अब चारों ओर घना अंधेरा छा गया था। मणिराज ने अपनी हंसी रोकने के लिए अपना हाथ ज़ोर से अपने मुंह पर रख लिया। उसने हसन से फुसफुसाते हुए कहा, 'लगता है हमारे मांस की शक्ति देवता की शक्ति से भी ज़्यादा है। जल्दी करो, हवा हमारी हर आवाज़ को दबा देगी, और इस अंधेरे में कोई हमारा पीछा नहीं कर पाएगा।' मणिराज ने अपने फोन की फ्लैशलाइट चालू कर दी। हसन दीवार से कुछ कदम पीछे हटा और फिर एक हाई जम्पर की तरह उस पर कूद पड़ा। वह एक पल के लिए दीवार के ऊपर लटका रहा, और एक और तेज़ हरकत में वह दीवार के ऊपर था।
मणिराज ने हसन को अपना फ़ोन, जिसकी फ्लैश लाइट जल रही थी, पकड़ा दिया और फिर उसके पीछे-पीछे मंदिर परिसर में चला गया। फ्लैश लाइट होने के बावजूद भी बहुत अंधेरा था, लेकिन मणिराज को मंदिर का नक्शा इतनी अच्छी तरह याद था कि वह

आत्मविश्वास से ऐसे चल रहा था मानो दिन का उजाला हो। हसन को बस मणिराज के फ़ोन की छोटी सी फ्लैश लाइट का पीछा करना था जो उसके आगे-आगे चल रही थी। मणिराज ने मांस से भरा थैला एक हाथ में पकड़ रखा था। वे मंदिर के गलियारे में एक तरफ से दाखिल हुए और मुख्य द्वार की ओर चल पड़े। मणिराज मांस के टुकड़े फेंकता रहा। उसे पूरा यकीन था कि मांस के टुकड़े उसके लिए काम कर रहे हैं।
मंदिर का मुख्य द्वार उसी ताले से बंद था जिसे मणिराज और हसन ने दिन में पहले लटका हुआ देखा था। हसन ने अपनी जेब से दो स्पैनर निकाले और उन्हें एक दूसरे के खिलाफ लीवर की तरह इस्तेमाल करके ताले को ऐसे खोल दिया जैसे वह प्लास्टिक का बना हो। वे सीधे उस स्थान पर चले गए जहाँ देवता की मूर्ति रखी थी।
मणिराज ने गहरी सांस ली। उसने देवता को देखा और देवता की शक्ति की कहानियों के बारे में सोचने लगा। एक पल के लिए उसे थोड़ा डर लगा और उसने वहां से चले जाने का सोचा, लेकिन चमकते सोने ने उसे आगे बढ़ने के लिए मजबूर कर दिया। फोन की फ्लैशलाइट की हल्की रोशनी में चेहरा जगमगा रहा था। उस पर उदासीनता और शांति का भाव था, न मुस्कुराहट थी और न ही गुस्सा। यह सुंदर और शांत है और मेरे बैग में भी शांत रहेगा, मणिराज ने सोचा। उसने अपनी जैकेट से एक चाकू निकाला और उसे लकड़ी के आधार से अलग करने के लिए किनारों को खुरचना शुरू कर दिया। उसे आश्चर्य हुआ कि यह बहुत मजबूती से जुड़ा हुआ था। मणिराज ने एक मजबूत पेंच से कोशिश की, लेकिन वह हिला तक नहीं। मणिराज मजबूत और तगड़ा व्यक्ति था, फिर भी वह सोने के मुखौटे को नहीं खुरच सका। फिर मणिराज ने चांदी के मुखौटे को खुरचने की कोशिश की, और हसन ने सोने के मुखौटे को। लगभग पांच मिनट बाद, ठंड के बावजूद दोनों को पसीना आ रहा था।
मणिराज ने लकड़ी का पूरा तख्ता उठाने के बारे में सोचा, लेकिन वह इतना बड़ा और भारी था कि उठाना असंभव था। अगर वे किसी तरह उसे ले भी जाते, तो पूरे राज्य में एक मील दूर से ही कोई उसे आसानी से पहचान लेता। दूसरा विकल्प लकड़ी को काटना था, लेकिन उनके पास इसके लिए उचित औजार नहीं थे। अगर उनके पास काटने के औजार होते भी, तो शोर मचाए बिना ऐसा करना नामुमकिन था।
मणिराज को पहले जो खुशी महसूस हो रही थी, वह अब पूरी तरह गायब हो चुकी थी। वह इतनी करीब आकर भी कुछ नहीं कर सका। उसने इस तरह की असफलता की

उम्मीद नहीं की थी।
‘चलो चलते हैं, हम और औजार लेकर वापस आएंगे,’ मणिराज ने कहा। हसन सहमत हो गया।
जैसे ही उन्होंने अपना सामान समेटा और जाने के लिए मुड़े, उन्हें एक खनक सुनाई दी। चांदी के चेहरों में से एक ज़मीन पर गिर गया था। मणिराज मुस्कुराया और उसे उठा लिया। उसने बाकी चेहरों पर भी एक और कोशिश करने का फैसला किया।
उन्हें आश्चर्य हुआ कि इस बार चेहरे आसानी से उतर गए।
‘हा हा, बस इस पेंच के कुछ हल्के वार ही काफी थे,’ मणिराज ने मन ही मन कहा।
मणिराज ने उस शुद्ध सोने के चेहरे को अपने हाथों में थाम लिया। मणिराज पहली बार इतनी कीमती चीज को अपने हाथों में ले रहा था। चेहरा उसके हाथ से फिसलकर सीधे उसके थैले में जा गिरा, जो ठीक उसके नीचे था, मानो वहीं गिरना चाहता हो। मणिराज अपनी किस्मत पर मुस्कुराया। पंद्रह मिनट के भीतर ही उसने काम पूरा कर लिया था।
मंदिर से बाहर निकलते ही मणिराज और हसन बेहद खुश थे। यह उनके द्वारा किया गया अब तक का सबसे आसान काम था और इसमें उन्हें भरपूर इनाम मिलने वाला था।
'यह मेरी गलती नहीं है कि ये मूर्ख पहाड़ी लोग बिना किसी सुरक्षा के इतना सोना अपने पास रखते हैं।'
‘धन्यवाद, मणि भाई, मुझे अपने साथ रखने के लिए। मुझे इसकी बहुत ज़रूरत थी।’ हसन ने जवाब दिया। लूट का आधा हिस्सा उसे देने का वादा किया गया था। उसने शहर की नौकरी छोड़ने और अपने गाँव वापस जाकर इस धन का आनंद लेने की योजना बनाई थी। उसे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि मन ही मन मणिराज उसके लिए कुछ न मिलने और एक चाँदी के सिक्के के बीच फैसला कर रहा था।
मणिराज मुस्कुराया, फिलहाल विभाजन के मुद्दे को उठाने की कोई जल्दी नहीं थी। बैग भारी था, लेकिन उसे खुद उठाने में उसे खुशी थी।
‘अब क्या? मणि भाई,’ हसन ने पूछा।
‘हमें सबसे दूर वाले गांव तक पैदल जाना होगा,’ मणिराज ने जवाब दिया।
'यह बहुत लंबा रास्ता है। इसमें हमें पूरी रात लग जाएगी।'
'हाँ, लेकिन हमें चलना ही होगा। राज्य की सीमा पार करने के बाद हमें आराम करने के लिए बहुत समय मिलेगा। अगर हम पूरी रात चलते रहे, तो सुबह तक वे हमें आस-पास

के किसी भी गाँव में नहीं ढूँढ पाएंगे। और जब तक यह खबर आस-पास के गाँवों तक पहुँचेगी, तब तक हम बस से शहर के आधे रास्ते पहुँच चुके होंगे।'
हसन मुस्कुराया और सिर हिलाया। वह मणिराज की चतुराई की प्रशंसा करता था।
लगभग दो घंटे चलने के बाद मणिराज थक गया। उसे अजीब सा महसूस हुआ क्योंकि वह अच्छी कद-काठी का था और पहले भी लंबे समय तक सक्रिय रह चुका था। सोने और चांदी से बना थैला होने के बावजूद उसका वजन बीस किलोग्राम से थोड़ा अधिक था।
'तुम थके हुए लग रहे हो,' हसन ने कहा।
'मैं ठीक हूँ,' मणिराज ने गहरी साँस लेते हुए कहा।
मैं कुछ समय तक बैग उठा सकता हूँ।
मणिराज हसन को थैला छूने नहीं देना चाहता था, लेकिन हर कदम के साथ उसकी थकान बढ़ती जा रही थी। अनिच्छा से उसने थैले को बाँटने का फैसला किया। उसने चाँदी के सिक्के हसन के थैले में रख दिए और सोने का सिक्का अपने पास रख लिया। इस तरह उसके पास सबसे हल्का लेकिन सबसे कीमती बोझ था। हसन सोने का सिक्का भी ले जाना चाहता था, लेकिन वह मणिराज को नाराज़ नहीं करना चाहता था, इसलिए उसने चाँदी के सिक्के ले जाने की सहमति दे दी। उसे अपने थैले में कीमती धातु की खनक से खुशी मिली, और मणिराज को भी कुछ समय के लिए वजन कम होने से तसल्ली हुई।
वे शांत, सोए हुए गांवों से गुज़रते रहे। हवा काफी हद तक शांत हो चुकी थी। वे घंटों से चल रहे थे और हर कदम के साथ थकते जा रहे थे। फिर भी वे दृढ़ रहे और खुद को घसीटते हुए आगे बढ़ते रहे।
चलते-चलते वे थक गए थे और हर कदम के साथ उनके थैले भारी होते जा रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो वे थैलों के भार से दबकर गिर पड़ेंगे। मणिराज ने चेहरों को छोड़कर बाकी सब कुछ फेंक दिया। हैरानी की बात यह थी कि जैसे ही वे थकान से रुकने वाले थे, उन्हें अचानक राहत महसूस होने लगी, थैले हल्के हो गए और वे फिर से चलने लगे। वे तय समय पर सबसे दूर वाले गाँव के बाहर मुख्य सड़क पर स्थित बस स्टॉप पर पहुँच गए। अभी अँधेरा ही था कि क्षितिज पर आकाश का रंग बदलने लगा था। लंबी पैदल यात्रा से उनके पैरों में दर्द हो रहा था। लेकिन वे खुश थे कि बहुत जल्द वे सुरक्षित रूप

से वहाँ से निकल जाएँगे। पास ही एक आदमी चाय की छोटी सी दुकान लगा रहा था। मणिराज उस आदमी के पास गया।
‘भाई, शहर के लिए पहली बस कब आएगी?’
उस व्यक्ति ने जवाब दिया, 'लगभग एक घंटे में।'
‘एक घंटा?’ मणिराज यह खबर सुनकर खुश नहीं था। वह जल्द से जल्द वहां से निकलना चाहता था।
‘हां।’ उस व्यक्ति ने कहा और अपनी दुकान लगाने के लिए वापस चला गया।
हसन ने चाय की दुकान के पास अपना बैग रखा और दो कप चाय और कुछ खारी खाने का ऑर्डर दिया। मणिराज ने अपना बैग अपने कंधों पर ही रखा। वजन के बावजूद, वह एक पल के लिए भी बैग से अलग नहीं होना चाहता था। वे चाय की दुकान के पास ही स्थित एक बड़े पत्थर पर बैठ गए। उसने बैग को ज़मीन पर टिका दिया, लेकिन उसकी पट्टा अपने हाथ में ही पकड़े रखा। उसने बैग को कभी भी अपनी नज़रों और हाथों से ओझल नहीं होने दिया। आधे घंटे बाद, और लोग आ गए। मणिराज ने हर एक को ध्यान से देखा। उसे डर था कि कहीं कोई उन्हें ढूंढते हुए न आ गया हो। लेकिन उनमें से कोई भी किसी को ढूंढता हुआ नहीं लग रहा था। वे आपस में व्यस्त थे।
इस समय तक पुजारी को लापता देवताओं के बारे में पता चल चुका होगा। अनिल के घर से उन्हें ढूंढने में शायद थोड़ा और समय लग सकता है। बस को देखते ही मणिराज ने राहत की सांस ली। दोनों खड़े हुए और अंगड़ाई ली।
हसन ने कहा, 'मैं बस में जाते ही सो जाऊंगा।'
‘लेकिन बैग का ध्यान रखना,’ मणिराज ने चेतावनी दी।
‘बिल्कुल, मैं बैग हमेशा अपनी गोद में ही रखूंगा,’ हसन ने झुककर अपना बैग उठाते हुए आश्वस्त किया। जैसे ही उसने बैग उठाने की कोशिश की, बैग हिला तक नहीं। जब उसने अपने पूरे शरीर के वजन से जोर लगाया, तो ऊपर का हैंडल टूट गया और वह पीछे की ओर गिर गया। हसन ने चारों ओर देखा, बस का इंतजार कर रहे लोगों ने उसे गिरते हुए देख लिया था। वह उठा और मुस्कुराकर यह दिखाया कि वह ठीक है।
उसने फिर कोशिश की। दोनों हाथों से थैला खींचते हुए। थैला जैसे अटक गया हो। एक इंच भी नहीं हिला। मणिराज ने उसे हैरानी से देखा। मणिराज उठा, अपने सुनहरे चेहरे वाला थैला साथ लिए और हसन को वापस खींचकर उसका थैला उठाने की कोशिश

की। नतीजा वही रहा। फिर उसने अपना एक चेहरा वाला थैला ज़मीन पर रख दिया और दोनों हाथों से हसन का थैला उठाने की कोशिश की। थैला टस से मस नहीं हुआ। कई बार असफल होने के बाद, मणिराज ने अपना बैग उठाने की कोशिश की। उसे आश्चर्य और हैरानी हुई कि वह इस बैग को भी नहीं उठा सका। हसन ने भी मणिराज का बैग उठाने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। ऐसा लग रहा था मानो बैग ज़मीन से चिपक गए हों।

उन्होंने थैले उठाकर मीलों का सफर तय किया था, और अब वे उन्हीं थैलों को एक इंच भी नहीं हिला पा रहे थे। मणिराज ने फिर से अपना थैला उठाने की कोशिश की। असफल होने पर, मणिराज ने हसन से अपना थैला छोड़कर इस थैले को उठाने में मदद करने को कहा। दोनों ने मिलकर थैले को खींचने की कोशिश की, लेकिन थैला टस से मस नहीं हुआ।

तब तक आसपास के लोगों ने उन्हें अपने बैगों के साथ संघर्ष करते हुए देख लिया था। बस कंडक्टर उनके पास आया।

'बस के चलने का समय हो गया है, क्या आप आ रहे हैं?' कंडक्टर ने पूछा। इस समय बस स्टॉप पर केवल वही लोग आते थे जिन्हें इस बस में चढ़ना होता था। अन्यथा लोगों के वहाँ खड़े रहने का कोई कारण नहीं था। अगली बस तीन घंटे बाद थी।

'उम, हाँ हमें आना होगा, लेकिन...' हसन ने कहा।

'क्या यह बहुत भारी है? क्या आपको मदद चाहिए?' बस कंडक्टर ने कहा और पास खड़े कुछ लड़कों को आने का इशारा किया।

मणिराज या हसन के कुछ कहने से पहले ही लड़कों ने थैले उठाने की कोशिश की। वे एक-दूसरे पर अपनी कमजोरी को लेकर हँसने लगे, क्योंकि वे भी थैले हिला नहीं पा रहे थे। जब उनमें से सबसे ताकतवर और सबसे बलवान लड़के ने कोशिश की और नाकाम रहा, तो उनकी जिज्ञासा बढ़ गई, और आखिरकार उन्होंने थैले खोले और उनमें देवताओं के चेहरे देखे।

जैसे ही उन्हें देवताओं के चेहरे दिखाई दिए, थैले हल्के हो गए।

गांववाले उन्हें आसानी से उठा सकते थे। सबने एक साथ हैरानी भरी सांस ली, जिसके बाद गांववालों की गुस्से भरी चीखें सुनाई दीं।

मणिराज और हसन भागने के बारे में सोच भी पाते, तभी क्रोधित भीड़ ने उन्हें घेर लिया। उनमें से कुछ लोग बांस की लाठियाँ लेकर आए थे। जब मणिराज और हसन को पुलिस के हवाले किया गया, तब तक वे अपने पैरों पर खड़े होने की हालत में नहीं थे। और मंदिर में देवताओं के चेहरे मुस्कुरा रहे थे।

परियों की भूमि

'मुझे आराम चाहिए।' मैंने एक गहरी साँस लेते हुए कहा। घर से काम करना बहुत नीरस हो गया था। मैं बाहर जाना चाहती थी, यात्रा करना चाहती थी, दुनिया देखना चाहती थी, और अब तो मुझे अपना ऑफिस या सहकर्मी भी नज़र नहीं आते (सिर्फ़ लैपटॉप की स्क्रीन पर)।
'मानव, तुम छुट्टी पर हो। तुम तीन महीने से ज़्यादा समय से घर पर ही हो। तुम्हें और क्या चाहिए?' मेरी माँ ने कहा।
'यह कोई आराम नहीं है। मैं घर से काम कर रही हूँ, इस उबाऊ दिनचर्या में फंसी हुई हूँ। कोई आश्चर्य नहीं, कोई रोमांच नहीं। मैं फंसा हुआ और घुटन महसूस कर रही हूँ। इससे भी बुरा यह है कि हर कोई सोचता है कि मैं खाली हूँ और अचानक हमारे घर आ जाते हैं, यह जानते हुए कि मैं यहाँ हूँगी। और वे मेरा समय बर्बाद करते हैं, और फिर मैं दिन-रात मेहनत करके अपना काम पूरा करती हूँ। मुझे इससे छुट्टी चाहिए।'
क्या आप ऑफिस से काम करना शुरू करना चाहते हैं?
मैंने इसके बारे में सोचा और समय पर उठने, ट्रैफिक से जूझने और रोजाना ऑफिस में सभी का सामना करने के बारे में सोचकर मेरी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई।
मेरी माँ ने मेरे चेहरे पर डर देखा और मुस्कुराईं। कभी-कभी, वह मेरे मन की बात बिल्कुल समझ जाती हैं। उन्होंने फिर कहा, 'जब यह सब शुरू हुआ था, तब तुम खुशी से उछल रहे थे, अब क्या हुआ?'
वो सही कह रही थी, वर्क-फ्रॉम-होम शुरू होते ही मैं बेहद खुश हो गई थी। इसने मेरी जीवनशैली पूरी तरह बदल दी। मुझे उठकर तैयार होने, ऑफिस के कपड़े पहनने और फिर ऑफिस भागने की ज़रूरत नहीं थी। मैं पायजामे में ही काम कर सकती थी। किसी को इस बात की परवाह नहीं थी कि कोई सुबह नहाता है या दोपहर में। मैं बिस्तर पर लेटकर काम कर सकती थी। आने-जाने में लगने वाले समय की बचत से मैंने नई-

नई चीजें सीखीं, कई तरह के व्यंजन बनाना सीखा, अपने कमरे को रंगा, कई किताबें पढ़ीं। शुरुआत में तो मज़ा आया, लेकिन फिर उत्साह कम हो गया और हर दिन एक जैसा ही होने लगा। कुछ भी नया नहीं था। फिर भी, मैं नियमित रूप से ऑफिस नहीं जाना चाहती थी।

'हाँ, तब तो मैं खुश थी, लेकिन अब नहीं। मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूँ। मुझे ऑफिस जाने का भी मन नहीं करता। वैसे भी, वे अभी खुलने वाले भी नहीं हैं।' मैंने रूठते हुए कहा।

'तुम वयस्क हो। तुम्हें अपनी समस्याओं का समाधान खुद करना होगा। लेकिन

'आप मुझसे कोई भी सलाह या सुझाव मांग सकते हैं,' माँ ने कहा।

वह हमेशा से ऐसी ही थीं, कभी मुझ पर अपनी मर्जी नहीं थोपती थीं, और मुझे अपने फैसले खुद लेने के लिए प्रोत्साहित करती थीं... यहां तक कि गलतियां करने के लिए भी। वह मुझसे कभी सीधे तौर पर कुछ करने के लिए नहीं कहती थीं, बल्कि इशारे और सुझाव देती थीं और मुझे चीजों को स्पष्ट रूप से देखने और फिर सही फैसला लेने के लिए प्रेरित करती थीं। सीधे सलाह के लिए मुझे उनसे पूछना पड़ता था। कभी-कभी यह निराशाजनक लगता था, लेकिन कुल मिलाकर, मुझे पता था कि उन्होंने मुझे वह आजादी दी है जो ज्यादातर भारतीय बच्चों को कभी नहीं मिलती। हालांकि अब मैं दस साल से ज्यादा समय से वयस्क हूं। फिर भी, मैं उनसे सलाह लेती हूं।

'ठीक है, मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूं... आप क्या सुझाव देते हैं कि मुझे क्या करना चाहिए?'

उसने कुछ देर सोचा और बोली, 'मुझे लगता है कि आपको कुछ समय के लिए जगह बदलने की जरूरत है। माहौल में बदलाव की जरूरत है।'

हमेशा की तरह मेरी माँ ने वही बात कह दी जो मुझे खुद समझ लेनी चाहिए थी, या यूँ कहूँ कि मैं बस उनसे सुनना चाहती थी। मुझे वाकई जगह बदलने की ज़रूरत थी। लेकिन वर्क-फ्रॉम-होम सिस्टम में मैं और कहाँ जा सकती थी? तभी मैंने अपनी दोस्त प्रीति को फोन करने का फैसला किया, जो खुद भी ऐसी ही परिस्थितियों से गुज़र रही थी।

तो, आप इसके बारे में क्या सोचते हैं? घर से काम करने का यह सिलसिला कब तक जारी रहेगा?

खबरों के मुताबिक, आईटी सेक्टर को वर्क फ्रॉम होम सिस्टम से काफी फायदा हुआ है और वे कभी भी पुराने पूर्ण कार्यालय प्रणाली में वापस नहीं लौटेंगे, कम से कम महामारी से पहले के स्तर तक तो कभी नहीं।
‘तो, हमें कम से कम लंबे समय तक घर पर ही रहना पड़ेगा?’ मैंने पूछा।
ऐसा प्रतीत होता है।
'शुरू में घर से काम करना सुविधाजनक था, लेकिन अब मैं इससे ऊब चुकी हूँ, यह नीरस हो गया है। माँ कहती हैं कि मुझे माहौल में बदलाव की ज़रूरत है, और मैं उनसे सहमत हूँ। लेकिन मैं यह कैसे कर सकती हूँ?'
‘माहौल में बदलाव... यह बुरा विचार नहीं है। देखिए, घर से काम करने का यह सिलसिला कम से कम तीन महीने तक तो चलेगा ही। क्यों न आप छुट्टी पर चले जाएं?’
मैंने उदास होकर हंसते हुए कहा, 'यह घर से काम करना है, सवैतनिक अवकाश नहीं।'
मुझे पता है, लेकिन आप अपना घर कहीं भी बना सकते हैं। आपको दिल्ली में ही रहने के लिए किसने कहा था?
‘मैं कहाँ जाऊँ? आपको पता है हमें एक भरोसेमंद हाई-स्पीड इंटरनेट कनेक्शन चाहिए। देखिए, मैंने इस बारे में सोचा था। मान लीजिए, मैं कहीं जाकर किसी होटल में ठहर जाऊँ। मैं वहाँ से ऑनलाइन काम कर सकता हूँ। शायद मैं दो-तीन दिन या ज़्यादा से ज़्यादा एक हफ़्ते के लिए ऐसा करूँ। उसके बाद क्या? एक हफ़्ते में माहौल में कोई बदलाव नहीं होगा। और अगर मैं ज़्यादा दिन रुका तो मुझे अपनी सैलरी होटल को ही देनी पड़ेगी, यह कोई अच्छा विकल्प नहीं है।’ मैंने कहा।
'तुम सही कह रहे हो,' प्रीति ने कहा और मेरी समस्या के बारे में सोचते हुए कुछ पल के लिए चुप हो गई।
‘हेलो, क्या आप वहां हैं?’ मैंने यह जांचने की कोशिश की कि क्या हम अभी भी जुड़े हुए हैं।
‘अरे हाँ, हाँ, मैं यहाँ हूँ। आपको पहाड़ों, हिमालय की यात्रा के बारे में कैसा लग रहा है?’ उसने पूछा।
‘बेशक, पहाड़ों पर जाना एक सुखद बदलाव होगा, वातावरण में एक वास्तविक परिवर्तन। लेकिन वहाँ के होटल शायद और भी महंगे होंगे। मैं वहाँ कितने दिन रह

सकता हूँ?'
'देखिए, उत्तराखंड में मेरा एक दोस्त है जिसका एक बहुत अच्छा होमस्टे है। मौजूदा महामारी की वजह से वहां कोई पर्यटक नहीं हैं। मुझे लगता है कि वह लंबे समय तक ठहरने के लिए बहुत ही उचित कीमत पर कुछ दे सकता है।'
'उत्तराखंड, अच्छा लगता है,' मैंने कहा। मैंने सुना था कि उत्तराखंड में सबसे खूबसूरत पहाड़ी इलाके हैं। मैं उत्साहित हो गई।
सब कुछ ठीक रहा और मैंने उस प्यारे से होमस्टे में एक महीना बिताने का फैसला किया। जब हम इस तरह के काम में मिलने वाले रोमांच के बारे में चर्चा कर रहे थे, तभी प्रीति ने भी मन बना लिया और इसे आजमाने का निर्णय लिया। दिल्ली से एक छोटी सी उड़ान और फिर चार घंटे की कार यात्रा के बाद, हम उत्तराखंड के टिहरी गढ़वाल जिले के एक छोटे से गाँव करखेरी पहुँचे। यह एक छोटा सा गाँव था जिसकी आबादी एक हजार से भी कम थी।
होमस्टे गांव के बाहरी इलाके में, एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित था, जहां से घाटी का मनोरम दृश्य दिखाई देता था। इसमें केवल पांच कमरे थे, और हमें घाटी के नज़ारे वाले दो सबसे अच्छे कमरे दिए गए। बाकी कमरे खाली थे। होमस्टे के बगल में एक छोटे से घर में केयरटेकर रहता था। उसका बेटा प्रीति का दोस्त था, इसलिए हम उनके लिए मेहमान होने के साथ-साथ दोस्त भी थे।
चूंकि हमने यहां कम से कम एक महीने रुकने की योजना बनाई थी, इसलिए हमने अपने कमरे अपनी पसंद के अनुसार सजाने में थोड़ा समय लिया। मैंने अपनी वर्क टेबल खिड़की के पास रखी, जहां से नीचे घाटी और सामने बर्फ से ढके पहाड़ दिखाई देते थे। पहाड़ हरे-भरे थे, जिनमें बहुत सारे पेड़ थे और जहां-जहां पेड़ नहीं थे, वहां घास थी। आसमान में बादल छाए हुए थे, लेकिन उस दिन कोहरा नहीं था। घाटी एकदम निर्मल और निर्मल लग रही थी। उस खिड़की से ली गई तस्वीर बिना किसी एडिटिंग के किसी भी फोन या लैपटॉप के वॉलपेपर के लिए एकदम सही रहेगी। उस शाम, मैंने खिड़की की चौखट पर रखी चाय के गर्म प्याले की तस्वीर ली और अपनी मां को भेज दी। पृष्ठभूमि में सुंदर घाटी के साथ चाय का यह प्याला मेरी परम आनंद की स्थिति को पूरी तरह से दर्शाता था।

हमारे अनुरोध पर, होमस्टे के मालिक ने पहले से ही हाई-स्पीड इंटरनेट कनेक्शन की व्यवस्था कर दी थी और हम कुछ ही मिनटों में अपना ऑफिस सेटअप कर पाए और काम शुरू करने के लिए तैयार हो गए। काम में फिर से आनंद लौट आया। इस जगह की शांति दिल्ली जैसे शहर में असंभव, बल्कि अकल्पनीय थी। काम से मिलने वाले हमारे छोटे-छोटे ब्रेक घर से भी ब्रेक जैसे थे। ये किसी खूबसूरत हिल स्टेशन पर छोटी-छोटी छुट्टियों की तरह थे। शायद कुछ समय बाद कोई खिड़की से दिखने वाले मनमोहक दृश्य का आदी हो जाए, लेकिन दिन भर परछाइयों के खेल और मौसम के बदलाव के साथ बदलते हुए यह दृश्य हमें आश्चर्यचकित करता रहता था। हर दिन यह बिल्कुल नया लगता था। कभी-कभी घाटी पूरी तरह से कोहरे से ढकी होती थी और खिड़की से हमें केवल दूधिया सफेदी ही दिखाई देती थी। कई बार धूप का आनंद लेते हुए हमें घाटी में बादल दिखाई देते थे। कभी-कभी हमें कमरे में बादलों को आने से रोकने के लिए खिड़की बंद करनी पड़ती थी। अगर मुझे इस जगह का वर्णन एक शब्द में करना हो, तो मैं कहूंगा 'जादुई'। हमने इसका भरपूर आनंद लिया। प्रीति को भी ऐसा ही लगा। कुछ दिनों बाद एक सुबह मैंने उसे योगासन का अभ्यास करते देखा।
मुझे कभी पता ही नहीं था कि तुम्हें ऐसी चीजों में दिलचस्पी है।
‘तुम्हारा मतलब योग से है?’ उसने पूछा।
'हां, और वो ध्यान वाली बात भी।'
'इस जगह में कुछ ऐसा है, यहाँ की शांति, जो मुझे सकारात्मक रूप से प्रेरित करती है कि मैं कुछ बेहतर करूं और खुद का एक बेहतर संस्करण बनूं।'
मैं उससे सहमत थी। इस जगह में सकारात्मकता थी। शायद इसीलिए कई पुरानी कहानियों में लोग ध्यान या तपस्या करने के लिए पहाड़ों पर आते थे। मैंने भी अपनी लंबे समय से लंबित कहानियों के मसौदे पर काम करना शुरू किया और आखिरकार एक साल से अधिक के अंतराल के बाद उनमें से कई को पूरा किया।
वर्क-फ्रॉम-होम का कॉन्सेप्ट जारी रहने के कारण, हमने अपना प्रवास एक महीने के लिए और फिर एक महीने के लिए बढ़ा दिया। तीसरे महीने के बाद, हमने होमस्टे मालिकों को बताया कि हम तब तक यहीं रहेंगे जब तक वर्क-फ्रॉम-होम सिस्टम सुचारू रूप से चलता रहेगा। इस दौरान, जब भी हमें समय मिलता, हम गाँव में घूमते थे। गाँव के हर कोने में कुछ न कुछ खास था, चाहे वो खूबसूरत नज़ारे हों, दिलचस्प

कहानियाँ हों या पवित्र मंदिर। हमने नरसिंग देवता के एक मंदिर के दर्शन किए। गाँव के अधिकांश लोग हमें दिल्ली से आए मेहमान के रूप में जानते थे। हम अक्सर उनसे बातचीत करते थे। हमें गरमा गरम चाय और स्थानीय व्यंजन परोसे जाते थे। मुख्य भोजन चावल था, लेकिन उसे अलग तरीके से बनाया जाता था और करी स्वादिष्ट होती थी। ज्यादातर समय होमस्टे मालिकों द्वारा भोजन की व्यवस्था की जाती थी, कभी-कभी पड़ोसी खाना भेजते थे, खासकर जब वे कुछ खास पकाते थे। और कभी-कभी, हम होमस्टे में मौजूद इंडक्शन कुकटॉप पर खुद भी खाना बना लेते थे।

जब आप कुछ दिनों के लिए सिर्फ़ घूमने आते हैं तो पहाड़ियाँ अलग दिखती हैं, और जब आप ज़्यादा समय तक रुकते हैं तो ये बिलकुल अलग होती हैं। जब हम पर्यटक के रूप में आते हैं, तो हम जल्दबाज़ी में एक जगह से दूसरी जगह भागते रहते हैं, ज़्यादा से ज़्यादा जगहों को देखने की कोशिश करते हैं, अपनी यात्रा का पूरा फ़ायदा उठाते हैं, और इस चक्कर में कई चीज़ें देखना भूल जाते हैं। हालाँकि ज़्यादातर लोगों के पास हमारे जितना समय नहीं होता। लेकिन ज़्यादा समय तक रुकने से पहाड़ों को देखने का हमारा नज़रिया बदल जाता है। पहले तो वे फ़ोन वॉलपेपर के लिए एकदम सही नज़ारे लगते थे, लेकिन वे उससे कहीं ज़्यादा हैं। हमें एहसास हुआ कि इन पहाड़ों की अपनी कहानियाँ हैं। करखेरी गाँव का स्वभाव ऐसा है जैसे कोई पहले तो बहुत शर्मीला हो, लेकिन धीरे-धीरे खुल जाता है, और फिर एक देखभाल करने वाले और सबसे अच्छे दोस्त जैसा हो जाता है। जब भी आपके पास सुनने का समय हो, यह आपको दिलचस्प कहानियाँ सुनाता है।

एक आलसी रविवार को, जब हम कुछ दिनों की बारिश के बाद बालकनी में बैठकर धूप का आनंद ले रहे थे, तभी होमस्टे के पास एक छोटी सी दुकान चलाने वाला आशु हमारे साथ बैठा था। आशु हमारे लिए उस समय मददगार साबित हुआ जब हमें नूडल्स या एए बैटरी की जरूरत पड़ती थी। साथ ही, उसके पास हमें सुनाने के लिए कई रोचक कहानियां भी थीं। हमने उसे चाय और नाश्ते के लिए अपने साथ बैठने का न्योता दिया।

‘आशु भैया, आप कैसे हैं?’ प्रीति ने उनसे पूछा।

‘जी, मैं ठीक हूँ, मेरे भाई की शादी अगले महीने तय हो गई है। आपको जरूर आना चाहिए।’

हमें उनके निमंत्रण पर आश्चर्य नहीं हुआ। हम गाँव का हिस्सा बन चुके थे, और शादी में तो स्वाभाविक रूप से पूरा गाँव ही आमंत्रित होता है।
‘ज़रूर, अगर हम तब तक यहाँ पहुँच गए तो। आशु, तुम्हारा क्या ख्याल है? तुम्हारी शादी कब हो रही है?’ प्रीति ने उससे पूछा। आशु एक नौजवान लड़का था, शायद सत्रह या अठारह साल का। प्रीति जानती थी कि अभी उसकी शादी के लिए बहुत जल्दी है, लेकिन वह बस उसे चिढ़ा रही थी। आशु ने शर्माते हुए मुस्कुरा दिया।
‘तुम मेरा मजाक उड़ा रहे हो। मुझे पता है कि शादी करने से पहले मेरे पास अभी समय है,’ उसने कहा।
‘बताओ, शर्माओ मत। क्या तुम्हें अपने लिए कोई लड़की मिल गई है?’ मैंने पूछा। आशु खिलखिलाकर हंस पड़ी।
नहीं, मैं अभी भी एक की तलाश में हूँ।
'यहां इतनी खूबसूरत लड़कियां हैं,' प्रीति ने कहा।
'लेकिन मुझे अभी तक अपने लिए सही साथी नहीं मिला है।'
‘ओह, क्या आप अपने लिए एक परी चाहते हैं?’ मैंने उससे पूछा।
‘अरे, तुम क्या कह रहे हो, परी तो खतरनाक जीव होते हैं, वे तुम्हारा अपहरण कर सकते हैं।’
‘अब तो तुम हमारी टांग खींच रहे हो,’ प्रीति हंसते हुए बोली।
‘नहीं, यह सच है और पेरिस यहाँ से ज़्यादा दूर नहीं है,’ उसने कहा। वह इस बात को लेकर गंभीर लग रहा था।
‘ओह, हमें बताइए कि वे कहाँ हैं? क्या हम उन्हें देख सकते हैं?’ मैंने पूछा।
'हर कोई उन्हें नहीं देख सकता, लेकिन वे मौजूद हैं। बहुत से लोगों ने उन्हें देखा है।'
‘कहाँ? यहाँ से कितनी दूर?’ मैंने पूछा।
‘खैत पर्वत, आपने इसके बारे में सुना होगा। इसे परियों का पर्वत भी कहा जाता है। आप गूगल पर देख सकते हैं।’
‘हमने इसके बारे में नहीं सुना। इसकी स्पेलिंग क्या है?’ मैंने अपने फोन पर सर्च इंजन एप्लिकेशन खोलते हुए कहा।
‘Khait... K H A I T Parvat’
'समझ गया।'

‘यह एक दिव्य स्थान है। अगर आपको इसे देखने का मौका मिले तो आपको यह बहुत पसंद आएगा।’ आशु ने उत्साह से कहा। वह बहुत उत्साहित दिख रहा था।
‘अरे हाँ, यह तो है ही और वाह! एक साइनबोर्ड पर इसे सचमुच परियों की भूमि बताया गया है। देखो,’ मैंने अपना फोन प्रीति को दिखाया। उसमें एक साइनबोर्ड की तस्वीर थी जिस पर लिखा था, ‘प्रसिद्ध खैत पर्वत (परियों की भूमि) पैदल केवल पाँच किलोमीटर दूर’।
‘यहाँ से यह कितनी दूर है?’ प्रीति ने आशु से पूछा।
'यहां से दो घंटे की ड्राइव और लगभग पांच किलोमीटर की पैदल यात्रा, एक कठिन ट्रेक। इसमें तीन या चार घंटे लग सकते हैं, लेकिन यह एक खूबसूरत ट्रेक है।'
‘यह दिलचस्प है, परियों के बारे में क्या? आप इसे परियों का पहाड़ कह रहे थे, है ना?’
'जी मैडम, यह परियों का पहाड़ है, यहाँ एक मंदिर है जहाँ परियों की पूजा की जाती है।'
‘परियों का मंदिर? क्या यह सचमुच में है?’ मैंने पूछा।
‘हां, नौ परियां। कहते हैं कि वे खैत पर्वत पर अदृश्य रूप में रहती हैं। लेकिन कुछ लोगों ने उन्हें देखा भी है। और ऐसी कहानियां भी हैं कि वे लोगों का अपहरण कर लेती हैं,’ आशु ने कहा। मैंने प्रीति की तरफ देखा, वह भी मुस्कुरा रही थी।
“हो सकता है आपको वहां परी दिखे या न दिखे, वे हर किसी को दिखाई नहीं देतीं। लेकिन वहां पहुंचकर आपको लगेगा जैसे आप दुनिया के सबसे ऊंचे स्थान पर हैं, नजारे बेहद खूबसूरत हैं। वहां से आप केदारनाथ पर्वतमाला भी देख सकते हैं। यह ऐसा अनुभव है जो जीवन में कम से कम एक बार जरूर करना चाहिए। अब आप इतना करीब आ चुके हैं, तो आप यात्रा की योजना बना सकते हैं।”
अगले शनिवार को आसमान साफ था और हमें पूरा वीकेंड फ्री मिला। हमने अपना सामान पैक किया और मुसानकिरी के लिए निकल पड़े, जिस गाँव के बारे में आशु ने हमें बताया था। ड्राइव सिर्फ पचास किलोमीटर की थी, लेकिन हमें दो घंटे लग गए, क्योंकि रास्ता घुमावदार और ज्यादातर चढ़ाई वाला था। ट्रैफिक बहुत कम था, मैंने सिर्फ दो-तीन कारें और एक अकेली पब्लिक बस देखी। बीच में कुछ गाँव थे, लेकिन मुझे कोई इंसान नज़र नहीं आया। जब मैंने ड्राइवर से उनके बारे में पूछा, तो उसने बताया कि वे वीरान गाँव हैं, यानी वहाँ अब कोई नहीं रहता। मुझे यह बात अजीब लगी कि किसी ने उन घरों को बनाने में इतनी मेहनत की, और फिर उन्हें छोड़ दिया। ड्राइवर

ने बताया कि राज्य में ऐसे कई वीरान गाँव हैं। ज्यादातर निवासी काम की तलाश में शहरों में चले गए हैं।

मुसानकिरी एक छोटा सा गाँव था, खारकेरी से भी छोटा। ड्राइवर ने हमें बताया कि इसकी आबादी 100 से भी कम है। हम मुसानकिरी में सड़क किनारे एक छोटी सी दुकान पर चाय और समोसे के लिए रुके। चाय बेचने वाला जानता था कि हम खैत पर्वत की ओर जा रहे हैं, क्योंकि उसके स्टॉल पर रुकने वाले कई पर्यटक भी यही जानते थे। यह रास्ता किसी और लोकप्रिय जगह की ओर नहीं जाता था।

उन्होंने हमें बताया, 'वहाँ ऊपर दो मंदिर हैं। एक रागज देवता का है और दूसरा देवियों का। रागज देवता के यहाँ प्रार्थना करना न भूलें, क्योंकि वे हमारे रक्षक हैं। वे हमें बुरी शक्तियों से बचाते हैं।'

हमने अपनी यात्रा शुरू की। शुरुआत में, यह पत्थरों से भरा एक संकरा रास्ता था। देखने में यह बहुत सुंदर नहीं लग रहा था, लेकिन जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गए, नज़ारे खूबसूरत होते चले गए। रास्ता पथरीला से बदलकर सूखी घास वाला हो गया। कुछ रास्ते घने जंगल से होकर गुज़रते थे। कई जगहों पर टूटी हुई सीमेंट की सीढ़ियाँ भी थीं। जैसे ही हमने चलना शुरू किया, मौसम बदल गया और सूरज बादलों के पीछे छिप गया। इससे ट्रेक और भी खूबसूरत हो गया। मुझे समझ आया कि आशु ने इसे मुश्किल ट्रेक क्यों कहा था। यह सिर्फ पाँच किलोमीटर का था, लेकिन लगभग पूरा रास्ता चढ़ाई वाला था। कहीं भी समतल जगह नहीं थी और चढ़ाई ज्यादातर घुमावदार थी। कभी हम पहाड़ के किनारे पर चलते थे, तो कभी पेड़ों के बीच से गुजरते थे। मेरी तो सांस फूल रही थी, लेकिन प्रीति नियमित योगाभ्यास के कारण मुझसे कहीं बेहतर स्थिति में थी। मैंने कई बार सांस लेने के लिए आराम किया, जबकि प्रीति जंगल और घाटियों की तस्वीरें खींचती रही। कई जगहों से हमें भीलंगना नदी दिखाई दे रही थी।

चाय बेचने वाले ने हमें बताया था कि लड़कों का एक समूह हमसे लगभग एक घंटा पहले ट्रेक पर निकला था। लेकिन हम ट्रेक में उनसे नहीं मिल पाए। शायद वे लड़के हमसे छोटे और तेज़ थे। साथ ही, कोई और हमें पार नहीं कर पाया, जिसका मतलब था कि उन पाँच घंटों तक हम अकेले ही ट्रेक पर चल रहे थे।

रास्ते में हमें रागज़ देवता का एक छोटा सा एक कमरे वाला मंदिर दिखाई दिया। देवता के बारे में पूरी कहानी जाने बिना भी, हमने दिव्य शक्ति को प्रणाम किया और थोड़ी देर

वहाँ विश्राम करने के बाद अपनी यात्रा जारी रखी। मेरे लिए यह अब तक की सबसे कठिन यात्राओं में से एक थी। यह किसी ऑक्सीजन की कमी से ग्रस्त दो सौ मंजिला इमारत की खड़ी सीढ़ियों पर चढ़ने जैसा था।

मुसनकिरी से निकलने के लगभग पाँच घंटे बाद हम खैत पर्वत मंदिर पहुँचे। मुख्य मंदिर से पहले दो छोटे मंदिर थे। सीमेंट की सीढ़ियाँ सूखी घास से ढकी हुई थीं और मरम्मत की सख्त ज़रूरत थी। छोटे मंदिरों की भी यही हालत थी। मुख्य द्वार से अंदर जाते ही नज़ारा बेहद खूबसूरत था। हम शिखर पर थे, मुख्य मंदिर हमारे सामने था और पृष्ठभूमि में केवल नीला आकाश था। तेज़ हवा चल रही थी। मंदिर का झंडा और बंधे हुए कपड़े हवा में लहरा रहे थे। मंदिर पैगोडा शैली में बना था, जिसमें सीधी छतें, तीन स्तर और पिरामिड के आकार का केंद्रीय गुंबद था। मंदिर के प्रांगण में भगवान शिव की ध्यान मुद्रा में एक विशाल प्रतिमा थी, जिसके बगल में एक भव्य त्रिशूल रखा हुआ था। दृश्य अलौकिक था। मंदिर में एक अलौकिक आभा थी, और भीड़ की अनुपस्थिति ने इसे और भी मनमोहक बना दिया था।

मंदिर के एक तरफ एक छोटा सा शेड था, जहाँ से हम विशाल पर्वत श्रृंखला का मनोरम दृश्य देख सकते थे। यह एक अद्भुत अनुभव था, ऐसा लग रहा था मानो हम दुनिया के सबसे ऊँचे स्थान पर हों। बाद में मुझे पता चला कि हम समुद्र तल से दस हज़ार पाँच सौ फीट ऊपर थे। मंदिर से बाहर निकलते ही हमने देखा कि चार लड़के शेड के नीचे बैठकर नज़ारे का आनंद ले रहे थे। मुसानकिरी की वापसी यात्रा शुरू करने से पहले आराम करने के लिए वह एक आदर्श स्थान था।

चूंकि हम ही एकमात्र पर्यटक थे, इसलिए लड़कों ने हमें देखकर हाथ हिलाकर अभिवादन किया। हमने भी हाथ हिलाकर अभिवादन किया। एक लड़का कोने में रखे बर्तन में पानी डाल रहा था। जब मैंने पूछा, तो उन्होंने बताया कि उनके पास पोर्टेबल बर्नर है और वे चाय और इंस्टेंट नूडल्स बनाने जा रहे हैं। इस जगह पर गरमा गरम चाय और नूडल्स का विचार ही अद्भुत था। जब मैं सोच ही रहा था कि यह विचार हमारे मन में क्यों नहीं आया, तभी लड़कों ने हमें चाय और नूडल्स पेश किए। इस दावत को मना करना नामुमकिन था। बदले में, हमने अपने बैग में रखे चिप्स के कुछ पैकेट उन्हें दिए। हमने अपना परिचय दिया। मैगी पेश करने वाला अमन था, उसे पकाने वाला लोकेश था, तस्वीरें खींचने वाला रोहित था और फोटो खिंचवाने वाला भूपिंदर था।

गरम चाय और नूडल्स खाते हुए हमें पता चला कि वे देहरादून के एक कॉलेज में छात्र थे और उन्होंने लंबे सप्ताहांत के दौरान खैत घूमने की योजना बनाई थी।
‘तो, अमन, तुमने खैत जाने का फैसला क्यों किया?’ प्रीति ने उनसे पूछा।
अमन सबके लिए चाय बनाता था और सबसे ज्यादा बातूनी था। बाकी तीनों, रोहित, लोकेश और भूपिंदर, शर्मीले स्वभाव के थे।
'एक तो यह गढ़वाल के सबसे खूबसूरत दृश्य प्रस्तुत करता है, और दूसरा, हमने इसके बारे में कई कहानियां सुनी थीं और उनके बारे में जानने के लिए उत्सुक थे,' अमन ने बताया।
मैंने पूछा, 'किस तरह की कहानियाँ?' मुझे पता था कि वे आशु की तरह परियों के बारे में ही बात करेंगे।
‘यह परियों की भूमि है,’
'वास्तव में?'
‘यह सरकारी साइनबोर्ड पर लिखा हुआ है। मुसानकिरी में भी एक ऐसा ही साइनबोर्ड था।’
“ओह हाँ, मैंने वह देखा था। उन्होंने ‘खैत पर्वत, परियों का देश’ का ज़िक्र किया था,” मैंने कहा। “मैंने उसे तब देखा था जब आशु ने हमें खैत के बारे में बताया था।”
‘क्या तुम परियों पर विश्वास करते हो?’ प्रीति ने पूछा। उसकी आँखों में आश्चर्य झलक रहा था।
'सच में नहीं। लेकिन फिर भी हमें यहां आने की उत्सुकता थी, यह एक अच्छी ट्रेकिंग है और नूडल्स और चाय के लिए सबसे अच्छी जगह है।'
मैंने उनसे पूछा, 'क्या यहाँ किसी ने कभी कोई परी देखी है?'
उन्होंने कहा, 'ओह, ऐसे बहुत से लोग हैं जो उन्हें देखने का दावा करते हैं।'
मैंने पूछा, 'परियों का कोई ठोस सबूत, कोई वीडियो या तस्वीर है क्या?'
‘नहीं, इसका कोई सबूत नहीं है,’ अमन ने जवाब दिया। भूपिंदर, जो हमारी बातचीत ध्यान से सुन रहा था, पास आया और बोला।
‘जीतू बगड़वाल नाम के एक व्यक्ति के बारे में एक लोककथा प्रचलित है, जिसे परियों ने अगवा कर लिया था। वह अपने बैलों के साथ गायब हो गया। यह घटना नौवीं शताब्दी में

घटी थी। परियां उसकी ओर इसलिए आकर्षित हुईं क्योंकि वह बांसुरी बहुत सुंदर बजाता था। यही कारण है कि खैत पर किसी भी वाद्य यंत्र को बजाना वर्जित है।'
'ये सब बकवास है,' तीसरे लड़के लोकेश ने कहा। प्रीति और मैंने एक-दूसरे को देखा और मुस्कुरा दिए। हर समूह में कम से कम एक समझदार व्यक्ति तो होता ही है। हमें भी इन कहानियों पर यकीन नहीं था, लेकिन इन्हें सुनना हमें अच्छा लगता था।
'यह घटना नौवीं शताब्दी में घटी थी, और बेहतर कहानी यह है कि राजा मानशॉ ने उसे मरवा दिया था, क्योंकि वह राजा के परिवार की महिलाओं के साथ संबंध बनाने लगा था,' लोकेश ने कहा।
मैं मुस्कुराया।
'यह बात तर्कसंगत लगती है,' प्रीति ने कहा।
शाम ढल रही थी, लेकिन सूरज नहीं निकला था। बादल तेज़ी से घने हो गए और हमें दूर से गरजने की आवाज़ सुनाई दी। नज़ारा अद्भुत था, जहाँ हम ऊपर और नीचे घाटी में बादलों को देख सकते थे। यह स्वर्ग जैसा दृश्य था, जैसा कि कुछ बेहतरीन टीवी शो में दिखाया जाता है, जहाँ ऐसा लगता है मानो आप आसमान में कहीं लटके हुए हैं और चारों ओर बादल ही बादल हैं।
'हमें चलना चाहिए। अगर बारिश हुई तो नीचे उतरना मुश्किल हो जाएगा,' मैंने कहा। हालाँकि मुझे थोड़ा और आराम चाहिए था, लेकिन बारिश में ट्रेकिंग करना जोखिम भरा था। गीले रास्ते पर वापस लौटना लगभग नामुमकिन होगा।
लड़के भी उठकर दौड़ पड़े। वे हमसे तेज़ थे, लेकिन बीच-बीच में रुकते रहे और फिर हम उनके पास पहुँच गए। हम बादलों के घेरे में थे और चारों ओर सफेद धुंध छाई होने के कारण हमें केवल अपना रास्ता ही दिखाई दे रहा था। हमें दूर से कुछ तेज़ चीखें सुनाई दीं। हम जानते थे कि वे लड़के ही ज़ोर-ज़ोर से बोल रहे थे। मुझे लगा कि वे गूंज पैदा करने के लिए चीख रहे थे।
अंधेरा गहरा रहा था, लेकिन शुक्र है कि हवा अब शांत हो गई थी। हालांकि इसका मतलब यह भी था कि कभी भी बारिश हो सकती थी। जब हम रागज़ मंदिर पहुँचे, तो हमने भूपिंदर, रोहित और अमन को मंदिर के बाहर खड़े देखा। वे पहले की तरह खुशमिजाज नहीं लग रहे थे। मुझे उम्मीद नहीं थी कि वे इतनी जल्दी थक जाएँगे। जब हम पास पहुँचे, तो उन्होंने हमारी ओर देखा, मानो वे हमारा इंतज़ार कर रहे हों।

‘क्या हुआ? थके हुए हो?’ मैंने अमन से पूछा।
उसने कुछ कहने की कोशिश की, लेकिन उसके मुंह से कोई आवाज़ नहीं निकली।
तभी मैंने देखा कि उसकी आँखों में आंसू थे।
भूपिंदर ने मंदिर के पीछे स्थित थोड़ी सी समतल भूमि के किनारे की ओर इशारा किया।
भूपिंदर ने कहा, 'वह वहीं खड़ा था जब वह गिरा।' मुझे यह समझने में थोड़ा समय लगा कि भूपिंदर किसके बारे में बात कर रहा था। उस जगह पर केवल लोकेश ही मौजूद नहीं था। मुझे लगा कि वह शायद तेज़ी से चला होगा और सबसे पहले पहुँच गया होगा।
‘क्या?’ मैंने कहा, मुझे जो सुना था उसकी पुष्टि करनी थी। तभी रोहित बोला।
‘लोकेश, वो तो बस इको इफेक्ट से मज़ाक कर रहा था। वो घाटी की तरफ ज़ोर-ज़ोर से कुछ मज़ेदार शब्द बोल रहा था। फिर उसने किनारे के पास, धुंध को छुपाते हुए, कुछ तस्वीरें लेने को कहा। ये एक बेवकूफी भरा, मूर्खतापूर्ण विचार था।’ रोहित ने सिर हिलाते हुए कहा।
उन्होंने बोलने से पहले थोड़ी देर रुककर अपनी बात जारी रखी।
मैंने उससे कहा था कि वह ज्यादा पीछे न हटे। मुझे लगा कि वह सुरक्षित दूरी बनाए रख रहा है। लेकिन फिर वह पीछे की ओर लड़खड़ा गया। जैसा कि आप देख सकते हैं, मेरे पास एक तस्वीर है।
हमने रोहित का फोन देखा। उसमें लोकेश की धुंध के बीच खुशी से पोज देते हुए तस्वीरें थीं। तस्वीरें जादुई लग रही थीं। पैरों को तस्वीर से हटाकर देखने पर ऐसा लग रहा था मानो वह बादलों में तैर रहा हो। फिर आखिरी तस्वीर में लोकेश के चेहरे पर डर का भाव था। यह गिरने से ठीक पहले की तस्वीर थी।
मैंने उसका नाम ज़ोर से पुकारा। अमित और भूपिंदर ने भी उसे पुकारा, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। लोकेश ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। गिरने पर उसने चीख भी नहीं मारी।
अब मुझे उस तेज़ आवाज़ का कारण पता चल गया था जो हमने पहले सुनी थी, अमित और भूपिंदर लोकेश का नाम पुकार रहे थे। मैं मंदिर के पीछे वाले स्थान पर गया। कोहरा इतना घना था कि चलना मुश्किल था। मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ा।
‘मानव, सावधान रहना,’ प्रीति ने चेतावनी दी।

कोहरा और भी घना हो गया था। मैं अपने आगे मुश्किल से दो-चार फीट ही देख पा रहा था। ज़मीन के बारे में अनिश्चितता के कारण, मैं अपने हाथों और पैरों के बल बैठ गया और धीरे-धीरे आगे बढ़ा। मुझे खाई की गहराई जानने की उत्सुकता थी। और उम्मीद थी कि अगर हमें लोकेश कहीं लटका हुआ दिख जाए, तो हम उसे बचा पाएंगे। लेकिन, मेरी हैरानी की बात यह थी कि मैंने लगभग छह-सात फीट आगे बढ़ा लिया था और अभी भी कोई किनारा नहीं था। कोहरा और भी घना हो गया था, शायद मैं अब किसी बादल में आ गया था। मुझे इस जगह पर कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। लेकिन ज़मीन अभी भी थी। मैंने पीछे मुड़कर देखा। मुझे प्रीति की धुंधली आकृति दिखाई दी। वह मुझसे कुछ फीट पीछे खड़ी थी। मुझे एहसास हुआ कि अगर मैं किनारे तक पहुँच भी जाऊं, तो भी मुझे कुछ दिखाई नहीं देगा।
मैंने कहा, 'यह कैसे संभव है?'
‘क्या?’ प्रीति ने पूछा।
'तस्वीरों के अनुसार, लोकेश इतनी दूर खड़ा नहीं दिख रहा था। वास्तव में, मैं तो और भी आगे चला गया था।'
प्रीति ने मेरी ओर देखा, मानो वह मुझसे और कुछ कहने की उम्मीद कर रही हो।
मेरा मतलब है कि वह इतनी ऊंचाई से कैसे गिर सकता है? वह किनारे से काफी दूर था। वह इस तरह कैसे गिर सकता है?
प्रीति ने मंदिर की ओर देखा और दूरी का अनुमान लगाया। तस्वीरों के अनुसार, लोकेश किनारे से काफी दूरी पर प्रतीत हो रहा था।
‘तुम्हारी बात सही है,’ उसने कहा और रोहित की ओर चल पड़ी।
‘क्या आप तस्वीरें दोबारा दिखा सकते हैं?’ उसने रोहित से पूछा।
रोहित ने अपने फोन की फोटो गैलरी खोली और फोन प्रीति को दे दिया। प्रीति ने ध्यान से तस्वीरें देखीं। रोहित और मैं भी उसके कंधे के ऊपर से फोन देख रहे थे। उसने कई बार तस्वीरें देखीं और फिर लोकेशन देखी। एक बात पक्की थी कि लोकेश सीमा के अंदर ही था।
‘देखो, वह उस बिंदु से आगे नहीं खड़ा था,’ प्रीति ने उस स्थान की ओर इशारा करते हुए कहा।
रोहित ने धीरे से सिर हिलाते हुए कहा, 'हां'।

‘वह उस सीमा से आगे नहीं जा सकता,’ उसने फिर कहा।
मैंने कहा, 'और उस बिंदु से आगे कम से कम छह फीट समतल भूमि है।'
‘तो फिर लोकेश ने कैसे...’, अब भूपिंदर ने बोलना शुरू किया। वह उस बिंदु पर पहुंचा और धीरे-धीरे आगे बढ़ा, ठीक वैसे ही जैसे मैं बढ़ा था।
“हां, इस बिंदु से आगे छह फीट से अधिक जगह है। लोकेश किनारे के पास नहीं खड़ा था। यह थोड़ा ढलान वाला है, लेकिन वह यहां से गिर नहीं सकता। इसके अलावा, यहां सूखी घास है, वह फिसल भी नहीं सकता,” भूपिंदर ने ऐसे कहा जैसे वह खुद से पूछ रहा हो।
'शायद वह गिर गया और लुढ़क गया। मुझे पता है, यह बहुत ही असंभव लगता है, लेकिन यही एकमात्र संभावित स्पष्टीकरण प्रतीत होता है,' अमन ने कहा।
यह कोई संतोषजनक स्पष्टीकरण नहीं था, लेकिन किसी ने इस बारे में कुछ नहीं कहा। आसमान गहराता जा रहा था। हमें चलना ज़रूरी था। लेकिन लोकेश का क्या? उसके दोस्त जाने को तैयार नहीं थे। जो कुछ हुआ था, उससे वे सदमे में थे। हम रागाज़ मंदिर के द्वार पर ही बैठे रहे।
मैंने देवता की मूर्ति को देखा। वह किसी राक्षस जैसी लग रही थी। उसके हाथ में एक विशाल तलवार थी। मैं द्वार के पास गया और उन्हें प्रणाम किया। उस समय मेरे मन में केवल लोकेश की सुरक्षा का ही ख्याल था। इस पूरी यात्रा में हम कुछ ही लोग थे। अजीब बात यह थी कि कुछ ही घंटों के साथ रहने के बाद भी मुझे ऐसा लगा जैसे मैं इन सबको, लोकेश समेत, व्यक्तिगत रूप से जानता हूँ। मुझे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे मैंने किसी करीबी को खो दिया हो। उस समय मैं रोहित, भूपिंदर और अमन की तरह ही दुखी था। आसमान में अंधेरा छाया हुआ था, हमें जो भी आवाजें सुनाई दे रही थीं, वे सब प्राकृतिक थीं, मुख्य रूप से दूर से बादलों की गड़गड़ाहट और पक्षियों की चहचहाहट। कोहरा लगातार चल रहा था, कभी इतना घना होता था कि हम कुछ ही कदमों से आगे नहीं देख पाते थे, और कभी उसके बीच से घाटी दिखाई देती थी। मैं रागज देवता के बारे में कुछ नहीं जानता था, लेकिन मुझे उनसे प्रार्थना करने का मन कर रहा था, यही कामना कर रहा था कि किसी तरह लोकेश वापस आ जाए।
मंदिर के सामने खड़े-खड़े मुझे समय का पता ही नहीं चला। लेकिन जब मैंने पीछे मुड़कर देखा तो रोहित, भूपिंदर और अमन मेरे बगल में खड़े होकर देवता की प्रार्थना

कर रहे थे।
प्रीति मंदिर के सामने पत्थर की शिला पर बैठी रोहित के फोन में तस्वीरें देख रही थी। वह भी इस घटना से सदमे में थी, और तस्वीरों को देखकर ऐसा लग रहा था कि हम किसी तरह लोकेश को बचा सकते थे। मैं प्रीति के पास गया। उसने आखिरी तस्वीर को ज़ूम करके देखा जिसमें लोकेश का संतुलन बिगड़ गया था। मैंने देखा कि प्रीति लोकेश के कंधों को ध्यान से देख रही थी।
'तुम क्या ढूंढ रही हो?' मैंने प्रीति से पूछा। वह थोड़ी चौंक गई। शायद उसने ध्यान नहीं दिया कि मैं उसके बगल में खड़ी थी।
'मानव, इधर देखो। यह कुछ अजीब सा है,' उसने फोन मेरी तरफ बढ़ाते हुए कहा। मैंने लोकेश की तस्वीर को ज़ूम करके देखा, उसके कंधों के आसपास। तस्वीर थोड़ी पिक्सेलेटेड लग रही थी, हाँ, उसके कंधों पर उंगलियों जैसी कुछ आकृतियाँ थीं। धुंध के कारण कंट्रास्ट कम था, लेकिन कुछ तो दिख रहा था। लोकेश की जैकेट हल्के भूरे रंग की थी। लेकिन उसके कंधे के आसपास की आकृति उससे कहीं हल्की थी। जहाँ तक मुझे याद है, वह बिल्कुल सादी जैकेट थी, उस पर कोई डिज़ाइन नहीं था।
'अमन!' मैंने पुकारा। वह मेरे पास आया। मैंने उसे तस्वीर दिखाई।
'क्या लोकेश की जैकेट पर इस तरह का कोई डिज़ाइन या पैटर्न था?' मैंने पूछा। उसने मुझसे फ़ोन लिया और तस्वीर देखने लगा। उसने कई बार ज़ूम आउट और ज़ूम इन किया। फिर उसने आँखें बंद कर लीं और जैकेट के डिज़ाइन को याद करने की कोशिश करने लगा। उसने पीछे स्क्रॉल करके पहले की तस्वीरें देखीं जो नज़दीक से और बेहतर रोशनी में ली गई थीं। जैकेट पर ऐसा कोई डिज़ाइन नहीं था। उसने तस्वीर दिखाई और फ़ोन मुझे वापस दे दिया।
'इसका क्या मतलब है?' उसने पूछा।
'इसका मतलब है कि लोकेश के पीछे कोई था।' प्रीति ने कहा।
अमन ने रोहित को फोन किया और उसे तस्वीरें दिखाईं।
'लेकिन उसके पीछे कोई नहीं था,' रोहित ने कहा।
उन्होंने आगे कहा, 'मुझे याद है, आप और भूपिंदर वहां बैठे थे, जबकि मैं लोकेश की तस्वीरें खींच रहा था।'
'और इस यात्रा में हमारे अलावा और कोई नहीं है।'

भूपिंदर भी पास आ गया। रोहित ने उसे फोन दिखाया।
भूपिंदर ने पूछा, 'क्या किसी ने उसे धक्का दिया?'
'ये निशान किसी की उंगलियों जैसे दिखते हैं। हो सकता है उसे धक्का दिया गया हो,' अमन ने कहा।
सबने एक-दूसरे की तरफ देखा।
'मुझे तस्वीर दोबारा दिखाओ,' मैंने पूछा। अब, आकृति सचमुच उंगलियों जैसी दिख रही थी। मैंने लोकेश के पीछे खड़े किसी व्यक्ति की धुंधली सी छवि देखने की कोशिश की। लेकिन कोहरा इतना घना था कि उंगलियों के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। मैं सोच रहा था कि कोई लोकेश को इस तरह, दोनों हाथों से उसके कंधों पर रखकर क्यों धक्का देगा।
मैंने कहा, 'ऐसा नहीं लगता कि उसे धक्का दिया गया था।'
प्रीति ने मेरी तरफ देखा।
'देखो, अगर किसी को उसे धक्का देना हो, तो उसे दोनों कंधों से पकड़ने की जरूरत नहीं है। इसके अलावा, पीछे से धक्का देने पर वह केवल आगे की ओर गिरेगा।'
'यह तो तर्कसंगत लगता है। कोई लोकेश को इस तरह, उसके कंधों से क्यों धक्का देगा? कोई इस तरह धक्का नहीं देता। ऐसा लगता है जैसे हाथ उसे पकड़े हुए हैं।'
अब सब और भी उत्सुक हो गए थे। कुछ देर तक हम असमंजस में रहे। गरज तो रुक गई थी, लेकिन बारिश शुरू हो गई थी। हमारे पास मुसनकिरी वापस जाने के अलावा कोई चारा नहीं था। हम लोकेश को ढूंढते रहे, उम्मीद थी कि वह कहीं नीचे मिल जाएगा। जब मुझे समझ आया कि क्या हो सकता था, तो मुझे पता था कि हमें पुलिस को सूचना देनी होगी। मैंने पुलिस को फोन करने के लिए अपना फोन निकाला, लेकिन नेटवर्क नहीं था। मैंने सबसे पूछा। किसी के भी फोन में नेटवर्क नहीं था। हमने तय किया कि नीचे पहुँचकर फिर कोशिश करेंगे। गीला रास्ता और नीचे की ओर चलना एक मुश्किल सफर था, और जैसे-जैसे हम नीचे उतरते गए, अंधेरा बढ़ता गया। कई बार घने जंगल से गुजरते समय हमें टॉर्च की रोशनी का इस्तेमाल करना पड़ा। एक तरह से मैं तीन और लोगों की मौजूदगी के लिए शुक्रगुजार था, वरना हालात और भी तनावपूर्ण हो जाते। मैं अपने साथ कुछ सैंडविच लेकर आया था। मैंने सबको दिए, लेकिन इतनी कठिन यात्रा के बावजूद किसी को भूख नहीं थी।

जब हम मुसनकिरी पहुँचे तो घना अंधेरा हो चुका था। अब तक हमारी सारी ऊर्जा खत्म हो चुकी थी, हम भीग चुके थे और थक चुके थे। अगर लोकेश के लापता होने की घटना न हुई होती तो यह एक रोमांचक अनुभव होता। मैंने अपना फोन चेक किया। अब उसमें नेटवर्क था। मैंने नज़दीकी पुलिस स्टेशन का नंबर ढूंढा। सबसे नज़दीकी पुलिस स्टेशन घंसाली था, जो लगभग डेढ़ घंटे की दूरी पर था। सौभाग्य से, पुलिस स्टेशन का नंबर मिल गया।

मैंने पुलिस स्टेशन के नंबर पर कई बार कॉल करने की कोशिश की, लेकिन कॉल नहीं लग पाई। नेटवर्क अभी भी ठीक नहीं था। जब हम मुसानकिरी के छोटे बाज़ार के पास पहुँचे, तो हमारे फ़ोन बजने लगे। अब नेटवर्क अच्छा था।

जब मैं दोबारा पुलिस स्टेशन का नंबर डायल करने की कोशिश कर रहा था, तभी रोहित के फोन पर घंटी बजी। रोहित ने कुछ ही सेकंड में फोन उठा लिया।

“हैलो,” रोहित ने धीमी आवाज़ में कहा। शायद उसमें ज़ोर से बोलने की ऊर्जा नहीं थी। रोहित का चेहरा दर्द से कराह रहा था। मुझे एहसास हुआ, शायद लंबी यात्रा के बाद हम सभी ऐसे ही दिखते हैं।

‘हेलो। क्या?’ रोहित ने फिर से कहा।

दूसरी तरफ से किसी ने एक मिनट तक बात की, इस दौरान रोहित के चेहरे के भाव दर्द से भ्रम में बदल गए। अचानक उसकी आँखें चौड़ी हो गईं, मानो उसे कोई सदमा लगा हो।

‘क्या... क्या?’

इस बार उसने ज़ोर से कहा, 'लोकेश!' हम सब उसकी तरफ देखने लगे। मैंने पुलिस स्टेशन को किया जा रहा अपना कॉल काट दिया।

‘क्या?’ मैंने रोहित से पूछा।

रोहित ने हम सभी की ओर देखा, वह अभी भी फोन के दूसरी तरफ किसी की बात सुन रहा था।

‘भाई तुम कहाँ हो?’ उसने पूछा।

वह कम से कम एक मिनट और बोलता रहा, लेकिन उसके चेहरे पर एक तरह की राहत थी। हालाँकि यह एक मिनट ही था, लेकिन हम सभी के लिए, जो उसके जवाब का

इंतज़ार कर रहे थे, ऐसा लग रहा था जैसे एक घंटा बीत गया हो। ज़रूर कोई न कोई लोकेश के बारे में जानता होगा।
‘हम आ रहे हैं महोदय, बहुत-बहुत धन्यवाद।’ उन्होंने जल्दबाजी में, लेकिन चेहरे पर मुस्कान लिए हुए कहा और फोन काट दिया।
‘क्या आप हमें बता सकते हैं कि क्या हुआ?’ भूपिंदर ने वही कहा जो हम सब कहना चाहते थे।
‘लोकेश ज़िंदा है। मैंने... मैंने अभी उससे बात की,’ रोहित ने कहा। उसकी आँखों में खुशी के आँसू भर आए थे।
'कहाँ है वह?'
‘यहाँ, मुसानकिरी के बहुत पास,’
'वह किस तरह वहां पहुंचा?'
‘मुझे पक्का नहीं पता, लेकिन हमें देर नहीं करनी चाहिए, हमें चलना होगा, हम रास्ते में बात कर लेंगे,’ अचानक रोहित में ऊर्जा भर आई। दरअसल, हम सभी ने ऊर्जा का ऐसा प्रवाह महसूस किया जैसे हम सब फिर से तरोताज़ा हो गए हों।
हमारी टैक्सी हमारा इंतजार कर रही थी। रास्ते में रोहित ने हमें फोन कॉल के बारे में विस्तार से बताया।
‘फोन नानुआ गांव के किसी व्यक्ति का था, जो मुसानकिरी के ठीक बगल में है, यहाँ से लगभग पंद्रह मिनट की दूरी पर। फोन करने वाले व्यक्ति ने लोकेश को अपने घर के बाहर एक कीचड़ भरे रास्ते पर पड़ा हुआ पाया। उसके अनुसार लोकेश बेहोश था, लेकिन उसे चोट नहीं लगी थी। वह लोकेश को अपने घर ले आया।’
मैंने पूछा, 'लोकेश उस गांव के कीचड़ भरे रास्ते से वहां कैसे पहुंचा?'
मुझे नहीं पता कि लोकेश वहां कैसे पहुंचा, लेकिन लोकेश कुछ समय से अपने घर में था, पर कुछ बोल नहीं रहा था। अब जाकर उसने थोड़ी बहुत बात की और हमें बुलाने को कहा। लोकेश ने सिर्फ दो शब्द बोले, 'जल्दी आओ...'
‘मुझे नहीं पता कैसे, लेकिन वह बच गया और ऐसा लगता है कि वह अकेले ही वापस आने में कामयाब रहा और फिर शायद थकान के कारण गिर पड़ा।’ अमन ने कहा।
रोहित ने कहा, 'ऐसा हो सकता है।' मुझे रागाज़ मंदिर में और समय न बिताने का अफसोस हुआ, क्योंकि लोकेश के लिए अकेले वापस लौटना बहुत मुश्किल होता,

लेकिन फिर भी यह जानकर खुशी हुई कि किसी तरह वह जीवित बच गया।
‘खैर, भगवान का शुक्र है, लोकेश बच गया,’ मैंने और प्रीति दोनों ने एक साथ कहा।
कुछ घंटे पहले तक हमें पूरा यकीन था कि लोकेश मर चुका है, और अब रोहित ने उससे बात की थी, और हम उससे मिलने जा रहे थे।
हम सबके मन में सवाल थे। हमें ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने बिना टिकट के लॉटरी जीत ली हो और इनाम मिलने तक हमें शक होता रहे। हालांकि रोहित ने कहा था कि उसने लोकेश से बात की है, फिर भी एक ख्याल, हालांकि बहुत कम संभावना वाला, मुझे परेशान कर रहा था कि कहीं यह हमारे साथ कोई घिनौना मज़ाक तो नहीं है।
‘सैंडविच?’ मैंने डिब्बे से एक सैंडविच निकाला और सबको फिर से ठंडे सैंडविच दिए। इस बार सबने एक-एक सैंडविच ले लिया। हम भूखे थे, और माहौल में उम्मीद की किरण जगी थी।
जब हम नानुआ पहुंचे तो बारिश शुरू हो चुकी थी। रोहित ने रास्ता पूछने के लिए दोबारा उस नंबर पर कॉल किया।
रोहित ने कहा, 'वह कह रहा है कि हम नानुआ में किसी से भी श्री पुष्कर सिंह के घर के बारे में पूछ सकते हैं।'
अमन ने कहा, 'लगता है यहाँ कोई जाना-माना व्यक्ति है।'
थोड़ा और भटकने और पूछताछ करने के बाद, हम घर पहुँचे। दूर से देखने पर घर छोटा लग रहा था और खिड़की से पीली रोशनी आ रही थी, लेकिन पहुँचने पर पता चला कि यह दो मंजिला स्वतंत्र मकान था। पुष्कर सिंह हाल ही में विद्युत विभाग की नौकरी से सेवानिवृत्त हुए थे।
लोकेश को देखते ही हमारे मन से सारे छोटे-मोटे फालतू विचार गायब हो गए। हम दौड़कर उसके पास गए। वह एक दीवान पर लेटा हुआ था, जो कमरे के ही एक हिस्से जैसा लग रहा था और जिसके तीन तरफ कांच की खिड़कियां थीं।
रोहित ने उसे गले लगा लिया। मुझे पता था कि रोहित को अपराधबोध हो रहा था क्योंकि वही लोकेश की तस्वीरें खींच रहा था।
‘भाई, तुम ठीक हो?’ रोहित ने पूछा।
लोकेश ने सिर हिलाया। फिलहाल रोहित के लिए इतना ही काफी था। भूपिंदर ने लोकेश की पीठ थपथपाई और सहलाया। रोहित, भूपिंदर और अमन लोकेश के साथ

दीवान पर बैठ गए।
घर के मालिक पुष्कर सिंह ने दोस्तों को दोबारा मिलते देख मुस्कुराते हुए कहा, 'वह ठीक है। आप आराम से रहिए।'
'सर, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद,' मैंने पुष्कर सिंह से कहा।
'अरे, आप लोग परेशान न हों, आराम से बैठिए, मैं एक मिनट में वापस आता हूँ।' पुष्कर सिंह ने कहा और कमरे से बाहर चले गए।
कमरा आरामदायक रूप से गर्म था। यह सुरुचिपूर्ण ढंग से सजाया गया एक बहुउद्देशीय कमरा था। तीन तरफ खिड़कियों वाले दीवान के अलावा, इसमें बीच में एक सोफा सेट, एक दीवार पर किताबों का बड़ा रैक, एक आरामदायक पंखदार कुर्सी और उसके बगल में एक छोटी गोल मेज थी। मेज पर एक किताब पड़ी थी, जिसका बुकमार्क लगभग अंत तक खुला हुआ था।
प्रीति और मैं सोफे पर बैठ गए। कुछ ही मिनटों में पुष्कर सिंह कई गर्म चाय के प्याले और बिस्कुट लेकर आए। प्रीति खड़ी हुई और उनसे ट्रे लेकर सबको चाय के प्याले दे दिए। पुष्कर सिंह हमारे सामने सोफे पर बैठ गए। उन्होंने लड़कों की तरफ देखा और मुस्कुराए। उनके चेहरों पर गहरी राहत साफ झलक रही थी। सिर्फ लोकेश के चेहरे पर कोई भाव नहीं था।
'सर, आपने ये सब क्यों किया? आज तो आप हमारे लिए पहले ही बहुत कुछ कर चुके हैं,' प्रीति ने कहा। मैंने सहमति में सिर हिलाया, क्योंकि मैं जानती थी कि लोकेश को यहाँ लाना और उसकी देखभाल करना उनके लिए कितना मुश्किल रहा होगा। उनके कमरे से साफ था कि वे ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें आरामदायक कुर्सी पर बैठकर गर्म चाय की चुस्की लेते हुए किताबें पढ़ना पसंद होगा। हमने उन्हें ज़रूर परेशान किया होगा।
मैंने कहा, 'सर, आपको परेशान करने के लिए हम तहे दिल से माफी मांगते हैं।'
'अरे नहीं, बिलकुल नहीं। मैं कुछ नहीं कर रहा हूँ। मैं एक सेवानिवृत्त व्यक्ति हूँ, मुझे आप जैसे युवाओं की मेजबानी करने का मौका अक्सर नहीं मिलता। यह मेरे लिए सचमुच खुशी की बात है।'
मैंने कहा, 'मुझे यकीन है, अगर हम जबरदस्ती अंदर न आते, तो आप आराम कर रहे होते। शायद कुछ किताबें पढ़ रहे होते।'

‘हा-हा’ पुष्कर सिंह की हंसी से कमरा गूंज उठा। उन्होंने आगे कहा, ‘आपका अवलोकन अच्छा है। मुझे एकांत और किताबें पढ़ना अच्छा लगता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मुझे संगति पसंद नहीं है। वास्तव में, मुझे लगता है कि हर किसी के भीतर एक कहानी छिपी होती है, और वह कहानी आमतौर पर अधिक रोचक होती है।’
‘सर, क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकती हूँ?’ प्रीति ने कहा।
उसने सहमति में सिर हिलाया।
‘आपके परिवार का क्या? क्या आप अकेले रहते हैं?’ प्रीति ने पूछा। प्रीति को वास्तव में उसकी चिंता थी।
‘खैर, मैं कभी अकेला नहीं होता, ये पहाड़ और ये किताबें ही मेरा परिवार हैं।’
वह एक हंसमुख व्यक्ति प्रतीत हो रहा था। हम दोनों ने असमंजस में एक-दूसरे को देखा।
‘क्या आपने कभी साठ साल के कुंवारे आदमी को नहीं देखा?’ उसने हंसते हुए कहा।
'ओह, मैं समझा,'
कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा गया, फिर मेरे मन में और भी प्रश्न उठने लगे।
‘सर, आपको लोकेश कब मिला?’
शाम के करीब चार बजे थे। वह वहीं पड़ा हुआ था, उसी सड़क पर जिससे आप अभी-अभी यहाँ पहुँचे थे। सौभाग्य से, मैं भी उसी समय वहाँ टहलने निकला था। पहले तो मैंने उसे कोई शराबी पर्यटक समझ लिया और उसे घर ले आया क्योंकि उसने ठीक से कपड़े नहीं पहने थे, ठंड से उसकी जान जा सकती थी।
मैंने प्रीति की तरफ देखा। वह भी यही सोच रही थी, यह असंभव था। करीब चार या पंद्रह बजे हम रागज़ मंदिर पहुंचे और लोकेश उससे कुछ ही मिनट पहले गिर पड़ा था।
‘सर, क्या आपको यकीन है कि यह लगभग चार बजे थे? मेरा मतलब है, शायद यह छह या सात बजे थे?’
बूढ़े व्यक्ति ने मुस्कुरा दिया।
‘मैं यहाँ पाँच दशकों से अधिक समय से रह रहा हूँ, और यहाँ चार और सात में बहुत अंतर है। मैं एक को दूसरे से भ्रमित नहीं कर सकता। यह चार था... पाँच-दस मिनट आगे-पीछे,’ वह हँसा... और उसके हाथ में पकड़े कप से थोड़ी सी चाय गिर गई।

लोकेश ने कुछ नहीं बोला था, और यह बात मुझे चिंतित कर रही थी।
‘सर, हमें आप पर कोई शक नहीं है, लेकिन बात ये है कि...’ प्रीति थोड़ी देर रुकी, शायद सोच रही थी कि उसे आगे बोलना चाहिए या नहीं। उसने आगे कहा, ‘पुष्कर जी, लोकेश आज शाम करीब चार बजे खैत पर्वत पर स्थित रागाज़ मंदिर में हमारे साथ था।’ प्रीति ने कहा।
अब चौंकने की बारी उनकी थी। उन्होंने प्रीति और मेरी तरफ देखा, मानो उन्हें शब्द समझ ही न आए हों।
‘यह संभव नहीं है। रागज़ मंदिर से यहाँ आने में कम से कम डेढ़ घंटा लगता है। वह चार बजे यहाँ कैसे पहुँच सकता है?’
‘सर, हम यही तो कह रहे हैं। हम खैत ट्रेक पर गए थे, और लौटते समय रागाज़ मंदिर में लोकेश...’ मैं सोचने लगा कि क्या कहूँ, मुझे खुद भी नहीं पता था कि उसके साथ क्या हुआ।
मैंने कहा, 'वह जैसे फिसलकर गायब हो गया, उस समय हम उसे कहीं भी नहीं ढूंढ पाए।' मैं सोच रही थी कि क्या मुझे लोकेश के कंधे पर रखी उंगलियों के बारे में बात करनी चाहिए।
‘सर, करीब चार बजे रागाज़ मंदिर के पास लोकेश गायब हो गया था। मतलब, हमें लगा कि वह वहीं से फिसल गया होगा।’
बोलने से पहले पुष्कर सिंह कुछ सोच में डूबे हुए प्रतीत हुए।
'मुझे खेद है महोदय, लेकिन मैं आपकी बात पर विश्वास नहीं कर सकता... शायद किसी ने आपको धोखा दिया हो और आपको पास के ही किसी गलत ट्रेक पर ले गया हो, जबकि आप उसे खैत समझ रहे थे।'
‘रोहित, क्या तुम हमें अपने फोन में मौजूद तस्वीरें दिखा सकते हो?’ रोहित आगे आया और अपना फोन प्रीति को दे दिया।
प्रीति ने फोन की पिक्चर गैलरी में स्क्रॉल किया और खैत मंदिर की तस्वीरें खोलीं, और फोन पुष्कर सिंह को सौंप दिया।
पुष्कर सिंह ने तस्वीरों को ध्यान से देखा। कुछ तस्वीरों को देखकर उनकी आंखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं।
उन्होंने पूछा, ‘क्या ये तस्वीरें आज ही ली गई हैं?’

'हां, मैंने इन्हें आज ही क्लिक किया था, अगर आप चाहें तो फोटो के विवरण में टाइम स्टैम्प देख सकते हैं,' रोहित ने कहा।
पुष्कर सिंह ने एक बार फिर ध्यान से तस्वीरों को देखा। बीच-बीच में हमारी ओर देखते हुए, उन्हें खुद पर विश्वास नहीं हो रहा था। उन्होंने चाय का प्याला वापस मेज पर रख दिया।
फिर रोहित ने उससे फोन ले लिया और उस फोटो को स्क्रॉल किया, जो लोकेश के गिरने से ठीक पहले ली गई थी।
'सर, यह तस्वीर घटना घटने से ठीक पहले खींची गई थी।'
पुष्कर सिंह ने फोन दोबारा अपने हाथों में लिया और तस्वीर को ध्यान से देखा। उन्होंने ज़ूम करके तस्वीर को, खासकर कंधे पर बनी उंगलियों के निशान को, देखा और फोन रोहित को वापस दे दिया। रोहित कुछ पल के लिए स्तब्ध सा रहा, फिर उसने बोलना शुरू किया।
'मुझे यकीन है कि जब मैंने उसे पाया तब चार या पौने चार बज रहे थे, मुझे नहीं पता यह कैसे संभव है। वह यहाँ कैसे पहुँचा,' पुष्कर सिंह ने लोकेश पर निगाहें गड़ाए हुए कहा, जो चुपचाप दीवान पर बैठा था।
मैं समझ सकता था कि वह कैसा महसूस कर रहा था क्योंकि हम दोनों एक ही दौर से गुज़र रहे थे। लोकेश ऐसी जगह गिरा जहाँ उसे नहीं गिरना चाहिए था। फिर उसके कंधों पर वे अजीब सी उंगलियाँ... और फिर उसी समय पुष्कर सिंह के घर के पास उसका हाथ नीचे की ओर झुकना, जब वह रागाज़ मंदिर में गिरा था, जहाँ कम से कम दो घंटे लगने चाहिए थे।
'इसका केवल एक ही अर्थ हो सकता है,' पुष्कर सिंह ने कहा।
हम उसकी अगली बात सुनने के लिए उत्सुकता से उसकी ओर देख रहे थे, लेकिन वह रुक गया, और उसने कुछ न कहने का फैसला किया।
'महोदय, हमें बताइए, इसका क्या मतलब हो सकता है?' भूपिंदर ने पूछा। अमन अभी भी लोकेश के साथ बैठा था, लेकिन ध्यान से बातचीत सुन रहा था।
पुष्कर सिंह ने हम सबकी ओर देखा। वह जानता था कि हम जवाब जानने के लिए बेताब थे। उसने आह भरी और आगे बढ़ने का फैसला किया।

‘इसका मतलब सिर्फ इतना है कि तुम्हारा दोस्त लोकेश गिरा नहीं, वो हो सकता है...’
अचानक बिजली चली गई, जिससे पुष्कर सिंह का वाक्य अधूरा रह गया। कमरा पूरी तरह अंधेरा हो गया और सन्नाटा छा गया। रूम हीटर या रेफ्रिजरेटर जैसे बिजली के उपकरणों की हल्की सी आवाज भी बंद हो गई।
पुष्कर सिंह ने कहा, 'आप यहीं रुकिए, मैं मोमबत्ती लाता हूँ।' कुछ ही क्षणों में, माचिस की तीली की रोशनी में उनका चेहरा किताबों की अलमारी के पास दिखाई दिया। उन्होंने मोमबत्ती जलाई और उसे सोफे के पास वाली मेज पर रख दिया।
‘मैंने जेनरेटर या बैटरी बैकअप नहीं लगवाया है। मुझे ये बिजली कटौती अच्छी लग रही है। इससे मुझे मोमबत्ती की रोशनी में बैठने का मौका मिल रहा है। मोमबत्ती की रोशनी सबसे रोमांटिक माहौल बनाती है, है ना?... बिजली विभाग में काम कर चुके किसी व्यक्ति के लिए ये बात थोड़ी अजीब है... हा हा’ पुष्कर सिंह अपनी ही बात पर फिर हँस पड़े। मुझे हैरानी हुई कि एक साठ साल का कुंवारा आदमी रोमांटिक माहौल की बात कैसे कर सकता है। ये आदमी तो आम लोगों में से एक ही होगा।
कुछ देर बाद हमारी आंखें मोमबत्ती की रोशनी से जगमगाते कमरे की आदी हो गईं।
‘सर, आप कह रहे थे कि लोकेश नहीं गिरा। हमें भी ऐसा ही लगा कि वह नहीं गिरा होगा, लेकिन और क्या हो सकता था?’ प्रीति बोली। यह बात और भी पेचीदा थी।
उसे देखो, उस चट्टान से गिरने के बाद कोई भी उस हालत में नहीं रह सकता। शरीर की हालत को छोड़ो, अगर कोई वहां से गिरा होता तो उसका शव बरामद करना नामुमकिन होता।
यह सच था, लोकेश को कुछ चोटें आई थीं, लेकिन उस तरह से गिरने पर उसकी हड्डियां जरूर टूट जातीं।
‘सर, फिर बात क्या है? इनमें से कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है।’ प्रीति बोली।
पुष्कर सिंह प्रीति को देख रहा था, लेकिन उसका ध्यान कहीं और था। कुछ सेकंड तक वह चुप रहा, अपने शब्दों पर विचार करता रहा।
पुष्कर सिंह ने कहा, 'अगर आपके पास समय हो तो मैं आपको एक कहानी सुनाऊंगा, जो मैंने कई साल पहले सुनी थी।'
हम थके हुए थे, लेकिन किसी भी कीमत पर इसे छोड़ना नहीं चाहते थे। साथ ही, एक मोमबत्ती की रोशनी से जगमगाता आरामदायक कमरा और शांत पहाड़ियाँ कहानी

सुनने के लिए बेहतरीन माहौल बना रही थीं। अंधेरा हमें मन में बसी चीज़ों को देखने का मौका देता है। बच्चों को सोने से पहले कहानी सुनना अच्छा लगता है क्योंकि उस समय वे कहानी को अपने मन में देखते और महसूस करते हैं। हमें हमेशा से कहानियों से लगाव रहा है। प्रीति और मैंने एक साथ सहमति में सिर हिलाया।
पुष्कर सिंह ने बात शुरू करते हुए कहा, 'लगभग चालीस साल पहले, मेरे एक दोस्त ने मुझे इसके बारे में बताया था। मेरा दोस्त चंदन हमारे गांव का एक नौजवान लड़का था, जो एक बार अपने घर के पास उसी हालत में मिला था, जैसे आज मुझे लोकेश मिला। उस समय चंदन की उम्र बीस या इक्कीस साल थी।'
पुष्कर सिंह के शब्दों के अलावा, वहाँ पूरी तरह सन्नाटा था। हम चाय के बारे में भूल ही गए थे, जो अब तक ठंडी हो चुकी थी।
“वह एक युवा पहाड़ी लड़का था और उसे ट्रेकिंग का बहुत शौक था। एक बार वह अकेले ही खैत मंदिर तक पैदल यात्रा पर निकल पड़ा। वह ऐसा ही निडर था। उसे इस बात की परवाह नहीं थी कि कोई और तैयार है या नहीं, वह बस अपने आप चल पड़ा। वह ट्रेक आजकल जैसा नहीं था, वहाँ सीमेंट की सीढ़ियाँ भी नहीं थीं। चोटी पर स्थित मंदिर छोटा था। रागज़ मंदिर वहाँ नहीं था। उस समय भी, खैत के लिए हमारे बड़ों द्वारा नियम बनाए गए थे। जैसे संगीत मना था, तेज़ आवाज़ें मना थीं और चमकीले रंग पहनना मना था, लेकिन चंदन को उनकी परवाह नहीं थी। उसने चमकीली पीली कमीज़ पहनी हुई थी। इसलिए नहीं कि उसे वह कमीज़ पसंद थी, बल्कि अवज्ञा दिखाने के लिए।” वह हँस पड़ा।
मैंने आश्चर्य से पुष्कर सिंह की ओर देखा। मुझे कलर कोड के बारे में कुछ भी पता नहीं था।
'हां, चमकीले लाल या पीले रंग की अनुमति नहीं थी। खैर, चंदन ने अकेले ही ट्रेकिंग की और लगभग तीन घंटे में चोटी पर पहुंच गया।'
मैंने कहा, 'वाह, शिखर तक पहुंचने में हमें लगभग पांच घंटे लग गए।'
“यह मत भूलिए कि वह एक पहाड़ी व्यक्ति थे और उस समय पूरी तरह स्वस्थ थे। वह रास्ता अक्सर सुनसान रहता था। जब वह लौट रहे थे, तो कुछ अजीब हुआ। उन्होंने कुछ आवाजें सुनीं, अजीब महिलाओं की आवाजें। उन्हें यकीन था कि वहां कोई नहीं था। उन्हें शक हुआ कि उनका दिमाग उनके साथ चालें चल रहा है। उन्हें पता था कि

ऑक्सीजन की कमी से कभी-कभी लोगों को मतिभ्रम हो जाता है। हालांकि, समय बिताने के लिए उन्होंने धीरे-धीरे सीटी बजाना शुरू कर दिया। वह इसमें माहिर थे। जब वह उस जगह के पास पहुंचे जहां अब रागाज़ मंदिर स्थित है, तो उन्हें लगा जैसे अचानक उन्हें जमीन से उठा लिया गया हो। किसी चीज ने उन्हें उठाया और उनके कंधों से पकड़ लिया।" पुष्कर सिंह एक पल के लिए रुक गए।
हम सबने एक-दूसरे की तरफ देखा। लोकेश, जो पहले उदासीन था, अब सीधा बैठा कहानी सुन रहा था।
पुष्कर सिंह आगे बताते हैं, 'चंदन देख तो नहीं पा रहा था कि वह क्या है, पर उसके मजबूत हाथों का स्पर्श महसूस कर सकता था, वे उसके कंधों को चोट पहुँचा रहे थे। उस घटना से पहले, वह हमारे ग्राम देवता पर विश्वास भी नहीं करता था। लेकिन उस क्षण उसे सचमुच उनकी याद आ गई, और बेहोश होने से पहले उसने देवता से अपने घर की सुरक्षित वापसी के लिए प्रार्थना की। जब उसने आँखें खोलीं, तो वह गाँव में अपने घर पर था। हमारे गाँव के किसी व्यक्ति ने उसे खैत की सीढ़ियों से उठाया था। वह अपने आस-पास के लोगों के लिए कुछ घंटों तक बेहोश रहा, लेकिन उस दौरान उसके साथ बहुत कुछ घटित हुआ था। यह एक तरह का स्पष्ट सपना था, और यह घंटों का नहीं, बल्कि कई दिनों जैसा लगा।' पुष्कर सिंह और लोकेश ने एक-दूसरे की ओर देखा। लोकेश कहानी को ध्यान से सुन रहा था।
चंदन को यकीन नहीं था कि यह सपना था या नहीं। इस अनुभव में उसने खुद को एक अलग ही दुनिया में पाया, जहाँ हरे-भरे पहाड़ थे, हवा में मनमोहक खुशबू थी और खूबसूरत फूल झूम रहे थे। उसे ऐसा लगा जैसे वह मरकर स्वर्ग में पहुँच गया हो। उस जगह की सुंदरता उसकी कल्पना से परे थी। मौसम सुहावना था, धूप और छाँव का संतुलन बिल्कुल सही था। सब कुछ एकदम सही था।
तभी एक लड़की उसके पास आई। चंदन ने मुझे बताया था, मुझे लगता है कि उसे सिर्फ़ लड़की कहना सही नहीं होगा। वह अब तक देखी गई सबसे खूबसूरत लड़की थी। वह जवान लग रही थी, शायद सोलह या सत्रह साल की। उसके काले बाल लंबे थे और हवा में लहरा रहे थे। उसकी आँखें बड़ी और गहरी थीं। उसके होठों पर एक शरारती मुस्कान थी। उसकी पोशाक आजकल की लड़कियों की पोशाकों जैसी थी, लेकिन वह ज़्यादा रंगीन और चमकदार थी, जिसमें एक लंबी, पूरी लंबाई की स्कर्ट थी जो चमकीले

रत्नों और सोने की चीज़ों से सजी थी। आप जानते हैं, उसने सबसे चमकदार और खूबसूरत गहने पहने थे। इस दुनिया में कोई भी उसके आकर्षण से बच नहीं सकता था। चंदन ने सोचा कि वह एक अप्सरा है। ध्यान रहे कि उस समय वह एक जवान और अविवाहित लड़का था, और वह एक बेहद खूबसूरत युवती थी।' पुष्कर मुस्कुराया। इस तरह बात करते हुए वह बचकाना और प्यारा लग रहा था।

'मेरा नाम आभा है, हमारी दुनिया में आपका स्वागत है,' उसने चंदन से कहा और उसे अपने पीछे आने का इशारा किया। वह उससे दूर चलने लगी। उसकी सुंदरता से मोहित चंदन बिना किसी हिचकिचाहट के उसके पीछे-पीछे एक कुत्ते की तरह चल पड़ा। वह एक बड़े द्वार की ओर बढ़ी, जो एक बगीचे में खुलता था। चारों ओर एक मनमोहक सुगंध फैली हुई थी। जैसे ही वे बगीचे में दाखिल हुए, चंदन को सामने महल के अंदर से मधुर संगीत सुनाई दिया। यह कई वाद्ययंत्रों का संगीत था, जिसमें तबला (भारतीय ढोल) की थाप, घुंघरू की झंकार, बांसुरी की धुनें और बहुत ही मधुर स्वर मिले हुए थे, शायद लड़कियों का कोई समूह कुछ गा रहा था। बाद में चंदन ने कई बार उस गीत को याद करने की कोशिश की, लेकिन उसे गीत के बोल ठीक से याद नहीं आए। उसे बस इतना याद था कि वह संगीत उसके कानों को बहुत ही मधुर और कोमल लगा, और उसने ऐसा संगीत कहीं और नहीं सुना था।

आभा बार-बार पीछे मुड़कर उसे देखकर मुस्कुरा रही थी। चंदन के चेहरे पर भी बड़ी सी मुस्कान थी। उसे ऐसा लग रहा था मानो वे दोनों कुछ दिलचस्प राज़ साझा कर रहे हों। उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे वह उसे जानता हो, और वह उसके पीछे-पीछे चलता रहा। एक बड़ी सीढ़ी चढ़ने और एक लंबी गैलरी पार करने के बाद, वे एक बड़े हॉल में पहुँचे।

'चंदन जी, कृपया उस सीट पर बैठ जाइए,' लड़की ने गद्देदार गद्दों और नरम तकियों वाली जगह की ओर इशारा करते हुए कहा। वह बैठ गए और उनके सामने एक छोटी सी मेज रख दी गई। थोड़ी देर में एक और सुंदर लड़की आई और उन्हें खाना परोसा। खाना गरम था और उसकी खुशबू से उन्हें तुरंत भूख लग गई। खाना खाने के बाद उन्हें दूसरे हॉल में ले जाया गया, जहाँ संगीतकार मौजूद थे। उन्होंने उस कमरे में एक बहुत ही अजीब प्राणी देखा। उसका शरीर मनुष्य का था, लेकिन सिर घोड़े का था, और वह एक तार वाला वाद्य यंत्र पकड़े हुए था।

फिर आभा ने संगीतकारों के समूह से कहा, 'प्रिय सभी, यह हमारा नया सदस्य चंदन है, अब यह हमारे साथ रहेगा, कृपया इसका स्वागत करें।' सभी ने चंदन को देखकर सिर हिलाया और मुस्कुराए। घोड़े के सिर वाले व्यक्ति को छोड़कर बाकी सभी बहुत खुश लग रहे थे। चंदन को पता नहीं था कि घोड़े के चेहरे वाला व्यक्ति खुश था या नहीं। फिर संगीतकारों ने अपने वाद्य यंत्र बजाए और अप्सराओं ने एक सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया। आभा उनके साथ बैठी रहीं और वे नृत्य का आनंद लेते रहे। आभा ने चंदन का हाथ थाम लिया और वे एक-दूसरे को देखते हुए, प्रेम में डूबे जोड़े की तरह मुस्कुराते रहे। चंदन का विशेष अतिथि की तरह स्वागत किया गया। बहुत जल्द, उसे आभा से प्रेम हो गया। वह अपने गाँव, अपने माता-पिता को पूरी तरह भूल गया था और उस समय उसके लिए केवल वही दुनिया वास्तविक थी।

दिन ढलकर रात हो गई थी, लेकिन पूरी तरह अंधेरा नहीं हुआ था। दिन ढलने पर आभा उसे एक बड़े कमरे में ले गई। कमरे में एक बड़ा चारपाई वाला पलंग था, साथ ही एक बड़ी बालकनी भी थी जहाँ से बगीचा और जिस द्वार से वे अंदर आए थे, वह दिखाई देता था।

पलंग के चारों ओर लगे हल्के पर्दे कमरे में बह रही कोमल, सुगंधित हवा में लहरा रहे थे। बालकनी से चांदनी अंदर आ रही थी। चंदन पलंग पर लेटा हुआ सोच रहा था कि क्या हुआ था, वह कहाँ था। भले ही यह एक सपना था, वह नहीं चाहता था कि यह सपना खत्म हो। उसने अभी तक किसी से बात नहीं की थी। तभी आभा वापस लौटी। इस बार उसकी आँखों में शर्म और शरारत झलक रही थी, वह और भी खूबसूरत लग रही थी। वह उसके पास आई और पलंग पर बैठ गई, और उसे चूमा। जैसा कि उम्मीद थी, चंदन को आभा से प्यार हो गया था।

अगले दिन की शुरुआत आभा द्वारा चंदन को बगीचा दिखाने और एक बड़े तालाब को देखने से हुई, जिसमें पानी एक धारा के रूप में बह रहा था। चंदन ठंडे और ताज़गी भरे पानी में कूद पड़ा। उसके लिए सब कुछ बिल्कुल वास्तविक था। फिर आभा भी तालाब में उसके साथ शामिल हो गई। एक तरह से, चंदन एक ऐसा जीवन जी रहा था जिसकी कल्पना उसकी उम्र का कोई व्यक्ति सपने में भी नहीं कर सकता था। यह सिलसिला कम से कम छह दिनों तक चला। याद रखिए, चंदन केवल कुछ घंटों के लिए बेहोश

हुआ था, लेकिन उस सपने में यह लगभग एक सप्ताह जैसा था। चंदन को उस सपने के जीवन में ढलना आसान हो गया था।
सातवें दिन जब चंदन और आभा बगीचे में टहल रहे थे, तभी उन्हें एक आवाज़ सुनाई दी। कोई चंदन का नाम पुकार रहा था। पहले तो आवाज़ बादलों से आती हुई लग रही थी, लेकिन बाद में उन्हें एहसास हुआ कि यह महल के विशाल द्वार से आ रही है। जैसे ही वह द्वार की ओर बढ़ने लगे, आभा उनसे आगे दौड़कर उन्हें रोक लिया।
उसने कहा, 'मत जाओ।'
उन्होंने कहा, 'कोई मेरा नाम पुकार रहा है।'
‘उसकी बात मत सुनो। उसे अनदेखा करो और मेरे साथ अंदर चलो।’ उसने कहा और वह महल की ओर चलने लगा। कुछ क्षण बाद आवाज़ फिर आई, इस बार और भी तेज़। यह एक ज़ोरदार बिजली की गड़गड़ाहट जैसी थी जिसने पूरी इमारत को हिला दिया। महल के अंदर मौजूद संगीतकारों समेत सब कुछ थम गया। इसके बाद, उसने एक ज़ोरदार धमाका सुना और द्वार खुल गया।
उसने देखा कि लगभग दस फुट लंबा एक विशालकाय व्यक्ति द्वार से बाहर निकला। उस व्यक्ति ने पहाड़ी शैली की पगड़ी पहन रखी थी और उसके लंबे बाल कंधों पर बिखरे हुए थे। उसने पहाड़ी शैली का कुर्ता पहन रखा था। उसकी लंबी मूंछें थीं। तेज आवाज सुनकर सभी अप्सराएं और संगीतकार बगीचे में आ गईं। जब उन्होंने उस विशालकाय व्यक्ति को देखा, तो सभी ने हाथ जोड़कर उसे प्रणाम किया।
वह विशालकाय व्यक्ति चंदन के पास आया। पहले तो चंदन भयभीत हो गया। फिर उसने देखा कि उस व्यक्ति के चेहरे पर एक अजीब सी चमक थी और एक आश्वस्त करने वाली मुस्कान थी। चंदन ने उसे प्रणाम किया। ‘चंदन, मैं नागराज हूं, तुम्हारे गांव का देवता, मैं तुम्हें यहां से ले जाने आया हूं, तुम्हारे माता-पिता तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं।’
इस दुनिया में आने के बाद चंदन ने पहली बार अपने माता-पिता के बारे में सोचा। यह उसके लिए एक गहरा आघात था। उसने उनके बारे में बिल्कुल नहीं सोचा था। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। वह पश्चाताप से भर गया था। उसके माता-पिता बूढ़े हो रहे थे और पूरी तरह से उस पर निर्भर थे, और यहाँ वह उन्हें भूल गया था। वह उस आदमी के

साथ चलने लगा। उसे ऐसा लग रहा था जैसे कोई छोटा बच्चा किसी वयस्क के साथ चल रहा हो।
'चंदन,' आभा ने कहा। चंदन ने पीछे मुड़कर उसे देखा। 'हम फिर मिलेंगे। मैं तुम्हारा इंतजार करूंगी,' उसने कहा।
'आभा, मैं वादा करता हूँ कि मैं वापस आऊँगा। मैं परलोक में अपने कर्तव्य पूरे करूँगा और फिर हमेशा के लिए तुम्हारा हो जाऊँगा।' चंदन ने कहा और द्वार से बाहर निकल गया। जैसे ही वह बाहर निकला, वह फिर से बेहोश हो गया और जब उसने आँखें खोलीं तो वह अपने घर में वापस आ गया था।
शुरू में चंदन ने यह कहानी सबको सुनाई, लोग दिलचस्पी से सुनते और उससे और ज़्यादा जानकारी पूछते रहे। लेकिन कुछ समय बाद उसे एहसास हुआ कि कोई उस पर विश्वास नहीं कर रहा है। कुछ लोग तो उसे पागल तक समझने लगे, तब उसने यह कहानी सुनाना बंद कर दिया और अपने माता-पिता पर ध्यान केंद्रित किया।
'इस कहानी ने मुझे बहुत आकर्षित किया। मैंने इसके बारे में थोड़ा अध्ययन किया। मुझे आश्चर्य हुआ कि चंदन ने जिन प्राणियों का वर्णन किया था, वे प्राचीन ग्रंथों में वर्णित गंधर्व जैसे दिव्य प्राणियों के समान थे। मुझे लगता है कि वे एक अलग आयाम में विद्यमान हैं। लेकिन ये तो बस कल्पना पर आधारित सिद्धांत हैं। क्या आप लोगों ने सिद्धाश्रम की कथा सुनी है, जो एक रहस्यमयी भूमि है, जहाँ कुछ लोग गलती से पहुँच गए थे, लेकिन जब दूसरों ने उसका भौतिक स्थान खोजने का प्रयास किया, तो कोई भी उसे खोजने में सफल नहीं हुआ। इसका उल्लेख सबसे पुराने वेद, ऋग्वेद में भी मिलता है। वहाँ जाने वालों ने महर्षि वशिष्ठ, कृपाचार्य और यहाँ तक कि महाभारत के भीष्म जैसे दिव्य संतों के दर्शन करने का दावा किया था।'
'मैं अब भी सोच रहा हूँ कि चंदन सचमुच एक अलग ही दुनिया में था या यह सिर्फ उसके दिमाग का वहम था। हो सकता है कि वह कुछ समय के लिए पागल हो गया हो, लेकिन यह उसके लिए एक बहुत ही जीवंत अनुभव था।'
जब पुष्कर सिंह ने अपनी कहानी समाप्त की, तो कमरे में सन्नाटा छा गया। मेरे विचार से यह कहानी स्पष्ट रूप से एक सपना, एक भ्रम थी, संभवतः इसलिए क्योंकि पुष्कर सिंह और उनके मित्र चंदन ने ऐसी कहानियाँ सुनी होंगी।

'वह पागल नहीं था, महोदय,' हम सब आवाज की ओर मुड़े; यह लोकेश था, जो अब अपने पैरों पर खड़ा था। यहाँ आने के बाद यह पहली बार था जब उसने बात की थी। वह खड़ा हुआ और पुष्कर सिंह की ओर बढ़ा।
'मैं उस दुनिया में जा चुका हूँ जिसका आपने अभी वर्णन किया। मैं वहाँ था। अप्सराएँ, महल... संगीतकार। मैंने कुछ मानव-समान प्राणी देखे थे जिनके पंख थे... बहुत बड़े पंख।' लोकेश की आवाज़ काँप रही थी।
'हां, पंखों वाले आदमी थे... चंदन ने उनके बारे में बताया था,' पुष्कर सिंह ने कहा।
'बस फर्क इतना था कि मुझे किसी देवता ने नहीं बुलाया था। बल्कि एक भयानक राक्षस जैसा प्राणी था जिसका शरीर बड़ा, तोंद निकली हुई थी और हाथ में एक विशाल तलवार थी। उसके दांत भी भयानक थे। सब लोग उससे भाग गए। उसने मेरा नाम पुकारा, फिर मेरे लिए द्वार खोला और मुझे उठाकर बाहर फेंक दिया।'
'खैत पर्वत पर तस्वीरें खिंचवाते समय मुझे भी ऐसा ही महसूस हुआ था। जैसे मैं ज़मीन से ऊपर उठ गया था... बेहोश हो गया था, और फिर उस खूबसूरत लड़की के साथ वो नई खूबसूरत दुनिया मेरे सामने आ गई...' लोकेश ने बोलना बंद कर दिया।
पुष्कर सिंह ने कहा, 'आपने पहले कुछ क्यों नहीं कहा?'
लोकेश ने कहा, 'मैं इस बात को लेकर हैरान और असमंजस में था कि क्या सच है और क्या नहीं। फिर मैंने आपकी कहानी सुनी और मुझे सब समझ आ गया।'
मैंने कहा, 'यह अविश्वसनीय है, चंदन जैसा ही अनुभव, इसका निश्चित रूप से मतलब है कि खैत पर हमारी इंद्रियों से परे कुछ है।'
'जो भी हुआ हो, अहम बात यह है कि लोकेश ठीक है और हमारे साथ वापस आ गया है,' अमन ने लोकेश की पीठ थपथपाते हुए कहा। लोकेश कंधे झुकाए और उदास चेहरे के साथ खड़ा रहा।
'क्या हुआ, और तुम इतने उदास क्यों हो?' रोहित ने लोकेश से पूछा।
"खैर, मुझे यकीन नहीं है कि वह दुनिया असली थी या नहीं, लेकिन जो मैंने महसूस किया वह असली था। मुझे उसका चेहरा याद है। सुकेशी, मुझे उसकी बहुत याद आ रही है। उम्मीद है मैं उसके गम से उबर पाऊंगा," लोकेश ने उदास मुस्कान के साथ कहा।

‘सुकेशी। अच्छा नाम है, लेकिन इस दुनिया में लड़कियों पर ध्यान देना बेहतर है,’ अमन ने कहा।
‘और एक बात तो पक्की है, अब बहुत हो गया ये ट्रेकिंग। अगली छुट्टियों में हम समुद्र तटों पर ही जाएंगे,’ अमन ने कहा। सब लोग खिलखिलाकर हंस पड़े, यहां तक कि लोकेश भी मुस्कुरा उठा।
‘हाँ, यह जादुई दुनिया या यह सपना जो भी हो, अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता,’ भूपिंदर ने कहा। प्रीति और मैंने सिर हिलाया।
‘पुष्कर जी, चंदन की कहानी हमारे साथ साझा करने के लिए धन्यवाद, यह बहुत ही रोचक है। हम उनसे मिलना चाहते थे और सबसे बढ़कर लोकेश को यहां लाने और हमें बुलाने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद,’ प्रीति ने कहा।
पुष्कर सिंह ने लोकेश पर निगाहें टिकाए हुए कहा, 'यह मेरे लिए खुशी की बात थी, और मुझे राहत मिली है कि लोकेश अब ठीक है।'
‘लोकेश, तुम्हें पुष्कर जी का शुक्रिया अदा करना चाहिए,’ अमन ने कहा।
‘मुझे नहीं पता, मुझे लगता है कि अगर वह मुझे बेहोश ही छोड़ देता तो बेहतर होता,’ लोकेश ने कहा। पुष्कर सिंह ने इस पर एक समझदारी भरी मुस्कान दी।
‘माफ़ कीजिए पुष्कर जी, मुझे लगता है कि वह होश में नहीं हैं,’ अमन ने पुष्कर सिंह से कहा।
‘चिंता मत करो, मैं उसकी स्थिति समझ सकता हूं,’ पुष्कर सिंह ने कहा।
अमन को पुष्कर सिंह से तीखी प्रतिक्रिया की उम्मीद थी। उसने लोकेश की जान बचाई थी और फिर भी लोकेश इस तरह की बातें कर रहा था।
पुष्कर सिंह ने कहा, 'लोकेश, चिंता मत करो, खुद पर भरोसा रखो और आज रात चैन से सो जाओ।'
लोकेश बिना कुछ कहे बाहर चला गया।

***

हमने लड़कों को घंसाली में छोड़ा और करखेरी स्थित अपने होमस्टे पहुँच गए। अगले दिन काम करना था, लेकिन मैंने और प्रीति दोनों ने छुट्टी के लिए आवेदन कर दिया था, क्योंकि हमने एक दिन आराम करने की योजना बनाई थी।

***

पुष्कर सिंह हमेशा की तरह मुस्कुराते हुए अपने पलंग पर लेट गए। आज उन्हें आभा को बहुत कुछ बताना था। जैसे ही वे द्वार से गुजरे, आभा ने उनका अभिवादन किया, उन्हें देखकर वह आज भी उतनी ही उत्साहित थीं जितनी पहली बार। दोनों इस दुनिया में अभी भी युवा थे।

'पुष्कर, तुम्हारा फिर से स्वागत है! यह दिन कैसा रहा?' आभा ने पुष्कर का हाथ अपने हाथ में लेते हुए पूछा। वे लॉन की हरी घास पर बैठ गए। पुष्कर ने अपना सिर आभा की गोद में रख दिया।

'यह अनुभव दिलचस्प रहा, मुझे एक ऐसे युवा लड़के से मिलने का मौका मिला जिसने इस भूमि का अनुभव किया है।'

'ओह, क्या तुमने उसे बताया?' आभा ने कहा, उसकी उंगलियां पुष्कर के बालों से खेल रही थीं और वह धीरे से उसके सिर की मालिश कर रही थी।

'मैंने उसे कहानी सुनाकर बताया,' पुष्कर ने उसे बताया कि कैसे उसने लोकेश को उसके गाँव में पाया, फिर उसके दोस्त उसके घर आए और कैसे उसने अंत में चंदन के नाम का इस्तेमाल करके अपनी कहानी सुनाई। आभा को हमेशा की तरह पुष्कर की कहानियाँ सुनना बहुत पसंद था।

After Pushkar finished the story, Aabha spoke.

'पुष्कर, मैं सैकड़ों वर्षों से तुम्हारा इंतजार कर रही थी। तुम यहाँ आए, लेकिन लौटते रहे। अब जब तुमने अपने पिछले जीवन के दायित्वों को पूरा कर लिया है, तो अब समय आ गया है कि तुम हमेशा के लिए यहीं रहो।'

पुष्कर मुस्कुराया, वह जानता था कि यही समय है। उसकी एक काल्पनिक दुनिया में, जहाँ वह साठ वर्ष का अविवाहित व्यक्ति था, पुष्कर सिंह ने शांतिपूर्वक अपनी नींद में अंतिम सांस ली।

DEVATA'S ANGER

(सच्ची घटना पर आधारित)

‘आप कह रहे हैं कि ये पालकी अपने आप चलती हैं?’ अपने फोन पर एक देवता के नृत्य का वीडियो देखते हुए, मैंने अपने सहकर्मी बिक्रम से देवता पालकियों के बारे में पूछा।
‘बिल्कुल। मैंने खुद ऐसा किया है। रुको, मैं तुम्हें दिखाता हूँ,’ उसने कहा और वीडियो को ध्यान से स्क्रॉल करते हुए उस बिंदु तक पहुँचाया जहाँ पालकी पकड़े हुए एक व्यक्ति बिना हाथों से पालकी पकड़े खड़ा था। लंबे बांस उसके कंधों पर टिके हुए थे, जबकि उसके हाथ उसकी बगल में रखे थे।
'जैसा कि आप देख सकते हैं, वह इसे अपने हाथों से नहीं पकड़े हुए है, लेकिन यह फिर भी ऊपर-नीचे उछल रहा है।'
जब वह आदमी उसे पकड़े नहीं था तब भी वह हिल रहा था। कभी-कभी कंधों पर रखी बांस की छड़ें भी उछलकर कुछ पल के लिए हवा में रह जाती थीं। कुछ और बार हिलने के बाद, आदमी को बांस को अपने हाथों में पकड़ना पड़ा। उन्हें ऐसा इसलिए करना पड़ा ताकि उनके कंधे दुखें नहीं और पालकी गिरने का कोई खतरा न रहे।
'तो अगर यह अपने आप हिल रहा है तो उसे इसे दोबारा पकड़ने की क्या जरूरत है?' वह इसे गिरने से बचाने के लिए ही पकड़े हुए है, लेकिन इसे हिला नहीं रहा है। इन हरकतों के कारण उसके कंधे भी तनावग्रस्त हो गए हैं, इसलिए उसे सहारे के लिए अपने हाथों पर निर्भर रहना पड़ता है।
उसने वीडियो को पीछे स्क्रॉल किया और हमने उस बिंदु से वीडियो देखना शुरू किया जहाँ उस आदमी ने बिना हाथों का इस्तेमाल किए पालकी की बाँहों को अपने कंधों पर टिका रखा था। मैंने ध्यान से देखा कि क्या पालकी के दूसरी तरफ बैठा आदमी उसे हिला रहा था। वह उसे निष्क्रिय रूप से पकड़े हुए प्रतीत हो रहा था। पालकी का भार केंद्र में था, वह आदमी बाँहों को दूसरी तरफ बैठे आदमी के कंधों पर उछाल नहीं सकता था। उसमें कुछ जादुई सा था।
‘देखो, अगर देवता के पास जादुई शक्तियां हैं, तो वह स्वयं पालकी क्यों नहीं उड़ाते?’ मैंने पूछा, ‘उन्हें पालकी ले जाने के लिए लोगों की क्या जरूरत है?’

‘देखो, इस देवता की पालकी की गति देवता और मनुष्य दोनों का संयोजन है। मनुष्य गुरुत्वाकर्षण के विरुद्ध इसे सहारा देते हैं, लेकिन नृत्य या गति पर उनका कोई नियंत्रण नहीं होता।’
अचानक, वीडियो में दिख रहे दोनों आदमियों को एक तरफ हटना पड़ा। ऐसा लग रहा था मानो पालकी उन्हें घसीट रही हो। जैसे-जैसे नृत्य आगे बढ़ा, संगीत तेज़ होता गया। पालकी के एक तरफ खिसकने पर दोनों आदमी उसे काबू में रखने के लिए संघर्ष कर रहे थे। दो और आदमी पालकी के किनारों पर कूद पड़े और संघर्ष में शामिल हो गए। इसके बावजूद, पालकी और तेज़ होती चली गई। जब पालकी एक तरफ नब्बे डिग्री से ज़्यादा झुकी, तो उसने दूसरी तरफ खड़े एक आदमी को ज़मीन से ऊपर उठा लिया।
‘अविश्वसनीय,’ ये शब्द मेरे मुंह से निकले। मेरे दोस्त बिक्रम के लिए यह एक सामान्य बात थी। उसने अपने पैतृक गांव में कई बार देवता का नृत्य देखा था। यह उसके रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा था। लेकिन मैंने ऐसा कुछ पहली बार देखा था।
मैंने उससे पूछा, 'क्या आपके गांव में सभी लोग देवता में विश्वास करते हैं और उन पर भरोसा रखते हैं?'
‘मेरे गाँव में सभी लोग देवता में विश्वास करते हैं; देवता हमारे लिए एक वास्तविक व्यक्ति हैं, एक बड़े-बुजुर्ग जो हमारी देखभाल और मार्गदर्शन करते हैं। हालाँकि हिमाचल प्रदेश में कुछ लोग, खासकर वे जो ज्यादातर समय बाहर रहते हैं, देवताओं में विश्वास नहीं करते।’
'वास्तव में?'
मैं आपको एक ऐसी घटना के बारे में बताता हूँ जिसमें देवता क्रोधित हो गए थे।
बिक्रम और मैं चंडीगढ़ से दिल्ली जाने वाली ट्रेन में थे, और ट्रेन के दिल्ली पहुंचने से पहले हमारे पास लगभग एक घंटा था।
‘अरे, क्रोधित देवता! ये तो दिलचस्प होगा!’ मैंने उत्साह से अपने हाथ मलते हुए कहा। ऐसी कहानियाँ मुझे हमेशा रोमांचित करती हैं, चाहे मैं विश्वास करूं या न करूं, चाहे मेरा विश्वास हो या न हो, लेकिन वे बेहद आकर्षक होती हैं।
बिक्रम ने कहानी सुनाना शुरू किया।
हिमाचल प्रदेश के हमारे गाँव में ग्राम देवता के लिए एक नया मंदिर बनाया गया। इसे पूरा होने में कई साल और बहुत सारा पैसा लगा। उस नए मंदिर में एक मेला आयोजित

किया गया। यह कोई आम मेला नहीं था। यह एक बहुत बड़ा आयोजन था। यह देवताओं का भी मेला था। आम लोगों के अलावा, आस-पास और दूर-दूर से कुछ देवताओं को भी विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। यह मंदिर के कार्यक्रम के लिए था, लेकिन गाँव में शादी या नए घर के निर्माण जैसे महत्वपूर्ण अवसरों पर आशीर्वाद देने के लिए लोग देवताओं को अपने घरों में भी आमंत्रित करते हैं। देवता कभी-कभी अन्य देवताओं से मिलने के लिए दूर-दराज के स्थानों की यात्रा भी करते हैं, या कभी-कभी स्थानीय तालाबों या नदियों में स्नान करने के लिए जाते हैं।

आपको याद होगा कि पिछले साल मुझे अचानक काम से कुछ दिनों की छुट्टी लेनी पड़ी थी। यह कोई आम छुट्टी नहीं थी जो मैंने उस समय अपने गाँव जाने के लिए ली थी। मुझे जाना पड़ा क्योंकि देवता ने मुझे मंदिर के उद्घाटन समारोह में शामिल होने का निर्देश दिया था। मेरे पिता ने उनसे संपर्क किया और माध्यम ने उन्हें मुझे बुलाने के लिए कहा। मेरे पास वहाँ जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, हालाँकि मैंने पहले से छुट्टी की योजना नहीं बनाई थी। उनका बुलावा एक आपातकालीन स्थिति होती है।

कार्यक्रम में भारी भीड़ उमड़ी थी। लोग दूर-दूर के गांवों और कस्बों से इस आयोजन में शामिल होने आए थे। गांव के हर व्यक्ति के यहां दूसरे गांवों से कई मेहमान ठहरे हुए थे। विशाल मंदिर परिसर खचाखच भरा हुआ था और कई लोगों को पास की पहाड़ियों पर मंदिर के बाहर खड़ा होना पड़ा। कुछ युवाओं ने तो कार्यक्रम की कार्यवाही देखने के लिए पास के पेड़ों पर भी चढ़ाई कर दी थी।

मैं पहली बार किसी नए मंदिर के उद्घाटन का साक्षी बन रहा था। यह एक उत्सव जैसा माहौल था। कड़ाके की ठंड के बावजूद, वातावरण बेहद जीवंत था। मंदिर परिसर श्रद्धालुओं से खचाखच भरा हुआ था। उनमें से अधिकांश ने पारंपरिक रंगीन हिमाचली पोशाक पहनी हुई थी और हिमाचली टोपियाँ लगाई हुई थीं। सप्ताह के हर दिन सार्वजनिक भोज आयोजित किए जाते थे। ग्रामीण ढोल, घंटियों और बांसुरी की थाप पर लंबे समय तक एक साथ नृत्य करते थे। यदि एक समूह थक जाता, तो दूसरा समूह उसकी जगह ले लेता। हालाँकि मैं नृत्य करने वाला व्यक्ति नहीं हूँ, फिर भी मेरे पैर अपने आप थिरकने लगे और संगीत की धुन पर झूमने लगे। हवा में अगरबत्ती की सुगंध फैली हुई थी। ऐसा लग रहा था मानो पूरा वातावरण ऊर्जा से भर गया हो, जिससे देवता समेत सभी लोग नृत्य करने को प्रेरित हो रहे थे। दूसरे दिन मंदिर में दो देवता

विराजमान थे। देवताओं के नृत्य करते समय उनके घने, चमकदार काले बाल खूबसूरती से लहरा रहे थे। देवता कभी-कभी एक साथ आते, नृत्य करते और आपस में बातें करते। इसके लिए किसी माध्यम की आवश्यकता नहीं थी। जब देवता चलने लगते थे, तो पालकी संभालने वाले लोग लगभग उनके साथ घिसटते हुए चले जाते थे। यह एक थका देने वाली प्रक्रिया थी। लगभग एक घंटे बाद, देवता थोड़ी देर के लिए रुक जाते थे। इस समय वे लोग आराम करते थे और उनकी जगह नए लोग देवता के नृत्य के अगले दौर के लिए तैयार हो जाते थे।

एक देवता दूर के गाँव से आए थे, जो मंदिर में प्रवेश नहीं कर रहे थे। उन्होंने पालकी को द्वार से अंदर नहीं जाने दिया। अंदर जाने के बजाय, वे मंदिर के चारों ओर चक्कर लगाते रहे। मैं द्वार की ओर गया, जहाँ उस देवता के गाँव के कुछ लोग बैठे थे, जबकि एक अन्य समूह देवता के साथ मंदिर के चारों ओर चक्कर लगा रहा था। जब मैंने उनसे इस बारे में पूछा, तो उन्होंने बताया कि वे पिछली शाम से ऐसा ही कर रहे हैं।

‘नमस्ते चाचा,’ ‘नमस्ते,’ वे जानते थे कि मैं यहीं का रहने वाला हूँ, और वे सब मेरे मेहमान थे। हमारे गाँव का हर कोई मेज़बान की तरह व्यवहार कर रहा था।

'क्या तुमने नाश्ता किया?'

'हां, हमने किया, यह अच्छा था।'

‘आप मंदिर क्यों नहीं जा रहे हैं?’

‘अगर हमारे देवता नहीं आ रहे हैं, तो हम कैसे आ सकते हैं?’ उन्होंने फिर पूछा।

‘देवता मंदिर में प्रवेश नहीं कर रहे हैं? लेकिन क्यों?’

वह इसलिए नाराज है क्योंकि हम पैदल आए जबकि बाकी लोग कारों और ट्रकों से आए।

'अब आप आगे क्या करने वाले हैं?'

‘हमें नहीं पता; हम देखेंगे कि क्या देवता आपस में बात करके अपनी समस्या का समाधान कर सकते हैं। वह अभी कुछ नहीं कह रहा है।’

***

रोहरू नाम के एक गाँव से चार युवक आए थे। बाकी सभी की तरह उन्हें भी इस कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया था। उनमें से एक, पुरब, मेरी ही उम्र का था। वह और

उसके दोस्त गाँव के एक घर में मेहमान के तौर पर ठहरे हुए थे, जैसे कई और लोग ठहरे हुए थे।
हालांकि वे रोहरू गांव के निवासी थे, लेकिन उन्होंने अपना अधिकांश समय शहर में बिताया था। उन्हें भी आमंत्रित किया गया था क्योंकि पूरे गांव को इस कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया था। उन्हें मंदिर में कोई दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन वे इस गांव की ओर आकर्षित हुए क्योंकि यह सबसे सुंदर गांवों में से एक है। उनके लिए यह पहाड़ों की एक तरह की आरामदेह यात्रा थी, जिसमें आवास और भोजन निःशुल्क था।
यह दूसरी रात थी, और वे अपने मेज़बान द्वारा दिए गए कमरे में थे। पुरब खिड़की के पास एक कुर्सी पर बैठा था, उसके पैर बिस्तर पर थे और जूते अभी भी उसके पैरों में थे। उसने सिगरेट निकालने के लिए अपनी जेब में हाथ डाला।
“तुम क्या कर रहे हो, पूरब? उन्हें अच्छा नहीं लगेगा,” ऋषभ ने चेतावनी दी। ऋषभ पास ही एक पलंग पर लेटा हुआ था। ग्रामीण ने उन्हें पहली मंजिल पर अपना सबसे अच्छा कमरा दिया था, जिसमें दो अलग-अलग पलंग और पहाड़ों की ओर खुलने वाली एक खिड़की थी। यह घर लकड़ी का बना एक पुराना ढांचा था, जो एक ऐसा प्रामाणिक अनुभव प्रदान करता था जिसके लिए कई पर्यटक खुशी-खुशी पांच सितारा होटल की दरें चुका देते।
पूरब ने अपनी सिगरेट जलाई और एक कश लिया, जिसे उसने खिड़की से बाहर की ओर उड़ा दिया।
‘कुछ नहीं होगा, वे बिना दस्तक दिए हमारे कमरे में भी नहीं घुसते।’
‘खैर, हमें अभी भी...’ ऋषभ ने कहा।
पूरब ने बीच में ही टोकते हुए पूछा, 'तुम इतने डरपोक क्यों हो?' ऋषभ, मौसम और घाटी को देखो। सिगरेट पीने का मन कर रहा है। लो, एक सिगरेट पीकर देखो।'
'नहीं, मैं सिगरेट नहीं पीता,'
‘उम्म... मुझे रात के खाने के बाद एक सिगरेट चाहिए,’ पुरब ने लकड़ी की खिड़की की चौखट पर सिगरेट का टुकड़ा बुझाते हुए कहा और फिर उसे बाहर फेंक दिया।
‘अरे, कल बाहर जाकर कुछ बेहतर खाने के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है?’ पुरब अचानक सीधा बैठते हुए बोला।
‘तुम्हारे मन में असल में क्या चल रहा है?’ ऋषभ ने पूछा।

‘देखो, यहाँ तो मवेशियों का चारा परोसा जाएगा... मैं इस गाँव के असली भोजन, यानी मटन की बात कर रहा हूँ, जिसके लिए यह गाँव मशहूर है। जब तक हम इस लज़ीज़, मुलायम मटन का स्वाद चखकर और स्थानीय शराब के साथ इसे पीकर आनंद नहीं उठा लेते, तब तक हमारी यात्रा अधूरी रहेगी।’
‘इस सप्ताह नहीं, सभी मटन और शराब की दुकानें बंद हैं। मंदिर के उद्घाटन के दौरान गांव में कोई भी इनका सेवन नहीं करेगा।’
‘क्या? मतलब पूरे हफ्ते न तो मटन मिलेगा और न ही शराब?’
'हां, बेहतर यही है कि हम वही खाएं जो हमारे मेजबान हमें परोसते हैं, जो वैसे भी बहुत स्वादिष्ट होता है,' ऋषभ ने कहा।
‘ये गंवार ग्रामीण!’ पुरब क्रोधित हो उठा।
“चुप रहो... मेजबान के बारे में कुछ भी नकारात्मक मत कहो। यह देवता का मामला है,” ऋषभ ने गुस्से में लेकिन शांत स्वर में कहा।
‘क्या देवता? यह कुछ नहीं है, बस एक विस्तृत मजाक है।’
‘हे भगवान, तुम क्या कह रहे हो, मूर्ख? तुम नकारात्मक सोच भी नहीं सकते, यह देवता का गांव है।’
‘तुम इतने डरे हुए क्यों हो, और इन अज्ञानी लोगों पर विश्वास क्यों करते हो? कहीं तुम यह तो नहीं मानते कि देवताओं के पास शक्ति है?’
Rishabh remained silent.
‘बताओ ना, क्या तुम्हें लगता है कि देवता सुन सकते हैं, बोल सकते हैं या नाच सकते हैं?’
पुरब दिल खोलकर हँसा, मानो उसने कोई मज़ाक किया हो।
‘पूरब, देवताओं का आविष्कार रातोंरात नहीं हुआ है। वे शुरुआत से ही यहाँ मौजूद हैं... हज़ारों साल पहले से। यह कोई अंधविश्वास नहीं है। उनके पास शक्ति है। इसीलिए लोग उनकी पूजा करते हैं।’
अरे, बस करो, हंसते-हंसते मेरा पेट दुखने लगेगा। देवताओं के पास कोई शक्ति नहीं है, ये सब धन के लिए बनाए गए हैं। जब तक ये लोग अशिक्षित रहेंगे, कुछ चालाक लोग देवता के नाम पर धन कमाते रहेंगे। यह सब एक सोची-समझी साजिश है।
ऋषभ ने आह भरी, पुरब से मुंह फेर लिया और सो गया।

अगली सुबह मंदिर खचाखच भरा हुआ था और उत्सव जारी था। लोग गा रहे थे, नाच रहे थे और स्वादिष्ट सुबह के प्रसाद का आनंद ले रहे थे। पुजारी प्रार्थना कर रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो मंदिर में हर तरफ कुछ न कुछ चहल-पहल हो रही हो। बच्चे हंसते-खेलते और खेलते हुए मंदिर में इधर-उधर दौड़ रहे थे।

सुबह करीब नौ बजे मंदिर के मुख्य देवता ने नृत्य करना शुरू किया। यह सामान्य से जल्दी था और नृत्य भी पहले से अधिक जोशीला और ऊर्जावान था। पालकी को थामे रखने के लिए चार पुरुषों की आवश्यकता थी। देवता मंदिर परिसर में नृत्य करते हुए घूम रहे थे। नृत्य की मुद्राएँ कल से भिन्न थीं। कल उनकी मुद्राएँ चंचल और कोमल थीं। लेकिन आज वे अधिक बलवान और तीव्र थीं। पुरुष जल्दी थकने लगे, लेकिन नृत्य जारी रहा। देवता के साथ मौजूद पुजारी और तांत्रिक की टीम हाथ जोड़कर देवता के पास खड़ी रही।

ग्यारह बज रहे थे जब पालकी पकड़े चार आदमियों में से एक गिर गया। उसकी जगह तुरंत दूसरे ने ले ली। पालकी चलती रही और आदमियों को बदलना पड़ा। दोपहर तक, पूरे गाँव को देवता के निरंतर नृत्य के बारे में पता चल गया था। मंदिर में भीड़ थी, लेकिन देवता के नृत्य के अलावा सब कुछ थम सा गया था। लोग आश्चर्य से देवता को देख रहे थे। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। देवता हमेशा थोड़ी देर बाद नृत्य करना बंद कर देते थे और अपने दल को आराम देते थे।

अब तक यह स्पष्ट हो चुका था कि देवता किसी बात से नाराज़ हैं। उनके पुजारी, जो अभी भी हाथ जोड़कर खड़े थे, ऊँची आवाज़ में बोले, “हे देवता, आप क्यों नहीं रुक रहे, आप हमें क्यों दंड दे रहे हैं? हमने क्या गलती की है?” उन्होंने माध्यम की ओर देखा, लेकिन देवता की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। देवता नाचते रहे। भीड़ अब और भी बढ़ गई थी।

पूरब और उसका दोस्त दोपहर एक बजे मंदिर पहुंचे, ठीक उसी समय जब दोपहर का भोजन परोसा जाने वाला था। जैसे ही वे मंदिर में दाखिल हुए, उस देवता ने नृत्य करना बंद कर दिया। भीड़ ने सामूहिक रूप से राहत की सांस ली।

हाथ जोड़कर और आंखें बंद करके खड़ी देवता की सेविका ने कहा, 'देवता क्रोधित हैं।'

लगभग एक हजार लोग चुपचाप सुन रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे स्टेडियम लोगों से भरा हो, लेकिन सब लोग चुप थे।
‘कल रात इस गांव में किसी ने उसका अपमान किया है। वह रोहरू से आया है। देवता चाहते हैं कि वे लोग सामने आएं।’
पूरब और ऋषभ ने एक-दूसरे को देखा। ऋषभ के चेहरे पर वो भाव था जैसे कह रहा हो, "मैंने तो पहले ही कहा था।" लेकिन दोनों में से किसी ने कुछ नहीं कहा। फिर माध्यम ने दोबारा बात की।
'अगर वह खुद सामने नहीं आना चाहता, तो देवता उसका नाम बता देंगे।'
पूरब को यह बुरा एहसास हो रहा था कि उसका ही नाम पुकारा जाएगा। उसे यकीन नहीं हो रहा था, पर यह सब उसकी आँखों के सामने हो रहा था। उसने ऋषभ के सामने देवता का ज़िक्र किया था। और ऋषभ रात से उसके साथ था। न तो उसने और न ही ऋषभ ने किसी को कुछ बताया था। वे सुबह से साथ थे। किसी को भी यह पता नहीं चल सकता था कि उन्होंने बंद कमरे में क्या कहा था।
यह एक बड़ा घोटाला था, पूरे गाँव में यही चर्चा हो रही थी कि आखिर किसने किया होगा। जिस मुख्य देवता के सम्मान में इस मंदिर का उद्घाटन किया जा रहा था, उन्हीं के क्रोध का नतीजा था। गाँववाले गुस्से में थे। रोहरू के हर व्यक्ति को गुस्से की निगाहों से देखा जा रहा था। रोहरू के कुछ बुजुर्गों ने अपने साथी ग्रामीणों से पूछना शुरू कर दिया कि किसने देवता का अपमान किया होगा।
'पूरब, तुम्हें खुद ही आगे जाना होगा, वरना अगर देवता तुम्हारा नाम बता दे तो और भी बुरा हो सकता है।'
‘क्या... क्या? मैं तो मज़ाक कर रहा था। ये सब क्यों हो रहा है?’ उसने भाग जाने के बारे में सोचा, लेकिन अचानक उसके पेट में इतनी कमजोरी महसूस हुई कि वह अपने पैर भी नहीं उठा सका। ऐसा लगा जैसे उसके पैर ज़मीन से चिपक गए हों।
‘पूरब, छिपने का कोई फायदा नहीं है। जाओ और माफी मांग लो... अभी’ ऋषभ ने कहा।
पूरब जानता था कि ऋषभ सही कह रहा था। वह धीरे-धीरे आगे बढ़ा। इस बार उसके कदम तेज़ी से चल रहे थे। उसे घूर रहे लोगों की परवाह किए बिना, पूरब धीरे-धीरे

चलता रहा। वह देवता के पास पहुँच गया। जैसे ही वह देवता के पास पहुँचा, गाँव वाले चुप हो गए। अब सबकी निगाहें उस पर टिकी थीं।
'यह मैं ही था, कृपया मुझे क्षमा कर दो देवता,' उसने जमीन पर नजरें गड़ाए हुए कहा।
'नहीं, तुम्हें क्षमा नहीं किया जाएगा,' समाधि की अवस्था में मौजूद उस माध्यम ने अब कहा।
'हे देवता, मुझे क्षमा कर दीजिए, मैं वे शब्द कभी नहीं दोहराऊंगा। मैंने आपकी शक्ति देख ली है। कृपया मेरी क्षमा स्वीकार कीजिए,' पुरब घुटनों के बल गिर पड़ा।
'नहीं, मैं तुम्हें दंडित करूंगा,' देवता ने अपने माध्यम से कहा।
इससे पहले कि कुछ और कहा जा सकता, रोहरू (पूरब का गाँव) से आए दूसरे देवता अचानक हिले और झटके से मंदिर के मुख्य द्वार की ओर बढ़े। उनकी पालकी भीड़ के ऊपर तैरती हुई सी लग रही थी। अचानक हुई हलचल से पालकी उठाने वाले अप्रस्तुत थे और खिंचे चले गए। भीड़ के बावजूद, पालकी रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ी। अचानक झटके से कई लोग एक तरफ गिर पड़े। पालकी मंदिर के द्वार पर आकर रुकी।
दूसरे देवता के माध्यम ने कहा, 'मेरे लोगों को दंडित मत करो।'
"अगर तुम मेरे लोगों को सज़ा दोगे, तो मैं यहाँ से चला जाऊँगा और कभी वापस नहीं लौटूँगा," उसने फिर कहा। हालाँकि मैं देवताओं की शक्तियों में विश्वास करता हूँ और मानता हूँ कि उनके आशीर्वाद ने कई बार मेरी मदद की है। मैंने कभी इतनी शक्तिशाली शक्ति नहीं देखी थी। एक देवता क्रोधित होकर सज़ा देना चाहता है, जबकि दूसरा अपने लोगों की रक्षा कर रहा है।
कुछ देर बाद मुख्य देवता की पालकी चली और रोहरू के देवता के पास वाले द्वार की ओर बढ़ गई।
'मुझे उसे दंडित करना होगा, उसने मेरा अपमान किया है,' उसके माध्यम ने उसके लिए यह बात कही।
'वह मेरे गांव का है और मेहमान है। आप उसे दंडित नहीं कर सकते।'
पालकी मंदिर के द्वार पर खड़ी रहीं। सारी भीड़ थम सी गई और चुपचाप खड़ी रही। अब उन्हें भोज का आनंद लेना था, लेकिन किसी ने भी भोजन को हाथ नहीं लगाया। इस मामले को सुलझाना ज़रूरी था। कुछ समय बाद, नए मंदिर के प्रमुख देवताओं के पास

गए। उन्होंने दोनों देवताओं को प्रणाम किया और फिर हाथ जोड़कर मुख्य मंदिर के देवता की ओर मुख करके खड़े हो गए।
हे देवता, हम समझते हैं कि इस व्यक्ति ने पाप किया है, और केवल आप ही उसे दंड देने या क्षमा करने की शक्ति रखते हैं। हमारे गाँव को इस मंदिर को बनाने में कई वर्ष लगे। हम आपकी पूजा करते हैं, आप हमारे उपकारक, हमारे भगवान, हमारे सब कुछ हैं। आपके आशीर्वाद से, हम चाहते हैं कि आप इस मंदिर का उद्घाटन करें, इसे यहीं रहने दें और हमें आशीर्वाद दें। लेकिन आज आपका क्रोध हम सभी के लिए दंड है। यहाँ तक कि उन लोगों के लिए भी जिन्होंने इस दिन के लिए कड़ी मेहनत की है। हम उत्सव मनाना चाहते हैं। कृपया शांत हो जाइए, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ। मेरी प्रार्थना है कि उत्सव चलता रहे, कृपया आनंद लें, और हमें भी आनंद लेने दें।
वह व्यक्ति ऐसे बोल रहा था मानो अपने क्रोधित दादाजी से बात कर रहा हो। लेकिन उसका प्रभाव स्पष्ट था। दोनों देवता वापस आ गए। कुछ देर बाद वे सिर जोड़कर चुपचाप एक-दूसरे से बातें करने लगे। फिर थोड़ी देर बाद वे साथ-साथ नाचने लगे। उनकी हरकतें धीमी और चंचल थीं। भीड़ में जयजयकार की आवाज़ गूंज उठी। संगीत फिर से शुरू हो गया। हर कोई, जहाँ भी खड़ा था, फिर से नाचने लगा। उत्सव और भोज फिर से शुरू हो गए। वह लड़का, पुरब, अपने शेष दिन गाँव में मंदिर में सेवा करते हुए बिताए। आज भी वह देवता का कट्टर भक्त है।
‘देखो, देवता ऐसे ही होते हैं। वे हमसे बने हैं, और हम उनसे बने हैं। हम मानते हैं कि वे हमारे संरक्षक हैं और वे वही बन जाते हैं।’
'ज़रूर,' मैंने कहा, दिल्ली पहुँचने से ठीक पहले अपने हाथों पर खड़े रोंगटे शांत करने के लिए उन्हें रगड़ते हुए।

आधी रात की पार्टी

फोन पर तेज हॉर्न की आवाज सुनकर सोढ़ी ने पूछा, 'क्या आप गाड़ी चला रहे हैं?'
‘हां, मैं आज रात के लिए कुछ ड्रिंक्स लेने जा रहा हूं। मैं अपनी कार के ऑडियो सिस्टम पर बात कर रहा हूं, चिंता मत करो?’ अजय ने कार की खिड़की ऊपर करते हुए कहा।
‘क्या आप किसी के साथ पार्टी कर रहे हैं?’ सोढ़ी ने पूछा।
अजय हंसते हुए बोला, 'मैं हर दिन पार्टी करता हूं, बस अपने साथ।'

‘अजय...अकेले पार्टी करना ठीक नहीं है। चंडीगढ़ आओ, हम साथ मिलकर मजे करेंगे,’ सोढ़ी ने कहा। अजय समझ गया कि सोढ़ी क्या कह रहा है। प्रीति से तलाक के बाद से पिछले कुछ महीनों से यह उसकी आदत बन चुकी थी।
तलाक के अंतिम कागजात पर हस्ताक्षर करने के बाद जब अजय अपने घर लौटा, तो उसके लिए घर की जानी-पहचानी दीवारें मानो उसे कुचल देंगी। घर पर होते हुए भी, उसे घर जैसा महसूस नहीं होता था। उसका घर अब घर जैसा नहीं लगता था, उसके लिए घर पर होना दफ्तर में बैठने, हवाई अड्डे पर इंतज़ार करने या सड़क पर होने जैसा था। उसे कहीं भी शांति नहीं मिलती थी। घुटन महसूस होती थी। उसे सिर्फ शराब में ही सुकून मिलता था। यह एक घिसी-पिटी बात है, लेकिन घिसी-पिटी बातों के पीछे कोई न कोई वजह होती है। बिस्तर पर जाने से पहले कुछ घूंट शराब पीने से दुनिया गायब हो जाती थी। हालांकि वह लेट जाता था, लेकिन उसे नींद नहीं आती थी। वह बेहोशी और जागने के बीच की एक असहज अवस्था में था। वही असर पाने के लिए शराब की मात्रा धीरे-धीरे बढ़ती जा रही थी। एक स्वास्थ्य संगठन में काम करते हुए, वह जानता था कि वह पतन की ओर जा रहा है। वह खुद को रोक नहीं पा रहा था। वह खुद को रोकना भी नहीं चाहता था। तलाक के बाद उसे ऐसा लगा जैसे उसने खुद अपने हाथों से अपनी जिंदगी काट डाली हो।
सौभाग्य से, एक महीने पहले, उनके फोन पर एक संदेश आया जिसने उनके अंधकारमय जीवन में आशा की एक छोटी सी किरण ला दी।
'हाय... मुझे आश्चर्य हो रहा है कि क्या आप वही अजय हैं जो चंडीगढ़ के रवींद्र पब्लिक स्कूल में पढ़ते थे।'
यह संदेश सोढ़ी की ओर से था, जिन्होंने सोशल मीडिया के ज़रिए पुराने सहपाठियों को ढूंढने और उन्हें फिर से मिलाने में काफी समय बिताया था। उन्होंने सभी दोस्तों को ऐसे संदेश भेजे थे। किसी से यह पूछना कि क्या वे आपको जानते हैं, इसके लिए हिम्मत चाहिए होती है, भले ही आपको यकीन हो कि वे वही व्यक्ति हैं। सोढ़ी ने वह हिम्मत दिखाई और पंद्रह साल से भी ज़्यादा समय बाद पुराने सहपाठियों को एक साथ लाया। अजय के लिए, यह उनके जीवन में एक सुखद बदलाव लेकर आया। इसने उनके जीवन के उस दौर को वापस ला दिया जिसका उनकी शादी और तलाक से कोई लेना-देना नहीं था।

कुछ दोस्त ऐसे होते हैं जो आपको परेशान करते रहते हैं, लेकिन आपसे संपर्क भी बनाए रखते हैं। ऐसे दोस्त ही दोस्ती की बुनियाद होते हैं। सोढ़ी भी कुछ ऐसा ही था। अजय बार-बार उदास हो जाता था, लेकिन सोढ़ी ने जब उसे ढूंढ लिया, तो फिर कभी उसका साथ नहीं छोड़ा। वह अजय को नियमित रूप से फोन करता रहता था। अजय अब भी शराब का आदी था, लेकिन उसने इसे कुछ हद तक कम कर दिया था। कभी-कभी सोढ़ी, नितिन और अक्षत समेत अपने पुराने दोस्तों के समूह से बात करते समय वह शराब के बारे में पूरी तरह भूल जाता था। यह मेलजोल उसके लिए एक दूसरी और अच्छी लत बन रही थी। उन फोन कॉल्स पर पुराने दोस्त हंसते थे और पुरानी यादें ताजा कर देते थे।

जब सोढ़ी ने चंडीगढ़ में मिलने का सुझाव दिया, तो अजय ने उत्सुकता से कहा, 'मैं अगले सप्ताह एक छोटी व्यावसायिक बैठक के लिए चंडीगढ़ में रहूंगा और मेरे पास काफी समय होगा।'

चंडीगढ़ में इतने लंबे समय बाद अपने दोस्तों से मिलने की याद आते ही अजय में एक नई ऊर्जा का संचार हो गया। वह भूल ही गया था कि उसके अंदर इतनी ऊर्जा का संचार हो सकता है। स्कूल की यादों ने उसे फिर से बच्चा जैसा महसूस कराया। उसे उन दिनों घर पर होने वाली साधारण जन्मदिन की पार्टियाँ याद आ गईं। स्कूल से बंक करके झील किनारे जाना। हर शाम दोस्तों के साथ बिना किसी योजना, समय-सारणी या समय-सारणी के यूँ ही सैर पर निकल जाना।

‘अगले हफ्ते? पक्का?’ सोढ़ी ने कहा।

‘हां, और मैं सप्ताहांत तक चंडीगढ़ में ही रहने की योजना बना रहा हूं,’ अजय ने कहा।

‘तुम्हें पता है अगले हफ्ते नितिन भी आ रहा है, और शायद अक्षत भी लंबा वीकेंड मना रहा होगा।’ सोढ़ी ने उससे कहा।

‘वाह, नितिन और अक्षत, वे कैसे हैं?’

‘दोनों ठीक हैं और चंडीगढ़ के बहुत करीब हैं। लगता है कि अगला सप्ताह हमारे छोटे से मिलन के लिए बिल्कुल सही समय होगा।’

‘बहुत बढ़िया विचार है सोढ़ी, मैं आप लोगों से मिलने के लिए बेताब हूं।’

'हमें यहां तीन दिन की छुट्टी मिलेगी, जो कि एक दुर्लभ बात है।'

हमें कुछ करना होगा, कोई बड़ी पार्टी करनी होगी।

‘मुझे लगता है हमें थोड़ा मज़ा करना चाहिए, रोड ट्रिप पर जाना चाहिए या कुछ और। तुम्हारा क्या ख्याल है?’ सोढ़ी ने पूछा।
‘खैर, मुझे रोड ट्रिप पर जाने में कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन तीन दिन शायद कम पड़ जाएंगे। देखिए, अगर हम चंडीगढ़ से जयपुर तक गाड़ी चलाकर जाएं, तो बहुत लंबा सफर हो जाएगा, एक दिन एक तरफ और एक दिन दूसरी तरफ। मैं आप लोगों के साथ आराम से समय बिताना पसंद करूंगा,’ अजय ने कहा।
‘और क्या? क्या हम चंडीगढ़ में आराम नहीं कर सकते?’, सोढ़ी ने कहा।
‘हम ऐसा कर सकते हैं, लेकिन हमें कुछ करना होगा। हम पंद्रह साल बाद मिलने वाले हैं। हमें कुछ योजना बनानी होगी। सिर्फ़ लड़कों की मुलाकात, परिवारों के बिना, आप जानते हैं ना?’ अजय उत्साहित था।
‘ऐसे में तो रोड ट्रिप एकदम सही रहेगी, लेकिन हम कहाँ जा सकते हैं? शिमला कैसा रहेगा?’
अजय ने कहा, 'फिर से, इसमें बहुत ज्यादा ड्राइविंग करनी पड़ेगी, और असल में हमारे पास मौज-मस्ती के लिए सिर्फ एक ही दिन होगा।' हालांकि वह यात्रा करना चाहता था, लेकिन वह कम से कम ड्राइविंग करना चाहता था, और इतने लंबे समय के बाद एक साथ आराम करने के लिए अधिक समय बिताना चाहता था।
सोढ़ी ने एक पल सोचा और फिर बोला।
'चलो कसौली चलते हैं, ज्यादा दूर नहीं है और हम सबको वो जगह पसंद है।'
कुछ पल रुकने के बाद, 'तुम बिल्कुल सही कह रहे हो सोढ़ी, मैंने इसके बारे में पहले क्यों नहीं सोचा। कसौली सबसे अच्छा विकल्प है, हम कुछ ही घंटों में वहाँ पहुँच सकते हैं और पूरे तीन दिन का आनंद ले सकते हैं, शानदार विचार है।'
कसौली का नाम सुनते ही अजय को पुरानी यादें ताजा हो गईं। कसौली चंडीगढ़ के पास एक छोटा सा हिल स्टेशन है। अजय अपने परिवार के साथ कई बार वहां जा चुका था, लेकिन कॉलेज के दिनों में दोस्तों के साथ घूमने-फिरने के लिए यह उसकी पसंदीदा जगह बन गई। अगर चंडीगढ़ में मौसम थोड़ा ठंडा या बारिश वाला होता, तो वे कसौली चले जाते, क्योंकि उस समय कसौली का मौसम बहुत ही सुहावना होता है। ऐसा लगता था मानो चंडीगढ़ के आसमान में बादल छा जाते थे, तो वे उनसे बचने के लिए कसौली चले जाते थे। जब अजय को प्यार हुआ, तो उसकी पहली डेट कसौली में ही थी, और

जब उनका ब्रेकअप हुआ, तो वह अकेले ड्राइव पर कसौली चला गया। कसौली अजय को बहुत सुकून देता था। बचपन में कसौली उसके लिए दूसरे घर जैसा था।
'तो चलिए इसे अंतिम रूप दे देते हैं, मैं नितिन और अक्षत को भी फोन कर दूंगा, हम शुक्रवार सुबह रवाना होंगे और कृपया, आखिरी समय में कोई बदलाव न करें,' सोढ़ी ने कहा।
'इस बार तो पक्का है, सौ प्रतिशत,' अजय ने मुस्कुराते हुए कहा। अजय ने आखिरी समय में कई योजनाएँ बदली थीं, लेकिन इस बार यह सफल रही।
नवंबर की एक ठंडी सुबह, चारों दोस्त कसौली के रास्ते पर थे। रास्ते में रोड ट्रिप का आनंद लेते हुए वे दो घंटे में वहाँ पहुँच गए।
उन्होंने होटल पहले से बुक नहीं कराया था। उन्हें होटल का कमरा मिलने की चिंता नहीं थी, क्योंकि कसौली के होटल केवल सप्ताहांत में ही भरते हैं, और वह एक कामकाजी दिन था।
कसौली पाँच हज़ार से भी कम आबादी वाला एक छोटा सा शहर है। यह चंडीगढ़ के बहुत पास है, लेकिन यहाँ का मौसम बिल्कुल अलग और ठंडा है। महज तीन घंटे पहले दोस्त चौड़ी सड़कों पर टी-शर्ट पहने आराम से घूम रहे थे, और अब उन्हें जैकेट पहननी पड़ी। उन्होंने अपनी कार कसौली के ठीक बाहर मल्टीलेवल पार्किंग में खड़ी की और पैदल कसौली घूमने निकल पड़े। कसौली मॉल रोड एक संकरी गली है जहाँ स्मृति चिन्हों, कपड़ों की छोटी-छोटी दुकानें और कई छोटे-छोटे खाने के स्टॉल हैं, जिनमें मोमोज, नूडल्स, मैगी नूडल्स और उत्तर भारतीय पराठे जैसे कई तरह के व्यंजन मिलते हैं।
हिल स्टेशन में घूमने और ढेर सारी तस्वीरें खींचने के बाद, वे होटल की तलाश करने लगे। बाहर से ठीक-ठाक दिखने वाले होटलों में वे अंदर गए। पहाड़ियों के सुंदर नज़ारे के अलावा, वे एक खुली छत वाला होटल ढूंढ रहे थे जहाँ वे शाम को बैठकर मौसम का आनंद लेते हुए बातें करना और पुरानी यादें ताज़ा करना चाहते थे।
एक उपयुक्त होटल की तलाश में, वे मॉल रोड से वापस कसौली के मुख्य प्रवेश द्वार तक गए और ऊपर की ओर जाने वाली दूसरी सड़क पर मुड़ गए। इस सड़क के आरंभ में, उनके बाईं ओर, पहली इमारत प्रसिद्ध क्राइस्ट चर्च थी। अजय ने इस चर्च को

कई बार देखा था, लेकिन केवल बाहर से राहगीर के रूप में। लेकिन आज वह चर्च की ओर खिंचा चला गया।
अजय गेट के अंदर गया, उसके दोस्त भी उसके पीछे-पीछे गए। उन्होंने एक स्थानीय व्यक्ति से बातचीत की, जिसने बताया कि यह गिरजाघर डेढ़ सदी से भी अधिक पुराना है और हिमाचल प्रदेश का सबसे पुराना गिरजाघर है। और, गिरजाघर के पीछे स्थित कब्रिस्तान में मौजूद मकबरे तो उससे भी पुराने थे। गिरजाघर गोथिक शैली में बना था, जिसकी छत हरी थी और उसमें रंगीन कांच की खिड़कियां लगी थीं। इसमें एक खूबसूरत घंटाघर भी था। उन्हें उस दौर का एहसास हो रहा था जब भारत पर अंग्रेजों का राज था। अजय ने कल्पना की कि अंग्रेज लंबे कोट पहने इस गिरजाघर के चारों ओर घूम रहे होंगे, अपनी जेब घड़ियों को मिलाते हुए घंटाघर को देख रहे होंगे। लेकिन वहां कोई अंग्रेज नहीं था, सिर्फ भारतीय थे... जिनमें से ज्यादातर ईसाई नहीं थे।
'मुझे लगता है कि हमें चर्च के बारे में पर्याप्त जानकारी मिल गई है। अब चलो चलते हैं और अपने लिए एक होटल ढूंढते हैं, मुझे भूख लगी है,' सोढ़ी ने अजय को चर्च के गेट से खींचते हुए कहा।
चर्च से कुछ ही कदम आगे, उन्हें खिड़कियों की कतार वाली एक जर्जर, भूरे रंग की इमारत दिखाई दी, जो निश्चित रूप से ब्रिटिश काल की वास्तुकला का एक नमूना थी। यह भी तराशे हुए पत्थरों से बनी थी और चर्च जितनी ही पुरानी लग रही थी, जिसकी छतें भी चर्च की तरह हरे रंग की थीं। एक छोटे से गेट से एक संकरा रास्ता रिसेप्शन की ओर जा रहा था। गेट के ऊपर 'होटल ग्रैंड रीगल' लिखा हुआ था। दोस्तों ने एक-दूसरे को देखा और सहमति में सिर हिलाकर इस होटल को देखने का फैसला किया।
जैसे ही वे रिसेप्शन एरिया में दाखिल हुए, उन्हें वह मिल गया जिसकी उन्हें तलाश थी। छोटे से रिसेप्शन के पीछे, होटल के पिछले हिस्से में एक खूबसूरत टैरेस था। यह बिल्कुल वैसा ही था जैसा उन्होंने कल्पना की थी। एक तरफ कमरों की कतार थी और होटल के पिछले हिस्से की ओर खुला हुआ था। खुला होने के बावजूद, यह तीन तरफ से घिरा हुआ था और एक तरफ से पहाड़ों की ओर खुला था। इसमें दोनों दुनिया की खूबियां थीं। वे पहाड़ी के नज़ारे और मौसम का आनंद ले सकते थे, साथ ही होटल के भोजन, आराम और सुरक्षा का भी लाभ उठा सकते थे।

अजय ने रिसेप्शनिस्ट से कहा, 'हमें दो दिन के लिए दो कमरे चाहिए।' उन्होंने दो लोगों के लिए कमरा शेयर करने की योजना बनाई थी।
रिसेप्शनिस्ट के जवाब देने से पहले ही नितिन ने अजय और सोढ़ी से कहा, 'दोस्तों, आप औपचारिकताएं पूरी कर लीजिए, तब तक हम छत से नजारा देख लेते हैं।'
अजय ने कहा, 'पहले टैरिफ को अंतिम रूप दे देते हैं।'
नितिन ने कहा, 'हमें आप पर पूरा भरोसा है। आप जो भी फैसला करेंगे, हमें कोई आपत्ति नहीं है,' और उन्होंने अपना ड्राइविंग लाइसेंस अजय को सौंप दिया। अक्षत ने भी ऐसा ही किया और वे दोनों छत की ओर चल पड़े।
अजय होटल के रिसेप्शनिस्ट की ओर मुड़ा।
'क्षमा करें महोदय, हमारे पास केवल एक ही कमरा उपलब्ध है। ऊपरी मंजिलों के कमरों का नवीनीकरण हो रहा है, इसलिए कमरों की उपलब्धता सीमित है।'
अजय और सोढ़ी ने एक-दूसरे को देखा, उन्हें उम्मीद नहीं थी कि सप्ताह के बीच में भी ऐसा होटल भरा होगा। अक्षत और नितिन पहले से ही छत पर कुर्सियों पर बैठे थे, उनके चेहरों से साफ पता चल रहा था कि उन्हें भी होटल का माहौल पसंद आया था।

‘लेकिन हमें दो कमरे चाहिए,’ अजय ने रिसेप्शनिस्ट से कहा।

एक पल के लिए उसने एक ही कमरे में काम चलाने के बारे में सोचा, लेकिन फिर यह विचार छोड़ दिया। उसे सोते समय अधिक जगह की आवश्यकता होती थी। खासकर तब से जब उसकी पत्नी प्रीति उसे छोड़कर चली गई थी।
‘सर, कृपया एक बार कमरा देख लीजिए, यह काफी विशाल है। हम सभी के लिए अतिरिक्त बिस्तर की व्यवस्था कर सकते हैं,’ रिसेप्शनिस्ट ने सुझाव दिया।
‘कोई बात नहीं, अगर आपके पास दो कमरे नहीं हैं, तो हम कुछ अन्य होटलों से संपर्क करेंगे। हालांकि हमें यह प्रॉपर्टी पसंद है,’ सोढ़ी ने कहा।
रिसेप्शनिस्ट ने रिसेप्शन डेस्क के किनारे बैठे एक व्यक्ति की ओर देखते हुए कहा, "सर," वह व्यक्ति नोटबुक में बहुत ध्यान से कुछ लिख रहा था। वह होटल का मैनेजर था। उसने रिसेप्शनिस्ट की ओर देखा, कुछ पल रुका और फिर चुपचाप सिर हिलाया। उनके बीच कोई गुप्त बातचीत हुई थी।
रिसेप्शनिस्ट अजय की ओर मुड़ी और बोली, 'सर, उस तरफ एक और कमरा है। यह वास्तव में एक डबल रूम है। हम इसे आज रात आपको दे सकते हैं, लेकिन कल हम

आपको कोई दूसरा खाली कमरा दे देंगे।'
अजय ने कहा, 'उम्मीद है कि आप बड़े कमरे के लिए कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं ले रहे हैं।' अगर वे अतिरिक्त शुल्क भी लेते, तो भी वह मान जाता, क्योंकि वह जानता था कि उन्हें वह शानदार छत कहीं और नहीं मिलेगी। उसने झटपट रिसेप्शनिस्ट को अपने आईडी कार्ड सौंप दिए।
'नहीं महोदय, इसका शुल्क दूसरे वाले के समान ही होगा।'
'क्या हम वहाँ... उस छत पर बैठकर खाना खा सकते हैं?' सोढ़ी ने छत की ओर इशारा करते हुए कहा।
'जी हां, हम आपको छत पर ही भोजन परोस देंगे।'
'यह इमारत काफी पुरानी लग रही है, है ना?' सोढ़ी ने रिसेप्शनिस्ट से पूछा।
"जी हाँ, बहुत पुराना, डेढ़ सौ साल पुराना।" उनकी आवाज़ में गर्व था। यह चर्च क्राइस्ट चर्च जितना ही पुराना था। हर चीज़ पुरानी ही दिखती थी। दीवारें मोटी थीं, नंगे भूरे पत्थरों से बनी हुई थीं। हॉल में लगे बिजली के स्विच भी पुराने डिज़ाइन के थे, बड़े काले वाले। शायद पुराने लुक को बनाए रखने के लिए उनका इस्तेमाल किया जाता था।
नितिन ने मजाक में कहा, 'मुझे उम्मीद है कि हमें यहां कोई भूत नहीं मिलेगा।'
नितिन के मजाक पर मैनेजर मुस्कुराया और अजय को कमरे की चाबियां सौंप दीं।
होटल का सामान्य कमरा उनके लिए एक बड़ा आश्चर्य था। रिसेप्शनिस्ट ने कमरे के आकार के बारे में जो कहा था, वह बिल्कुल सही था। यह न केवल उन चारों के लिए पर्याप्त बड़ा था, बल्कि एक ही कमरे में कुछ अतिरिक्त बिस्तरों के साथ उनके परिवारों को भी आराम से ठहराया जा सकता था। यहाँ तक कि संलग्न बाथरूम भी चार लोगों के लिए पर्याप्त बड़े थे। ऐसा लगा जैसे फर्श की जगह का कुछ दुरुपयोग हो रहा हो। दूसरा कमरा दो बिस्तरों वाला था। और यह कोई साधारण दो बिस्तर नहीं थे, बल्कि इसमें दो अलग-अलग किंग साइज के चार-पायों वाले बिस्तर थे, जो उससे भी बड़े थे, और साथ ही एक बहुत बड़ा बाथरूम भी था। सोढ़ी और अजय कमरा देखकर दंग रह गए। उन्होंने इसे लेने का फैसला किया, क्योंकि दोनों को सोने के लिए पूरा एक दो बिस्तर मिल रहा था। नितिन और अक्षत ने दूसरा कमरा लिया।
जल्दी से तैयार होकर टैरेस पर डिनर के लिए मिलने का फैसला किया गया। सभी दोस्त अपने कमरों में गए और शाम के लिए तैयार हुए। अजय ने देखा कि सोढ़ी बाथरूम से

बाहर आया और अपने गीले अंडरवियर को अपने चारपाई वाले पलंग के एक खंभे पर सुखाने के लिए रख दिया।
‘ओए सोढ़ी, तुम क्या कर रहे हो?’ बाथरूम में ही कपड़े सुखाने के लिए काफी जगह थी।
‘देखो, हम यहाँ कुंवारे बनकर आए हैं, इसलिए हमारे कमरे में भी कुंवारेपन का एहसास होना चाहिए, और ये अंडरवियर हमारे कमरे को वही ज़रूरी टच दे रहा है,’ सोढ़ी ने जवाब दिया। सोढ़ी का हर काम करने का एक अनोखा अंदाज़ था। चूंकि अजय के पास अपना अलग से चारपाई वाला पलंग था, इसलिए उसने सोढ़ी को उस पर अपनी मर्ज़ी से सोने दिया।
तरोताज़ा होने के बाद, उन्होंने खाना मंगवाया और मॉल रोड पर लगे स्टॉलों से ढेर सारे स्नैक्स भी लाए और खूबसूरत छत पर बैठ गए। उस पल किसी को भी कैलोरी या कोलेस्ट्रॉल की चिंता नहीं थी। हवा ठंडी और सुहावनी बह रही थी। ज़्यादातर मेहमान जोड़े या परिवार थे, जो सफ़र से थक चुके थे और आरामदायक कमरों में रहना पसंद करते थे, इसलिए दोस्तों को पूरी छत अपने लिए मिल गई।
खाने-पीने का सामान मेज पर सज गया था और यादें ताजा करने का माहौल बन गया था। इतने लंबे समय बाद स्कूल के दोस्तों का मिलना उनके अंदर छिपे बच्चे को बाहर ले आया। उनके पास साझा करने के लिए कई कहानियां और अनुभव थे। चारों दोस्तों ने दस साल साथ बिताए थे और फिर बिना किसी संपर्क के अलग हो गए थे। उस समय तो उन्होंने एक-दूसरे को ठीक से अलविदा भी नहीं कहा था। उन दिनों ऑनलाइन सोशल नेटवर्किंग साइट्स और मोबाइल फोन नहीं थे। जब वे आखिरी बार मिले थे, तब उन्हें नहीं पता था कि पंद्रह साल बाद वे फिर मिलेंगे।
‘मुझे अपने स्कूल का पहला दिन याद है, मुझे सजा के तौर पर एक लड़की के बगल में बैठने को कहा गया था, क्योंकि मैं बहुत शोर मचा रहा था, यह एक मजेदार सजा थी। उन्हें यह सजा सीनियर कक्षाओं में भी जारी रखनी चाहिए थी। हा हा,’ नितिन ने गरमागरम पकौड़े चबाते हुए कहा।
'वरिष्ठ कक्षाओं में इस तरह की सजाओं से केवल शोर मचाने वाले लड़कों की संख्या ही बढ़ेगी।'
‘क्या तुम्हें सेक्शन-ए की शेफाली याद है?’ अक्षत ने कहा।

अजय ने कहा, 'मुझे वह और उसके पिता दोनों याद हैं, जिन्होंने बेचारे रोहित की पिटाई की थी।'
अक्षत ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'याद है वो चिट्ठी जो रोहित शेफाली को दे रहा था, जो प्रिंसिपल की डेस्क पर पहुँच गई थी और उसके पिता को प्रिंसिपल से मिलना पड़ा था?'
सोढ़ी ने कहा, 'मुझे याद है कि अगले दिन रोहित का चेहरा बंदर के पिछवाड़े की तरह लाल हो गया था।'
अजय के लिए यह मुलाकात बहुत मायने रखती थी। यह उनके लिए एक तरह की थेरेपी थी। पारिवारिक समस्याओं के कारण वे मानसिक पीड़ा और अवसाद से जूझ रहे थे। बेटी के जन्म के बाद अजय ने अपने परिवार के बेहतर भविष्य को सुनिश्चित करने का फैसला किया। उन्होंने कड़ी मेहनत की और कॉर्पोरेट जगत में उच्च पदों तक पहुंचे। लेकिन कहीं न कहीं उनके और प्रीति के बीच छोटी-मोटी अनबन शुरू हो गई। कुछ समय बाद दोनों अपनी समस्याओं पर बाहरी लोगों से चर्चा करने लगे और ये अनसुलझी असहमति में बदल गईं। अहंकार ने उनके जीवन को बर्बाद करने में बड़ी भूमिका निभाई और अंततः प्रीति अपनी बेटी के साथ घर छोड़कर चली गई, और कुछ दिनों बाद अजय को डाक से तलाक का नोटिस मिला।
अजय को याद नहीं था कि वह आखिरी बार इस तरह कब हंसा था। बातचीत सहजता से आगे बढ़ रही थी। पंद्रह साल से भी ज़्यादा समय में पहली बार अजय खुलकर बोलने को उत्सुक था... अपनी यादें और विचार साझा करने को, और वे दुख भरे या निराशाजनक नहीं थे। उन्होंने स्कूल के मज़ेदार उपनामों, अपनी शरारतों, मिली सजाओं, अपने शिक्षकों... अच्छे और बुरे, लड़कियों, आध्यात्मिकता और यहाँ तक कि कुछ मज़ेदार राजनीतिक विषयों पर भी चर्चा की। चर्चा का विषय मायने नहीं रखता था, मायने रखता था तो बस चर्चा के दौरान मिलने वाला आनंद।
ये पल संजोने और सहेजने लायक थे। दोस्ती की ये खुशी और आनंद एक हकीकत थी। उदासी से जूझ रहे अजय को यकीन करना मुश्किल हो रहा था कि पंद्रह साल से ज़्यादा समय बाद वो अपने दोस्तों से मिला है और कसौली में साथ में मौज-मस्ती कर रहा है। अजय ने वेटर को दिल खोलकर टिप दी। वेटर उनके लिए ड्रिंक्स और गरमागरम स्नैक्स लाता रहा। इन पलों में उन सबको एहसास हुआ कि सालों से बनाए गए बनावटी

व्यक्तित्व के पीछे, वे आज भी वैसे ही बेफिक्र बच्चे हैं जैसे स्कूल के दिनों में थे। उस शाम अजय ने खुद को फिर से पाया। उसे याद आया कि नौकरी, पत्नी और तलाक से पहले वो कैसा था। उसका परिवार उसकी दुनिया का अहम हिस्सा था, लेकिन अब उसे याद आया कि एक दुनिया ऐसी भी है जो उसके परिवार के चले जाने से खत्म नहीं होती। वो उससे कहीं बढ़कर था।
आधी रात के काफी बाद वे अपने कमरों में लौटे। अजय के लिए यह एक दुर्लभ रात थी जब उसने कम शराब पी और ज़्यादा बातें कीं। इसका मतलब था कि वह बेहतर होश में था। सोढ़ी ने अपने जूते उतारे और बिस्तर पर कूद गया। अजय ने लाइट बंद की और बिस्तर पर लेट गया।
अजय ने कहा, 'सोढ़ी, यह बहुत अच्छा समय था, इसे संभव बनाने के लिए धन्यवाद।'
'हम्म,'
हमें इसे साल में कम से कम दो बार करते रहना चाहिए।
'हम्म' इस बार उसकी 'हम्म' की आवाज़ धीमी थी। अजय ने कुछ सेकंड इंतज़ार किया और फिर बोला।
'सोढ़ी देखो, कुछ है... तुम्हारे पीछे कोई चुड़ैल है,' अजय ने सोढ़ी की नींद का स्तर जांचने के लिए कहा।
अगर सोढ़ी जाग रहे होते तो अजय को तुरंत कोई तीखा जवाब देते, जैसे कि चुरेल उनकी प्रेमिका है और अजय को उसके साथ भाभी जैसा बर्ताव नहीं करना चाहिए। लेकिन सोढ़ी कुछ नहीं बोले, वे गहरी नींद में सो रहे थे।
अजय कुछ देर बिस्तर पर लेटा रहा। थकावट के बावजूद, उसे नींद आने का नामोनिशान नहीं था। उसके अंदर नई ऊर्जा का संचार हो रहा था।
'काश ज़िंदगी भी ऐसी ही एक बड़ी पार्टी होती,' अजय ने मन ही मन फुसफुसाया। वह सुबह तक उनकी बातचीत जारी रखना चाहता था। लेकिन नितिन की अगली सुबह कुछ ऑनलाइन मीटिंग्स थीं, इसलिए उसने बाकी लोगों को सोने के लिए मना लिया। फिर भी अजय खुश था कि ऐसा हुआ।
उसने चारों ओर देखा, रात में कमरा और भी बड़ा लग रहा था। कसौली में, खाने-पीने की दुकानों समेत बाज़ार रात नौ बजे तक बंद हो जाता है। होटल के रिसेप्शनिस्ट ने उन्हें सख्त नियमों के बारे में बताया था कि रात में बाहर घूमना भी मना है। गश्त पर

निकले पुलिस अधिकारी किसी भी पर्यटक को होटल लौटने के लिए कह देंगे। यह नियम इसलिए है क्योंकि कसौली एक खूबसूरत हिल स्टेशन होने के साथ-साथ छावनी क्षेत्र भी है। इसका मतलब था कि यहाँ एकदम सन्नाटा था, जो शहरों और अन्य लोकप्रिय हिल स्टेशनों में बहुत कम देखने को मिलता है। पंखे की आवाज़ भी नहीं आ रही थी। ऊपर एक पुराना सीलिंग फैन लटका हुआ था, लेकिन उसे चलाने की ज़रूरत नहीं थी। कमरे में ठंडक थी, लेकिन इतनी भी नहीं कि हीटर की ज़रूरत पड़े। अजय ने स्मार्ट वॉच पहनी हुई थी, लेकिन अगर उसके पास एनालॉग घड़ी होती, तो वह उसकी टिक-टिक सुन पाता। दोस्तों के साथ शोरगुल भरी और मज़ेदार बातचीत के बाद, अजय को यह सन्नाटा थोड़ा अजीब लगा। उसने सोचा कि पंखा चलाकर देख ले, बस उसकी आवाज़ के लिए। लेकिन फिर उन्होंने यह विचार छोड़ दिया, यह सोचकर कि इससे कमरा बहुत ठंडा हो सकता है, और पुराना पंखा चरमराता हुआ और इतना शोर मचाने वाला हो सकता है कि सोढ़ी की नींद खुल जाए।

अजय ने सोने की कोशिश में अपनी आँखें बंद कर लीं। लेकिन नींद उस पर नहीं आई। एक मिनट तक कोशिश करने के बाद, उसने हार मान ली और आँखें खोल लीं। उसने अपने चारों ओर खड़े पलंग के खंभों को देखा, वे ऐसे लग रहे थे जैसे कोई पतले लंबे आदमी उसे देख रहे हों। वह अपनी इस अजीब कल्पना पर मुस्कुराया। कुछ देर बाद, उसने सोने की कोशिश करना छोड़ दिया। वह उठ बैठा और चारों ओर देखा। कमरा बड़ा था, लेकिन वहाँ कोई काम करने की मेज नहीं थी। इसके बजाय, पर्दे वाली खिड़की के पास एक कोने में दो बड़े सोफे रखे थे। सोफे का कपड़ा भी गहरे रंग का था, जिससे कमरे का अंधेरा और बढ़ गया था। अनिद्रा उसके लिए कोई नई बात नहीं थी, लेकिन आज कुछ अलग था। आमतौर पर जब उसे नींद नहीं आती थी, तो वह नींद लाने के लिए कुछ पी लेता था। लेकिन आज उसने कुछ ऐसा करने का फैसला किया जो उसने लंबे समय से नहीं किया था - अपनी डायरी को अपडेट करना। वह दिन के बारे में लिखना चाहता था, उन शानदार यादों को सहेजना चाहता था जो उसने बनाई थीं। अपने तलाक की कार्यवाही के दौरान और उससे पहले के कई तनावपूर्ण महीनों में, वह बैठकर कुछ भी लिखने के लिए ध्यान केंद्रित नहीं कर पाया था। साथ ही, ऐसी कोई यादें भी नहीं थीं जिन्हें सहेजने लायक हों।

अजय चप्पल लाना भूल गया था, इसलिए उसने जूते पहने और बेडसाइड टेबल पर रखे बैग से अपना लैपटॉप निकाला। वह दबे पांव सोफे तक गया और बिना लाइट जलाए उस पर बैठ गया। वह सोढ़ी को परेशान नहीं करना चाहता था, जो गहरी नींद में सो रही थी। उसने लैपटॉप चालू किया। बैकलिट कीबोर्ड की मदद से उसे अंधेरे में टाइप करने में आसानी हुई। दूर से देखने पर चारों ओर फैले घोर अंधेरे में लैपटॉप की रोशनी से सिर्फ अजय का चेहरा ही दिखाई दे रहा था।

वह डायरी में अपने दिल की बातें लिखने लगा। नई ऊर्जा, यादें, आनंद। शब्दों में खोया हुआ था कि तभी उसे एक आवाज़ सुनाई दी। ऐसा लगा जैसे किसी ने बड़े पियानो की चाबियाँ बेतरतीब ढंग से बजा दी हों। आवाज़ का स्रोत पास ही, बहुत पास, ठीक उसके पीछे खिड़की के बाहर से आ रहा था। उसने एक पल के लिए लिखना बंद कर दिया और ध्यान से सुनने लगा। उसने सोढ़ी की ओर देखा, यह देखने के लिए कि क्या वह आवाज़ से जाग गया है। लेकिन सोढ़ी अभी भी गहरी नींद में सो रहा था। सोढ़ी के हल्के खर्राटों के अलावा कोई आवाज़ नहीं थी। उसने कंधे उचकाए और डायरी पर ध्यान केंद्रित किया। कुछ क्षण बाद, उसे फिर से पियानो की आवाज़ सुनाई दी, बेतरतीब सुर। इस बार उसे आवाज़ बहुत स्पष्ट सुनाई दी। यह कमरे के अंदर से, ठीक उसके पीछे से आ रही थी। लेकिन कमरे में कोई पियानो नहीं था। वह सीधा खड़ा हो गया, हर छोटी आवाज़ को महसूस करने की कोशिश कर रहा था, तभी उसे अपनी गर्दन पर कुछ ठंडा सा महसूस हुआ। वह काँप उठा, ठंड से ज़्यादा डर से। यह ठंडी हवा का झोंका था जो उसकी गर्दन से टकराया। यह असामान्य था, इससे पहले कमरे में हवा का कोई झोंका नहीं था। कोई खिड़कियाँ नहीं थीं, केवल पर्दे वाली नकली खिड़कियाँ थीं। अजय का दिल ज़ोर से धड़क रहा था। उसने समय देखा, दो बजकर कुछ मिनट हो चुके थे। सोढ़ी अभी भी सो रहा था। अजय ने उसे जगाने के बारे में सोचा, लेकिन फिर यह सोचकर इरादा बदल दिया कि सोढ़ी बाकी यात्रा के दौरान इस बात पर उसका मज़ाक उड़ा सकता है।

अजय ने अपने फोन की फ्लैशलाइट चालू की और चारों ओर देखा। उसके सोफे के पीछे वाली दीवार पर एक पर्दा लगा था। वह उठा और पर्दा सरकाया। वह खिड़की नहीं थी। वह दो पैनल वाला दरवाज़ा था जिसके ऊपरी हिस्से में कांच लगा था। उसने अपने फोन की फ्लैशलाइट कांच के पास ले जाकर देखा। इस दरवाज़े के दूसरी तरफ

एक छोटा सा कमरा था। उसे आश्चर्य हुआ कि यह कमरा पहले कैसे छूट गया। शायद छत पर जाने की जल्दी में उन्होंने ये सब चीज़ें नहीं देखीं। इस कमरे में उसे आवाज़ का स्रोत मिला; कमरे के एक कोने में एक पुराना, धूल से सना पियानो रखा था। कमरा इतना छोटा था कि पियानो के अलावा उसमें मुश्किल से दो लोगों के बैठने की जगह थी। लेकिन पियानो कौन बजा रहा था? उसने थोड़ी देर सोचा और फिर अंदाज़ा लगाया कि आवाज़ किसी बिल्ली या ऐसे ही किसी जानवर के पियानो की चाबियों पर पैर रखने से आई होगी। लेकिन बिल्ली अंदर कैसे आई?

उसने आगे देखा, अपने सामने, उस छोटे से कमरे के उस पार एक और वैसा ही दरवाज़ा था। जब उसने ध्यान से देखा, तो पाया कि वह थोड़ा खुला हुआ था। उसे थोड़ी राहत मिली क्योंकि रहस्य सुलझ गया था। इससे ठंडी हवा और पियानो की आवाज़ दोनों का कारण समझ में आ गया। कोई दरवाज़ा बंद करना भूल गया था, और इसी वजह से कोई बिल्ली या कोई जानवर अंदर घुसकर पियानो की चाबियों पर कूद गया था। उसने मन ही मन इस लापरवाही की शिकायत होटल मैनेजर से करने का फैसला किया। यह सोचकर कि बिल्ली फिर से उसी दरवाज़े से आकर पियानो पर कूद सकती है, उसने दूसरा दरवाज़ा बंद करने का फैसला किया। उसने दरवाज़े के बोल्ट नीचे खींचे और धीरे से उसे खोल दिया। उसने यह काम सावधानी से किया, बिना कोई आवाज़ किए, और छोटे से कमरे में कदम रखा। पियानो उसके बाईं ओर था। उसने इतना बड़ा पियानो पहले कभी नहीं देखा था। यह उसकी उम्मीद से कहीं ज़्यादा बड़ा लग रहा था। उसने अपनी उंगली हल्के से उस पर फिराई। उस पर धूल की मोटी परत जमी हुई थी। पियानो के ऊपर एक पेंटिंग टंगी हुई थी। उसने अपने फोन की लाइट उसके पास लाई। उसे दो चेहरे बिना किसी भाव के उसकी ओर घूरते हुए दिखाई दिए। यह विक्टोरियन युग की दो ब्रिटिश महिलाओं की एक पेंटिंग थी। उनके ब्रिटिश होने का प्रमाण उनके लंबे कोट, गले में लटकती झालरदार चीज़ और सबसे बढ़कर सजी हुई टोपियों से मिल रहा था। दोनों में से एक कम उम्र की लग रही थी, जिसके गाल गुलाबी थे। वे शायद माँ और बेटी थीं। उसने मन ही मन तय किया कि सुबह रिसेप्शनिस्ट से उनके बारे में पूछेगा।

कमरे में पुरानी धूल और नमी की गंध आ रही थी। और इसमें ठंड होना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, क्योंकि दूसरा दरवाजा थोड़ा खुला हुआ था। वह दूसरे दरवाजे की

ओर बढ़ा और बाहर देखा। दरवाजा एक खुले मैदान में खुलता था। जैसे ही वह दरवाजा बंद करने वाला था, उसे एक आवाज सुनाई दी... एक महिला की हंसी। यह दूर से आ रही थी। ऐसा लग रहा था कि हमारे जैसे और भी लोग रात में पार्टी कर रहे थे। जब वह कुछ देर वहीं खड़ा रहा, तो उसे कई और आवाजें सुनाई दीं... गिलासों की खनक, और भी हंसी... कुछ लोगों के बोलने की आवाजें। हालांकि अजय को समझ नहीं आ रहा था कि लोग क्या बोल रहे हैं, लेकिन उनका लहजा निश्चित रूप से ब्रिटिश था। वे शायद विदेशी थे... इसमें कोई हैरानी की बात नहीं थी, चर्च में उस बूढ़े आदमी ने हमें बताया था कि दुनिया भर से पर्यटक पुराने क्राइस्ट चर्च को देखने के लिए कसौली आते हैं।

अजय को लगा कि रिसेप्शनिस्ट ने उन्हें उस खूबसूरत बगीचे के बारे में नहीं बताया था जो उनके विदेशी या वीआईपी ग्राहकों को निजी पार्टियों के लिए एकांत देने के लिए बनाया गया है। एक पल के लिए उसने अपने कमरे में वापस जाने का सोचा, लेकिन फिर आधी रात की इस पार्टी को देखने का फैसला किया। वैसे भी उसे नींद नहीं आ रही थी, उसने सोचा कि शायद थोड़ी देर टहलने से उसे बाद में नींद आ जाएगी।

वह दरवाजे से बाहर निकला। ठंड थी... छत से भी ज़्यादा ठंड। उसने अपने ऊनी और ऊनी पजामे के साथ-साथ जूते पहनने के लिए खुद को धन्यवाद दिया। आवाज़ें ऊँचे देवदार के पेड़ों की कतार के पीछे से आ रही थीं। उसने अपने फोन की फ्लैशलाइट चालू की। पेड़ों तक जाने वाला एक संकरा रास्ता था। आसमान स्याही जैसा काला था, चाँद नहीं था। कुछ कदम चलने के बाद, अजय ने होटल की इमारत की धुंधली रूपरेखा पर पीछे मुड़कर देखा। एक खिड़की से आती एक अकेली पीली रोशनी के अलावा, चारों ओर पूरी तरह अंधेरा था। वह आवाज़ों की दिशा में आगे बढ़ा और अब वे थोड़ी नज़दीक लग रही थीं। अचानक सरसराहट की आवाज़ ने उसे चौंका दिया। उसकी धड़कन तेज़ हो गई। वह आसानी से डरने वाला नहीं था, लेकिन अनजान जगह ने उसे थोड़ा सतर्क कर दिया था। अंधेरे ने सारी सीमाएँ मिटा दी थीं। सब कुछ घुलमिल गया था। आवाज़ फिर आई। यह उससे बहुत ऊपर पेड़ों की चोटियों से आ रही थी। उसने अपने फोन की फ्लैशलाइट ऊपर की ओर की। पेड़ विशाल थे, और फ्लैशलाइट छोटी थी। वह कुछ भी नहीं देख पा रहा था। उसने कहा, "ज़रूर कुछ बंदर या बबून एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूद रहे होंगे," और आगे चलने लगा। लगभग दस मीटर और

चलने के बाद, उसने आगे पेड़ों के तनों की परछाईं बनाती हुई हल्की रोशनी देखी। वह दृश्य देखने के लिए एक पेड़ के पीछे रुक गया।
ज़मीन से निकले छोटे-छोटे खंभों पर बगीचे की बत्तियाँ लगी हुई थीं। हर बत्ती से हल्की लौ निकल रही थी और थोड़ा धुआँ निकल रहा था, मानो वो किसी गैस या तेल से चल रही हो। बत्तियाँ बगीचे को रोशन करने के लिए काफ़ी तेज़ नहीं थीं, लेकिन रास्ता दिखाने और उसे सुंदर बनाने के लिए काफ़ी थीं। जैसा अजय ने सोचा था, ये एक निजी पार्टी थी। लोग विदेशी लग रहे थे, शायद ब्रिटिश। उनके पहनावे से लग रहा था कि ये कोई थीम पार्टी है। ज़्यादातर लोगों ने काले रंग के लंबे कोट और ऊँचे कॉलर पहने हुए थे... जो आजकल ब्रिटिश लोगों के लिए भी थोड़ा असामान्य है। सफ़ेद कपड़े से ढकी मेज़ों पर ढेर सारा खाना और पेय पदार्थ रखे हुए थे। अजय ने सोचा कि उन्होंने पूरी निजता के लिए ये समय चुना होगा। वह पेड़ों की कतार के पीछे छिपकर नज़ारे को देखने लगा। चूंकि बत्तियाँ ज़मीन से सिर्फ़ दो या ढाई फ़ीट ऊपर थीं, इसलिए लोगों के चेहरे साफ़ दिखाई नहीं दे रहे थे। पुरुष और महिलाएँ कुर्सियों पर बैठे थे, जबकि कुछ बच्चे इधर-उधर खेल रहे थे। पेय पदार्थों का दौर खत्म होने के बाद, किसी ने संगीत बजाने को कहा। कहीं से मधुर और सुरीला संगीत सुनाई देने लगा। ऐसा लग रहा था कि मेजों या झाड़ियों के नीचे कुछ वायरलेस स्पीकर रखे हुए थे। पुरुष और महिलाएं उठकर नाचने लगे। यह एक धीमा, रोमांटिक युगल नृत्य था। यह देखने में बहुत सुंदर दृश्य था। न तो तेज़ संगीत बज रहा था और न ही डीजे। लोग बिना आवाज़ ऊँची किए आपस में बातचीत कर सकते थे।
जब बड़े लोग नाच रहे थे, बच्चे इधर-उधर दौड़ रहे थे और एक-दूसरे के साथ छोटे-मोटे खेल खेल रहे थे। अजय भी संगीत की धुन पर झूमने लगा। कुछ पल इस दृश्य का आनंद लेने के बाद उसने कमरे में लौटने का फैसला किया। जैसे ही वह मुड़ा, एक लड़की दौड़ती हुई पेड़ों के बीच से आई और अजय के ठीक सामने वाले पेड़ के पीछे खड़ी हो गई। उनकी नज़रें एक पल के लिए मिलीं। अजय को डर था कि वह किसी निजी पार्टी में झाँकते हुए पकड़ा न जाए। लेकिन उसने अजय की ओर देखा और मुस्कुराई, उसकी आँखों में चंचलता और शरारत भरी थी। उसका चेहरा बेदाग, गोरा और गुलाबी गालों वाला था। उसकी मुस्कान में गालों पर हल्का सा डिंपल था। अजय ने भी विनम्रतापूर्वक मुस्कुराते हुए जवाब दिया। वह लगभग 15 या 16 साल की लग रही

थी। वह लंबी थी, अजय के कंधों से थोड़ी ऊपर तक। उसकी पोशाक हरे रंग की थी, जिसके ऊपर ऊँची गर्दन वाली चमकदार सफेद कमीज़ और लंबी ढीली आस्तीनें थीं। कमर पर वह एकदम फिट थी, और पार्टी की विक्टोरियन थीम से मेल खाती हुई रेशमी स्कर्ट थी।

उसके बाल काले थे। अजय को उसके बालों का रंग तो पता नहीं था, लेकिन वो सुनहरे तो बिल्कुल नहीं थे। उसने जो छोटी सी टोपी पहन रखी थी, उस पर एक गुलाब का फूल लगा हुआ था। उसने अजय की तरफ देखा और उसे चुप रहने का इशारा किया। उसके चेहरे पर हमेशा एक प्यारी सी मुस्कान रहती थी। ऐसा लग रहा था मानो वह किसी से छिप रही हो।

अजय ने भीड़ की ओर देखा, बुजुर्गों की काली आकृतियाँ नाचना बंद कर चुकी थीं। वे अब एक घेरे में खड़े थे। ऐसा लग रहा था कि वे किसी महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा कर रहे हैं, जबकि बच्चे इधर-उधर दौड़ते रहे।

अजय ने उस लड़की को दोबारा देखा, उसे एक अजीब सा एहसास हुआ। लेकिन उसे याद नहीं आ रहा था कि उसने उसे कब देखा था। उसे लगा कि शायद उसने किसी ब्रिटिश फिल्म में उसके जैसी किसी लड़की को देखा होगा।

एक लड़का, शायद लड़की की ही उम्र का, पार्टी में इधर-उधर घूम रहा था और उसे ढूंढ रहा था। उसने काले रंग का फ्रॉक कोट पहना हुआ था, जिसके नीचे एक वेस्ट कोट और सीधी पैंट थी। जब लड़का उसके करीब आया तो लड़की खिलखिला उठी, लेकिन वह उसे ढूंढ नहीं पाया। अजय ने लड़की की तरफ देखा और वह भी मुस्कुराया, मानो वह उस खेल या मजाक का हिस्सा हो जो लड़की उस लड़के के साथ कर रही थी।

'किम... तुम कहाँ हो?' लड़के ने ब्रिटिश लहजे में कहा। वह लड़की को न ढूंढ पाने से निराश लग रहा था। लड़की खिलखिलाकर हंस पड़ी।

'किम...' उसने एक बार फिर चिल्लाकर कहा।

'सब खत्म हो गया, मैं अब वापस जा रहा हूँ,' उसने पैर पटका और चलने लगा।

अजय की ओर देखते हुए वह फिर खिलखिलाकर हंस पड़ी।

'बेवकूफ लड़का,' लड़की ने कहा।

समझ न आने पर अजय ने सिर हिला दिया। वह लड़की की सुंदरता से मंत्रमुग्ध हो गया था। उसे उससे बात करने की तीव्र इच्छा हो रही थी।

तो, आप किम हैं?
“ओह, शुभ संध्या महोदय, जी हां, मैं मिस किम हूं। आपसे मिलकर खुशी हुई,” उसने दोनों हाथों से अपनी स्कर्ट पकड़ते हुए और झुककर अभिवादन करते हुए कहा।
अजय उसके हावभाव देखकर दंग रह गया। ऐसा लग रहा था मानो वह थीम पार्टी के लिए अपने किरदार में ढली हुई हो।
मैं यूं ही घूम रहा था और मुझे यह पार्टी दिखाई दी। संगीत बहुत अच्छा लग रहा था। अगर मैंने दखल दिया हो तो क्षमा करें।
'अरे, इसमें कोई परेशानी नहीं है। आप हमारे साथ शामिल हो सकते हैं।'
तभी, उनकी बातचीत एक चीख से बाधित हो गई। घेरे में खड़ी महिलाओं में से एक जमीन पर गिर पड़ी।
‘हे भगवान, वहां क्या हो रहा है?’ ये शब्द अजय के मुंह से निकले।
फिर एक और चीख के साथ, एक आदमी ज़मीन पर गिर पड़ा। लेकिन हैरानी की बात यह थी कि उनके बगल में खड़े बाकी लोगों ने उन्हें उठने में मदद नहीं की और न ही उनका हालचाल पूछा। इसके बजाय, कुछ हल्की हंसी और ठहाके सुनाई दिए। किम भी चौंकने के बजाय मुस्कुरा रही थी। उसकी मुस्कान से उसके गालों के डिंपल और भी ज़्यादा उभर रहे थे।
‘वहाँ क्या हो रहा है?’ अजय ने फिर पूछा।
‘यह एक खेल है, महोदय, वे ठीक हैं। वे इसे हर रात खेलते हैं,’ उसने कहा।
'खेल?'
'ओह हां, वे विंक मर्डर खेल रहे हैं, एक मजेदार खेल।'
‘ओह,’ अजय को खेल के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। उसने फिर से समूह की ओर देखा। एक आदमी घेरे के बीचोंबीच खड़ा दिखाई दिया। उसने ‘तुम्हें ढूंढ लिया...’ जैसा कुछ चिल्लाया और फिर सब हंस पड़े। गिरी हुई औरत और आदमी भी उठ खड़े हुए।
‘आप क्या काम करते हैं श्रीमान? क्या मैं जान सकती हूँ?’ लड़की ने कहा।
‘अरे, मुझे ‘सर’ कहने की जरूरत नहीं है। आप मुझे अजय कह सकते हैं। और मैं एक इंजीनियर हूं, एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में काम करता हूं।’
किम अजय को देखती रही, वह उसमें दिलचस्पी लेती हुई प्रतीत हुई। अजय को लगा कि उसे और अधिक समझाने की आवश्यकता है।

‘मैं यहाँ दोस्तों के साथ हूँ, हम काम से छुट्टी ले रहे हैं,’ अजय ने सोचा। उसकी आँखों में उदासी की एक झलक दिखाई दी। अजय ने अपने होंठों पर हल्की सी मुस्कान लाकर अपने विचारों को छुपा लिया।
लड़की ने सीधे अजय की ओर देखा। वह करीब आई और उसका हाथ पकड़ लिया। अजय को छूते ही वह ऐसे कांप उठी जैसे अजय के हाथ बर्फ के बने हों। अचानक उसकी आँखों की चंचलता गायब हो गई। वह अजय को देखती रही। उसकी आँखों में कोई शर्म नहीं थी, ऐसा लग रहा था जैसे वह अजय की आँखों में कुछ खोज रही हो।
‘शिव...’ उसने फुसफुसाते हुए कहा।
'क्या?'
‘कोई बात नहीं, क्या हम यहाँ थोड़ी देर टहल सकते हैं?’ लड़की ने कहा।
‘क्या उन्हें तुम्हारी याद नहीं आएगी?’ अजय ने लॉन की ओर इशारा करते हुए कहा।
नहीं, एक बार जब वे खेल खेलना शुरू कर देते हैं, तो वे घंटों तक, शायद पूरी रात, उनमें खोए रहते हैं।
पार्टी की नज़र से ओझल पेड़ों की कतार के पीछे वे चल रहे थे। अजय ठंड से बचने के लिए अपने हाथों को आपस में रगड़ रहा था, जबकि लड़की आराम से थी।
‘क्या तुम्हें ठंड लग रही है?’ उसने पूछा।
‘थोड़ी ठंड है, लेकिन मुझे अच्छा लग रहा है। दिल्ली की गर्मी से तो यह कहीं बेहतर है। आपका क्या ख्याल है?’ अजय ने कहा।
‘मुझे इस सर्दी की आदत हो गई है।’ उसने भावहीन चेहरे से जवाब दिया।
वे कुछ देर तक चुपचाप चलते रहे।
‘तुम उदास लग रही हो।’ लड़की ने अचानक कहा।
'क्या?'
‘ऐसा लगता है कि आप किसी बात से बहुत परेशान हैं।’
अजय अंदर तक हिल गया था। उसकी आधी उम्र की यह लड़की, एक विदेशी, उसके जीवन के बारे में कैसे जान सकती है?
‘नहीं, मेरा मतलब हां है, आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?’
'यह तुम्हारी आँखों में साफ दिख रहा है, तुम यहाँ हो, रात में अकेले घूम रहे हो, नींद नहीं आ रही है, जबकि तुम्हारे दोस्त अपने कमरों में गहरी नींद में सो रहे हैं। यह

समझने के लिए ज्यादा बुद्धि की जरूरत नहीं है कि तुम किसी बात से परेशान हो।'
दरअसल, मेरी अभी-अभी शादी टूटी है। लेकिन यकीन मानिए, आज मेरी जिंदगी का सबसे खुशी का दिन है।
'यह मेरे लिए भी सबसे खुशी की बात है,' उसने फुसफुसाते हुए कहा।
'क्या?'
'कुछ नहीं, बताओ तुम्हारा सबसे खुशी का दिन कौन सा है?' किम ने पूछा।
'वाह, इतने दिनों बाद अपने दोस्तों से मिला, हमने पार्टी की। इतने दिनों बाद आज हँसा।' अचानक अजय को लगा जैसे वह खुद से बात कर रहा हो। किम ने सिर हिलाकर अजय को आगे बोलने के लिए प्रोत्साहित किया।
उन्होंने आगे कहा, 'और अब, संयोग से मेरी आपसे मुलाकात हो गई। यह भी मेरे लिए खुशी की बात है।'
'फिर भी, तुम चिंतित हो,'
अजय मुस्कुराया। वह सही कह रही थी। खुशी के पलों के बावजूद, अजय के मन में आने वाले खतरे का डर बना हुआ था। वह एक नाजुक कांच के गिलास की तरह था, जो थोड़ी सी लापरवाही से कभी भी टूट सकता था और उसे बचाना नामुमकिन था।
अजय ने गहरी सांस ली और बोला, "मैंने अपने जीवन में इतनी बदकिस्मती देखी है कि जब भी मेरे साथ कुछ अच्छा होता है, तो मुझे थोड़ा डर लगता है। ऐसा लगता है जैसे मुझे खुश होने से डर लगता है। कहीं न कहीं मैं यह बात भूल नहीं पाता कि यह खुशी हमेशा नहीं रहेगी। मुझे अभी भी दिल्ली में अपने अकेले घर लौटना है।" अपनी कमजोरी बताते हुए अजय की आंखों में आंसू आ गए। लड़की चलना बंद करके अजय की ओर मुड़ी। उसकी निगाहें अजय पर टिकी थीं। उसके चेहरे पर एक समझदारी भरी मुस्कान थी।
अजय ने आगे कहा, 'मैं चाहता हूँ कि यह खुशी कभी खत्म न हो। काश यह रात हमेशा के लिए चलती रहे, बस यही मेरी ख्वाहिश है।' वह मुस्कुराया, इस बात से हैरान था कि अंधेरे ने उसकी झिझक को दूर कर दिया था, और वह अपने दिल की बातें एक अजनबी से साझा कर रहा था, जिससे वह आधी रात को एक पार्टी में मिला था, जहाँ उसे बुलाया भी नहीं गया था।

किम आगे आई और अजय का हाथ पकड़ लिया। ‘आप जानते हैं, श्रीमान, दुःख की अपनी एक अलग ही शक्ति होती है। यह दिखावटी चीजों को नष्ट कर देता है और आपको वास्तविकता के करीब ले आता है, उस चीज़ के करीब जो आप वास्तव में चाहते हैं। यदि आप ऐसा ठान लें तो आप इस तरह हमेशा खुश रह सकते हैं। कभी-कभी सच्ची खुशी की शुरुआत दुःख की गहराइयों से होती है।’
अजय ने सिर हिलाया और उसकी बातों को समझने की कोशिश की। उसे एक युवा लड़की से ऐसी बातचीत की उम्मीद नहीं थी। उसने कुछ पल सोचा और महसूस किया कि वह सही कह रही थी। दुख ने उसे अपने सच्चे स्वरूप को पहचानने में मदद की थी।
कुछ क्षण बाद, उन्होंने फिर कहा, 'इसमें कुछ हद तक समझदारी है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि किसी को दुख की तलाश में रहना चाहिए।'
'जी हां, लेकिन सचमुच दुखी होना दुर्लभ है, उसके लिए भी ईश्वर का आशीर्वाद चाहिए।'
‘तुम्हारे बात करने का एक खास तरीका है, लेकिन मुझे लगता है कि तुम इसे समझने के लिए अभी बहुत छोटे हो,’ अजय हंसते हुए बोला।
उसने एक पल के लिए अजय की ओर देखा, अजय के चेहरे पर उदास मुस्कान को निहारा।
उन्होंने कहा, 'मैं चीजों को वैसे ही देखती हूं जैसी वे हैं।'
अजय चुप रहा, उसे समझने की कोशिश कर रहा था। उसने उसकी ओर देखा। वह शांत भाव से चल रही थी, उसकी निगाहें आसपास के घने पेड़ों के तनों पर टिकी थीं और उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान थी।
‘चलो बाहर टहलते हैं,’ उसने कहा।
‘बाहर निकलना? उन्होंने कहा कि रात में इसकी अनुमति नहीं है।’
‘मेरे साथ चलो, हमें कोई नहीं देखेगा। कसौली की असली खूबसूरती रात में ही दिखती है।’
अजय मान गया। लड़की ने उसका हाथ पकड़ा और वे चलने लगे। यह अजीब था, एक अनजान लड़की उसका हाथ थामे हुए थी, फिर भी अजय को लगा जैसे यह बिल्कुल स्वाभाविक था, मानो वह उसके साथ ऐसे ही चलने का आदी हो। यह उन दुर्लभ मौकों

में से एक था, जब अजनबी लोग सच्चे दोस्तों की तरह मिलते हैं, जैसे लंबे समय बाद एक-दूसरे को देख रहे हों। यह किसी सपने जैसा था। उस शाम अजय के लिए सब कुछ सपने जैसा था।

वे होटल के गेट के बाहर थे। अजय को याद नहीं था कि वे होटल से कब निकले थे। उसने पीछे मुड़कर देखा, होटल का गेट अंधेरा और बंद था। किम अभी भी उसका हाथ पकड़े हुए थी। शायद उसे समय का एहसास ही नहीं रहा था। रात का अंधेरा और उनकी बातचीत कहीं न कहीं समय की सीमाओं को तोड़ चुकी थी। वह बार-बार पीछे मुड़कर देख रहा था, उसे आधा डर था कि कोई आकर उसकी गर्दन पकड़ लेगा, शायद होटल का गार्ड या सोढ़ी, लेकिन कोई नहीं आया।

दिनभर के सफर और दोस्तों के साथ हंसी-मजाक के लंबे दौर के बावजूद अजय बिल्कुल भी थका हुआ नहीं था। बल्कि वह ऊर्जा से भरपूर महसूस कर रहा था... उसे जरा भी नींद नहीं आ रही थी। जैसे-जैसे वह चलता गया, उसे हल्कापन महसूस होता गया, मानो किसी ने उसकी पीठ पर रखे रेत के बोरे में छेद कर दिया हो। वे घुमावदार ढलानों पर ऐसे चल रहे थे मानो उनका कोई वजन ही न हो। अजय को आश्चर्य हुआ कि उसकी सांस भी नहीं फूली।

वे कसौली की हर गली से गुज़रे। हर जगह बंद थी, बाहर होने पर ऐसा लग रहा था मानो किसी खूबसूरत रोशनी से सजे बड़े रिसॉर्ट में हों। उन पलों में समय का कोई आसार नहीं था। वह एक खूबसूरत, अंतहीन रात थी। अजय को होटल लौटने की ज़रा भी परवाह नहीं थी।

दो बार पुलिस की गश्ती जीप उनके सामने से गुजरी। लेकिन पुलिस ने उन्हें परेशान नहीं किया। अजय और किम सूर्यास्त स्थल पर पहुँच गए, जहाँ सूरज तो नहीं था, लेकिन नीचे घाटी में छोटी-छोटी रोशनी की एक खूबसूरत चादर फैली हुई थी। लड़की अभी भी अजय का हाथ पकड़े हुए थी। बहुत समय हो गया था जब किसी ने इस तरह उसका हाथ पकड़ा था।

उसने उसकी ओर देखा।

‘अब आपको कैसा लग रहा है?’ उसने कहा।

‘बेहद आनंददायक। मैंने कसौली को रात में कभी नहीं देखा था, फिर भी ऐसा लगता है जैसे मैंने यह नजारा पहले भी देखा हो,’ अजय ने फुसफुसाते हुए कहा।

‘हो सकता है आप यहाँ रहे हों,’
‘मैं यहाँ पहले भी आ चुका हूँ, लेकिन आज मुझे और भी ज्यादा... घर जैसा महसूस हो रहा है, चिंताओं से मुक्त।’
‘यह तुम्हारा घर है, शिव’
अजय ने सिर हिलाया, उसे इस बात पर आश्चर्य नहीं हुआ कि उसने उसे दूसरे नाम से पुकारा।
‘याद है, जब हम चू-मंतर मंदिर गए थे और उस पेड़ पर चढ़े थे,’
उसने सिर हिलाया।
'गिरते समय तुम्हारे घुटने छिल गए।'
वह धीरे से मुस्कुराई, उसकी आँखों में आँसू चमक रहे थे। उसने अपनी पोशाक ऊपर उठाई और अपना घुटना दिखाया। खरोंच के निशान अभी भी मौजूद थे।
‘ओह, प्यारी किम,’ अजय ने आगे झुककर उसके माथे पर चुंबन किया। किम ने अपना सिर अजय की छाती पर रख दिया।
‘अरे, क्या हुआ?’ अजय ने उसकी सिसकियाँ सुनकर पूछा।
‘कुछ नहीं, कुछ नहीं हुआ, जिस दिन से तुम मुझे छोड़कर गए थे,’
कुछ क्षणों के लिए अजय स्थिर हो गया, नीचे घाटी में फैली विशाल रोशनी की चादर को देखता रहा। किम ने ऊपर उसके चेहरे की ओर देखा। वह असमंजस में था।
वह थोड़ा झुकी, अपने होंठ अजय के होंठों के करीब लाई और उसे चूम लिया।
अजय के मन में कई तस्वीरें उमड़ आईं। उसने खुद को एक बड़े घर में छोटी किम के साथ खेलते हुए देखा, जो होटल जैसा ही दिखता था। एक कमरे में एक बुजुर्ग अंग्रेज, किम के पिता, बड़े-बड़े नक्शे देख रहे थे। एक कमरे में एक बेहद पीली पड़ी हुई अंग्रेज महिला, किम की माँ, पलंग पर लेटी हुई थी, नौकर उनकी देखभाल कर रहे थे।
आसपास पेड़ काटे जा रहे थे। मजदूर सड़कें बना रहे थे। किम की हंसी। किम के साथ चू मंतर मंदिर जाना। किम का गिर जाना। उसे गोद में उठाकर घर लाना। किम की गुस्से वाली माँ से थप्पड़ खाना। बंद दरवाजे पर हाथ पटकना। रात में चुपके से घर में घुसना, किम के साथ घूमना। उसे चूमना।
उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे वह बंधा हुआ हो, रस्सियाँ उसकी त्वचा को काट रही हों, चारों ओर अंधेरा छाया हो, उसकी आँखों पर पट्टी बंधी हो। किसी ने उसे उठाया।

फिर गिरने से दर्द हुआ, अजय कराह उठा।
'मुझे आपसे मिलना ही था, शिव, मैंने भगवान से प्रार्थना की कि आपको फिर से मेरे पास भेजें, कृपया मुझे फिर से मत छोड़िए।'
'यह क्या हो रहा है? मेरे साथ क्या हो रहा है?' अजय ने पूछा।
अब तुम सब कुछ जान चुके हो, तुम ही हो शिव, मेरे प्रिय। मैंने तुम्हारा कितना इंतज़ार किया है। हमने अपनी सारी भावनाएँ त्याग दी हैं, अब केवल प्रेम शेष है, और अब हम हमेशा के लिए एक साथ हैं।
वह खड़ी हुई और आगे बढ़ गई। उसने पीछे मुड़कर देखा और अजय को अपने साथ आने का इशारा करते हुए हाथ बढ़ाया। अजय आगे बढ़ा और उसके साथ चल दिया। चलते हुए उसे ऐसा लगा जैसे उसके ऊपर से बहुत बड़ा बोझ उतर गया हो। वह नवजात शिशु की तरह तरोताज़ा महसूस कर रहा था। किम ने उसका हाथ थाम लिया और अपना सिर उसके कंधे पर रख दिया। अजय ने नीचे देखा और पाया कि उसका शरीर गहरी खाई में गिर रहा है।

***

अगली सुबह जब सोढ़ी उठे तो उन्हें अजय अपने साथ नहीं मिला। उन्होंने नितिन और अक्षत के कमरे भी देखे, अजय वहाँ भी नहीं था। उन्होंने बालकनी, छत और ऊपरी मंज़िल भी देखी। अजय कहीं नहीं मिला। सोढ़ी ने फिर से अपना कमरा देखा, अजय का बैग वहीं था। उसका लैपटॉप भी खुला हुआ सोफे के बगल वाली मेज पर पड़ा था। उन्होंने अपने फोन से अजय का नंबर डायल किया। फोन की घंटी कमरे के अंदर से आई, फोन बिस्तर के बगल वाली मेज पर पड़ा था।
'क्या हमारा दोस्त कल रात होटल से चला गया था?' सोढ़ी ने रिसेप्शनिस्ट से पूछा। नितिन और अक्षत भी अब उसके साथ थे।
भ्रम को समझते हुए, रिसेप्शनिस्ट ने सुरक्षा गार्ड को बुलाया। गार्ड ने पुष्टि की कि उसने रात में निकास द्वार बंद कर दिया था और सुबह उसे खोल दिया था। उसके अनुसार, रात के दौरान किसी ने भी दरवाजा नहीं खोला था।
नितिन ने कहा, 'इसका मतलब सिर्फ एक ही है, अजय होटल में कहीं है।'

रिसेप्शनिस्ट के साथ मौजूद मैनेजर ने तलाशी का आदेश दिया। उन्होंने सभी मंजिलों, मरम्मत के अधीन खाली कमरों, बालकनी, रसोई और छत की तलाशी ली। अजय का कोई पता नहीं चला। दोपहर के समय उन्होंने पुलिस को सूचना दी।
लेकिन अजय कभी नहीं मिला।

दीवार में लड़का

‘बेशक, मुझे याद है,’ मेरी नानी ने कहा।
‘फिर क्या हुआ?’ मैंने अपनी नानी से पूछा।
'वहाँ एक आदमी के पास एक बहुत बड़ी किताब थी। उसने किताब में कुछ पढ़ा और मुझे वहाँ ले जाने वाले लोगों को मुझे वापस भेजने का आदेश दिया।'
'क्यों?'
‘वे एक गलत बिमला को लेकर आए थे, उन्होंने मुझे बिमला समझ लिया था।’
'और तब?'
फिर क्या हुआ? उन्होंने मुझे वापस भेज दिया, और मैं फिर से जीवित हो गया।
और दूसरी बिमला का क्या हुआ?
'हां, इस गली के पीछे वाली गली में एक बूढ़ी औरत रहती थी, उसकी उसी दिन मौत हो गई।'
'बहुत खूब'
मैंने यह कहानी अपनी नानी से कई बार सुनी थी, लेकिन जब भी मैं उनसे मिलती, उनसे दोबारा सुनाने को कहती, क्योंकि इससे मेरे रोंगटे खड़े हो जाते थे। वह हमेशा पूरी ईमानदारी से कहानी सुनाती थीं, उन्हें पूरा यकीन था कि यह सच है। कहानी के अनुसार, उनकी मृत्यु केवल तीन वर्ष की आयु में हो गई थी और यमदूतों (मृत्यु के देवता यम के दूत) की गलती के कारण उसी दिन उनका पुनर्जन्म हो गया था।
‘कुछ नहीं कहूंगा... कुछ नहीं कहूंगा’ (कुछ नहीं कहूंगा... कुछ नहीं कहूंगा), मेरे नानाजी अंदर आए और कमरे में किसी खास चीज को देखे बिना बुदबुदाए। मेरी नानी-मां और मां ने भी नानाजी को देखा लेकिन कुछ नहीं कहा।
नानाजी बाहर गए, घर में थोड़ा घूमे और फिर कमरे में आ गए। थोड़ी देर बाद उन्होंने दीवार की ओर देखा और वही शब्द दोबारा कहे।

मैं उनसे पूछना चाहता था कि वे किससे बात कर रहे थे। लेकिन मेरी माँ और नानी ने मुझे चुप रहने का इशारा किया। उनके जाने के बाद नानी बोलीं, “वे ऐसी बातें बुदबुदाते रहते हैं, ये तो बुढ़ापे का असर है। पागल हो गए हैं। मेरे लिए बहुत मुश्किल हो रहा है।” उनकी उम्र लगभग नब्बे वर्ष थी, जबकि नानी पचहत्तर वर्ष की थीं।
मैं मुस्कुराया। अपनी असंवेदनशीलता के लिए मैं खुद को दोष नहीं दे सकता, मैं तो सिर्फ सात साल का था।
नानी के घर पहुँचने के पहले ही दिन मुझे समझ आ गया कि नानी-माँ ऐसा क्यों कह रही थीं। नानाजी लगातार कुछ न कुछ निरर्थक बड़बड़ाते रहते थे। मैं उन्हें अपने कमरे में अकेले में घर की खाली दीवारों से बात करते हुए सुनता था।
‘माफ़ कर देओ मैनु’ (कृपया मुझे क्षमा कर दें)।
‘चल नाथ जा एथोन’ (यहाँ से दफ़ा हो जाओ)।
‘चुप कर जा,’ (‘चुप हो जाओ’) यहाँ तक कि जब कोई बात नहीं कर रहा होता था। कभी-कभी तो तब भी जब वह कमरे में अकेला होता था।
'ओए, कोई ना...कोई ना' (अरे, यह ठीक है)।
नानाजी का झुर्रियों से भरा चेहरा कभी-कभी बिना किसी कारण के भी मुस्कुरा देता है। मेरी नानी ने मुझे बताया कि यह उनकी उम्र है और मुझे उन्हें परेशान नहीं करना चाहिए। उन्होंने कहा कि वे अपनी यादों में खोए रहते हैं और उन्हें याद करते हुए वे बोल पड़ते हैं।
इस बार जब उन्होंने मुझे देखा, तो मुझे पहचानने में उन्हें काफी समय लगा। शायद इसका कारण यह भी था कि मैं लगभग दो साल बाद उनसे मिलने गया था और काफी बदल गया था, और मेरी लंबाई भी काफी बढ़ गई थी। लेकिन घर में उनसे किसी को कोई परेशानी नहीं होती थी। वे सुबह-सुबह हैंडपंप के नीचे बैठकर नहाते थे और ज्यादातर समय अपने कमरे में ही रहते थे। वे दिन भर अपनी पसंदीदा बीड़ी पीते रहते थे। वे उन गिने-चुने लोगों में से एक थे जिन्हें लोग धूम्रपान के पक्ष में बताते हैं क्योंकि धूम्रपान का उन पर कोई स्पष्ट दुष्प्रभाव नहीं था और वे नब्बे साल के थे। हालांकि अब मुझे यह बात खटकती है, लेकिन उस समय मुझे उनके कमरे की हर चीज से आने वाली धुएं की महक अच्छी लगती थी। सामान्य आकार की ऐशट्रे की जगह मेरे नानाजी

सिगरेट की राख के लिए एक बड़े सफेद रंग के स्टील के बर्तन का इस्तेमाल करते थे। साधारण वाला काफी नहीं होता था।
हालांकि नानाजी और नानी-मां दोनों वहीं रहते थे, फिर भी हम उसे नानी का घर कहते थे। शायद इसलिए क्योंकि नानाजी अपने आप में ही रहते थे, और ज्यादातर समय नानी-मां ही हमसे बातचीत करती थीं।
यह घर एक बेहद संकरी गली के कोने पर था। यह शहर में हमारे अपार्टमेंट से काफी बड़ा था और इसका डिज़ाइन बहुत पुराना था, जिसमें बीच में खुला स्थान था और चारों ओर कमरे बने हुए थे। इसमें सात कमरे थे, सभी भूतल पर। इनमें से चार कमरे बहुत पुराने थे, जिनकी छत बीमों से टिकी हुई मेहराबदार थी, और तीन कमरे नए थे, जिनकी छतें सपाट थीं और दीवारों के ऊपर रोशनी और हवा के लिए विशेष खिड़कियाँ बनी हुई थीं। सड़क की ओर खुलने वाली दोहरी खिड़कियों पर ठोस गोल सलाखें लगी हुई थीं। इसमें दो बाथरूम और दो रसोईघर थे, जो मेहमानों के कमरों के लिए काफी बड़े थे। एक कमरा भंडारगृह-सह-मंदिर में परिवर्तित किया गया था।
अपने सुनहरे दिनों में, इस घर में मेरे दादा-दादी और उनके छह बच्चों का एक बड़ा परिवार रहता था। लेकिन अब उनकी तीनों बेटियाँ शादीशुदा थीं, एक बेटा नौकरी के लिए शिमला चला गया था, और दूसरा देश से बाहर कहीं बस गया था। मैं इस भाई के बारे में कभी कुछ जान नहीं पाया, क्योंकि मैं उससे कभी मिला ही नहीं। घर में सिर्फ मेरी दादी और दादाजी ही रहते थे, इसलिए सात कमरों में से पाँच कमरे बंद रहते थे। यह कोई ऐसी आदर्श जगह नहीं थी जहाँ कोई आम बच्चा छुट्टियाँ बिताना चाहे। मतलब, यह न तो कोई बीच रिसॉर्ट था, न कोई हिल स्टेशन, और न ही खेतों वाला कोई सुंदर गाँव का घर। लेकिन मुझे पुरानी चीज़ों से बहुत लगाव था, और उस जगह पर ऐसी बहुत सी चीज़ें थीं। सबसे पहले, किताबें, पुरानी किताबें, जिनमें ढेर सारी दिलचस्प कहानियाँ थीं, जिनमें से ज़्यादातर धार्मिक या पौराणिक थीं। एक कमरे में पौराणिक किताबों का एक बड़ा ढेर लगा था। यह कमरा आमतौर पर बंद रहता था, लेकिन मेरी माँ और मेरे लिए इसे खास तौर पर खोला गया था। किताबों में पुरानी किताबों की सी महक थी। दूसरी बात, पास के बाज़ार में एक छोटी सी कॉमिक्स की दुकान थी जो पचास पैसे प्रतिदिन के हिसाब से कॉमिक्स किराए पर देती थी, और तीसरी और मेरे लिए सबसे ज़रूरी चीज़ थी छत। चूंकि सभी कमरे भूतल पर ही थे, इसलिए खेलने के

लिए एक बड़ी छत थी। और मेरे शहर के घर के विपरीत, मैं आसानी से पड़ोसियों की छतों पर गली के अंत तक जा सकता था। यह छत ज़्यादातर खाली ही रहती थी, सिवाय एक छोटे से स्टोर जैसे कमरे के, जिसमें बहुत सारा पुराना सामान रखा था। मुझे वहां पंद्रह साल से भी अधिक पुराने दीवार पर लगे कैलेंडर पड़े हुए मिले।
कोने वाला मकान होने के कारण, सामने और बाईं ओर संकरी सड़कें थीं और पीछे और दाईं ओर सटे हुए मकान थे। वे मकान एक जैसे बने थे। छत से, मैं अगले मकान की छत पर कूद सकता था और इस तरह कूदते हुए गली के आखिरी मकान तक पहुँच सकता था। शहर में ऐसा करना नामुमकिन था।
अगले घर या गली के उस पार वाले घर का हाल मेरी नानी के घर जैसा ही था। सभी बड़े घर थे, जिनमें बच्चे या तो शादी करके घर से बाहर काम करने चले गए थे, जिससे घर के बड़े-बुजुर्ग अकेले रह जाते थे। दोपहर का समय बुजुर्गों के लिए आराम का समय होता है। उस समय सब कुछ एकदम शांत होता है। बड़े शहर में तो रात में भी ऐसी शांति नहीं मिलती। और यही वो समय था जब मैं घूमने निकल जाता था। मैं छत पर बने छोटे से कमरे में जाता और धूल से भरी पुरानी चीजों को खंगालता। कभी-कभी मुझे बहुत सारी छिपकलियां और उनके अंडे भी मिल जाते थे। लेकिन उस समय मुझे किसी चीज से डर नहीं लगता था। मैं एक छत से दूसरी छत पर कूदता हुआ गली के दूसरे छोर तक पहुँच जाता, जहाँ से मुझे दूर चूर्ण की फैक्ट्री दिखाई देती थी। इस दौरान, मैं अक्सर पड़ोसियों द्वारा छत पर रखे कच्चे मूंगफली खा लेता था। मैं इसे चोरी नहीं कहूँगा, क्योंकि मुझे पता है कि वे मुझे थोड़ी सी मूंगफली देने में कोई आपत्ति नहीं करेंगे। मैंने कच्चे मूंगफली का स्वाद पहली बार वहीं चखा था, और आज भी चखता हूँ।
एक दिलचस्प बात यह थी कि बगल वाले घर से कोई दीवार नहीं लगती थी। उसकी अपनी एक अलग दीवार थी जो मेरी नानी के घर की दीवार के समानांतर थी। दोनों दीवारों के बीच लगभग छह इंच का गैप था। मूंगफली से भरे हाथों और जेबों के साथ पीछे हटते समय, गलती से मुट्ठी भर मूंगफली उस गैप में गिर गई। मैंने गैप में झाँका। सूरज लगभग सीधे ऊपर था, इसलिए मैं गैप को ठीक से देख पा रहा था। उस खाली जगह के तल में कुछ मलबा पड़ा था। एक पल के लिए मैंने सोचा कि अगर कोई इस गैप में गिर जाए तो क्या होगा। यह सोचकर ही मैं काँप गया। फिर मैंने सोचा कि यह गैप मेरे जैसे किसी के गिरने के लिए काफी चौड़ा नहीं है। लेकिन मैं फंस सकता हूँ... या अगर

मेरी नई चप्पल उसमें गिर जाए, तो सब खत्म हो जाएगा। उसके बाद से, मैं उस गैप को पार करते समय बहुत सावधान रहने लगा।

छत पर घूमते-घूमते गर्मी से थककर मैं नीचे पुराने किताबों वाले कमरे में आ गया। मुझे पुरानी किताबों की खुशबू अच्छी लगती थी। तीन बड़ी खिड़कियों से आती धूप से कमरा जगमगा रहा था। यहीं से मेरी दूसरी खोज शुरू हुई। वहाँ बहुत सारे पुराण, बड़ी-बड़ी किताबें और बड़े-बड़े अक्षरों में लिखी हुई किताबें थीं, जिनमें से ज़्यादातर हिंदी में थीं, या कभी-कभी संस्कृत में हिंदी अनुवाद के साथ थीं। वहाँ पुरानी कहानियों की किताबें भी थीं। मेरी नानी-माँ को मेरी जिज्ञासा, खासकर किताबों के प्रति, पसंद नहीं आई। उन्होंने मुझसे कहा कि एक-एक करके किताब उठाओ, पढ़ो और फिर दूसरी को छुओ। लेकिन बिना सब कुछ थोड़ा-थोड़ा पढ़े मैं कैसे तय कर सकता था कि कौन सी पढ़ूँ?

मैं पुरानी किताबों को देख रहा था, तभी मेरी माँ नानी-माँ के साथ दूसरे कमरे में थीं और नानाजी अपने कमरे में सिगरेट पी रहे थे। मुझे हल्की सी खटखटाहट सुनाई दी। मैंने चारों ओर देखा, पर कुछ नहीं मिला। मैं वापस किताबों में देखने लगा, और खटखटाहट की आवाज़ फिर आई, इस बार थोड़ी तेज़। यह दीवार से आ रही थी। दीवारों के बीच में जगह होने के कारण, कभी-कभी पत्थर गिरने या चूहों या गिलहरियों के चलने की आवाज़ आती थी। लेकिन यह आवाज़ अजीब थी, एक लय में, जैसे कोई हथेली से दीवार पर ज़ोर से मार रहा हो। कोई चूहा या गिलहरी ऐसा नहीं कर सकती। थोड़ी देर बाद, आवाज़ बंद हो गई।

धीरे-धीरे मैं दीवार के पास गया, कोई आवाज़ नहीं थी। मैंने अपना कान दीवार पर लगाया, मैं यह देखना चाहता था कि आवाज़ सचमुच दीवार से आ रही है या नहीं। एक पल के लिए कोई आवाज़ नहीं आई। मैंने थोड़ी देर इंतज़ार किया, और जब मैं दीवार से हटने ही वाला था, तभी मुझे एक कराह सुनाई दी, एक कमज़ोर और निश्चित रूप से किसी इंसान की सिसकी, और वह ठीक दीवार के उसी हिस्से से आ रही थी। मैं डर से जम गया। मुझे हनुमान चालीसा याद नहीं थी, लेकिन मैंने सुना था कि उनका नाम ही बुरी आत्माओं को भगाने के लिए काफी है। मैंने 'जय बजरंग बली', 'जय बजरंग बली' का जाप किया। यह कहते ही मेरा डर दूर हो गया, और अगले ही पल मैं 'जय बजरंग बली' का जाप करते हुए कमरे से बाहर भागा।

मेरी मां और नानी दूसरे कमरे में थीं। मैंने उन्हें उस आवाज़ के बारे में बताया जो मैंने सुनी थी। मैं कांप रही थी।
'विहान, तुम क्यों डर रहे हो? तुमने एक बच्चे के रोने की आवाज सुनी, तो क्या हुआ?' मेरी मां ने कहा।
'लेकिन... लेकिन माँ, यहाँ दो दीवारें हैं, मैं उनके पार कैसे सुन सकता हूँ, उनके पीछे कौन हो सकता है?'
'पड़ोस में कुछ बच्चे होंगे। गर्मी की छुट्टियां चल रही हैं, कांता आंटी की बेटी ही होगी,' मेरी मां ने कहा।
लेकिन आवाज तेज थी, मैंने उसे साफ सुना।
'विहान, तुम्हें पता है यहाँ कितनी शांति है। चंडीगढ़ के विपरीत, यहाँ यातायात या कारों की कोई आवाज़ नहीं है। सब कुछ शांत होने के कारण, तुमने इसे स्पष्ट रूप से सुना होगा, कोई बात नहीं।'
यह सही हो सकता है। मैंने सोचा। मुझे लगा जैसे मैंने खुद को मूर्ख बना लिया हो, लेकिन उसके बाद मैंने उस कमरे में अकेले जाने से परहेज किया।
रात में, घर की आवाज़ कानों को फिर से सुहा देती है। एक बार मेरी माँ और नानी-माँ अपनी लंबी बातचीत के बाद सो गईं, जो हम सब के सोते समय हर दिन होती थी। नानी-माँ खास तौर पर अपनी चारपाई हमारे कमरे में लाती थीं, ताकि बत्ती बंद होने के बाद भी वे और मेरी माँ अपने पलंग पर लेटकर बातें कर सकें। माँ-बेटी का रिश्ता ऐसा ही होता है, आप उन्हें जितना समय चाहें दे दें, कुछ न कुछ चर्चा के लिए हमेशा रह ही जाता है, और बातें कभी खत्म नहीं होतीं। मैं अक्सर उनकी बातें खत्म होने से पहले ही सो जाती थी।
उस रात मेरी माँ और नानी-माँ के सो जाने के बाद भी मुझे नींद नहीं आई। मेरा मन तरह-तरह की आवाज़ें सुनता रहा। सबसे तेज़ आवाज़ थी खस्ताहाल पुराने पंखे की धीमी-धीमी घरघराहट। उसके बाद गली के कुत्ते कुछ मिनटों तक भौंकने के लिए बाहर इकट्ठा हो गए। कमरा सड़क के ठीक सामने था, सड़क पर होने वाली हर आवाज़ साफ़ सुनाई देती थी। आधी रात के कुछ देर बाद ही मुझे बाहर ईंटों वाली सड़क पर बाँस की डंडी के ज़ोर से टकराने की आवाज़ सुनाई दी, फिर एक आदमी के 'जागते रहो' चिल्लाने की आवाज़ आई। मेरी माँ ने बताया कि वह चौकीदार था, रात का

पहरेदार, अपनी ड्यूटी कर रहा था। मैंने माँ से पूछा कि क्या चंडीगढ़ में भी चौकीदार होता है? उन्होंने बताया कि हमारे यहाँ भी होता है और वह सीटी बजाता है। हालाँकि मैंने उसे वहाँ कभी नहीं सुना था। शायद दूसरी आवाज़ों और सड़क और हमारे कमरे के बीच ज़्यादा दूरी की वजह से।

मैंने सोने की कोशिश में अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं, लेकिन नींद नहीं आई। अचानक पंखे की आवाज़ बंद हो गई। मैंने आँखें खोलीं, सब कुछ एकदम शांत था, न धीमा हुआ और न रुका। इसके बाद मैंने देखा कि चारों ओर कोई आवाज़ नहीं थी। गली, कुत्ते, यहाँ तक कि झींगुर भी, सब शांत थे। तभी मैंने उसे देखा... या उसे।

दीवार से आवाज़ आ रही थी। मुझे एक बच्चे की आकृति साफ़ दिखाई दे रही थी। वह दीवार से दूर जाते हुए बेतरतीब ढंग से कांप रहा था। मैंने चिल्लाने की कोशिश की, लेकिन कोई आवाज़ नहीं निकली। मैंने उठने की कोशिश की, लेकिन मेरा शरीर हिल नहीं रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे मेरा दिमाग तो जाग रहा हो, लेकिन बाकी शरीर सुन्न हो गया हो। वह आकृति करीब आ रही थी। जैसे ही घर में आ रही स्ट्रीट लाइट की रोशनी में उसकी परछाईं गुजरी, मुझे उसका चेहरा दिखाई दिया। वह एक लड़के का चोटिल चेहरा था। उसकी आँखें मुझ पर टिकी हुई थीं। वह मेरे और करीब आ गया। मैं अभी भी जम गया था... एक उंगली भी हिला नहीं पा रहा था। उस आकृति के चेहरे पर क्रोध और उदासी का मिलाजुला भाव था। मैंने अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं, और वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। यह वही आवाज़ थी जो मैंने दिन में पहले दीवार से सुनी थी, लेकिन बहुत तेज़। मैं डरपोक बच्चा नहीं था, लेकिन उस आवाज़ से मैं लगभग बिस्तर गीला कर बैठा था। मैंने अपनी माँ और नानी को जगाने के लिए चिल्लाने की कोशिश की, लेकिन वे गहरी नींद में सो रही थीं, और मैं कोई आवाज़ नहीं निकाल पाया।

वह मेरे करीब आया और मेरे बिस्तर के बगल में खड़ा हो गया। अब मैं उसे साफ़-साफ़ देख पा रहा था। चेहरा चोटों से लाल था और उनमें से गहरा लाल खून बह रहा था। मेरी ओर टकटकी लगाए उसकी आँखें सामान्य से बड़ी थीं, मानो अपनी जगह से आधी बाहर निकल आई हों। नाक टूटी हुई थी और हड्डी के एक टुकड़े से लटक रही थी। ऊपरी होंठ का कुछ हिस्सा गायब था, जिससे उसके सामने के दांत और मसूड़े दिख रहे थे। उसका चेहरा किसी चक्की के पत्थर से घिसकर चपटा हो गया था। मैं कांप रहा

था, लेकिन फिर भी हिलने या कुछ बोलने में असमर्थ था। बच्चा अब रोना बंद कर चुका था और मुझे ध्यान से देख रहा था।
फिर वह नीचे झुका और अपना चेहरा मेरी बांह के पास लाकर अपना मुंह खोला। मैं बुरी तरह रो रही थी और कांप रही थी, लेकिन कुछ नहीं कर पा रही थी। मैंने अपनी आंखें बंद कर लीं, और फिर मुझे अपनी बांह में तेज दर्द महसूस हुआ। ऐसा लगा जैसे मेरी बांह से मांस का एक टुकड़ा चबाकर निकाल लिया गया हो। मुझे यकीन हो गया था कि अब मैं मरने वाली हूं।
तभी मुझे दरवाज़ा खुलने की चरमराहट सुनाई दी। मुझे लगा कि लड़का कमरे से बाहर जा रहा है। मैंने धीरे से आँखें खोलीं, लड़का अभी भी वहीं था, लेकिन वह दरवाज़े की तरफ देख रहा था, जहाँ मेरे नानाजी खड़े थे।
'अरे, भाग जाओ,' (अरे, भाग जाओ)
उस बच्चे ने मेरी नानीजी की ओर देखा, जो अभी भी वहीं खड़ी थीं।
'जाना है केन नाही' (क्या तुम जाओगे या नहीं?)
बच्चा पीछे हट गया, मानो हवा में तैर रहा हो, और दीवार के पास जाकर गायब हो गया।
'Fer na tang Karin munde nu,' (बच्चे को फिर परेशान मत करो)। मेरे नानाजी ने दीवार से कहा।
फिर नानाजी कमरे से बाहर चले गए। अचानक रात फिर से शोरगुल भरी हो गई, चरमराता पंखा चलने लगा, झींगुर चहचहाने लगे। मैंने शरीर को हिलाने की कोशिश की, और मैं हिला सका। शरीर अब अकड़ा हुआ नहीं था। एक सुकून की लहर दौड़ गई और मैं अगले ही पल सो गया।
अगली सुबह, मैं रोज़ से देर से उठा। मेरी माँ और नानी खुली जगह में चारपाई पर बैठी थीं। मैंने दीवार की तरफ देखा और फिर अपनी बांह पर। मुझे राहत मिली कि मेरी बांह पर उतने गहरे निशान नहीं थे जितना मुझे लग रहा था, लेकिन कुछ हल्के काटने के निशान ज़रूर थे। मैं बिस्तर से कूदकर अपनी माँ के पास गया। वह चाय पी रही थीं और नानी से कुछ बातें कर रही थीं, तभी मैंने अचानक उनकी बात काट दी और उन्हें सब कुछ बता दिया जो मैंने कल रात देखा था। मेरी माँ ने सोचा कि यह मेरी कोई शरारत थी या मुझे कोई बुरा सपना आया था। लेकिन जब नानी ने मेरे हाथ पर निशान देखे, तो वह अचानक गंभीर हो गईं। फिर उन्होंने हमें उस लड़के के बारे में बताया।

एक दोपहर जब सब सो रहे थे, लड़का अकेले ही छतों से कूद रहा था और जब वह गिरा तो किसी ने उसे नहीं देखा। दो दिन बाद वह दीवारों के बीच दबा हुआ मृत पाया गया।
“बेचारा बच्चा अपने हाथ-पैर और यहां तक कि चेहरा भी नहीं हिला पा रहा था। जब उसे पाया गया, तो उसका शरीर आंशिक रूप से सड़ चुका था और कीड़े उसे खा रहे थे। मैं हमेशा प्रार्थना करती थी कि कीड़े उसके शरीर को धीरे-धीरे खा जाने से पहले ही उसकी मृत्यु हो जाए,” उसने कहा।

कुछ लोकप्रिय

पहाड़ों के रहस्य

The Devatas
हिमाचल प्रदेश, जिसे देवभूमि के नाम से भी जाना जाता है, देवताओं की भूमि है। इस भूमि के प्रत्येक गाँव में एक देवता या देवी होती हैं, जो स्थानीय देवता होते हैं। इनकी न केवल पूजा की जाती है, बल्कि इन्हें एक सजीव प्राणी के रूप में भी माना जाता है। परिवार के एक बड़े सदस्य की तरह, जिनका सम्मान किया जाता है और जिनसे सलाह ली जाती है। नए घर की खरीद या बच्चे के विवाह जैसे विशेष अवसरों पर उन्हें मुख्य अतिथि के रूप में घरों में आमंत्रित किया जाता है।
और वे नृत्य भी करते हैं। जी हाँ, ये देवता, जो सोने और चाँदी के चेहरों से बने हैं और लकड़ी की पालकी पर विराजमान हैं, जो अधिकतर लाल वस्त्र से ढकी होती है और जिनके सिर पर सोने के छाते होते हैं, नृत्य भी करते हैं। नृत्य के अलावा, वे नदी में स्नान करते हैं, अन्य देवताओं से बातें करते हैं, और यदि चाहें तो किसी को बुलाते भी हैं।
जो लोग इन्हें नहीं जानते, वे इन्हें परियों की कहानियों के पात्र समझेंगे। लेकिन ये आज के इंटरनेट और एआई युग में मौजूद हैं, और सिर्फ एक-दो जगहों पर नहीं, बल्कि भारत के पूरे हिमालयी क्षेत्र में, जिनमें हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड भी शामिल हैं, पाए जाते हैं। यहाँ के सभी निवासी इन पर विश्वास करते हैं और इनका आदर करते हैं।

Bijli Mahadev’s Temple (Thunder Mahadev’s Temple)

हिमाचल प्रदेश की कुल्लू घाटी में स्थित यह मंदिर भगवान शिव (महादेव) को समर्पित है। इस खूबसूरत मंदिर तक पहुंचने के लिए तीन किलोमीटर की छोटी सी पैदल यात्रा करनी पड़ती है। इसे बिजली महादेव मंदिर भी कहा जाता है क्योंकि हर बारह साल में इस पर बिजली गिरती है। इतना ही नहीं, बिजली गिरने से मंदिर का शिवलिंग चकनाचूर हो जाता है। पुजारी शिवलिंग के टुकड़ों को इकट्ठा करके मक्खन की मदद से उन्हें फिर से जोड़ते हैं। कुछ महीनों बाद, यह फिर से एक ठोस शिवलिंग बन जाता है।

कामरुनाग झील
हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले से लगभग 50 किलोमीटर दूर रोहांडा में घने देवदार के पेड़ों के बीच स्थित यह झील एक रहस्य है। इस झील तक पहुंचने के लिए पांच किलोमीटर की चढ़ाई पैदल करनी पड़ती है। लोग प्राचीन काल से ही भगवान के प्रति श्रद्धा अर्पित करने या भगवान कामरुनाग से अपनी मनोकामनाएं पूरी करवाने के लिए इस झील में सोने-चांदी के सिक्के डालते आए हैं, जिससे यह एक विशाल खजाना बन गई है। आज भी लोग इसमें सिक्के और नोट डालते हैं।
लोग झील में सोना और चांदी डालते रहते हैं, जिससे झील की तलहटी में एक विशाल खजाना जमा हो गया है। फिर भी, इसकी कोई सुरक्षा व्यवस्था नहीं है। झील की तलहटी में छिपे इस खजाने के बारे में सभी जानते हैं, जिसे कोई भी गोताखोर आसानी से पा सकता है। झील के साफ पानी में नोट दिखाई देते हैं। इसके बावजूद, आज तक कोई भी इस खजाने या धन को निकाल नहीं पाया है। झील से धन निकालने का हर प्रयास प्राकृतिक आपदाओं के कारण विफल हो जाता है।

सिद्धाश्रम, गुप्त भूमि
ज्ञानगंज (ज्ञान की भूमि) के नाम से भी जाने जाने वाले कैलाश पर्वत के निकट एक रहस्यमय आश्रम होने की बात कही जाती है। इसका उल्लेख कई प्राचीन ग्रंथों में मिलता है, जिनमें सबसे प्राचीन ऋग्वेद भी शामिल है। किंवदंतियों के अनुसार, यह आश्रम वहीं स्थित है, लेकिन इसे केवल वे सिद्ध योगी ही देख सकते हैं जो आध्यात्मिक साधना के उच्च स्तर को प्राप्त कर चुके हैं।

एक रोचक तथ्य
मॉल रोड: शिमला, मनाली, मसूरी, नैनीताल आदि जैसे पर्यटन शहरों में मॉल रोड एक लोकप्रिय सड़क है, जहाँ पर्यटक घूमना पसंद करते हैं। आमतौर पर लोग मॉल रोड का अर्थ 'माल रोड' समझते हैं, क्योंकि यह खरीदारी के लिए भी प्रसिद्ध है। हालांकि, 'मॉल' शब्द 'मैरिड अकोमोडेशन एंड लिविंग लाइन रोड' का संक्षिप्त रूप है। इसे ब्रिटिश सेना ने यह नाम दिया था। सड़क का एक हिस्सा विवाहित ब्रिटिश अधिकारियों के लिए और दूसरा कार्यालयों, भोजनालयों आदि के लिए था।

शब्दावली

देवता। देवता एक दिव्य देवता या ईश्वर होता है। ग्राम-देवता का अर्थ है किसी विशेष ग्राम का देवता। (ग्राम हिंदी में ग्राम का शब्द है)
लोहड़ी। लोहड़ी उत्तरी भारत में मनाया जाने वाला एक लोकप्रिय शीतकालीन त्योहार है। इसे अलाव जलाकर मनाया जाता है।
चुरेल। चुरेल एक पौराणिक प्राणी है जो स्त्री के समान दिखती है, जिसके चेहरे की बनावट अक्सर बदसूरत होती है और उसमें रूप बदलने की शक्तियां होती हैं।
भूत। किसी मृत व्यक्ति का प्रेत।
घुंघरू। घुंघरू नर्तकियों द्वारा टखनों के आसपास पहने जाने वाले आभूषण होते हैं। इनमें छोटी-छोटी घंटियाँ लगी होती हैं जो नर्तकी के हिलने-डुलने या पैर पटकने पर ध्वनि उत्पन्न करती हैं।
पहाड़ी। पहाड़ी शब्द का प्रयोग पहाड़ों से संबंधित किसी भी चीज़ के लिए किया जाता है। इसमें लोग, बोलियाँ, पहनावा या भोजन शामिल हो सकते हैं।
प्रसाद। प्रसाद वह छोटी मिठाई या खाने की वस्तु है जो आमतौर पर मंदिरों में आने वाले लोगों को प्रार्थना के बाद दी जाती है।
हिमाचली। हिमाचली शब्द हिमाचल प्रदेश से संबंधित हर चीज को समाहित करता है। इसमें लोग, बोलियाँ, पहनावा या भोजन शामिल हो सकते हैं।
लोक। लोक या लोका संस्कृत शब्द हैं जिनका अर्थ है वे क्षेत्र जिनमें हिंदू धर्म के अनुसार ब्रह्मांड को विभाजित किया गया है।
डोसा। किण्वित चावल से बना एक लोकप्रिय दक्षिण भारतीय व्यंजन।

इडली। दक्षिण भारत का एक लोकप्रिय व्यंजन, एक प्रकार का नमकीन चावल का केक।
दर्शन। किसी पवित्र व्यक्ति, मूर्ति या देवता के शुभ दर्शन के लिए हिंदी शब्द।

***** *****

लेखक के बारे में

Saurabh Sehgal

सौरभ सहगल, देखने में भारत के चंडीगढ़ से आने वाले, कॉरपोरेट जगत के एक आम एमबीए पेशेवर की तरह लग सकते हैं। लेकिन इस बाहरी दिखावे के पीछे एक उत्साही पर्यवेक्षक छिपा है, जो विभिन्न दृष्टिकोणों से लोगों और घटनाओं का गहन अध्ययन करने में आनंद पाता है।

सौरभ एक उत्साही पाठक हैं, जिन्हें अपने विचारों को कागज पर उतारना पसंद है। लेखन के प्रति अपने प्रेम के अलावा, सौरभ कॉफी पर गहन चर्चाओं में शामिल होने का

आनंद लेते हैं और विचारों के आदान-प्रदान से प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

उनसे saurabh1421@gmail.com पर संपर्क किया जा सकता है।